प्रविष्टि फार्म भर दिया। हमारा इरादा देख हमारी अन्य सहेलियाँ भी इस पुनीत आराधना में भाग लेने को उद्यत हो गयीं।

आत्मीय उत्कंठा जनित वह प्रतीक्षित घड़ी आ ही गयी और दिनांक 10 दिसंबर, 1988 के दिन उपधान महातप की आराधना का शुभारम्भ हो गया। दो सौ से अधिक लोगों का समूह इस महान आराधना तप से जुड़ा। सभी के चेहरों पर आश्चर्यजनक खुशी छायी हुई थी। परम पूज्य गुरुदेव श्री मणिप्रभसागर जी महाराज की पावन निश्रा में महावीर भवन के प्रागण में क्रिया कर रहे उपधान महातप की आराधना कर रहे जनसमूह का विहंगम पावन दृश्य अपने आप में अत्यन्त मनमोहक एवं नयनाभिराम बन गया था।

प्रारम्भ में ही पूज्य गुरुदेव ने उपधान महातप के महात्म का बोध दिया। उपधान महातप का अर्थ बताते हुए आप श्री ने कहा कि उपधान का आशय उप-समीप-ध्यान-धारण करना ही उपधान तप की आराधना है। उपधान तप हमें शास्त्रोक्त संयम एवं तपपूर्वक सूत्र अध्ययन का अवसर प्रदान करता है। तप की आराधना मानव जीवन में एक महान यज्ञ के समान है। यह हमें अन्तर आत्मा की गहराइयों तक पहुँचाता है। उपधान जप-तप एवं क्रिया की त्रिवेणी है। यह बाह्य निवृत्ति एवं आत्म प्रवृत्ति का केन्द्र है। उपधान तप का परम उद्देश्य परमात्मा तत्व की प्राप्ति है। उपधान तप की आराधना से मानव आत्मा में सम्यक् ज्ञान, दर्शन एवं चरित्र की दिव्य ज्योति प्रज्वलित होती है जो हमें सच्चा सुख प्रदान करते हुए जीवन के चर्मोत्कर्ष मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होने की सद्प्रेरणा प्रदान करती है। इस प्रकार पूज्य गुरुदेव श्री ने विस्तार पूर्वक उपधान तप के महत्त्व को समझाया।

उपधान महातप की आराधना के तहत ही परम पूज्य गुरुदेव की पावन निश्रा में सामूहिक क्रिया करने का पावन अवसर प्राप्त हुआ।

उपधान महातप की आराधना में पूरे समय के लिए नियमित पौषध करना होता है। सुबह शाम का प्रतिक्रमण एवं एक सौ लोगस्स का कायोत्सर्ग 20 नवकार महामंत्र की माला का जाप, एक सौ खमासमणा, देव वंदन एवं प्रदक्षिणा आदि करनी होती है।

नियमानुसार जब इतने खमासमणे प्रति दिन देने थे, यह क्रिया अत्यन्त दुष्कर जान पड़ती थी किन्तु परम पूज्य गणिवर्य मणिप्रभसागर जी महाराज साहब ने पूर्ण सहजता एवं सरल स्वभाव से क्रिया करवायी कि तनिक कठिनाई का आभास भी न हुआ। परम पूज्य गणिवर्य श्री के गुणों का गान करना हम अबोध किशोरियों के सामर्थ्य की बात नही। पूज्य गुरुदेव सौम्य स्वभाव, अनुशासन-प्रिय, त्याग तपस्या के कर्मठ धनी, सदा प्रसन्न एवं मुस्कायमान भाव, सद् जीवन जीने की कला के कुशल प्रशिक्षक, आदि गुणरत्नों की खान स्वरूप हैं। आपका तेजोमय व्यक्तित्व, आप की प्रवचन शैली सुसुप्त आत्माओं को जगाने में जादू की तरह प्रभावक, रोचक एवं सारगर्भित है। आप के प्रवचन शास्त्रगत गूढ़ तथ्यों का सरली करण कर साधारण जन के लिए ग्राह्य करने योग्य होते हैं।

परम पूज्य गणिवर्य श्री के पावन सान्निध्य में उपधान-तप की आराधना की वे स्वर्णिम घड़ियां कितनी बहुमूल्य थी जब दैनिक सांसारिक जीवन के सब झंझावातों को भूल हम सब प्रतिपल अपनी क्रिया के प्रति समर्पित रहते।

उपधान महातप आराधना हेतु की गयी समुचित व्यवस्था इतनी सुन्दर एवं सुव्यवस्थित थी कि आराधना के दौर में कही भी किसी तरह का व्यवधान हमारे समक्ष नहीं आया। शुरुआत के समय में तो 51 दिन की यह गहन आराधना ऊचे पर्वतारोहण के समान दुष्कर लग रही थी किन्तु गुरुजनों द्वारा जगायी गयी लगन से पता ही नही चला कि कब अवशान हो गया उस दीर्घकाल का।

हमारी अपनी मान्यता है कि इस महातप की आराधना कर रहे लोगों के जीवन पर आध्यात्म की एक गहरी छाप अंकित होगी। उनका आचरण सद्-आचरण का रूप धारणा करेगा। कुल मिलाकर उपधान महातप की आराधना तप-जप और संयम की त्रिवेणी में मानो 51 दिवसीय पावन कुम्भ स्नान के समान था जिसमें जीवन में व्याप्त शिथिलताओं से विमुक्त होने का सुअवसर हमें मिला। यह निस्संदेह हम सब के जीवन में एक महानतम उपलब्धि बन कर रहेगी।

पूज्य गुरुदेव के प्रति



सरदारभाई कोचर

जिन-शासन के हो सत्प्रेरक,
मानवता के हो उन्नायक
सत्य-मनस्वी-ज्योति पुञ्जवर
ज्ञान-गीत के हो तुम गायक ।।१।।

धर्म द्वार है मानवता का,
धर्म ध्यान के हो तुम प्रेरक,
धर्म सुमंगल की है धारा,
धर्म स्तम्भ! शुभशान्तिप्रदायक ।।२।।

मौन साधना हेतु धीरवर,
जीवन हुआ पूर्ण अर्पित है,
ज्ञान आचरण द्वारा मुनिवर,
संयममय जीवन चर्चित है। ।।३।।

निश्रा में उपधान तपस्या,
सफल रही है, धन्य आप हैं,
वीकानेर नगर के शुभ दिन,
हरण हुए सब कलुषताप हैं। ।।४।।

वीरगिरा के युवा प्रचारक,
वाल-ब्रह्मचारी हो साधक,
मणिप्रभसागर से स्पर्शित हो,
हो 'सरदार' श्रेष्ठतम श्रावक ।।५।।

समवसरण-ध्यान



आचार्य विजय भद्र गुप्त सूरि

क्या आप क्लेशों से मुक्ति चाहते हो ?

क्या आप संसार-दावानल के मध्य रहते हुए भी शांति चाहते हो ?

असंख्य यातनाओं से भरे इस जीव लोक में क्या आप स्वस्थता चाहते हो ?

तो आप दुःखदायी कर्मों को दोष देना बंद करें। दुष्ट प्रारब्ध के चरणों में जीवन समर्पण कर, निराशा के अंधकार में खो नहीं जाएं। दुःख देने वालों पर अपने मन को केन्द्रित नहीं करें, दुःख हरने वालों के ऊपर मन को केन्द्रित करें।

सर्वत्र है दुःखविनाशक परमात्म-तत्त्व !

सदा काल है पतितपावन अरिहंत परमात्मा !

हमारे पास है...हमारे अत्यन्त निकट है...परन्तु हम उस तत्त्व को जानते नहीं, देखते नहीं, इसलिये मनःस्पर्श करते नहीं। उस परम तत्त्व से हमारा मनःस्पर्श होते ही अंधकार नष्ट होता है, प्रकाश फैल जाता है। संताप और उद्वेग नष्ट हो जाते हैं, आनन्द और उल्लास से हृदय भर जाता है।

जहां बैठकर तीर्थंकर धर्मतीर्थ की स्थापना करते हैं और धर्म का उपदेश देते हैं, उस समवसरण बैठे हुए तीर्थंकर के चरणों का हमें मानसिक स्पर्श करना चाहिए।

'कैसे मानसिक स्पर्श किया जाए ?' आपके मन में प्रश्न उठेगा। चिन्ता नहीं करें, करुणानिधान एक प्राचीन आचार्यदेव ने, एक सरल और सुन्दर ध्यान-पद्धति बतायी है। उस ध्यान-पद्धति का नाम है 'समवसरण ध्यान।' 'समवसरण-ध्यान' के माध्यम से अपने अनंत शक्ति के निधान, अपार करुणा के सागर परमात्मा को मनःस्पर्श कर सकते हैं।

—शरीर को शुद्ध करें।

—श्वेत वस्त्र धारण कर, ऊनी शुद्ध आसन पर बैठें।

—सुखासन अथवा पद्मासन लगा कर बैठें।

—पूर्व दिशा सन्मुख अथवा उत्तर दिशा सन्मुख बैठें।

—मौन धारण करें, मन को विचारों से मुक्त करें।

—दृष्टि नासिका के अग्रभाग पर स्थिर करें।

—सभी जीव मेरे मित्र हैं, वे मेरे अपराधों को क्षमा करें, ऐसी प्रार्थना करें।

—परम गुरुदेव गौतम स्वामी का स्मरण कर, उनको भाव-वंदना करें।

अब समवसरण-रचना की कल्पना करें :

—वायुकुमार देव आते हैं और भूमि शुद्धि करते हैं।

—मेघकुमार देव आते हैं और सुगंधी जल का छिड़काव करते हैं।

—ऋतु देवता पुष्प वृष्टि करते हैं।

—उस भूमि पर भवनपति देव और ज्योतिष-देव रजतमय, स्वर्णमय एवं रत्नमय तीन गढ़ बनाते हैं।

—तीसरे गढ में पादपीठ, तीन छत्र और भामंडल सहित सिंहासन की स्थापना करते हैं।

—समवसरण के ऊपर अशोक वृक्ष की छाया होती है।

—वह समवसरण चक्र ध्वज, सिंह ध्वज, धर्म ध्वज एवं ध्वज पट से शोभायमान है।

—व्यंतर देव स्वर्ण कमलों की रचना करते हैं।

—तीर्थंकर उन स्वर्ण कमलों पर पैर रखते हुए चलते हैं।

—उनके आगे-आगे धूप घटायें फैलती हैं, देव जय-जयारव करते हैं। इन्द्र मार्ग में से लोगों को दूर करते हैं, देव वाजित्र वजाते हैं।

—समवसरण के पूर्व द्वार से परमात्मा प्रवेश करते हैं और पूर्व दिशा-सन्मुख वे बैठते हैं।

—उत्तर, दक्षिण और पश्चिम दिशा में देव, परमात्मा के तीन प्रतिबिम्ब स्थापित करते हैं, जो साक्षात् परमात्मा ही दिखते हैं।

—रत्नजड़ित दंडवाले चंवरों से इन्द्र हर्षित हो, तीर्थंकर की भक्ति करते हैं।

अब, समवसरण में कौन कहाँ पर बैठे हैं, ध्यान से देखें—

—अग्निकोण में देखें, वहां गणधर बैठे हैं, मुनिवृन्द बैठा है, देवियां खड़ी हैं, साध्वीवृन्द खड़ा है।

—वो है नैरूत्य कोण। वहां जो हैं वे सभी देव हैं। वाणव्यंतर देव, भवनपति देव और ज्योतिष-देव।

—वायव्य कोण में जो खड़ी हैं वे सभी देवियां हैं। वाणव्यंतर, भवनपति और ज्योतिष देवों की देवियां हैं।

—इशान कोण में जो तेजस्वी देव दिखते हैं वे वैमानिक देव हैं। मनुष्य हैं, मनुष्य महिलायें हैं।

—अब दूसरे गढ़ की ओर देखें। परस्पर का वैर-विरोध भूल कर, शांति से कैसे पशु बैठे हैं। परमात्मा का ही यह प्रभाव है, उनके सन्निधान में सहजता से जीवों का वैरभाव दूर हो जाता है।

अब तुम्हारी दृष्टि अरिहंत परमात्मा की ओर केन्द्रित करें:

—देखो....परमात्मा अशोक वृक्ष के तले तीन छत्रों के नीचे....रत्नमय सिंहासन पर बैठे हैं....

—उनका शरीर बारह-बारह सूर्य का तेज:पुंज जैसा है....कैसा देदीप्यमान है।

—देव-देवेन्द्रों के रूप से भी परमात्मा का रूप बढ़कर है।

—परमात्मा, जीवों के मोह वृक्ष का उन्मूलन करने वाले हैं।

—परमात्मा. राग रूप महा रोग को मिटाने वाले हैं।

—परमात्मा, क्रोधाग्नि को शांत करने वाले हैं।

—परमात्मा द्वेष रूप व्याधि के औषध समान हैं।

—संसार-समुद्र में डूबते हुए जीवों का उद्धार करने वाले हैं।

—तीन भवन के वे गुरु हैं।

—मोक्ष मार्ग का उपदेश देकर, जीवों के सभी पापों का नाश करने वाले हैं।

—सभी जीवों की सर्व संपत्ति के मूल रूप हैं।

—सर्वोत्तम पुण्य के उत्पादक हैं।

—परमात्मा जन्म, जरा और मृत्यु से मुक्त हैं।

—योगी पुरुषों को आनन्दित करते हैं।

इस प्रकार, 'परमात्मा तीर्थंकर जैसे अपने पास ही हैं—' वैसा प्रतिभास हो वहां तक निश्चल चित्त से ध्यान करते रहना है। अत्यंत भक्ति से नतमस्तक हो, परमात्मा के चरणों का स्पर्श करते ही—वैसी कल्पना करें और प्रार्थना करें : 'हे भगवंत, मैंने आप की शरण ग्रहण की है। आप ही मेरे शरण्य हो....मैं आपका हूं।'

फिर कल्पना से, सुगंधी उत्तम द्रव्यों से पूजा करना, स्तुति करना और 'बोधिलाभ' की प्रार्थना करना।

—आंखें खोल दो।

—ध्यान पूर्ण हुआ।

कल्पना के आलोक में समवसरण देखने से, परमात्मा की सृष्टि में भ्रमण करने से अपूर्व आनन्द की अनुभूति होगी। दुःखमय दुनिया को भूल जाओगे। परमात्मा से मन:स्पर्श होते ही दिव्य रोमांच का अनुभव होगा।

आपके मन में प्रश्न पैदा हो सकता है कि-'इस ध्यान की फलश्रुति क्या होगी?' कोई भी क्रिया हम करते हैं,

उस क्रिया के फल के विषय में जिज्ञासा पैदा होना स्वाभाविक होता है। बताता हूं वह फलश्रुति।

—जो मनुष्य इस प्रकार प्रतिदिन ध्यान करता है, उस मनुष्य की आज्ञा का कोई उल्लंघन नहीं करता है। उसका वचन मान्य होता है।

—यदि उसके शरीर में रोग पैदा हुए हैं तो वे रोग शांत होते हैं।

—अर्थ प्राप्ति होती है, मनुष्य धनाढ्य बनता है।

—सौभाग्य और यश:कीर्ति की प्राप्ति होती है।

—जन्मान्तर में देवलोक के दिव्य सुख मिलते हैं, आठ जन्मों मे मुक्ति हो जाती है।

पांच प्रकार की फल-प्राप्ति के विषय में एक प्राचीन कथा है।

एक नगर था।

नगर का जो राजा था, उस राजा के मंत्री मंडल में 'शिवदत्त' नाम का एक मंत्री था। शिवदत्त की कोई गलती हो गई। राजा ने उसको अपमानित कर, मंत्री पद से हटा दिया।

राजा ने शिवदत्त की सारी संपत्ति ले ली। शिवदत्त दरिद्र हो गया।

मंत्री, मंत्री-पत्नी, पुत्र और पुत्र-वधू–परिवार मे चार व्यक्ति थे, चारों दु:खी हो गये। कुछ वर्ष दु:ख में ही व्यतीत हुए।

एक दिन उस नगर में एक 'अवधिज्ञानी' महर्षि पधारे।

शिवदत्त सपरिवार, उनका धर्मोपदेश सुनने गया। उपदेश सुना, आनन्दित हुआ। उसने महर्षि को विनय से प्रश्न किया :

'भगवंत, पूर्व जन्म में मैंने और मेरे परिवार ने ऐसे कौन से पाप कर्म किये हैं, जिसकी वजह से हम सभी घोर दरिद्रता भोग रहे हैं?'

अवधिज्ञानी महर्षि ने कहा : 'महानुभाव, तेरे इस पुत्र देव प्रसाद ने पूर्व जन्म में एक सार्थवाह-मित्र का विश्वासघात किया था। सार्थवाह के पास बहुत सारे मूल्यवान रत्न थे। इसने वे रत्न पाने के लोभ से उस सार्थवाह को मूच्छित कर दिया और कपट से रत्न ले लिये।

पूर्वजन्म में भी तुम चारों एक ही परिवार में थे।

देवप्रसाद ने जो कपट किया, विश्वसघात किया, चोरी की, तुम तीनों ने सराहना की और उन रत्नों का उपभोग किया। इससे तुम चारों ने घोर 'अंतराय कर्म' बांध लिया। अनीति से, अन्याय से, छल-कपट और चोरी से धन प्राप्ति करने वाले मनुष्य प्रगाढ़ 'लाभांतराय' कर्म बांधते हैं। जब वह कर्म उदय में आता है तब जीव अतिदरिद्र बनता है, रास्ते में भटकता भिखारी बनता है।

—तुम चारों मरे। पशुयोनि में तुम्हारा जन्म हुआ। पशुजीवन में तुमने बहुत दु:ख पाया। बहुत कष्ट सहन किये। मृत्यु हुई।

—तुम्हारा मनुष्य योनि में जन्म हुआ।म नुष्य जीवन में अनेक दु:ख सहे। संपूर्ण जीवन कपटमय व्यतीत हुआ। दुःखों से त्रस्त हो, तुम चारों ने श्वास-निरोध कर, आत्महत्या कर ली।

—मर कर तुम चारों व्यंतर-देव बने। दैवी सुख भोगते रहे। हजारों वर्ष सुख भोगने के बाद, आयुष्य पूर्ण हुआ और पुन: तुम्हारा जन्म मनुष्य गति में हुआ।

—मनुष्य जीवन में तुम्हें सद्गुरु का संयोग मिला। तुम चारों ने दीक्षा ले ली। इस देवप्रसाद के जीव को छोड़, तुम तीनों ने उग्र तपश्चर्या की, बहुत पापकर्मों का क्षय कर दिया। इस देवप्रसाद का जीव संक्लेश में साधुजीवन जीता रहा। उसके कर्म नष्ट नहीं हुए।

—तुम चारों की मृत्यु हुई। और यहां इस नगर में तुम चारों का जन्म हुआ! वे ही तुम चार लोग हो।

—देवप्रसाद का अन्तराय कर्म, तुम तीनों के लिए दु:ख का निमित्त बना है। तुम चारों ने समूह में पापकर्म-अंतराय कर्म बांधा था, इसलिए जब तक एक व्यक्ति का भी वह कर्म शेष रहेगा तब तक चारों को दु:ख भोगने होंगे।'

—अवधिज्ञानी महर्षि के वचन सुनते-सुनते चारों को पूर्वजन्मों की स्मृति हो आयी। शिवदत्त मंत्री ने कहा :

'भगवंत, आपने हमारे जो पूर्वजन्म बताये......सही हैं। हमें पूर्वजन्मों की स्मृति हो आयी है। हमने स्वयं देखे हमारे पूर्वजन्मों को। भगवन्, देवप्रसाद को, अपने अंतराय कर्म का नाश करने के लिए क्या करना चाहिए, कृपा कर बताइये।'

महर्षि ने कहा : 'समवसरण की कल्पना कर, उसमें तीर्थंकर परमात्मा का ध्यान करें। यह ध्यान, अशेष कर्म-वृक्षों का उन्मूलन करने प्रचंड वायुसमान है।'

अवधिज्ञानी महर्षि ने उनको समवसरण का ध्यान करने की प्रक्रिया बताई।

देवप्रसाद ने खड़े होकर विनय से कहा : 'भगवन्, मुझे श्रावक धर्म प्रदान करें। आपके बताये अनुसार मैं ध्यान करूंगा।'

महर्षि को भावपूर्वक वंदना कर, वे चारों अपने घर लौट आये।

—देवप्रसाद 'समवसरण-ध्यान' करता रहा।

—एक दिन उसका अन्तराय कर्म टूट गया।

शिवदत्त राजा को प्रिय बना। राजा से सम्मान प्राप्त किया। वैभव और संपत्ति प्राप्त हुई।

...जीवन के उत्तरार्द्ध में चारों विरक्त बने, संयमजीवन स्वीकार किया। मृत्यु हुई।

—चारों महात्मा, 'सनत्कुमार' नाम के देवलोक में उत्पन्न हुए।

—देवप्रसाद का जीव, आयुष्य पूर्ण होने पर, क्षिति-प्रतिष्ठित नगर में जन्म पाता है। राजकुल में जन्म होता है। राजा बनता है। 'सोम' उस का नाम होता है।

—रानी और राजकुमार की मृत्यु से सोम राजा संसार से विरक्त होते हैं। भगवान पार्श्वनाथ के पास जा कर दीक्षा लेते हैं। भगवान पार्श्वनाथ के वे पांचवे गणधर होते हैं।

—सभी कर्मों का क्षय कर, मुक्ति पा लेते हैं।

'समवसरण-ध्यान' करने से दुःख दूर होते हैं, सुख प्राप्त होते हैं, यशःकीर्ति फैलती है......और सर्व कर्मों का क्षय होता है। आत्मा सिद्ध-बुद्ध और मुक्त बन जाती है।

[आचार्यश्री देवभद्रसूरि-विरचित 'पार्श्वनाथ चरित्र' पर आधारित]

जितना दोष दूसरों की निन्दा करने में है, उससे ज्यादा दोष चापलूसी करने में है। विश्व में दो प्राणी खतरनाक है एक निंदक और दूसरा चापलूस। निंदक सीधा वार करता है तो चापलूस पीछे से, मीठी छुरी चलाता है। चापलूस द्वारा किया गया घाव पता चलने तक बेहोश कर देता है। हमें उक्त दोनों से सावधान रहना है।

—गणि मणीप्रभसागर

उपधान का महत्त्व



प्र. सज्जन श्री

अनादि अनन्त संसार में मुख्य दो ही तत्त्व हैं—जड व चेतन। इन्ही दो तत्त्वों के कार्य-कलाप का समूहलोक नाम से अभिहित है। लोक शाश्वत है और लोकगत जड़-चेतन भी शाश्वत हैं। जड़ चेतन का सम्बन्ध ही जीवन कहलाता है। जड़ व चेतन का सम्बन्ध यद्यपि अनादिकालीन है, तथापि दोनों का स्वरूप भिन्न है। चेतन एक चिन्मय ज्ञान - स्वरूप तत्त्व है। दूसरा अजीव तत्त्व जडमय है। चेतन तत्त्व के स्वरूप को आवृत्त करने वाला है। आवृत्त करने वाले कर्म-रूप जड़-तत्त्व को दूर करने पर ही स्वरूप का विकास हो सकता है। स्वरूप का विकास करने के लिए पांच आचार—ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार और वीर्याचार का पालन करना आवश्यक है। आत्मा के ज्ञानगुण को प्रकट करने के लिए ज्ञानाचार का आचरण बतलाया गया है। इससे ज्ञान का प्रकाश विस्तृत होता है और निर्मलता आती है।

ज्ञानाचार के आठ भेद हैं – 1. काल, 2. विनय, 3. बहुमान, 4. उपधान, 5. अनिह्नवन, 6. व्यञ्जन, 7. अर्थ, 8. तदुभय....समय पर ही अध्ययन-अध्यापन करना, विनय सहितपढ़ना, बहुमान पूर्वक पढ़ना, उपधानपूर्वक पढ़ना, पाठक का नाम न छुपाना या विरोधी न बनना, स्पष्टोच्चारण करना, अर्थ-सहित पढ़ना, सूत्रार्थ चिन्तन मे तल्लीन-तन्मय बनना।

प्रस्तुत लघु लेख में उपधान पर विचार-विमर्श कर उसके महत्त्व और आवश्यकता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

उपधान का अर्थ—उप-समीप, धान-धारण करना, अर्थात् अधिकारी सुयोग्य सद्गुरु के पास शास्त्रोक्त संयम व तपःपूर्वक सूत्र अर्थ का अध्ययन करना।

साधु-साध्वी के योग्य सूत्रों का अध्ययन भी योगोद्वहन पूर्वक होता है और श्रावक-श्राविकाओं के योग्य सूत्र-पंच-मंगल श्रुतस्कन्धादि का पठन भी योगोद्वहन अर्थात् प्रसिद्ध नाम उपधानपूर्वक करना आवश्यक है।

श्रावक-श्राविका को नवकार-मन्त्रादि पठन-पाठन जाप-चैत्यवन्दन प्रतिक्रमणादि आवश्यक क्रिया करने कराने का अधिकार उपधान करने पर प्राप्त होता है। कोई भी क्रियो विधिपूर्वक करने पर ही उससे कार्य सिद्धि होती है। जैसे कि भोजन बनाने की सामग्री व बाह्य साधन होने पर भी निर्माण-विधि की जानकारी न हो तो भोजन ठीक व स्वादिष्ट नहीं बन सकता, वैसे ही धार्मिक क्रिया भी समझिये।

उपधान में सूत्र व अर्थ का अध्ययन और साथ ही शुद्ध विधि-विधान का भी अभ्यास किया जाता है। गृहस्थ के समस्त क्रियाकलापो से दूर रहकर पौषध पूर्वक तपोमय जीवन व्यतीत करने से सर्वत्यागमय साधु-चर्या का अभ्यास करने से तप-त्याग व संयम का अनुभव और भारतीय संस्कृति के महान् संस्कार अहिंसा, संयम, तप का आचरण करने से आत्म-भूमि शुद्ध करने पर उत्तम भावनाओं के बीज वपन होते हैं। योग्य समय पर भक्ति जल सींचन करने व सुरक्षा करने से मोक्ष रूप फल की उपलब्धि होती है। जिससे आत्मा सर्वथा सिद्ध-बुद्ध-मुक्त अवस्था प्राप्त कर लेता है जो आत्मा की सर्वोच्च स्थिति है।

प. पू. गणिवर्य श्री मणिप्रभ सागर जी म. सा. के आगमन पर स्वागत गीत



गीत : सूरजराज जैन **संगीत : शिव रतन सैन**

स्वागत है नमन है वन्दन है
मुनिवर आत्मिय वन्दन है, गणिवर आत्मिय वन्दन है-२

वीकानेर की धर्मधरा पे, -२
आपके पावन चरण पड़े हैं,
हर्षित मरूधर है गणिवर आत्मिय वन्दन है......

संयम रत्न से शोभित गुरुवर, -२
आप मणिप्रभ ज्ञान के सागर,
निधि जिन शासन है मुनिवर आत्मिय वन्दन......

धन्य हुआ लुंकड कुल तुमसे, -२
गर्वित हो खरतरगच्छ हर्षे,
कांति अमर गुरु है गणिवर आत्मिय वन्दन......

ज्ञान की ज्योति घर घर चमके, -२
श्रद्धा संयम हो मन सबके,
यही अभिलाषा है मुनिवर आत्मिय वन्दन......

संयम रूप उपधान



कुमारी सरिता सेठिया

पूज्य साधु-साध्वियों की प्रेरणा से उपधान तप आत्म सन्निधि में जाने के लिए प्रेरक प्रसंग है। यों तो साधक हर पल जागरूक रहता है। फिर भी कुछ ऐसे विशेष अवसर आते हैं जब साधक को अतीत के सिंहावलोकन करने व वर्तमान में जाने की प्रेरणा प्राप्त होती है। उपधान तप में उपवास, आयंबिल एवं एकासना की तपस्याएं होती हैं।

उपधान तप का वास्तविक प्रयोजन—उपधान तप एक ऐसा विशिष्ट महामंगलकारी, मोक्ष मार्ग के नजदीक पहुंचाने में एक सीढ़ी की भूमिका अदा करने वाला कोई सामान्य प्रयोजन वाला नहीं वरन् साधक को स्वयं की आत्मा से भली-भांति परिचित कराने का ध्येय रखता है। उपधान तप करवाने वाले गुरुदेव श्री अपने प्रखर व्याख्यानों, देशना के माध्यम से साधक को आत्मा और कर्म सिद्धांत का पारस्परिक बंधन किस प्रकार होता है, आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप सत्-चित् और आनंद इन तीन गुणों से परे हटकर इन कर्मों से क्यों लिपटी हुई है तथा इन कर्मों का क्षय करके आत्मा से परमात्मा बनने में सक्षम है, इसका बोध करवाते हैं। लेकिन इसके लिए हमें अपने आप को बदलना होगा, हमारी हर क्रिया में परिवर्तन लाना होगा, हमारे जीवन को पापमय बनाने वाले दुर्गुणों का हम सतर्कता के साथ बहिष्कार करें, हमारी आत्मा भौतिक सुखों से निर्लिप्त बने, राग-द्वेष रूपी कचरा समाप्त हो, हम आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करें, उस शाश्वत सुख को उपलब्ध करें, उस असीम आनन्द की अनुभूति करें। हमारा अन्तःकरण पूर्णतया विशुद्ध बने और गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी हम अपने आचार-विचार सात्विक बनायें और जीवन में क्षणिक सुखों को प्राप्त करने की बजाय आध्यात्मिक सुख जो कि चिरस्थायी है प्राप्त करने का एकमात्र लक्ष्य रखें। यह तभी संभव है जब हम भौतिक चकाचौंध और क्षणभंगुर सुखों का यथार्थ चिंतन करें, मनन करें। बहुत गहराई में जायें और विचार करें कि आखिर हमारे दुख का वास्तविक कारण क्या है? स्पष्ट है बेशक हम पौद्गलिक पदार्थों के लिए तथा इन्द्रियों को संतुष्ट करने में आसक्त हैं। इससे मन को कुछ समय के लिए जरूर हमें सुख का आभास होता है किन्तु ख्याल रखें किराये की वस्तु पर हम कभी अपनत्व नहीं स्वीकारते। इसी प्रकार क्षणिक सुख से चिरस्थायी आनंद आज तक किसी को नहीं मिला है, न मिलता है, न लाख प्रयत्न करने पर भी मिलेगा। इस देव दुर्लभ मनुष्य जीवन को सफल एवं सुखी बनाने का उपाय है वीतराग वाणी का रसास्वादन कर उसे आचरण में लायें।

उपधान तप का मेरा अनुभव—उपधान तप के अन्तर्गत श्रावक कुछ समय के लिए यानि एक निश्चित समय है जैसे पहला उपधान 51 दिन, दूसरा 35 व तीसरा 28 दिन का विधान है, देशविरति से सर्वविरति में रहते है। इस उपधान तप के अन्तर्गत साधु जीवन का हमें Practial knowledge होता है। साधु जीवन का एक तरह से पूर्वाभ्यास होता है और क्रियाकलापों की विस्तृत जानकारी मिलती ही है साथ में साधुत्व के महिमामयी गौरव-मयपद का यथार्थ के धरातल पर कितना महत्त्व है, तथा उन्हें हम

इतना सम्मान जो देते हैं उसके पीछे कौन से रहस्य छिपे हुए हैं। यह सब मुझे उपधान में महाराज साहब के सम्पर्क में आने से प्रत्यक्ष ज्ञात हुआ कि वास्तव में साधु जीवन की क्रियाओं में कितनी विशुद्धता है, किस प्रकार से वे हर पल जाग्रत रहते हैं कि कहीं किंचित सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों की विराधना न कर बैठें।

विशेष रूप से जीवों की जयणा, पालना एवं जिनेश्वर परमात्मा द्वारा बताये गये मार्ग पर चलना। अधिकाधिक समय स्वाध्याय, धर्माराधना में व्यतीत करते हैं और व्याख्यान के माध्यम से जीवों को प्रतिबोध देते हैं। जैन आगमों का अध्ययन करते हैं और तदनुसार वीर-वाणी को जन-जन तक पहुंचाते हैं। वास्तव में गृहस्थ जीवन की बेड़ियों को काटकर इन्होंने संयम स्वीकार किया। ऐसा स्वर्णिम अवसर उन्हें उपलब्ध हुआ यह इनके पूर्व-पुण्य कर्मों का ही प्रभाव है। हम तो इनके चारित्र बल और आध्यात्मिकता से ओतप्रोत त्यागमय, वैराग्यमय जीवन को देखकर अनन्त-अनंत अनुमोदना करते हैं। इनकी साधना और उपासना इहलोक और परलोक, यहाँ तक कि भव-भव तक सुसंस्कार बनाये रखने में सक्षम है। साधु जीवन सदा ही सुखी होता है। यहाँ अंश-मात्र भी दुःख का कारण नहीं है। हमारी इतनी तीक्ष्ण बुद्धि कहां जो हम इनका अवलोकन कर सकें।

हमारे दुःख का कारण हमारी बढ़ती हुई तृष्णायें, लिप्सा, आकांक्षा हर पल कुछ न कुछ चाहिये। एक इच्छा पूर्ण हुई नहीं कि दूसरी इच्छा मुंह बाये खड़ी रहती है। फल-स्वरूप हम इन्हीं चाहों को पूरा करने में प्रयत्नशील रहते हैं। इससे ऊपर आध्यात्मिक जगत में प्रवेश कर पाना कितना मुश्किल है। कैसी विडम्बना है हमारे भाग्य की। कैसी करुण दशा है हमारी आत्मा की, जो निरन्तर कर्मो के भयं-कर जाल में फंसती ही जा रही है। प्रगाढ़ कर्मो का बंधन करके संसार भ्रमण करने के लिये विवश है। आत्मा के मूल गुण इन कर्मो के आवरण के कारण विलुप्त होते जा रहे हैं और आत्मा पर राग-द्वेष रूपी शत्रुओं ने अड्डा जमा लिया है। दूसरों की जरा सी भूल पर हम अट्टहास लगाते हैं। लेकिन स्वयं की बड़ी विचित्र दर्दनाक दशा है। न जाने कैसे और कब हम इस कर्म राजा पर विजय प्राप्त करेंगे और परम तत्व के आनंद की उपलब्धि करेंगे।

उपधान में हमारी हर क्रिया में कर्मों की निर्जरा होती है। उपधान में हम पूर्णतया धर्म-मय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। प्रातःकाल पांच बजे निद्रा त्याग कर 100 लोगस्स का कायोत्सर्ग ध्यानस्थ मुद्रा में होकर करते हैं। तत्पश्चात् प्रतिक्रमण, पडिलेहन, पौषध लेने की क्रिया हम अपने आवास स्थल पर ही करते हैं। इसके बाद सामूहिक क्रिया पू. साधुसा म. सा. करवाते हैं। मंदिर जाते हैं वहां से वापस हॉल में आते हैं जहाँ साधुसा म. सा. अपनी अमृतमय वाणी बरसाते हैं। और हम अपलक उस वाणी का पान करते हैं। हृदयंगम करने का प्रयास करते हैं। प्रवचन के पश्चात् ऋषि मंडल पाठ नमो जिणाणं जिय भयाणं की धुन, देववंदन 100 खमासमणे तत्पश्चात् पच्चक्खाण पारते हैं। 48 घंटो में सिर्फ एक बार वो भी 48 मिनट के अन्तर्गत शुद्ध आहार ग्रहण करते हैं ताकि बाकी रही हुई क्रियायें आसानी से कर सकें। आहार शरीर को पुष्ट बनाने की दृष्टि से नहीं वरन् क्रिया को ध्यान में रखकर। दिन-भर में 20 नवकार की पक्की माला गिनना, वापस वस्त्रों की प्रतिलेखना, सायंकाल की क्रिया हॉल में होती। पश्चात् प्रतिक्रमण अन्त में संथारा पोरिसी करके निद्रावस्था का वरण करते हैं। इस प्रकार 51 दिन तक गृहस्थ जीवन से सर्वथा परे रहकर अधिकाधिक धर्मा-राधना और धर्मश्रवण का सुअवसर प्राप्त किया।

इन आराधना के दिनों में भी हमसे जाने-अनजाने किसी तरह की हुई भूलों का अन्तर्हृदय से गुरु महाराज के समक्ष प्रायश्चित करते हैं, आलोचना करते हैं। गुरु महाराज अनंतकरुणा के सागर हमें सहज भूलों के लिये कुछ प्रामाणिक प्रायश्चित रूप क्रिया देते हैं। वास्तव में मुझे ऐसा आभास होता है संयम जीवन कितना उत्कृष्ट है। कितनी विशुद्ध भावनाओं में रमण करती है इनकी आत्मा। हमारी आत्मा भी कब सार तत्व में रमण करेगी, मैं भी इस भौतिक आधुनिकता के वातावरण से आत्मिक आनंद को प्राप्त करने के लिए बेचैन हो जाऊंगी तभी मेरा यह दुर्लभ मानव-जीवन धन्य

हो पायेगा। सुनते बहुत कुछ हैं, पढ़ते भी बहुत कुछ हैं लेकिन असर बहुत कम यानि नगण्य ही समझें। जब हम बाह्य जगत से अन्तर्जगत में विचरण करें, संसार में रहते हुये भी जल में कमल की तरह निर्लिप्त रहें। हर कार्य करें लेकिन उदासीन भाव से, भावों की स्वच्छता अति आवश्यक है। परिणाम मन के विशुद्ध बनेंगे, हृदय कमल की भांति खिल जायेगा, हमें अन्तर्दृष्टि प्राप्त होगी।

भौतिकवाद चाहे कितना ही पनपे, किन्तु उसका अन्त नाश है जब कि आध्यात्मिक वाद सदैव अमर रहा है और रहेगा। अतः हमें मूल को पकड़ना है शाखाओं को नहीं।

'सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्षमार्गः' हमारे जीवन में यह अनमोल खजाना प्राप्त हो जाय तो अन्य किसी चीज की आवश्यकता नही।

क्षण-क्षण, पल-पल खुद को देना, यह जीवन का अर्थ है।
जितना अधिक दे रहा, जो उतना अधिक समर्थ है।।

उपधान तप में बैठे और खाली हाथ उठ गये तो क्या सार्थकता। हममें कुछ परिवर्तन तो आना ही चाहिये वरन् आया भी है—

हम वही हैं मगर विचार बदले हैं,
हम वही हैं मगर व्यवहार बदले हैं।
गहराई में जायें, नुकसान में नहीं हैं
हम वही हैं, मगर संस्कार बदले हैं।

हमारे गुरु महाराज एवं गुरुवर्या श्री जी मार्गदर्शक प्रेरणास्रोत वरन् सच्चे धर्मगुरु की भांति उपस्थित हुये जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकालकर अपने अथक प्रयासों द्वारा हमें आत्म-दृष्टि से सम्पन्न करने में कोई कमी नहीं रखी। अब क्षमता तो हममें होनी चाहिये कि हम अपने आत्म-वैभव को बटोरने में कहाँ तक कामयाबी हासिल कर पाये हैं।

हम आप सभी पूज्यजनों के प्रति सविनय नतमस्तक हैं आपके आजन्म आभारी हैं।

हमारे पास अनंत सम्पदा होने पर भी हम उससे वंचित हैं और *दरिद्रता भरा जीवन जी रहे हैं।*

किसी व्यक्ति से यह कहा जाये कि तुम अपनी आँखें दे दो तुम्हें पाँच लाख दिये जायेंगे, वह व्यक्ति इन्कार कर देगा। इसी प्रकार हाथ व पैर मागने पर भी इन्कार ही करेगा। देखो! इतना मूल्यवान शरीर हमारे पास है परन्तु हम उसका समुचित उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, यही दरिद्रता का मूल कारण है।

—गणि मणिप्रभसागर

आसन-प्रयोग-विधि : एक चिन्तन

□

डा. ए. डी. बतरा

भारतीय संस्कृति में योग परम्परा का एक विशिष्ट स्थान है। आध्यात्मिक अभ्यास मार्ग में शरीर को एक विशिष्ट अवस्था की आवश्यकता होती है और सम्भवत: इसीलिये प्राचीन काल में अध्यात्म-मार्गी साधकों ने शरीर पर नियन्त्रण प्राप्त करने के कुछ साधन खोज निकाले थे। स्थूल रूप से दिखायी देने वाला शरीर और उस शरीर पर नियन्त्रण करने वाली शक्तियां (प्राण, मन, कुण्डलिनी, आत्मा इत्यादि) अपने नियन्त्रण में हो, ऐसी सबकी इच्छा रहती है। इस नियन्त्रण ने ही योग परम्परा में आसन का महत्व प्रस्थापित किया है। ये आसन विभिन्न स्वरूप के हैं। कालान्तर में इनकी संख्या समय, मर्यादा, अधिकारी आदि के विषय में मतभेद उठ खड़े हुए और इन मतभेदों ने योग में भिन्न-भिन्न परम्पराएं खड़ी कर दीं। कहीं कहीं तो यह मतभेद केवल शाब्दिक प्रतीत होता है। परन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यदि मनुष्य स्वभाव की विविधता को मान लिया जाय तो विविध मार्ग स्वीकार करने में हमें कठिनाई नहीं होनी चाहिये।

आसन करने से शरीर पर दृश्य और कुछ अदृश्य रूप में प्रभाव पड़ते हैं। यह वर्णन भी योग संबंधी पुस्तकों में विस्तार से पाया जाता है। आसनों की संख्या के संबंध में और आसनों की विधि के विषय में 'योग' के अन्तर्गत सबसे ज्यादा साहित्य उपलब्ध है।

योग साहित्य में प्रमुख रूप से दो प्रकार की परम्पराओं का साहित्य उपलब्ध है। पतंजलि के 'योग सूत्र' की एक परम्परा है तो दूसरी परम्परा के साहित्य के रूप में हठयोग प्रदीपिका, घेरण्ड संहिता, सिंह संहिता, योग याज्ञवल्क्य संहिता भक्ति सागर और कुछ योग उपनिषद् हमें योग के संबंध में विस्तृत भूमिका उपलब्ध कराने में सहायक होते हैं। (योग उपनिषदों में मुख्य रूप से शाण्डिल्य उपनिषद्, योग कुण्डलिनी उपनिषद्, दर्शन उपनिषद्, त्रिशिखी ब्राह्मण उपनिषद् इत्यादि का उल्लेख है।) इन सभी ग्रन्थों में (पतञ्जलि के अतिरिक्त) भिन्न-भिन्न आसनों का वर्णन है। और आसन करने की विधि और उनसे होने वाला लाभ आदि का विश्लेषण है।

सर्वप्रथम हम पतञ्जलि के मत का विवेचन करेंगे। योग-सूत्रों में अष्टांग योग का विवेचन करते समय आसन की परिभाषा पतञ्जलि ने 'स्थिरसुखमासनम्' (2-46) की है। आगे के दो सूत्रों में पतञ्जलि ने आसनों से होने वाले लाभों के बताने का प्रयत्न किया है। आसनों से होने वाले लाभ एक व्यक्तिगत अनुभूति का विषय है। और जैसा कि हमने ऊपर निर्दिष्ट किया है, ये अनुभूतियां स्वाभाविक रूप से व्यक्तिगत ही होंगी। उसके विषय में वैज्ञानिक संशोधन की आवश्यकता है। मुख्य विषय स्थिरसुख कहा है और स्थिरसुख की परिभाषा करना बड़ा कठिन है। पर स्थिर-सुख का अनुभव लेने में कोई अड़चन नहीं है। पतञ्जलि के ऊपर भाष्य लिखने वाले व्यास, वाचस्पति और भोज इस विषय पर मौन हैं। संभवत: स्थिरसुख की व्याख्या करना ये अनावश्यक समझते रहे होंगे अथवा स्थिरसुख की कल्पना लोगों के सामने रखने में उन्हें कुछ कठिनाई रही होगी। विज्ञान भिक्षुओं ने 'निश्चल' और 'सुखकर' शब्दों का उप-

योग किया है। परन्तु इन शब्दों से भी विषय कुछ स्पष्ट नहीं होता। अन्य सभी भाष्यकारों ने आसनों की संख्या गिनाकर ही सन्तोष प्राप्त कर लिया है। पतञ्जलि की परम्परा को सामने रखते हुए अष्टांग योग को एक महत्त्व-पूर्ण स्थान देने के पश्चात् आसन संबंधी इतने कम सूत्र उपलब्ध हैं कि उन सूत्रों के मनमाने अर्थ लगाने की सुविधा या मतभेद उत्पन्न करने की परिस्थिति, इच्छा न होते हुए भी निर्माण हो जाती है। सम्भवतः पतंजलि की भूमिका को देखते हुए और मन का स्वभाव, शरीर की अवस्था और परिस्थिति के अनुसार हम जो चाहें अर्थ लगा लें, इस तरह की बहुत बड़ी सुविधा हमें इन छोटे सूत्रों में उपलब्ध है। स्थिरसुख प्राप्त करने के लिये मार्ग का निर्देशन करते हुए उससे प्राप्त होने वाले फल का निर्देश एक सूक्ष्म तथा गहन मनोवैज्ञानिक सुविधा है। इसमें पतंजलि के द्वारा चित्रित मानव स्वभाव की विविधता की मान्यता हमें दिखायी देती है।

आसनों की दृष्टि से यदि हम पतंजलि के योग सूत्रों को अधिक सुविधाजनक न समझें तो हमें हठयोग के ग्रन्थों का सहारा लेना पड़ता है। इन ग्रन्थों (हठयोग प्रदीपिका आदि) में विस्तृत व सुस्पष्ट मार्ग-दर्शन उपलब्ध है। हठयोग प्रदीपिका के पहले अध्याय के 17 वें श्लोक में आसनों का वर्णन भी है और उनसे होने वाले लाभों का संकेत भी किया गया है—

'हठस्य प्रथमोगत्वादसनं पूर्वमुच्यते।
कुर्यात्तदासनं स्थैर्यमारोग्यम् चांगलाघवम्॥'

हठयोग प्रदीपिका के अनुसार यम-नियम का भी उल्लेख है, तथापि आसन को ही उन्होंने प्रथम अंग माना है। आसन करने से स्थैर्य प्राप्त होता है। शरीर सुन्दर और निरोगी हो जाता है। हठयोग प्रदीपिका के टीकाकार ब्रह्मानन्द कहते हैं कि 'आसन करने से शरीर को स्थिरता प्राप्त होती है और मन की चंचलता के ऊपर भी नियन्त्रण आ जाता है। 'आसनेन रजोहंति' यहां पर थोड़ा सा रजोगुण और तमोगुण का सन्दर्भ भी प्राप्त है। ब्रह्मानन्द ने पतंजलि का एक सूत्र भी निर्दिष्ट किया है। आसनों का वर्णन करते समय विभिन्न प्रकार के आसन बताये गये हैं और उनसे होने वाले लाभ और करने की विधियां विस्तारपूर्वक हठयोग के इन ग्रन्थों में निर्दिष्ट हैं।

आसनों का वर्णन करते समय हठयोग प्रदीपिका में प्रथम अध्याय के बत्तीसवें श्लोक में कहा है कि शव आसन करने से थकान नष्ट होती है और चित्त को विश्रान्ति मिलती है। प्राचीन भाषा शैली को ध्यान में रखते हुए हमें ऐसा अनुभव होता है कि शरीर की विश्रान्ति समझ सकना बहुत आसान है परन्तु चित्त विश्रान्ति एक समस्या है। चित्त विश्रान्ति की चर्चा करने से पहले चित्त के संबंध में जब तक परिभाषा निश्चित न हो तब तक व्याख्या देना कहां तक उचित होगा, इस प्रश्न का निर्णय करना भी आवश्यक है। पतञ्जलि का योग शास्त्र चित्त, मन, बुद्धि आदि शब्दों का उपयोग करता है, परन्तु हठयोग में इन शब्दों का उपयोग विचारपूर्वक नहीं किया गया है, ऐसी शंका स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत होती है। आसन करने से विष भी पच जाता है, शरीर में सब प्रकार की व्याधियां अपने-आप नष्ट हो जाती हैं। आधुनिक वैज्ञानिक शोधों द्वारा कुछ लोगों ने एक नये वैचारिक आयाम को प्रस्तुत किया है जिसके अनुसार 'यौगिक चिकित्सा' नाम की नयी पद्धति समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

स्थूल रूप से यदि देखा जाये तो अष्टांग योग में या हठयोग के कुछ ग्रन्थों के अनुसार षडांग योग में आसनों को सबसे अधिक महत्त्व इसलिये प्राप्त हो गया है कि हम आसन करते हैं या आसन किये जा सकते हैं, ऐसी प्रक्रिया हमें दिखती है। इसी आसन करने की प्रक्रिया ने आसन करने वाले को योगी, योगाभ्यासी, योगाचार्य आदि बना दिया है और जहां आसन सिखाये जाते है वे योगाश्रम बन गये हैं। इन आचार्यों ने अपनी-अपनी नयी परम्पराएं प्रस्थापित करना आरम्भ कर दिया है। इस नये मोड़ ने, योग के नाम पर, एक व्यापारिक वृत्ति की झलक दिखाना आरम्भ किया है। शोधकर्त्ताओं और जिज्ञासुओं को सावधानी की आवश्यकता है। इससे इस बात का भी निर्देश होता है कि हमें योग परम्परा तो मान्य है, पर इस परम्परा से संबंधित उपलब्ध

साहित्य पर स्वत: चिन्तन मनन करने की प्रवृत्ति नहीं है, या पात्रता नहीं हैं। यदि परम्परा टिकाये रखनी है तो परम्परा का सही रूप भी सामने रखना होगा, यही युग का आह्वान है।

हठयोग प्रदीपिका में सिद्धासन को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। इन श्लोकों में यह प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया है कि सिद्धासन द्वारा ही सब प्रकार के मल-शोधन और अभ्यास प्राप्त होते हैं। एक स्थान पर तो यहाँ तक कहा है कि सिद्धासन के समान दूसरा कोई आसन नहीं है। यह इस बात की ओर संकेत करता है कि आसनों की संख्या के बारे में ग्रन्थकार विचारशील थे। कुछ लोगों ने आसनों के दो प्रकार ही बताये हैं। इनके अनुसार चार बैठ-कर और शेष खड़े होकर पेट के बल एवं पीठ के बल किये जाते हैं। एक आसन सिर के बल खड़े होकर भी किया जाता है। यद्यपि ऐसा आभास होता है कि प्राचीन ग्रन्थों में आसनों का वर्गीकरण किया गया था और कुछ लोगों ने वर्गीकरण के आधार पर साहित्य लिखा हो, तथापि यह वर्गीकरण कृत्रिम ज्ञात होता है। क्योंकि योग कुण्डली उपनिषद में दो आसनों के ही दो प्रकार बताये हैं। उपनिपदकार ने पद्मासन और वज्रासन इन दो आसनों के द्वारा ही योग साधना की पूर्णता मानी है जबकि 'शिव संहिता' में कहा है कि कुल चौरासी आसन हैं। उनमें सिद्धासन, पद्मासन, उग्रासन और स्वस्तिकासन मुख्य हैं। इन आसनों का वर्णन करते समय ऐसा कहा गया है कि आसनों के करने से सर्व पापों से मुक्ति होती है। आसनों की इसी प्रकार की सिद्धि हठयोग प्रदीपिका में भी कही गयी है। इससे हमें एक बात का संकेत मिलता है कि सम्भवत: प्राचीन आचार्य अपनी शैली के अनुसार अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करने में समर्थ रहे हों, परन्तु आधुनिक युग में इन आसनों का महत्व समझाने में हमें कुछ अड़चनें आती हैं। आसनों का वर्णन करते हुए एक स्थान पर यह बात बिल-कुल स्पष्ट कर दी है कि वेशभूषा धारण करने से या चर्चा और शास्त्रार्थ से योग की सिद्धि नहीं होगी जब तक कि क्रियारूप प्रत्यक्ष अंगीकार न किया जाय। संकेत इस बात का है कि प्राचीन काल से ही योग परम्परा में स्व की अनुभूति की ओर विशेष लक्ष्य केन्द्रित कराया गया था। इसी उत्साह में एक उपनिषद्कार ने तो यहाँ तक कह दिया कि 'जिसने आसन विजय कर ली उसने तीनों लोकों को जीत लिया।

अष्टांग योग में आसन को सबसे अधिक महत्व प्राप्त होने का एक बहुत बड़ा कारण यह भी है कि हेतु अहेतु सहज रूप से लोग आसन करने लगते हैं। कई बार तो ऐसा भी अनुभव में आया है कि आसनों के संबंध में जो विधि निषेध दिये गये हैं, उनका ज्ञान न होते हुए भी लोग भावना वश आसन क्रिया करते हैं और उसका कुछ न कुछ परिणाम यद्यपि शरीर के लिये उपयोगी ही होता है, तथापि कभी-कभी कुछ अनिष्ट की संभावना रहती है। योग ग्रन्थों में कुछ संदिग्ध चर्चा इस संबंध में उपलब्ध है। हठयोग प्रदीपिका में नाड़ी शुद्धि का उल्लेख है। अन्यत्र ग्रन्थों में भी इसी प्रकार के उल्लेख मिलते हैं। स्वामी कुवलयानन्द लिखित ग्रन्थ में आसनों के दो लाभ बताये हैं। पहला शरीर को पूर्णतया शक्ति प्रदान करना और दूसरा, मेरुदण्ड को सक्रिय करके बुद्धि और कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करना। जहाँ तक पहले विषय का संबंध है स्थूल शरीर पर होने वाले प्रभावों को आजकल मनोविज्ञान की प्रयोगशालाओं में लोगों ने सिद्ध करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया है। परन्तु कुण्डलिनी शक्ति और बुद्धि पर होने वाले प्रभाव किस तरह कार्य करते हैं और क्यों करते हैं यह एक रहस्य है। शरीर शास्त्र को जितना अधिक हम समझेंगे उतना ही प्रस्तुत रहस्य का सुलझता हुआ स्वरूप हमारे सामने आने की सम्भावना है। आधुनिक शरीर-विज्ञान की प्रगति और वैज्ञानिक संशोधन और प्राचीन ग्रन्थों में शरीर संबंधी किये गये वर्णन और शरीर पर होने वाले प्रभाव इस बात का संकेत करते हैं कि प्राचीन आचार्य शरीर विज्ञान के कुछ आयामों से अवश्य परिचित थे। आज इस बात की आवश्यकता है कि हम एक समन्वयात्मक दृष्टि से चिन्तन भी करें और वैज्ञानिक अनुसंधान भी। ये आसन जैसे दिखते हैं, उससे कहीं अधिक विशिष्टता लिये हुए हैं और योग

साहित्य में उनका वर्णन कुछ ऐसी भाषा में किया गया है, जो आधुनिक समय में या तो रहस्य माना जाय या वैचारिक क्लिष्टता। असंदिग्ध स्वरूप से उसका वर्णन करना बहुत आवश्यक है।

जैसा कि हमने ऊपर की पंक्तियों में लिखा है कि आसनों को कुछ व्यक्तियों ने व्यायाम का ही एक प्रकार मान लिया है और विशाल साहित्य भी इस दृष्टि से सर्जन किया है। शारीरिक शिक्षा के संबंध में हम अधिक विस्तार में न जाकर इतना ही निवेदन करना चाहेंगे कि 'यद्यपि आसन करते समय ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर पर कुछ प्रयोग हो रहे हैं तो भी वस्तुस्थिति यह है कि स्थूल शरीर के साथ लगी हुई ग्रन्थियों और उन ग्रन्थियों पर शरीर के होने वाले परिणाम उनका मस्तिष्क पर चित्त या मन पर भी होने वाला प्रभाव अभिप्रेत है। इसलिये अष्टाग योग क्रम में आसनों को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उसका एक निश्चित उद्देश्य सामने रखा गया है। यह बात जब शारीरिक शिक्षा के साथ आसन मिला दिये जायेंगे तो आ पायेगी या नहीं ऐसा कह सकना कठिन है। इससे किस प्रकार के लाभ लोगों को मिल सकेंगे, यह भी एक विवाद का विषय है।'

योग साहित्य में प्राणायाम करने से पहले आसन दृढ़ होना चाहिये ऐसा निर्देश है। अतः आसन कितने समय तक करना? कितने आसन करने? और किस हेतु से आसन करने? यह विषय अपने आप स्पष्ट हो जाता है। हठयोग प्रदीपिका में ऐसा उल्लेख है कि युवा, वृद्ध और दुर्बल कोई भी योगाभ्यास कर सकता है। वहाँ इस बात का निर्देश भी है कि अभ्यास करने की जिज्ञासा होना आवश्यक है। और शरीर की आवश्यकतानुसार जैसे हम आहार करते हैं उसी प्रकार शरीर की आवश्यकतानुसार आसनों का अभ्यास करना भी अभिप्रेत होगा। इसलिये योगशास्त्र में गुरु के महत्व को स्पष्ट किया है और गुरु के ही मार्ग दर्शन में अभ्यास करने का संकेत किया है। उदाहरण के लिये कोई साधक पहले दिन ही पद्मासन में पन्द्रह बीस मिनट सुविधापूर्वक बैठ सकेगा और दूसरा संभवतः पन्द्रह बीस दिन बाद भी न बैठ सके। इसलिये आसन-जय की कल्पना का अर्थ हम पतञ्जलि के स्थिरसुख शब्द से अच्छी तरह समझ सकते है। इन दो शब्दों ने योग की सर्व प्रकार की व्यापकता को मान्य कर लिया है और उसके साथ-साथ साधक को पूर्ण स्वतन्त्रता भी दे दी है। शरीर शास्त्र के शोधकर्ताओं के लिये योगशास्त्र का यह एक आह्वान है, 'शरीर की अवस्था सुखकर है या नहीं इसका अनुसन्धान कुछ व्यक्तियों ने करना आरम्भ किया है। परन्तु योग संबंधी साहित्य को सामने रखकर इस दृष्टि से व्यक्ति-निरपेक्ष निरीक्षण की आवश्यकता है।'

आसन करते समय योगाचार्यों ने आहार संबंधी जो संकेत दिये हैं उनसे केवल इस बात का संकेत मिलता है कि आहार का शरीर पर विपरीत परिणाम न हो, ऐसी दक्षता रखनी चाहिये। आधुनिक युग मे भी अल्पाहार, फलाहार, दुग्धाहार आदि की चर्चा हमें प्राप्त होती है। शारीरिक श्रम करने वाले का आहार और बौद्धिक कार्य करने वालों का आहार पृथक-पृथक बताया गया है। स्वाभाविक है कि योगाभ्यास करने वाले का आहार भी एक विशिष्ट प्रकार का ही होना चाहिये। सम्भवतः तात्पर्य यह रहा होगा कि योगाभ्यास की प्रक्रिया में जब शरीर में अन्दर ही अन्दर कुछ प्रयोग हो रहे हैं तो आहार की दृष्टि से संयत आहार होना बहुत आवश्यक है जिससे खाये हुए पदार्थों को पचाने में शरीर को विशेष श्रम न करना पड़े। साथ ही शरीर को अधिक से अधिक कार्यक्षम भी बनाया जा सके। शास्त्रकारों के शब्दों में जो 'संदिग्धता' दिखती है उसका हेतु यदि हम समझने का प्रयत्न करें तो यह स्पष्ट हो जायेगा। यहाँ पर भी ऊपर निर्दिष्ट आसन-जय की कल्पना या स्थिरसुख की कल्पना दुहराई गयी ज्ञात होती है। आहार से किसी प्रकार की उत्तेजना न हो इतना ही संकेत दिया है और इस संकेत से इस बात का बोध होता है कि योग मार्ग में साधकों को वैचारिक स्वतन्त्रता अभिप्रेत है। अपने शरीर की आवश्यकता समझना और उसके अनुसार आहार ग्रहण करना ही अभिप्रेत है।

आहार के साथ ही साथ थोड़ा सा वर्णन दैनिक दिन-चर्या संबंधी भी इंगित है। इसमें इस बात का संकेत मिलता

है कि शरीर को ज्यादा क्लेश नहीं देना चाहिये और योगाभ्यास करने का स्थान एकान्त में होना चाहिये। कुछ लोग यह शंका उठा सकते हैं कि आधुनिक व्यस्त जीवन में निर्दिष्ट मर्यादाओं का पालन करना असम्भव है। किन्तु साधारण सी वात है कि किसी भी कार्य के लिये कुछ न कुछ पथ्यों का पालन करना ही पड़ता है। इन्हीं पथ्यों में यदि हम योग की मर्यादाओं को मान्य कर लें, तो कोई आपत्ति न होगी। सभी संकेत जीवन की मर्यादाओं को सामने रख कर दिये गये थे। यदि छात्रावास में रहने वाला विद्यार्थी अपने कमरे में एकान्त और शान्त वातावरण वना सकता है और शरीर पर थोड़ा संयम रख सकता है तो योगाभ्यास करने वाला साधक एकान्त क्यों नहीं वना सकता?

योगशास्त्रों के अनुसार साधकों को एकान्त में तो रहना ही चाहिये परन्तु अपनी साधना की चर्चा भी इधर-उधर नहीं करनी चाहिये। विशेषत: आसन प्राणायाम करते समय मन में हीन भावना आने की सम्भावना है या अहंकार को आश्रय मिलने की भी। यदि साधक को कोई आसन करना न आ रहा हो तो सहयोगी उसे निराश कर सकते हैं। इसके विपरीत यदि कोई भली-भांति अच्छी तरह आसन कर पा रहा हो, तो लोग उसे योगी कहना आरम्भ कर देते हैं। दोनों अवस्थाएं साधक के लिये अहितकर हैं। यहाँ एक वात और स्पष्ट दिखायी देती है कि आजकल भारत और विदेशों में भी सामूहिक आसनों के प्रशिक्षण वर्ग चलाये जा रहे हैं और वहां पर आसन तथा प्राणायाम शारीरिक शिक्षा के स्तर पर ही सामूहिक रूप से किये जाते हैं। आधुनिक युग की समस्याओं को देखते हुए कुछ लोगों का एकत्र वैठकर आसन करना हानिकारक नहीं। परन्तु एक दूसरे के साथ तुलना करना या सभी आसन करने वालों में एकरूपता लाने का प्रयास करना, आसनों की मुख्य भूमिका के साथ अन्याय है। वास्तव में सभी साधनायें व्यक्तिगत साधनायें होती हैं और उन व्यक्तिगत साधनाओं में थोड़ा-सा साम्य देखने के वाद, वहीं तक ही सीमित रह जाना चाहिये। जव वहुत सारे लोग एक साथ मिलकर साधनारत होंगे या शारीरिक विकास की दृष्टि से भी प्रयत्नशील होंगे तो एक दूसरे से प्रेरणा लेने तक ही सीमित रखना महत्वपूर्ण होगा।

आचार्य हेमचन्द्र ने योग शास्त्र के चतुर्थ प्रकाश में वहुत सारे आसनों का वर्णन करने के पश्चात् ऐसा कहा है कि साधक जिस अवस्था में मन को स्थिर पा सकें उसी को अपना लें। यहाँ यह वात स्पष्ट होती है कि आसनों का अभ्यास करते समय शरीर पर किसी भी प्रकार का अन्याय न हो इस ओर विचारपूर्वक ध्यान देना होगा। पतञ्जलि का वर्णन करते समय स्थिरसुख के विस्तार में जो अड़चनें आयी संभवत: उसी प्रकार की कुछ अवस्था आचार्य हेमचन्द्र की भी रही हो। ये अड़चनें संभवत: उन आचार्यों को न रही होंगी। परन्तु कालान्तर में परम्परा का लोप हो जाने के वाद ये शाब्दिक अड़चनें हमें कुछ समय के लिये आभास मात्र दिखायी देती हैं। परन्तु यदि शरीर शुद्ध और संवेदन शील हो तो इस अड़चन का आभास भी अपने आप क्षीण हो जाता है। दूसरे शब्दों में सूत्र और श्लोकों की भाषा एक निश्चित परम्परा की ओर संकेत देती है और उस संकेत का अर्थ भी व्यक्तिगत अनुभव ही होगा।

आत्मा ज्ञाता है, द्रष्टा है इस मौलिक तत्व को विधिवत जानकर जीवन में एक ऐसी ज्योति जलाओ जिससे कलुपता की कुत्सित कारा कट जाये। कर्मों का क्लेश काफूर हो जाये, आत्म वोध का सूर्योदय हो जाये।

—गणि मणिप्रभसागर

श्री अगरचन्द नाहटा – व्यक्तित्व एवं कृतित्व

□

सूरजमल पुगलिया

प्रसिद्ध पुरातत्व वेत्ता मुनि जिन विजय जी ने श्री नाहटा जी को 'समव्यसनी' कहा है, श्री श्री रंजन सूरीदेव ने आपको शोधपुरुष, श्री देवेन्द्रकुमार जैन के शब्दों मे 'शोध योगी' और डा. नेमिचन्द्र शास्त्री के अनुसार वाङ्मय पुरुष थे। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आपको 'अवढर दानी' पुरातत्व मनीषी श्री वासुदेव शरण अग्रवाल ने 'अतिश्रेष्ठ कर्मठ साहित्यिक' इतिहास वेत्ता गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने 'खोज के बड़े प्रेमी' कहा है तो श्री चिम्मनलाल जी गोस्वामी ने उन्हें 'साहित्य-गगन का देदीप्यमान नक्षत्र' कहा है।

परम विदुषी साध्वीजी प्रवर्तिनी पद विभूषित श्री सज्जन श्री जी के अनुसार नाहटा जी एक आदर्श श्रावक, अथक परिश्रमी साहित्य सेवी और आध्यात्म साधक व्यक्ति थे। आपका जन्म श्रीमान् सेठ शंकरदान जी नाहटा के घर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चुन्नी देवी की कुक्षी से चैत्रमास की कृष्णा चतुर्थी को संवत 1967 में हुआ।

नामकरण–नाहटा जी का नामकरण उनके जन्म से पूर्व ही अगरचन्द नियत हो चुका था। हुआ यों कि नाहटा जी के पिता श्री ने आसाम में चापड़ नामक स्थान पर नया व्यवसाय राजरूप लक्ष्मीचन्द के नाम से प्रारम्भ किया। बाद में नाम बदलने की आवश्यकता पड़ने पर संवत 1966 में इस फर्म का नाम अभयकरण (नाहटा) अगरचन्द (सेठिया) हो गया। (बीकानेर) भीनासर के सेठिया अगरचन्द जी का नाम सहनाम के रूप में जोड़ा गया। पर नाहटों के मुनीम श्री मदारामजी सेठिया को इस अप्रत्याशित बात के भावी परिणाम को समझने में देर नहीं लगी और उन्होंने सेठ शंकरदान जी से निवेदन किया कि अब परिवार में अगर पुत्र उत्पन्न हो तो उसका नाम अगरचन्द रखा जाय। और इसी के फलस्वरूप 6 मास बाद पुत्र होने पर उसका नाम अगरचन्द ही रखा गया। आपके परिवार में आपसे बड़ी दो बहनें और चार भाई थे। आप सबसे अनुज थे।

शिक्षा–आपने अपना विद्यारम्भ श्री जैन श्वे.पाठशाला में शुरू किया और यही से पांचवी तक शिक्षा प्राप्त की। मारवाड़ी भाषा में एक कहावत है कि "पढ़योड़े नां सू मिणयोड़ो चइजे" यानि केवल पढ़ने से कुछ नहीं होता जब तक उस पर चितन न किया जाय किताबी ज्ञान का कोई उपयोग नही है। इस सूक्ति के अनुसार ही नाहटा जी ज्यादा पढ़े लिखे तो नही थे लेकिन बहुत उच्च कोटि के चिन्तनशील थे, और इसी चिन्तन के सहारे वे भारत के मूर्धन्य विद्वान बन पाये। श्री नाहटा जी ने बचपन में पढ़े एक दोहे को अपनी सफलता का आधार बताया।

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निशान॥

उनके शब्दों में "साधारण नीति के इस दोहे को स जानते हैं, पढ़ते हैं, सुनते हैं मगर कोई विशेष ध्यान नहीं देते मेरे मन ऐसा भाव हुई कि इस दोहे को मैंने केवल . नहीं, गुनगुनाया ही नहीं, यह तो मेरे प्राणों में बस गया अ जीवन के लिए, एक वरदान साबित हुआ।

साहित्य जगत में पदार्पण:–

श्री नाहटा जी का जन्म एक संपन्न व्यापारिक प

में हुआ और बचपन में शिक्षा छोड़ने के बाद आपको बोलपुर में दुकान पर भेज दिया गया तथा वहां बंगाली भाषा सीखने की व्यवस्था की गई, जिसे उन्होंने सीखा भी और कुछ समय तक व्यवसाय में लगे रहे। लेकिन इसी बीच वि. सं 1984 में जैन आचार्य श्री जिनकृपाचन्द सूरिजी का बीकानेर में चातुर्मासार्थ पधारना हुआ और संयोग से वे इनके पिताजी के बड़े भाई श्री दानमलजी नाहटा की कोटड़ी में ही ठहरे। बचपन से ही परिवार में धार्मिक वातावरण मिलने के कारण श्री नाहटा जी 17 वर्ष की तरुणावस्था में नित्य घण्टों तक श्री जिनकृपाचन्द सूरिजी म. सा. के सान्निध्य में बैठे रहते और उन्हीं की प्रेरणा से इनका जीवन साहित्य की ओर मुड़ गया। इधर आपके बड़े भ्राता अभयराज जी जो कि बड़े कुशाग्र बुद्धि के थे वे विद्यानुरागी थे, का असमय निधन हो जाने के कारण श्री शंकरदानजी ने उनकी स्मृति में 'अभय जैन पुस्तकालय के नाम से एक पुस्तकालय की स्थापना की जिसकी देखरेख भी तरुण अगरचन्द ने करनी प्रारम्भ कर दी। क्योंकि सभी बड़े भाई व्यवसाय में लगे हुए थे। इस प्रकार संयोग ऐसा बना कि इनका मन साहित्य में रमना शुरू हो गया और ऐसा रम गया कि प्रतिदिन 16 घण्टे तक का स्वाध्याय, मनन, चिंतन होने लग गया।

ग्रंथ संग्रह :–

आपने पिता श्रीमान् सेठ शंकरदान जी नाहटा द्वारा प्रारम्भ किए गए एक छोटे से पुस्तकालय को अपने भतीजे श्रीमान् भंवरलालजी (जो इनसे थोड़े ही छोटे हैं) के सहयोग से एक वट वृक्ष का रूप दे दिया, और आज यह स्थान शोधार्थियों के लिए एक मंदिर से कम पूजनीय नहीं है।

इतनी पुस्तकों का संग्रह कैसे सम्भव हो पाया इस सम्बन्ध में श्री नाहटा जी के कथनानुसार उस समय योग्य यतियों के अनेकों कुशिष्य बड़े महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ रद्दी वालों को बेच देते थे, उनसे फिर हम खरीद कर कई-कई दिनों तक उनकी छंटनी करते और उन्हें पुस्तकाकार रूप देते। इसके अलावा अनेकों व्यापारियों एवं दलालों की मार्फत भी जहां जाते पुस्तकें लेने का प्रयास करते। इसके अलावा कई बार कई व्यक्ति अनुपयोगी समझ कर कई प्राचीन पुस्तकें भेंट स्वरूप भी दे जाते।

शोध व अन्वेषण:—

जो शोधरस श्री अगरचन्द जी ने आचार्य कृपाचन्द सूरिजी महाराज एवं उपाध्याय सुखसागर जी से आस्वादित किया था उसकी ललक दिन प्रतिदिन बढ़ती गई और अधिक से अधिक प्राप्त करने की इच्छा से आप कहां-कहां नहीं गए ? श्मशानों में भटके, उजड़े उखड़े ध्वस्त अवशेष खण्डहरों में भयंकर भुजंगों के बिलों पर, गहन अंधकार में खोज की। भूखे,प्यासे चिलचिलाती धूप में मीलों पैदल गए, प्राचीन शिलालेखों को खोजा, उनकी नकल उतारी, छाया चित्र उतरवाये, वर्षों से बन्द किवाड़ों को आपने पवित्र कार्य हेतु खोला, और ऐसे भी कभी चमगादड़ से टक्कर होती, तो कहीं मधुमक्खियों से रार। शोध पथिक होने के कारण आप मंदिरों में गए, मस्जिदों में गए, ग्रथी तथा गुरुद्वारों में मस्तक झुकाया। उपाश्रयों के भाग्य विधाताओं का विश्वास अर्जित किया और वहां से पुरातत्व के महत्व की सामग्री को खोज निकाला। किसी कवि ने कहा है संसार में व्यसन तो अनेक हैं पर दो व्यसन श्रेष्ठ हैं–प्रथम विद्या और दूसरा प्रभुभक्ति। श्री नाहटा जी विद्याव्यसनी थे।

श्री नाहटा जी का रचना संसार–

श्री नाहटा जी ने हजारों अज्ञात कवियों को और बीस हजार से अधिक पाण्डुलिपियों को सारस्वत संसार के सम्मुख प्रस्तुत किया। जो सरस्वती छिन्न-भिन्न अवस्था में जीर्ण-शीर्ण होकर अन्धकार वृत्त थी उसे श्री नाहटा जी ने स्व कर-स्पर्श से स्वस्थ शुद्ध बनाकर सार्वजनीन बना दिया। उन्होंने अनेक ग्रन्थों की सारगर्भित एवं प्रमाण पुष्ट भूमिका प्रस्तावनाएं लिखकर नये नये तथ्यों का उद्‌घाटन किया। उनकी प्रवृत्ति शोध मुखी थी और इसलिए उनके द्वारा लिखित किसी भी लेख में वे अधिक से अधिक नये और अश्रुतपूर्व तथ्य प्रकाश में लाने का सदा प्रयास करते।

उन्होंने अपने विस्तृत अध्ययन, गहन चिन्तन और स्पष्ट निर्णायक प्रतिभा से सैकड़ों शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया।

भक्ति के क्षेत्र में नाहटा जी एक मुक्तक कवि रहे। उन्होंने अधिकांशत: जैन तीर्थंकरों के प्रेरणा प्रसून पावन जीवन चरित्र को अपने मुक्तकों व कविताओं का विषय बनाया।

आपने अपनी प्रथम पुस्तक 'विधवा कर्त्तव्य' के नाम से लिखी। उसके पश्चात आपने युगप्रधान श्री जिनचन्द सूरि, ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह, समय सुन्दर कृति कुसुमांजली, दानवीर सेठ भैरूदान जी कोठारी का संक्षिप्त जीवन चरित्र, युगप्रधान श्री जिन दत्त सूरि, राजस्थान मे हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज,-द्वितीय भाग, जसवंत उद्योत, क्याम खां रासा, बीकानेर के दर्शनीय जैन मन्दिर, श्री मद्देवचन्द्र स्तवनावली बीकानेर जैन लेख संग्रह, बम्बई चिन्ता मणी पार्श्वनाथा दी, स्तवन पद संग्रह, ज्ञान सार ग्रन्थावली, छिताई चरित, परीदान लालस ग्रन्थावली, जिन हर्ष ग्रन्थावली, जिनराजसूरि कृत कुसुमांजलि, धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली, सीताराम चौपाई, प्राचीन काव्यो की रूप परपरा, सभा शृंगार, पंच भावना थी सज्झाय सार्थ रत्न परीक्षा, दादा श्री जिन कुशल सूरि, भक्त माल सटीक, राजस्थानी साहित्य की गौरव पूर्ण परम्परा, मणिधारी श्री जिनचन्द्र सूरि, अष्ट प्रवचन माता सज्झाय सार्थ, ऐतिहासिक काव्य संग्रह, शिक्षा सागर, बी बी बांदी का झगड़ा, रुक्मणि मंगल, आदि। इस प्रकार उपरोक्त पुस्तको का संपादन श्री नाहटा जी ने स्वतंत्र रूप से एवं कई पुस्तकों का अपने भतीजे भंवर लाल जी के सहयोग से किया।

श्री नाहटा जी का कृतित्व केवल उपरोक्त वर्णित पुस्तकों तक ही सीमित नही है वरन् उन्होने लगभग 45 वर्ष तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लगभग छ: हजार लेख विभिन्न विषयों पर लिखे। वे प्रतिमास लगभग साठ पत्र-पत्रिकाओं में लिखते थे। वे ज्यों ज्यों वृद्ध होते गए उनका विवेक चिन्तन प्रौढ़ और लेखन-शक्ति अधिक सक्रिय और सबल होती गई। श्री नाहटा जी के लेखों को विषय वर्गीकरण की दृष्टि से हम निम्नांकित शीर्षक एवं उप शीर्षक दे सकते हैं।

(1) संदर्भ—

संदर्भ,-इतिहास, पुरातत्व एवं कला :- वे लेख नागरी प्रचारिणी पत्रिका, हिन्दुस्तानी, ज्ञानोदय, जैन धर्म प्रकाश आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

2. इतिहास-ये लेख महावीर सन्देश, जैन सिद्धान्त भास्कर, अनेकान्त राजस्थान भारती आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इसके अलावा जैन धर्म, संप्रदाय और गच्छों पर नाहटा जी ने जैन ध्वज, श्रमण, जैन सत्य प्रकाश, वीरवाणी और महावीर संदेश में लिखा है।

3. पुरातत्व-(नगर, तीर्थ, मन्दिर, शिलालेख आदि) इनका प्रकाशन धर्मदूत, शोध पत्रिका, कल्पना, लोकवाणी, जैन सत्य प्रकाश आदि पत्रिकाओं में हुआ है।

4. जैन जातियां और वंश, जैन महापुरुष, (साधु) जैन महापुरुष (श्रावक) आदि विषयों पर भी नाहटा जी ने राजस्थान क्षितिज, जैन जगत, वीर वाणी, प्रजामित्र आदि पत्रिकाओं में लिखा है। इसके अलावा जैन धर्म की अनेकों मान्यताओं और परम्परित विवेकानुमोदित पद्धतियों के समर्थन में भी अनेक लेख लिखे हैं।

5. साहित्य – उनका क्षेत्र मध्यकालीन भक्त कवि और कविताएं रहे हैं। उन्होंने दत्तचित्त से इन कवियों की कविताओं का अध्ययन मनन और अन्वेषण किया है। उन्होंने जैन और जैनेतर साहित्य पर समान भाव से अपनी कलम चलायी है। इस प्रकार के निबंधों में उन्होंने पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, तथा कल्पसूत्र आदि पर विशेष प्रकाश डाला है। उन्होंने संस्कृत साहित्य और साहित्यकारों पर भी पर्याप्त निबंध लिखे है। इसी प्रकार प्राकृत साहित्य, और साहित्यकार, अपभ्रंश साहित्य और साहित्यकार, तथा राजस्थानी साहित्य और साहित्यकारों पर भी अनेक लेख लिखे हैं। आलोचना साहित्य को भी अच्छी देन दी है।

6. आध्यात्म, आचार, शिक्षा, अर्थशास्त्र :—

ऐसे निबंधों में उन्होंने आत्मविस्तार और आत्मोन्नति पर जोर दिया है। उनकी शिक्षा थी 'आवश्यकताओं को कम करो' और 'कहना नहीं करना सीखो'। ऐसे लेख

कल्याण, जीवन साहित्य, अखंड ज्योति आदि पत्रिकाओं में छपे हैं।

परगुण दर्शन—

नाहटा जी एक अत्यन्त गुणग्राही व्यक्ति थे। उनके व्यक्तित्व में परगुण दर्शन और पर-महत्व प्रकाशन की अदम्य भावना थी। उनके द्वारा विविध विद्वानों को समर्पित ग्रन्थों की समर्पण भाषा से उक्त तथ्य की स्पष्ट अभिव्यंजना होती है। उनके ग्रंथ समर्पण की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि या तो उन्होंने दिवंगतों को समर्पण किया है, अथवा पारिवारिकों को, अथवा वीतराग सन्तों को या फिर उपयुक्त पात्रों को। उनके समर्पण मूल्यांकन से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि नाहटा जी ने कभी भौतिक समृद्धि अथवा किसी एषणा के निमित्त आदर्श और पात्रता का गला नहीं घोंटा। उनका समर्पण अन्तर्ध्वनि से अधिक और लौकिक तुष्टि से कम रहता था। यह उच्चस्तर की निष्काम सेवा भावना है, जिसकी आज सबसे अधिक आवश्यकता है।

विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रदत्त सम्मान—

आपके विद्यावैभव से प्रभावित होकर देश की अनेक संस्थाओं ने आपका सम्मान किया। जैन सिद्धान्त भवन, आरा ने आपको 'सिद्धान्ताचार्य' जिनदत्त सूरि संघ ने 'जैन इतिहास रत्न' दी इंटरनेशनल अकादमी जैन विजडम एण्ड कल्चर ने 'विद्यावारिधि,' मणिधारी अष्टम शताब्दी समारोह में 'संघ रत्न' और राजस्थान भाषा प्रचार सभा, जयपुर ने 'राजस्थानी साहित्य वाचस्पति' जैसी उपाधियों से विभूषित किया गया। देश की अनेकों संस्थाओं ने आपको अभिनन्दित किया।

इस मरुभूमि का यह मतीरा सरस्वती पुत्र हमें मिती 12 जनवरी 1983 को छोड़कर इस नश्वर संसार से चला गया लेकिन इतनी सुगंध छोड़ गया है कि आने वाली अनेकों पीढ़ियां इनकी सुगंध से सुरभित होती रहेंगी।

बाह्य प्रकाश अन्धकार युक्त है। जबकि भीतर का प्रकाश, केवल प्रकाश है। वहां अन्धकार का नामोनिशान नहीं होता।

बाह्य प्रकाश सापेक्ष होता है जबकि भीतर का प्रकाश निरपेक्ष होता है। उसका साक्षात्कार होने पर अन्धकार उपस्थित नहीं रहता। वह प्रकाश ही परमात्मा का प्रकाश है।

□

व्यक्ति के मस्तिष्क में सत और असत् दोनों तरह की विचारधारायें बहती हैं। कुछ पल पूर्व करुणा के विचार आते हैं तो थोड़ी देर बाद हिंसक भावनायें उभरती हैं। दोनों तरह की परस्पर विरोधी धारायें मस्तिष्क से टकराती हैं।

जब कोई विचारधारा सघन बनती है तो वह अन्य विचारधारा पर हावी हो जाती है और सघन विचारधारा आचरण में रूपान्तरित हो जाती है।

धार्मिक प्रवचन, हमारी सद्विचारधारा को प्रोत्साहित करते हैं ताकि असत् विचारधारा शांत हो जाये।

—गणि मणिप्रभसागर

उपधान--ज्ञान प्राप्ति का अपूर्व पुरुषार्थ

□

ज्योतिकुमार कोठारी

'अज्ञानी जीव बाल तपादि के द्वारा एक लाख करोड़ भव में जितने कर्मक्षय करता है, तीन गुप्ति से गुप्त ज्ञानी साधक उतने कर्म मात्र एक श्वासोश्वास मे क्षय कर देते हैं।' उपर्युक्त बात से ज्ञान की महत्ता स्पष्ट हो जाती है। सम्पूर्ण जैन वाङ्मय ज्ञान-ज्ञानी की परम उपादेयता व अज्ञान की हेयता का प्रतिपादन करता है। सिमासियाइं सूत्र के अनुसार अज्ञान महादुःख है, अज्ञान से भय उत्पन्न होता है, एवं संसार भ्रमण का मूल कारण अज्ञान ही है। निशिथचुर्णि-भाष्यं मे अज्ञान को आभ्यंतर पंक कहा गया है। समयसार के अनुसार अज्ञानी जीव ही कर्म का कर्त्ता है। आचारांग सूत्र तो अज्ञानी जीवों का साथ करने का भी स्पष्ट निषेध करता है। उत्तराध्ययन सूत्र की साक्षी से यह कहा जा सकता है कि अज्ञानी जीव अनंतवार संसार में जन्म-मरण करते हैं। इस भयकर दुःख-मूल अज्ञान रूप अधंकार को दूर करने वाला ज्ञान रूप सूर्य है। उपाध्याय श्री यशोविजयजी ने ज्ञानसार मे आत्मा सम्बन्धी अज्ञान को दुःख का एवं आत्मज्ञान को सुख का कारण कहा है। उन्होंने ज्ञान को तृष्णा रूप काल-सर्प के लिये गरुड़ के समान प्रतिपादित किया है।

ज्ञान ही सर्व धर्म क्रियाओं का मूल है। ज्ञान के अभाव में चरित्र भी नहीं है। दया धर्म का मूल स्रोत ज्ञान ही है। इसीलिये कहा गया है कि पहले ज्ञान होता है पीछे दया। ज्ञान युक्त आचरण से ही मोक्ष प्राप्त होता है। महान् अध्यात्म योगी श्रीमद्देवचन्द जी ने तो ज्ञानोपयोग की तीव्र धारा को चरित्र एवं ज्ञान मे तन्मयता को ही ध्यान बताया है। भगवती सूत्र में क्रियाहीन ज्ञानी को भी सर्व से आराधक व देश से विराधक कहा है। आगमों में बहुश्रुत को दुष्कर कारक से भी अधिक कहा है।

ज्ञान आत्मा का सहज स्वभाव है। यह क्षायिक भाव में केवल ज्ञान के रूप मे प्रकट होता है, जबकि क्षायोपशमिक ज्ञान मति, श्रुत, अवधि व मन पर्यव है। इन पांच सम्यग्-ज्ञानों को ही जैन शास्त्रों में प्रमाण माना है। इन में भी चार ज्ञान अव्यक्त हैं। मात्र एक श्रुतज्ञान ही व्यक्त है। केवल ज्ञान की अभिव्यक्ति भी श्रुत के आधार पर ही होती है। इसलिये श्रुतज्ञान को ही सर्वश्रेष्ठ उपकारी कहा गया है। इसे दीपक, सूर्य, चन्द्र व मेघ के समान परम उपकारी व स्व पर प्रकाशक माना गया है। केवलज्ञान सर्व द्रव्यों के सर्व पर्यायों को प्रकाशित करता है। जगत में अनंत गुणे हैं। उनकी अपेक्षा भी अनंत गुण जानने की शक्ति केवलज्ञान में है। यद्यपि श्रुतज्ञान की इतनी शक्ति नहीं है, फिर भी अनंत द्रव्य एवं उनके सर्व अभिलाप्य पर्यायों को श्रुतज्ञान के द्वारा जाना व बताया जा सकता है। श्रुतज्ञान के पर्याय भी अलोकाकाश के अनंत प्रदेशों की अपेक्षा अनंत गुणा हैं। श्रुतज्ञान की विशिष्ट शक्ति का बोध इतने मात्र से हो सकता है कि जगत की सर्वश्रेष्ठ लब्धियां एवं अणिमादि अनेक सिद्धियां विशिष्ट श्रुतज्ञान (चवदह पुर्वधर) को प्रयत्न के बिना भी स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। श्रुत के विशिष्ट अभ्यास से ही धर्मध्यान सुलभ होता है। ध्यानशतक के अनुसार जिन्हें सूत्र व अर्थ स्वनामवत् परिचित होने लगते हैं, उनमें धर्मध्यान की योग्यता उत्पन्न होती है। श्रुत का एक-एक

शब्द अनंत अर्थ से युक्त है। हरिभद्रसूरि महाराज ने जिनागम के प्रत्येक पद को अनंत गम व पर्याय से युक्त बताया है। केवलज्ञान प्राप्ति का असाधारण कारण शुक्ल ध्यान भी विशिष्ट श्रुतधर को ही होता है। श्रुतज्ञान के इस महत्त्व के कारण ही स्वाध्याय साधक जीवन का सर्वाधिक महत्त्व पूर्ण अंग रहा है। उत्तराध्ययन सूत्र में साधक आत्मा को प्रतिदिन 4 प्रहर स्वाध्याय करने का निर्देश दिया गया है। उपासक दशांग सूत्र में गणधर गौतम की दैनिकचर्या का अंग बताते हुये इसी बात की पुष्टि की गई है। स्वाध्याय के समान तीनों कालों में कोई दूसरा तप नहीं हो सकता है। स्वाध्याय की शक्ति को ध्यान में रखते हुये इसे विशिष्ट कोटि का अभ्यंतर तप माना गया है।

वाचना, पृच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा व धर्मकथा रूप पांच प्रकार के स्वाध्याय से सभी कर्मों के बंध शिथिल होने की बात को स्वीकारा गया है। विशेष रूप से इसके द्वारा ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है। प्रतिक्रमण, पच्चक्खाण, नियम, आलोचना आदि भी वचनमय होने से स्वाध्याय ही हैं। श्रुत एवं स्वाध्याय का ऐसा विशिष्ट महत्त्व होने के कारण श्रुतज्ञान प्राप्ति का विधिपूर्वक प्रयत्न अवश्य करना चाहिये। ज्ञान प्राप्ति के आठ आचारों में मुख्य है उपधान। भगवती सूत्र में योगोद्वहन अर्थात् उपधान पूर्वक ही श्रुत पढ़ने का अधिकारी कहा गया है। आगमों में 'काहं अछित्ति अदुवा अहीहं, तवोवहाणेसु य उज्जमिस्सं' आदि गाथाओं के द्वारा तप व उपधान में उद्यमवंत रहने की भावना को व्यक्त किया गया है।

संसारी जीव अनादि काल से आहारादि संज्ञा व पांच इन्द्रियों के विषय के पीछे पागल बना हुआ है। उपधान में तप के द्वारा आहारादि संज्ञा का व संयम के आचरण (प्रचलित शब्द क्रिया) द्वारा इन्द्रियों विषय का प्रत्याहार होता है। साथ ही अरिहंत भक्ति के शुभ अध्यवसायों से दर्शन विशुद्धि होती है। इस प्रकार शुभोपयोग में प्रवृत्त व अशुभ से निवृत्त साधक ही वास्तव में श्रुतज्ञान का अधिकारी होता है। इस प्रकार प्रमाद रहित साधक वह श्रुत गीतार्थ गुरु के पास से अपने योग्य श्रुत की शिक्षा प्राप्त करता है। उद्देश-समुद्देश-अनुज्ञा के द्वारा गुरु शिष्या में श्रुत का संचार करते हैं। सूत्र की व्याख्या करते हुये गुरु पहले उसका स्पष्ट उच्चारण बताते हैं। (1) फिर उसके अलग-अलग पद बताते हैं। (2) तदनन्तर पदों के अर्थ व (3) समासबद्ध पदों को अलग-अलग करते हैं (4) फिर विशेष समझाने के लिये उसमें प्रश्न उठाते हुये उसमें असंगतता की संभावना करते हैं। (5) एवं अंत में युक्ति पूर्वक उस असंगतिका निवारण करते हैं। (6) जिससे शिष्य को शंका आदि का स्थान न रहे व विशेष निपुण मति बने। शिष्य भी विनय सहित वंदनादि पूर्वक प्रवृत्ति करे। (1) जिज्ञासा (2) गुरुयोग (3) विधिपरता (4) बोध परिणति (5) स्थैर्य (6) उक्त क्रिया व (7) अल्पभवता नामक व्याख्या के सात अंग से युक्त शिष्य ही सम्यग् श्रुत बोध प्राप्त कर सकता है। निम्नलिखित आठ गुणों से युक्त शिष्य श्रुत ज्ञान प्राप्त कर सकता है। (1) हंसी-मजाक नहीं करना (2) इन्द्रिय व मन का दमन करना (3) किसी का रहस्योद्घाटन न करना (4) अशील (आचार रहित) न होना (5) निःशील (दोषों से कलंकित) न होना। (6) अति रस लोलुप न होना। (7) अक्रोधी रहना तथा (8) सत्यरत होना। इसके विपरीत (1) अभिमान (2) क्रोध (3) प्रमाद (4) रोग व (5) आलस इन पांचों कारणों से शिष्य ज्ञान प्राप्ति से वंचित हो जाता है। गुरुकुलवासी, समाधि, युक्त प्रिय, प्रियभाषी एवं उपधान तप करने वाला अवश्य ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

बत्तीस योग संग्रह (विशिष्ट गुणों का संग्रह) में सूत्रार्थ ग्रहण, रूप ग्रहण शिक्षा व आचारादि पालन रूप आसेवन शिक्षा का अभ्यास करने का समावेश किया गया है। तप व उपधान पूर्वक श्रुताभ्यास करने वाले को विशिष्ट कोटि का धार्मिक कहा गया है। इस प्रकार श्रुतज्ञान का विशिष्ट महत्त्व समझकर उसकी विधि पूर्वक प्राप्ति के लिये उपधान करना श्रावक जीवन का परम कर्त्तव्य है। श्रुत की प्राप्ति व निरंतर अभिनव ज्ञान प्राप्ति की अभिलाषा तीर्थंकर नाम कर्म जैसी सर्वोत्कृष्ट पुण्य प्रकृतिबंध का कारण है। बीसस्थानक में ज्ञान के अलावा अभिनव ज्ञान व श्रुत नामक दो

पदों का समावेश इनके महत्त्व का प्रबल सूचक है। ऐसे विशिष्ट पद की आराधना में उद्यमशील व्यक्तियों को श्रुतज्ञान की 14 आशातनाओं का भी अवश्य त्याग करना चाहिये।

(1) वाइद्धं – पाठ आगे-पीछे बोलना (2) वच्चा-मेलियं – शून्य मन कई बार अथवा इधर-उधर का पाठ मिला कर बोलना (3) हीनक्खरं – कम अक्षर (4) अच्चक्खर – अधिक अक्षर (5) पदहीणं – पद छोड़ दिये हों (6) विनयहीणं – विनय रहित (7) जोगहीणं – उपधान किये बिना अर्थात् योग रहित (8) घोषहीण – घोष रहित (9) सुट्ठु दिण्णं – योग्यता से अधिक पाठ शिष्य को देना (10) दुट्ठं पडिच्छियं – बुरे भाव से ग्रहण करना। (11) अकालेकओ सज्झाओ – अकाल में जिस समय पढ़ने का समय न हो उसी समय स्वाध्याय किया (12) कालेनकओ सज्झाओ – स्वाध्याय के काल में स्वाध्याय नहीं किया (13) ए सज्झायं – अस्वाध्याय अर्थात् 34 सज्झाय में से कोई असज्झाय हो उस समय स्वाध्याय किया (14) सज्झा न सज्झायं – स्वाध्याय के समय में स्वाध्याय न किया।

समर्पण, सजगता की निशानी है, ममता सागर है। समर्पण सहज नही है, अभ्याससाध्य है। आप परमात्मा को भी आदेश दे सकते हैं परन्तु इसके लिये आपको परमात्मा के प्रति समर्पित होना पड़ेगा। राम हमारे जीवन के आदर्श हैं। रामायण के द्वारा हमें जीवन के हर पहलू का कर्त्तव्य-बोध होता है।



हमारी हर क्रिया के पीछे तुच्छ स्वार्थों का घेरा रहता है। इन्ही तुच्छ स्वार्थों के कारण हमारे सद्गुणों का स्तर उन्नत नहीं बन पाता। आज मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत होकर विपरीत दिशा में बढ़ रहा है। इन तुच्छ स्वार्थों से मानवता का ह्रास हो रहा है। देखने में आता है कि मनुष्य तुच्छ स्वार्थ के कारण चरित्र तथा नैतिकता त्याग देता है।

मनुष्य को स्वार्थों से ऊपर उठकर परोपकार, मानव-सेवा और नीतिगत आयामों से अपने आप को जोड़ना चाहिये।

—गणि मणिप्रभसागर

जैन दर्शन का आकर ग्रन्थ : प्रवचन सारोद्धार

□

साध्वी अमितयशा

'प्रवचन सारोद्धार' तीन शब्दों से बना हुआ नाम है। प्रवचन+सार+उद्धार। जैसा इसका नाम है वैसा ही इसका काम है। 'प्रवचन' शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त होता है, जैसे प्रवचन यानि जिनशासन....जिनवाणी.... जिनागम आदि। यहां प्रवचन का अर्थ है जिनागम। सार अर्थात् निचोड़। उद्धार यानी उद्धरण, धारण करना–अर्थात् जिसमें समूचे जिनागम का निचोड़ हो वह 'प्रवचन सारोद्धार' कहलाता है।

वास्तव में इसका नाम सार्थक एवं यथार्थ है। इस ग्रंथ में आगम रूप समुद्र के सारभूत प्राय: सभी विषयों की चर्चा है। यह बात इसके अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है।

मूल ग्रन्थ के प्रणेता आचार्यदेव श्री नेमिचन्द्र सूरि हैं। टीकाकार हैं सिद्धसेन सूरि।

मूल ग्रन्थ प्राकृत भाषा में है। कुल मिलाकर इसकी 1599 गाथायें हैं।

अपनी गुरु परम्परा का वर्णन ग्रन्थकार ने स्वयं ने इसी ग्रन्थ की प्रशस्ति में स्पष्ट रूप से किया है।

धम्मधराधरण महावराह जिणचन्दसूरि सिस्साणं।
सिरि अम्मएव सूरीण, पायपंकयपराएहिं ।। 1595.।।
सिरि विजयसेणराणहर, कणिट्ठसिरिजसदेव सूरि जिटेठेहिं।
सिरि नेमीचन्द सूरींहि, सविणयं सिस्सभणिएहिं ।। 1596 ।।

इससे स्पष्ट हैं कि ग्रन्थकर्त्ता के पू. गुरुदेव आम्रदेवसूरि तथा प्रगुरु जिनचन्द्र सूरि हैं। इनके दो गुरुभाई हैं–बड़े विजय सेनसूरि और छोटे यशोदेव सूरि।

आपका समय विक्रम की बारहवीं शताब्दी है। समय का निर्णय स्वयं आपके ग्रन्थों से हो जाता है। आपके द्वारा रचित मुख्य तीन ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं।

1 उत्तराध्ययन की सुखबोधा टीका 2. महावीरचरित्र और 3. प्रवचन सारोद्धार।

1 उत्तराध्ययन टीका विक्रम संवत 1129 में रची गई आपकी सर्वप्रथम रचना है। इसकी रचना पाटण में, दोहट्टि श्रेष्ठी की वसति में रहकर की थी। इस बात का उल्लेख ग्रन्थ के अन्त में आचार्य श्री ने स्वयं ने किया है।

अणहिल्लपाढक नगरे, दोहट्टि श्रेष्ठिसत्क वसतौ।
संनिष्ठता कृतेयं, नवकरहर वत्सरे चैव ।।

उनकी दूसरी कृति श्री महावीर चरित्र है। जिसका रचनाकाल वि. सं. 1141 है। यह ग्रन्थ भी पाटण में ही रचा गया था। यह चरित्रग्रन्थ प्राकृत भाषा में है। देखिये महावीर चरित्र की प्रशस्ति—

अणहिलवाडपुरम्मि, सिरिकण्णनराहिवंमि विजयन्ते।
दोहट्टि कारियाए, वसहीर संठिएणं च ।।
वाससयाणं एक्कारसण्ह, विक्कमनिवस्स विरायाणं।
अगुयाली से संवच्छरंमि, एवं निवंद्धंति।

पूर्वोक्त दोनों ही कृतियां एक ही नगर और एक ही स्थान में रची गई हैं। दोनों के रचनाकाल में बारह वर्ष का अन्तर है।

इन दोनों ग्रंथों में रचनाकाल और रचना स्थान दोनों का स्पष्ट उल्लेख है। पता नहीं प्रस्तुत ग्रन्थ में इसका

उल्लेख क्यों नहीं किया ? फिर भी इन ग्रंथों के रचनाकाल से यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि प्रस्तुत ग्रंथ का रचनाकाल भी बारहवीं शताब्दी ही है। तथा इन दोनों ग्रंथों मे बाद में रचा गया है। कारण, उत्तराध्ययनवृत्ति एवं महावीरचरित्र की प्रशस्ति में ग्रंथकार के गुरुदेव आम्रदेव सूरि के लिये जो विशेषण दिया है उसमे स्पष्ट है कि जब ये ग्रंथ रचे गये, वे उपाध्याय थे। आचार्यपद पर प्रतिष्ठित नही हुए थे। यथा—

विश्रुतस्य महीपीठे, बृहद्गच्छस्य मण्डनम्।
श्रीमान् विहारुकपृष्ठ. सूरिरुद्योतनाभिधः ॥2॥
तस्य शिष्योऽम्रदेवो ऽभूदुपाध्यायः मतां मतः।
यत्रैकान्तगुणापूर्णे. दोषैर्लेभे पद न तु ॥2॥

उत्तराध्ययन-टीका—

महावीर चरित्र में भी यही बात है—

'उज्जोअण सूरिस्स य सीसो, अह अम्मदेवउज्झाओ।' किन्तु प्रवचनसार की प्रशस्ति में अपने गुरु के लिये आचार्यपद का स्पष्ट निर्देश है।

'सिरि अम्मएव सूरीण, पायपंकयपराएहि।'

अर्थात् प्रवचनसार की रचना के समय ग्रंथकर्त्ता के गुरुदेव आचार्य बन चुके थे। इससे सिद्ध होता है कि प्रस्तुत ग्रंथ पूर्वोक्त दोनों ग्रथो के बाद बना है।

इन ग्रथों की प्रशस्ति मे ग्रंथकार की गुरु परम्परा के बारे में दो बातें सामने आती हैं। उत्तराध्ययन-टीका एवं महावीर-चरित्र के अनुसार नेमिचन्द्र सूरि के दादा गुरु उद्योतन सूरि हैं, प्रस्तुत ग्रंथ मे उनका नाम जिनचन्द्र सूरि है। प्रश्न है कि ये दो नाम एक ही व्यक्ति के हैं या अलग-अलग व्यक्तियों के हैं। यदि एक ही व्यक्ति के दो नाम मान लिये जाय, जैसे कि नेमिचन्द्र सूरि के स्वयं के अलग-अलग स्थानों पर दो अलग-अलग नामो का उल्लेख है। उत्तराध्ययनवृत्ति मे उन्होंने अपना नाम 'देवेन्द्रगणि' लिखा है, किन्तु वीरचरित्र में एवं प्रस्तुतग्रथ मे नेमिचन्द्र सूरि है। ऐसी स्थिति में गुरु परम्परा इस प्रकार बनेगी उद्योतनसूरि (जिनचन्द्रसूरि) — आम्रदेवसूरी और नेमिचन्द्रसूरि। किन्तु यदि दूसरा पक्ष मान लिया जाय तो ग्रंथकार की गुरु-परंपरा इस प्रकार रहेगी। जिनचन्द्रसूरि, आम्रदेवसूरि तथा नेमिचन्द्रसूरि।

यदि उद्योतनसूरि और जिनचन्द्रसूरि दो अलग-अलग व्यक्ति हैं तो एक बात और माननी पड़ेगी कि पूर्वोक्त तीनों ग्रंथों का रचयिता भी एक नहीं है।

विद्वान् ग्रन्थकर्त्ता का जन्म कब और कहां हुआ था ? दीक्षा कब और कहां ली थी ? आपके माता-पिता कौन थे ? आप किस जाति के थे ? आपका विहार क्षेत्र कौनसा रहा ? आपका शिष्य परिवार कितना और कैसा था ? ये प्रश्न आज तक अनुत्तरित ही है। इन प्रश्नों को समाहित करने वाला कोई भी चिह्न नजर नहीं आता। यदि कोई इतिहास विज्ञ अपनी प्रतिभा का उपयोग इन तथ्यों को उजागर करने में करें तो इतिहास की बहुत बड़ी सेवा होगी।

आपकी ग्रंथरचना का काल देखते हुए स्वर्गवास का अनुमानित काल बारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध ही ठहरता है।

प्रवचनसार के टीकाकार :—

जिस प्रकार चाबी से ताला खुलता है, वैसे टीकाकार अपनी बुद्धिरूप चाबी से ग्रन्थकर्त्ता के भावों को खोलकर रख देता है। दूसरों के भाव को स्पष्ट करना आसान बात नहीं है। यही टीकाकार की सफलता है। इस ग्रंथ के टीकाकार हैं सिद्धसेनसूरि। इनके बारे में समय एवं रचना के अतिरिक्त और कुछ भी विदित नहीं है। उनका समय विक्रम 13 वीं शताब्दी है। प्रस्तुत ग्रंथ की टीका से स्पष्ट हो जाता है।

करिसागररवि संख्ये, श्री विक्रमनृपतिवत्सरे चैत्रे।
पुष्यार्कदिने शुक्लाष्टम्यां वृत्ति समाप्ताऽसौ ॥'

टीका का समापन वि. सं. 1248 की चैत्र सुदी 8 रविपुष्य के दिन हुआ था।

'सिद्धसेन' नाम के तीन आचार्य हुए है। प्रश्न है कि इस ग्रंथ के टीकाकार कौन से सिद्धसेन है ?

प्रथम सिद्धसेन जो सिद्धसेन दिवाकर के नाम से प्रसिद्ध हैं, दूसरे तत्वार्थ वृत्तिकार सिद्धसेन हैं। ये दोनों इसके टीकाकार नहीं हो सकते। कारण प्रथम सिद्धसेन विक्रम के

समकालीन हैं। तत्वार्थवृत्ति को कई जगह प्रवचनसार की टीका में प्रमाण रूप से उद्धृत किया है अतः दूसरे सिद्धसेन भी इसके टीकाकार नहीं हो सकते। स्पष्ट है कि इसके टीका कर्त्ता पूर्वोक्त दोनों सिद्धसेन से भिन्न हैं। आपके द्वारा रचित और भी ग्रंथों के नाम मिलते हैं—1. सामाचारी 2. पद्मप्रभ-चरित्र 3. स्तुतिग्रंथ।

मूल ग्रन्थ—

मूल ग्रन्थ प्राकृतभाषा में है। श्लोकवद्ध है। कुल मिलाकर इसके 1599 श्लोक हैं। जैसा कि इसका नाम है, इसमें मुख्य सभी विषयों की चर्चा है। ग्रन्थ की प्रतिपादन शैली प्राचीन है। प्रत्येक विषय को द्वार-प्रतिद्वार के द्वारा समझाया गया है। इस ग्रन्थ को देखने से लगता है कि विषय-संग्रह की दृष्टि से यह ग्रन्थ 'सागर' है। विषय से संबंधित सभी उप-विषयों का जिस खूबी से इसमें संग्रह हुआ है यह ग्रन्थकार की सूक्ष्म-बुद्धि, संभावना-शक्ति एवं प्रतिभा का परिचायक है।

इसमें कुल मिलाकर मुख्य द्वार 276 हैं। इसमें सामान्य से सामान्य विषय जैसे चैत्यवन्दनादि, गंभीर से गंभीर विषय जैसे कर्म, नवतत्व, पुद्गल, लोक संरचना, अध्यवसाय स्थान आदि की भी चर्चा है। वास्तव में ग्रन्थकार की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। विविध विषयों का एक साथ इतना बड़ा संग्रह अन्यत्र कहीं नहीं है।

मूल ग्रन्थ की तरह टीका का भी अन्वर्थक नाम है 'तत्त्व विकाशिनी'। वास्तव में यह तत्त्व का विकास करने वाली विशद एवं विशाल व्याख्या है। विषय को सरल, सुबोध रीति से प्रस्तुत करना, गंभीर विषय को रुचिकर बनाना, टीकाकार की विशेषता है। इस दृष्टि से सिद्धसेन सूरि पूर्ण सफल हैं।

पदार्थ को समझाने की उनकी शैली बड़ी उपयुक्त है। जिसे समझाना है सर्वप्रथम उसकी व्याकरणसम्मत व्युत्पत्ति देंगे। फिर उसके पर्यायवाची देकर सरल-सुबोध भाषा में अर्थ और भावार्थ देंगे। ताकि सामान्य-व्यक्ति भी आसानी से समझ सके। जैसे 'शीलांग' को समझाना है तो सर्वप्रथम शब्दों को अलग करके उनका अर्थ बतायेंगे – शील=संयम, अंग=अंश। अब इसका सरल अर्थ बता दिया – 'चारित्र के कारणभूत धर्म – आचरण 'शीलांग' कहलाते हैं। फिर उनके भेद प्रभेद बताकर स्पष्ट किया है। भावना को समझाते हुए प्रथम 'भाव्यते' इति भावना, व्युत्पत्ति दी। बाद में अर्थ बताते हुए कहा भावना – 'परिणामविशेषाः इति।' इस प्रकार समझाने की बड़ी सुगम शैली अपनाई है।

आपकी भाषा साहित्यिक है, प्रवाहबद्ध है। शैली सुगम किन्तु विवेचनात्मक है। टीका पढ़ने से लगता है कि आप व्याकरण और साहित्य के तो प्रकाण्ड विद्वान् हैं ही, आपका न्याय-दर्शन का ज्ञान भी कोई कम नहीं है। नय-निक्षेप-कर्म इत्यादि की चर्चा में उन्होंने नैयायिकों की शैली का भरपूर उपयोग किया है। तथा दार्शनिक चर्चा भी छेड़ी है। विषय को और अधिक स्पष्ट बनाने हेतु टीकाकार ने स्वयं अपनी ओर से प्रश्न उठाये और हाथोंहाथ समाधान भी दे दिया है।

276 मूलद्वार में कई द्वार ऐसे हैं जो एक दूसरे से संबंधित हैं। ग्रन्थ पढ़ने पर मालूम हुआ कि संबंधित द्वारों की व्यवस्था क्रमबद्ध नहीं है। अलग-अलग बिखरे हुए हैं। समझ नहीं आता कि ग्रन्थकार ने संबंधित द्वारों को क्रमबद्ध व्यवस्थित क्यों नहीं किया। इस ग्रन्थ को मैंने कई बार पढ़ा। पढ़ा ही नहीं अनुशीलन परिशीलन भी किया। इससे एक चिन्तन उभरा कि – एक दूसरे के पूरक, परस्पर संबंधित द्वारों को एकत्र संकलित कर विषय के अनुरूप नाम देकर 'विभाग बना दिये जाय' तो व्यवस्थित काम होगा। पढ़ने वाले को एक ही विषय की सम्पूर्ण सामग्री एक स्थान पर मिल जायगी। अन्यथा संबंधित द्वारों को अलग-अलग स्थानों पर खोजना पड़ता है। चैत्यवन्दन....साधु श्रावक संबंधी जो भी द्वार हैं उन्हें एक ही क्रम में जोड़ दिया जाय ताकि उनका एक विभाग बन जाय। अगर विधि संबंधी द्वार हैं तो उन सभी को मिलाकर एक नाम दे दिया जाय 'विधि विभाग'।

पढ़ते समय इस बात का पूरा ध्यान रखा कि कौन-कौन से द्वार परस्पर संबंधित हैं और एक साथ जोड़े जा सकते हैं। यह भी विचार आया कि इसे हिन्दी में अनूदित कर दिया जाय और संबंधित द्वारों का अलग-अलग विभाग

बनाकर उन्हें क्रमशः व्यवस्थित कर दिया जाय तो बहुत ही उपयोगी काम होगा।

मेरा परम सौभाग्य है कि 'प्रवचनसारोद्धार' को पढ़ते समय मैंने जो कल्पना की थी, वह पू. गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा. के अथक प्रयास ने सार्थक कर दी। मेरा सपना पूरा कर दिया। उन्होंने इस ग्रन्थ का बडी गहराई से अनुशीलन-परिशीलन किया। अलग-अलग बिखरे सम्पूर्ण द्वारों को विषयबद्ध किया। 276 द्वारों को कुल मिलाकर नौ भागों में बांट दिया। फिर समूचे ग्रन्थ का सरल-प्रोजल और प्रवाहबद्ध भाषा मे अनुवाद किया। हिन्दी भाषा में अनूदित यह ग्रन्थरत्न आशा है शीघ्र ही प्रकाशित हो, जिज्ञासुओं को अतीव उपयोगी बनेगा।

9. विभाग—

1. विधि विभाग, 2. आराधना विभाग 3. सम्यक्त्व और श्रावक धर्म 4. साधु धर्म 5. जीव स्वरूप 6. कर्म साहित्य 7. तीर्थंकर 8. सिद्ध 9. द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव।

1. विधि विभाग: इसमे 9 द्वार है।

1. चैत्य 2. वंदन 3. प्रतिक्रमण 4. प्रत्याख्यान 5. नियमिक 6. कृतिकर्म सख्या 7. रात्रिजागरण विधि 8. आलोचना दायक गुरु अन्वेषण और 9. स्वाध्याय-अकाल।

2. आराधना विभाग—

1. बीस जिननाम स्थानक 2 विनय भेद 3. ब्रह्मचर्य 18 भेद 4. इन्द्रिय जयादि तप 5. परिषह 6. कायोत्सर्ग 7. महाव्रत भावना 8. अशुभ भावना।

3. सम्यक्त्व और श्रावकधर्म—

1. समकित के 67 भेद 2. सम्यक्त्व के प्रकार 3. सूत्र और सम्यक्त्व 4. सम्यक्त्व के आकर्ष 5. गृहस्थ धर्म के भांगे 6. श्रावक की प्रतिमा 7. प्राणातिपात के 243 भेद 8. 108 परिणाम 9. गृहस्थ के 124 अतिचार 10. श्रावक के 21 गुण।

4. साधुमार्ग—

1. साधु के 27 गुण 2. अठारह हजार शीलांग 3. चरणसतरी 4. करण सतरी 5. महाव्रत संख्या 6. क्षेत्र विषयक चारित्र संख्या 7. निर्ग्रन्थ पंचक 8. श्रमण पंचक 9. भवनिर्ग्रन्थ संख्या 10. आगमादि 5 व्यवहार 11. जंघा-विद्याचारण गमनशक्ति 12. आचार्य के गुण 13. चतुर्गतिक निर्ग्रन्थ 14. दीक्षा-अयोग्य पुरुष 15. दीक्षा अयोग्य स्त्री 16. दीक्षा अयोग्य नपुंसक 17. विकलांग स्वरूप 18. स्थविर कल्पी के उपकरण 19. साध्वी के उपकरण 20. वस्त्रमूल्य 21. वस्त्र ग्रहण विधान 22. चोलपट्टकादि 23. दंडक पंचक 24. तृण पंचक 25. चर्म पचक 26. दुष्यपंचक 27. अवग्रह पंचक 28. उपधि का प्रक्षालन 29. भिक्षामार्ग 30. शय्यातर पिंड कल्प्य 31. शय्यातर पिंड अकल्प्य 32. पिंडैषणा-पानैषणा 33. ग्रासैषणा पचक 34. भोजन के भाग 35. क्षेत्रातीत अकल्प्य 36. मार्गातीत अकल्पय 37. कालातीत अकल्प्य 38. प्रमाणातीत अकल्प्य 39. स्थंडील भेद 40. परिष्ठापना स्थंडिलादि-दिशा 41. साधु विहार स्वरूप 42. अप्रतिबद्ध विहार 43. वसति शुद्धि 44. वृषभादि द्वारा वसति ग्रहण 45. स्थितकल्प 46. अस्थित कल्प 47. जात-अजातकल्प 48. दुखशय्या 49. सुखशय्या 50. शुद्ध -अशुद्ध वस्तु से गुरु सेवा 51. ओघ समाचारी 52. मांडली 7 53. छेदग्रन्थ समाचारी 54. प्रायश्चित 55. दशविध समाचारी 56. भाषा के चार प्रकार 57. सोलहवचन 58. छः प्रकार की अप्रशस्त भाषा 59. संलेखना 60. जिन कल्पी के उपकरण 61. एक स्थान में जिनकल्पी कितने 62. यथालंदिक स्वरूप 63. परिहार विशुद्धि।

5. जीवस्वरूप विभाग —

1. जीव के 14 प्रकार 2. अजीव के 14 प्रकार 3. जीव संख्या 4. मनुष्य गति के अयोग्य 5. एकेन्द्रिय-विकलेन्द्रिय-संज्ञी 6. जीवों की काय भव स्थिति 7. एक समय में जन्म-मृत्यु (एकेन्द्रिय आदि) 8. देवता 9. एक समय में जन्मने वाले नारक 10. एक समय मरने वाले नारक 11. देवों की स्थिति 12. देवों के भवन, देवों का प्रविचार 13. नरक 14. नरकावास 15. नरक में जीवों का उत्पाद 16. वेदना 17. परमाधामी 18. नरक से निकले हुए क्या हो सकते हैं? 19. पन्द्रह कर्मभूमि 20. तीस अकर्मभूमि 21. अंतरद्वीप 22. शरीर प्रमाण (एकेन्द्रियादि का) 23. देवों का

24. नारक का 25. आयुष्य (नरक का) 26. इन्द्रिय स्वरूप (एकेन्द्रियादि का) 27. लेश्या (एके.) 28. देवों की 29. नरक की अवधिज्ञान 30. देवों का 31. नारक का 32. एके. आदि की गति 33. आगति 34. गति देवों की 35. आगति 36. एके. का विरह 37. देवों का जन्म विरह 38. मृत्यु विरह 39. नरक का जन्म मृत्यु विरह 40. जीवों की कुलकोटि 41. जीवों की योनि। संज्ञा 42. दश 43. पन्द्रह 44. चार 45. तीन 46. भरत क्षेत्र के अधिप 47. बलदेव 48. वासुदेव 49. प्रतिवासुदेव 50. युग प्रधान 51. प्राण दश 52. पर्याप्ति 6 53. आहार-उच्छ्वास काल 54. अनाहारक 55. आहारक-शरीर 56. वैक्रियकाल 57. समुद्घात 58. अपहरण-अयोग्य 59. मरण 60. लब्धि 61. जीव-अजीव का अल्पबहुत्व 62. तिर्यंचस्त्री की गर्भ-स्थिति 63. मनुष्यस्त्री की गर्भस्थिति 64. गर्भ की काय-स्थिति 65. गर्भ का आहार 66. गर्भोत्पत्ति का काल 67. एक साथ कितने गर्भ 68. एक गर्भ के कितने पिता ? 69. कितने समय बाद स्त्री-पुरुष अबीज बनते हैं 70. शुक्र-रुधिर ओजस आदि का परिमाण 71. मनुष्य-भव के लिये अयोग्य।

6. **कर्मसाहित्य विभाग—**

1. आठकर्म 2. उत्तर प्रकृति 3. पुण्य प्रकृति 4. पाप प्रकृति 5. बंध-उदय-उदीरण सत्ता 6. स्थिति-अबाधा 7. गुण स्थान 8. गुणस्थान में परलोक गति 9. गुणस्थान का काल 10. उपशम श्रेणि 11. क्षपक श्रेणि 12. मार्गणास्थान 13. योग 14. उपयोग 15. भाव 6 16. षट्स्थान 17. सम्यकत्व चारित्रादि अन्तर 18. आठ प्रमाद 19. आठ मद.

7. **तिर्थकर विभाग—**

1. भरत-ऐरवत जिननाम 2. आदि गणधर नाम 3. प्रवर्तिनी नाम 4. माता-पिता नाम 5. माता-पिता गति 6. उत्कृष्ट जिनसंख्या 7. उत्कृष्ट जन्म संख्या 8. गणधर 9. मुनि 10. साध्वी 11. वैक्रियवर 12. वादी 13. अवधि-ज्ञानी 14. केवली 15. मन पर्यवी 16. चौदपूर्वी 17. श्रावक 18. श्राविका 19. यक्ष 20. यक्षिणी 21. शरीर प्रमाण 21. लंछन 23. वर्ण 24. दीक्षा परिवार 25. सर्वायु 26. शिवगमन परिवार 27. निर्वाणस्थान 28. अन्तराल 29. तीर्थ-च्छेद 30. दश आशातना 31. चौरासी आशातना 32. प्रातिहार्य 33. अतिशय 34. दोषापगम 35. जिनचतुष्क 36. दीक्षातप 37. ज्ञानतप 38. निर्वाणतप 39. भाविजिन 40. शाश्वतप्रतिमा 41. अन्तिम जिनतीर्थ काल

8. **सिद्ध विभाग—**

1. ऊर्ध्वादि सिद्धसंख्या 2. एक समय सिद्ध संख्या 3. सिद्धभेद 4. सिद्ध अवगाहना 5. गृहिलिंगादि सिद्ध संख्या 6. बतीसादि सिद्ध संख्या 7. त्रणवेद सिद्ध संख्या 8. सिद्ध संस्थान 9. सिद्ध अवस्थिति 10. उत्कृष्ट अवगाहना 11. मध्यम अवगाहना 12. जघन्य अवगाहना 13. अन्तर 14. सिद्ध के 31 गुण।

9. **द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव—**

1. षड्द्रव्य 2. छः अनंत 3. चौदह रत्न 4. नवनिधान 5. कल्पवृक्ष 6. पातालकलश 7. तमस्काय 8. चैत्यपंचक 9. पुस्तकपंचक 10. प्रासुक जल काल 11. धान्य की अबीजता 12. क्षेत्रातीत की अचित्तता 13. धान्य के नाम 14. भक्ष्य 15. लोकस्वरूप 16. आर्यदेश 17. अनार्य देश 18. नन्दी-श्वर द्वीप 19. अष्टकृष्णराजी 20. लवण शिखाप्रमाण 21. मानोम्मान प्रमाण 22. उत्सेधाँगुलादि 23. पल्योपम 24. सागरोपम 25. अवसर्पिणी 26. उत्सर्पिणी 27. पुद्गल परावर्त 28. पूर्वांग 29. पूर्वपरिमाण 30. मासपांच 31. वर्ष पांच 32. सप्तनय 33. तीन सौ त्रेसठ पाखंडी 34. कियास्थान तेरह 35. सातभयस्थान 36. पापस्थानक 18 37. कामी भेद 38. अष्टांगनिमित्त 39. दश आश्चर्य 40. दश स्थान विच्छेद 41. चौदहपूर्व।

इस प्रकार द्वारों को विषयबद्ध कर नौ भागों में व्यव-स्थित कर दिया गया। फिर प्रतिद्वार समेत टीका का हिन्दी में अनुवाद हुआ।

वास्तव में यह ग्रन्थ आकर ग्रन्थ है। उपयोगी सभी विषयों का एक स्थान पर संग्रह, सामान्य लोगों के लिये बड़ा ही ज्ञानवर्धक है।

इस ग्रन्थ का अधिकाधिक स्वाध्याय कर तत्त्वजिज्ञासु आत्मा श्रुतज्ञान को आत्मसात् करें यही शुभेच्छा है।

Unknown Becomes Known



Madhu Baid

Man by his nature is influenced in his life every second, and so we are influenced by such changes that do not let us to be resolute and become static. But when we view such a personality or when we come in contact with such a dignified person then our unavoidable desire arise to view that dignified personality each day and every time, and them we have to accept this fact and the truth that one who is akin to permanency can only appreciate the splendour and the beauty one wants to be continuously near to that personality.

It was my luck. It was not but is, that I got a golden chance to view such a dignified personality whose simple smile, introduces to us, nature's blessed splendour and glory which is absolutely different from the glamours, noisy, tumultous and oscillating world leaving for us on this planet an honoured creature filled with finer values of human generocity, innocence and sublime thoughts.

We know that this unavoidable personality will leave *along with her saintly brigade* for another destination, but the deep influence she has induced to us will remain permanent only when we follow her foot-prints.

Then and then only we can do justice to *our being. It we swallow* and digest even a small part of her human character, etiquette manners, virtue, self discipline, conduct and behaviour, we can then make our life happy and blessed. She has sown the holy seeds of true religion and we have to irrigate and cultivate them in order to achieve that which is benevolent to our being.

In Madhya Pradesh in the district of *Shahajpur on Vikram Samwat* 2002, sawan sudi 10 she was born. From her very childhood she was thoughtful, generous hearted, unflinching, nimble, restless and had deep absorbing insight. Her birth was destined for the progress of Jain Dharma—a new star was there on the Earth.

Nobody was aware of fact that this baby girl was to become a stolwart to hold the standard of Jainism high.

Shriyut Gendmal ji Bhandawat is her father's name. Her mother Chandbai was to be known later as Jai Prabha Shree ji M. S. and today we bow our heads before this exalted person. But the object my reverence was form-*erly known as Fateha Kanwar* and today we know her as Hem Prabha Shree ji M. S.

From her very childhood spiritual reality was peeping through her every childhood activity.

At the delicate age of five the *seeds of* religion sprouted in her being. One of the

reason she explains is that the environment of the family was quite strange to eat, drink and be merry, way of living and she never thought of a life that was quite different from, she got from her parents. She received her early education by her Guruvaria Anubhav Shree ji M. S. And then her full attention was rivetted on renunciation of the world.

The more she knew about the miserable world the more she became well determined to become immune of wordly lures. The mighty task of magnifying her as a Sadhvi was done by her Guruvaria Anubhav Shree ji. At the tender age of ten on Vikram Samwat 2012 Vishak Sudi Dashame she was considered absolutely fit to hold the responsibilities of the world unknown to us. Such a wonderful thing was that!

In the presence of Guruvaria Shree her spiritual virtues, qualities started budding out. She read all the holy books with a deep and minute sense, with the purpose of sincerity and absorbed their contents fully. In the presence of Guruvaria Shree she studied Gujrati, English, Sanskrit and Prakrit literature and Grammer. The she even studied Nyaya, Philosophy, Acharang Sutra, Utra - adhyan sutra etc. etc. . . . . . . and so on. She subjected herself to introspection a deep introspection !! She then took the degree of M. A. in Philosophy.

Our old mother Earth is never empty. She yields a lot of things for the benefit of her children everytime. It is up to her children to us her gifts as a boon. This is possible only when we get a proper guide who teaches us what is right and what is wrong. This is possible only when we are inclined to move from darkness to light. And as soon as we come to light we start knowing pearls huddled together with so many like stones.

And I have no hesitation to admit that I have found a pearl in white apparel.

From her very childhood she was versatile and her face showed the signs of being genius. Her life is well garnished to the entire satisfaction of life she is living whatever she is, she is worth of her choice, she is worth of our necessity, and we need her with all our limited abilities.

She was high, she is higher and higher and higher, she will be, I am sure, still more high, not only for herself but also for us and all.

Her person imbibed with sambhaav invites humility from those who are atheist and non-believers, she is an architect of shaping our Antahakarana, in a desirable way that is all due to her dynamism.

She as a whole is quiet and sober. Her disposition is a compact of powerful forbearance and peerless sympathy and on her serene face lingers the all time familiarity. She is impartially frank to everybody and her frankness is never injurious to anyone. She is a running stream and everybody can experience it. No bad words, no bad remarks, no violent gesture get an outlet through her face.

The style of her oratory in Pravachan is picturesque and makes everybody all spell bound and her spirit pervades into the atmosphere. There is no such word that is un-understandable.

In her simple and joy yielding Pravachans the shattered minds find their last destination. They find a new way in a natural way. They hear her and they find their lost self. They want to hear her again and again.

She has a strong desire for the welfare of the people. Welfare of the people not in the form of present day conception but in the sense of true welfare of the people dictated by the Masters. She inspires a strong desire to develop modesty renunciation and the knowledge of the reality of the world with compassion and piety and to be religious abinito. We don't find a show in her simplicity, Aparigrah and Ahinsa.

According to her it is undesireable to give importance to sectarian aspects of religion. I have not felt it once but many a times. Where-ever she keeps, she keeps herself above sectarian considerations and so she invites respects from Hindus, Muslims, Christians, Shvetambars, Digambars.

When love occupies its seat in a human heart it demolishes walls of religious hatred and so preaches love and talk about real value about human capacity irrespective of the degrees and the wealth acquired. She invites our attention to the fact that we may pay respect to and honour deserving people and give impetus to their abilities, so that our country may progress towards prosperity quickly and satisfactorily without leaving violent sears on our society.

She is clear in her conceptions, that if our youth are inspired to go through our holy books including the books of Jain Dharma's thoughts and characters then of course they can bring for us a heaven of happiness.

The reality and truth which is bound up by time and space are well known affairs for her. But the steps which she has taken to advance are simple for her whereas they are a subject of astonishment for us.

She gives a deep impression on people. After hearing her pravachans every one gets lost in the depth of those words. Her Pravachans are so potential that many people have changed their way of life and I know that noting so many good characteristics in her many have became her disciples.

Her first disciple Kalplata Shree ji M. S. is from Bikaner, who renounced this world and became a Sadhvi on Feb. 11, 1975. After this Priyamvada Shree ji M. S., Amityasha Shree ji M. S., Vinit Pragya Shree ji M. S. Shrudhanjana Shree ji M. S. Shubranjana ji Shree M.S., Yoganjana Shree ji M.S. and the one to become a Sadhvi on Jan. 29, 1989 is our Shobja ji are all her devotee and disciples. They all are impossession of all the qualities that represent the object of my adoration-Hem Prabha Shree ji M. S.

She speaks sweetty, walk swiftly, tolerates patiently and is unaffected by wordly perceptions. She has a unquenchable thirst for knowledge. She is always there seeking knowledge.

At many places she gives religious knowledge through Gyan shivirs. Through these camps she gives good knowledge to budding minds of children.

Through this updhan she has shown a way through which the people may arise and get something healthy from that.

Since I am wordless to express the greatness of her since my abilities are not able to touch her depth and heights. I still wish that she may become a mighty instrument for our welfare for the times to come. Her spiritual being may soar higher and higher day after day.

These are my feelings and thousands and thousands of adorations are for her.

कल कल बहता झरणे-सा जीवन : पू. गुरुवर्या श्री



प्रदीप कोचर

पूजा उसकी करें प्रेम हो जिसमें छलाछल ।
पूजा उसकी करें हृदय हो जिसका निर्मल ।।
'श्रमणसूर्य'

उच्च स्तर के महान कार्य करने वालों को महापुरुष कहते हैं । महापुरुषों के जीवन में क्रोध, मान, मोह, लोभ, छल, स्वार्थ व अहंकार आदि का अभाव सा रहता है । उनका हृदय नवनीत के समान कोमल एवं निर्मल होता है ।

जिस प्रकार कमल कीचड़ में उत्पन्न होकर भी उससे पूर्णत: मुक्त रहता है तथा अपने सौन्दर्य से समस्त संसार को आकर्षित करता है, उसी प्रकार महान् आत्माएं ममता मोह के पंक से परिपूरित इस संसार में जन्म लेकर भी सांसारिक बन्धनों से स्वयं को पूर्णत: निर्लिप्त रखती हैं । ये सत्य व ज्ञान की खोज में ईश्वर तथा मुक्ति की प्राप्ति के प्रयास में मानव समाज को उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करने के लिये दृढ़ संकल्प लेकर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर हो जाती हैं । उनका व्यक्तित्व एक ऐसे प्रभा मण्डल का निर्माण कर देता है जिसका प्रकाश मानवता के लिये ध्रुव नक्षत्र बन जाता है ।

भारतीय संतों की ऐसी सुदृढ़ परम्परा में जन्म लेकर श्री 1008 श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. ने सद्धर्म की स्थापना का संकल्प ग्रहण कर मानव समाज को कृतार्थ किया है । महाराज साहब के दर्शन अत्यन्त शुभ एवं मंगलकारी हैं । आपके मुख पर अनोखी कान्ति, नेत्रों में अनोखी ममता, वाणी में अनोखा माधुर्य तथा चरित्र में अनुपम तेज के दर्शन होते हैं । ऐसे महिमामय व्यक्तित्व की उपस्थिति ही दुर्गुणों के विनाश तथा सद्गुणों के प्रसार के लिये पर्याप्त होती है । जन मानस में नवीन चेतना का विकास आपके जैसे अनुपम व्यक्तित्व के प्रभाव का ही परिणाम होता है ।

ऐसी दिव्य विभूति श्री 1008 श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. का जन्म उज्जैन नगर में हुआ । आपकी मातुश्री का नाम श्रीमती चन्द्रकंवरी बाई वर्तमान में साध्वी जयप्रभा श्री जी म. सा. है तथा पिताश्री का नाम गेंदमल जी था । खेलने खाने की अवस्था में ही आपको सिद्धि प्राप्ति का अनोखा भाव उत्पन्न हुआ और अपने मन को सांसारिकता से हटाकर ब्रह्मचर्य तथा साधना के मार्ग में लगा दिया । वि. सं. 2012 में केवल 10 वर्ष की अवस्था में ही पाली मारवाड़ में आपने दीक्षा ली । इसके उपरान्त बड़ी दीक्षा भी वि. सं. 2012 में लेकर आप धर्म तथा मुक्ति के मार्ग पर पूर्णत: समर्पित हो गयीं । आपकी दीक्षा गुरुवर्या श्री अनुभव श्री जी म. सा. अपने नाम के अनुरूप आत्म साधक, दृढ़ संकल्पी, आत्मध्यानी, स्वाध्याय प्रेमी तथा प्रतिक्षण अर्हम् का जाप करने वाली थी । गुरुवर्या श्री जी का स्वभाव सरल व शान्ति प्रिय था । किसी भी प्रकार के आडम्बर को आप प्रोत्साहन नहीं देते थे । आपके पास जो भी जाता उनसे आप मात्र आत्म कल्याण व धर्म ज्ञान की चर्चा करते थे । यह बड़े गौरव की बात है कि गुरुवर्या श्री जी आपके पूज्य पिताश्री के बुआजी थे । गुरुवर्या श्री जी का आशीर्वाद व अपार स्नेह सदा आप पर रहा । दीक्षा लेने के बाद आपने अध्ययन मनन का कार्य जारी रखा । संस्कृत, दर्शनशास्त्र, न्याय विशारद आदि के साथ-साथ आपने सन् 1974 में दर्शनशास्त्र में एम. ए. की उपाधि भी प्राप्त की ।

श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. अपने गुरुवर्या श्री अनुभव श्री जी म. सा. आदि का आशीर्वाद लेकर वि. सं. 2032 सन् 1975 को बीकानेर दीक्षा महोत्सव में पधारे। आपके सान्निध्य में तीन बालिकाओं ने दीक्षा ली। उनमें से एक श्री कल्पलता श्री जी म. सा. (कुसुम गुलगुलिया) आज आपके प्रमुख तेजस्वी शिष्याओं में से एक है। आपने दीक्षा से पूर्व बचपन से ही श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. के श्री चरणों में रहकर ज्ञान अर्जित किया था। श्री कल्पलता श्री जी के बुआजी स्व. श्री पूर्णप्रभा श्री जी म. सा. तथा दादीजी श्री विनयप्रभा श्री जी म. सा. पहले से ही इस साध्वी मंडल में हैं। कल्पलता श्री जी म. सा आपके सान्निध्य में रहकर ज्ञानार्जन कर रहे हैं।

मैं आपके तथा विनोद श्री जी म. सा. जो सांसारिक संबंधों की दृष्टि से आपकी बडी बहन है, के दर्शन, प्रवचन, मार्गदर्शन व ज्ञान चर्चा से अत्यन्त प्रभावित रहा हूँ। जय-प्रभा श्री जी म. सा. (माताजी म. सा.) आप अहर्निश तप, ध्यान तथा माला मे लीन रहते है। आपका आशीर्वाद पाने मात्र से पापो का नाश, धर्म का उदय हो जाता है। मुझे आपके दर्शन, प्रवचन तथा मार्गदर्शन का जो सौभाग्य समय-समय पर मिलता रहा वह मेरे लिये अत्यन्त सौभाग्य का विषय है।

आपके प्रेरणादायी प्रवचनों का यह चमत्कार है कि श्रोतागण (श्रावक एव श्राविका) मंत्र-मुग्ध होकर आपके धाराप्रवाह प्रवचन का लाभ लेते रहते हैं। आपके प्रवचनों का लाभ जैन समाज ही नही अपितु सभी समुदायों के लोग उठाते हैं। आपके द्वारा कई मन्दिरों की प्रतिष्ठायें तथा जीर्णोद्धार सम्पन्न कराये गये हैं। शहर रामा में नूतन मन्दिर दादावाडी का निर्माण कार्य आपकी प्रेरणा से ही सम्भव हुआ।

आपने जहाँ-जहाँ भी चौमासा सम्पन्न किया वहाँ-वहाँ त्याग, तपस्या, धन, धर्म तपस्या की भागीरथी बह गई। तपस्या शिविरों तथा ज्ञान शिविरों का आयोजन हुआ, बच्चो व बूढ़ों में धर्म की ज्योति जगी तथा धर्म में विश्वास की फिर से स्थापना हुई। आपकी अद्‌भुत शान्ति के कारण ही श्रावक-श्राविका आपके दर्शन एवं प्रवचन के लिये दूर-दूर से आते रहते हैं। आपकी मधुर वाणी व प्रभावशाली भाषा शैली मे ऐसी शक्ति है कि आपके सम्पर्क में आते ही सांसारिक दुख, राग व द्वेष स्वतः ही विस्मृत हो जाते हैं और व्यक्ति मंत्र,मुग्ध होकर आपके निर्देश में आत्म-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है।

आप केवल प्रवचनकार ही नही अपितु कुशल पथ प्रदर्शक एवं सफल साहित्यकार भी हैं। आपके द्वारा लिखित, सम्पादित एव अनुवादित कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। आपके द्वारा विरचित सत्साहित्य हम श्रावकों के पथ को सर्वदा आलोकित करता रहेगा।

हम बीकानेर वालों की विनती पर आपने जब पाली में फरमाया कि अगला चौमासा सन् 1988 का बीकानेर में होगा, तब हमारे मन में हर्ष की लहर छा गयी। आप अपने 11 ठाणों के साथ भीषण गर्मी की परवाह किये बिना बहुत बड़े-बड़े विहार करके बीकानेर की मरुभूमि पधारे। हम बीकानेर वालों का यह सौभाग्य रहा है कि आपके ज्ञान पूर्ण प्रवचन, मधुर वाणी में सुनने को हमें मिले। आपके तत्वाव-धानों में शिविरों, ज्ञानशिविरों तथा उपधान आदि का आयोजन हुआ उनका अनोखा लाभ हम सभी श्रावकों को प्राप्त हुआ। जिसके परिणामस्वरूप हमारे विचारों का परिष्कार हुआ तथा आत्मा की शुद्धि हुई। हमारी धर्म के के प्रति आस्था दृढ हुई, निष्ठा प्रबल हुई, यह सभी आपके सान्निध्य का ही चमत्कार है।

आपके अनुपम गुणों का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान तुच्छ प्रयास होगा। आपका व्यक्तित्व तो सागर के समान अथाह, हिमगिरि के समान उच्च, असंख्य फूलो के सौरभ से सुरभित है।

ऐसे श्रद्धेय श्री 1008 श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. के चरणों मे श्रद्धा युक्त वन्दन तथा शत-शत नमन। हम बीकानेरवासियों को आपका यह अमृत सान्निध्य सदा सर्वदा उपलब्ध रहे, ऐसी मेरी कामना है।

धरम धरा री जीवट गिणगोर

□

सूरजराज जैन

बीकाणै री धर्म धरा पर आ कुण प्रगटी जीवट गिणगोर ?
ज्ञान ध्यान तपस्या डंका बाजण लाग्या नित पुरजोर।

- १ -

संजम सूं आ निखरी सूरत, लागै मकराणे सी साची मूरत,
गुरुवर्या हेम प्रभा रा पगल्या, वणग्या ईं धरती री कीरत।
ईं ज्ञान ध्यान री गंगा रो, सिगला ही पीयो चरणामृत,
हरखी बाळू माटी निजमन, गीतड़लों सूं की आगत सागत।
दरशण नै गली नूक्कड़ माथै वेथाग भीड़ खड़ी कर जोड़-बीकाणै री धर्मधरा

- २ -

आ शाजापुर री फतै कंवर, निकली तज वाल पणै घरवार,
करमों रा वंधण काटण नै, संजम चित मन सूं लियो साध।
गुरुवरीया अनुभव श्री जी रै, अनुभव रो जीभर कर्‌यो पान,
जैनागम री पोथ्यों पढ़ पढ़, हिवड़ै में भरियो ज्ञान ध्यान।
जिण-धर्म नाद करण खातर संकल्प जीवण सूं जोड़-वीकाणै धर्म धरा

- ३ -

वरसों सूं काल कसूंबो उस, धरती नै कर दी ही जर जर,
लोगों री पीड़ मिटावण नै, कुण धरम वीर रैयो हाजर।
कुण जाण्यो इसी ज्ञान गंगा, सींचैला ईं धरती रो कण कण,
आ सूतै मरूधर रो भाग जगा, वीकाणो कर दियो धरमनगर।
खुशियाली टपकै हर चैरे सिगला ही वंधग्या धरम डोर-वीकाणै री धर्म धरा

- ४ -

नाना टावरिया अर नौजवान, सिगलों नै धरम प्रशाद दियो,
जिण धरम रो पाठ पढ़ावणनै, शिविर रो सूणो लाभ दियो।
तपस्या री लागी झड़ी इसी सिगलो संताप कपूर हुयो,
उपधान जिसे महातप नै, मावीर भवन में सरु कियो।
ईं चौमासै री सूत्र-धार, वणगी आ हेम प्रभा सिरमोर-वीकाणै री धर्म धरा

प. पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्री जी के आगमन पर
स्वागत गीत



गीत : सूरजराज जैन   संगीत : शिव रतन सैन

है धन्य भाग्य हम सबके आज गुरु दर्शन हुआ सुनहरा
सब स्वागत करे तिहारा....

तुझ सी विभूति को पाकर के, शांजापुर धन्य कहाया
जय हो जय हो जय हो....

नन्हीं किसलय ने खिलते ही संयम को गले लगाया
तप ज्ञान ध्यान अरु संयम से निज रूप सदा ही संवारा
सब स्वागत करे तिहारा

गुरु अनुभव श्री का अनुभव को तुम ज्ञान मूर्त बन पायी
जय हो जय हो जय हो....

पथ भूले को निज ज्ञान रश्मि से पावन राह दिखाई
तुम निज शासन सेविका बन जिन धर्म ध्वज फहराया
सब स्वागत करे तिहारा....

प्रभुवर के उपदेशों से ही निज अन्तर मन को ही सजाया
जय हो जय हो जय हो

जीयो और जीने दो का पाठ जन जन को तुमने पढ़ाया-२
नूर सत्य अहिंसा का मधुरिम वाणी से जग को सुनाया
सब स्वागत करे तिहारा....

मरु-भूमि बीकानेर की तुमको पाकर हर्ष मनाये,
जय हो जय हो जय हो....

हे संयम शीला अब तो बस ज्ञानामृत पान करा दे-२
स्वर्णिम अध्याय बने इतिहास में वर्षा वास हो प्यारा
सब स्वागत करे तिहारा....

बीकानेर के कलात्मक जैन मन्दिर



पन्नालाल खजांची

मरुभूमि बीकानेर पिछले 500 वर्षों से जैन धर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। बीकानेर नगर की स्थापना आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व वैसाख सुदी 2, वि. सं. 1545 को की गई। बीकानेर राज्य की स्थापना में जैन श्रावकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। राव बीका जब नवीन राज्य की स्थापना करने के लिए जोधपुर से चले थे तो उनके साथ उनके विश्वस्त साथी और सलाहकार थे जिनमें तीन ओसवाल वत्सराज बछावत, लाखणसी वैद व सूरजमल कोठारी भी थे। राज्य की स्थापना के बाद बच्छावतजी यहां के दीवान, वैद जी सेनानायक व कोठारी जी कोठार के व्यवस्थापक बने।

राज्य की स्थापना हो जाने पर जिस शुभ मुहुर्त में बीकानेर राज्य के प्राचीन दुर्ग की नींव रखी गई उसी शुभ मुहुर्त में यहां के जैन श्रावकों ने नगर के प्रथम जिनालय की नींव रखी और संवत 1561 में इसका प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। यहां से जो विकास की गति प्रारम्भ हुई वह संवत 2002 तक निर्बाध गति से चलती रही और इस बीच बीकानेर नगर में 27 जिनालयों की स्थापना हुई व आज भी जैन संस्कृति की यह अनमोल धरोहर यहाँ सुरक्षित है। अब हम इन जिनालयों के स्थापना काल एवं उनकी भव्यता के बारे में संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

1. श्री चिन्तामणिजी का मन्दिर (कन्दोई बाजार)–

इस जिनालय को नगर का सर्वप्रथम एवं सबसे प्राचीन मन्दिर होने का गौरव प्राप्त है। इसके नामकरण के विषय में कहा जाता है कि पूर्व में यह चउविसटाजी के मंदिर के नाम से जाना जाता था, क्योंकि इसमें मूलनायक भगवान आदिनाथ की सर्वधात की प्रतिमा के परिकर में चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियां बनी हुई हैं। धीरे-धीरे अपभ्रंश होता गया और वर्तमान में यह श्री चिन्तामणि जी के मन्दिर के नाम से विख्यात है।

मूलनायक–इस मन्दिर में जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं मूलनायक के रूप में भगवान आदिनाथ की सर्वधातु की उठाऊ प्रतिमा है, जो कि मंडोर (मारवाड़ की राजधानी) से लाकर यहां स्थापित की गई है। इसकी प्रतिष्ठा श्री जिन-कुशल सूरिजी द्वारा संवत 1380 में सम्पन्न कराई गई थी। **बीकानेर में प्रतिष्ठा** :—उपरोक्त वर्णित प्रतिमा इस मंदिर में वैसाख सुदी 1 वार रवि संवत 1561 को स्थापित की गई।

पुनः प्रतिष्ठा–

बीकानेर राज्य के तत्कालीन नरेश राव जैतसी के समय हुमायूं के भाई कामरां ने बीकानेर पर आक्रमण करके यहां के गढ़ पर अपना अधिकार कर लिया एवं धर्मान्धता के कारण इस मन्दिर की प्रतिमाजी के परिकर को खण्डित कर दिया। इसके कुछ ही दिनों बाद मिगसर वदी 4 संवत 1591 की अर्द्ध रात्रि में जैतसी ने अपने चुने हुए सरदारों के साथ मुगलों पर आक्रमण करके उन्हें यहां से खदेड़ दिया। चूंकि परिकर खण्डित हो गया था अतः इसकी पुनः प्रतिष्ठा करना आवश्यक हो गया और शुभ मुहूर्त में श्री जिन माणिक्य सूरिजी के हाथों संवत् 1592 में इसकी पुनः प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय बच्छावत परिवार द्वारा कराई गई, ऐसा उल्लेख परिकर पर उपलब्ध है।

अन्य प्रतिमाएं–मूलनायक जी के अलावा इस मंदिर के गर्भ गृह में हाथी पर भरत और माता मरुदेवी की मूर्तियां है तथा दायें व बायें एक-एक पाषाण प्रतिमाएं है। सभामंडप की देहरियों में पाषाण प्रतिमाएं स्थापित हैं। मंदिर के बायी ओर की भमती में संवत 1905 में स्थापित श्री जिनहर्ष-सूरि जी के चरण हैं, तत्पश्चात श्री जिनदत्त सूरि जी की मूर्ति, उसके पश्चात, पीले पाषाण की चौबीस तीर्थंकरों की माताओं का पट्ट जो कि संवत् 1606 मे स्थापित है, तत्पश्चात सप्तफणां पार्श्वनाथ की श्याम मूर्ति एवं 1176 में निर्मित परिकर गली है। तत्पश्चात् अजितनाथ जी की संवत् 1457 की प्रतिष्ठित विशाल प्रतिमा है।

उपरोक्त प्रतिमाओं के अलावा इस मन्दिर के भूगर्भ भण्डार में 1098 प्राचीन मूर्तियों का एक अनमोल खजाना सुरक्षित है, जो कि अपने आप में पूरे विश्व मे बेजोड़ है। इस संग्रह में सातवी सदी से लेकर पन्द्रहवी सदी तक की 1059 धातु प्रतिमाए, 39 पाषाण प्रतिमाएं व 8 धातु यन्त्र हैं। ये प्रतिमाएं बीकानेर के नवरत्न दीवान कर्मचन्द्र बच्छावत के सद्प्रयासों से मुगल सम्राट अकबर से प्राप्त करके यहां लाकर विराजमान की गई।

अकबर का सिपहसालार तुरसम खान इन मूर्तियों को विभिन्न मन्दिरों से लूटकर संवत् 1533 में दिल्ली ले गया था उसका इरादा इनको गलाकर स्वर्ण प्राप्त करने का था, लेकिन अकबर द्वारा निषेध कर देने पर इन्हें रख दिया गया। लगभग 6 वर्ष तक प्रयास करते रहने के बाद 1639 में बीकानेर के तत्कालीन दीवान कर्मचन्द जी अपने प्रयासों में सफल हो गए और आषाढ सुदी 11 संवत् 1639 को उन्होंने ये प्रतिमाएं अपने अधिकार में ले लीं और फिर उन्हें बीकानेर लाये। सख्या अधिक होने के कारण निरन्तर पूजा में होने वाली कठिनाई को ध्यान में रखकर इनको भूगर्भ भण्डार में सुरक्षित रख दिया गया और तब से ये प्रतिमाएं दस-बारह वर्षो के अंतराल से विशेष अवसरों पर निकाली जाती हैं और अट्ठाई महोत्सव के बाद पुनः भण्डारस्थ कर दिया जाता है। अभी पिछली बार संवत् 2033 में निकाली गई थी। इसके अलावा इस मन्दिर में गुप्त काल की काउसग्ग मुद्रा की प्रतिमा भी अत्यन्त सुन्दर व प्राचीन है।

वर्तमान में यह बीकानेर खरतरगच्छ संघ की तरह गवाड़ों का मुख्य मन्दिर है एवं इसकी प्रबन्ध व्यवस्था श्री चिन्तामणि जैन मन्दिर प्रन्यास नामक एक पंजीकृत प्रन्यास द्वारा की जाती है।

2. त्रैलोक्य दीपक प्रासाद श्री सुमतिनाथ जैन मंदिर (उर्फ भांडाशाह का मन्दिर)—

इस तिमंजले भव्य जिनालय का शिखर भारत के सर्वोच्च शिखरों में से एक है। वर्तमान में यह मन्दिर बीकानेर नगर का सबसे सुन्दर, विशाल एवं कलात्मक जिन मंदिर है। भूतल मे इसके शिखर की ऊंचाई 118 फुट है एवं इसकी तीसरी मजिल से पूरे नगर का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है।

इस मन्दिर का निर्माण कार्य शाहनाना के पुत्र शाह भांडा द्वारा संवत् 1541 में प्रारम्भ कराया गया था, और मूलनायकजी की प्रतिष्ठा 1571 में सम्पन्न हुई। इसका शिलालेख निम्न प्रकार है —

> 'संवत् 1571 वर्षे. आसोज सुदी 2 रा राजाधीराज
> लूणकरण जी विजय राज्ये शाह भांडा प्रासाद नाम
> त्रैलोक्य दीपक करावितं सूत्र गोदा कारित ॥

निर्माण शैली की दृष्टि से 52 प्रकार के जिनालय होते है, उनमें से यह 'त्रैलोक्य दीपक' शैली का है एवं इसका निर्माण कार्य सूत्रधार गोदा की देखरेख में सम्पन्न हुआ।

इस मन्दिर के निर्माण से सम्बन्धित एक घटना आज भी 475 वर्ष बीत जाने पर भी जन-जन की जबान पर है एवं यह घटना बताती है कि पूर्वजों में धर्म का मर्म समझने की कितनी विलक्षण बुद्धि थी एवं वे किस प्रकार एक-एक बून्द द्रव्य का सदुपयोग करना जानते थे।

इस मंदिर के निर्माता शाह भांडा घी का व्यापार करते थे। एक दिन घी के टीन में एक मक्खी गिर गयी। शाह ने तुरन्त मक्खी को निकाल कर उंगली की सहायता से फेंक दिया, लेकिन मक्खी फेंकने से भूमि पर दो चार बूंदें घी की भी गिर गयी तो उन्होंने उठकर भूमि पर पड़ी घी की बूंदों को वापस उंगली की सहायता से पास में पड़ी अपनी जूती

पर रगड़ दिया। इस समय मंदिर का निर्माण कार्य देखने वाला मिस्त्री वहां पास में खड़ा था। वह सेठ की यह हरकत देखकर अपने मन में सोचने लगा कि यह व्यक्ति क्या मंदिर बनवायेगा। अत: उसने सेठ के मन की थाह लेने के लिए कहा कि सेठजी इस मन्दिर को निरुपद्रव एवं सुदृढ़ बनाने के लिए इसकी नींव में घी डालने की जरूरत है। इतना कहकर वह तो चला गया। और जब दूसरे दिन सुबह आया तो यह देखकर विस्मित रह गया कि नींव में घी डाला जा रहा है, तुरन्त उसने सेठ के पैर पकड़ लिए और सही बात बयान कर दी।

उसकी बात सुनकर सेठ ने कहा कि उस भूमि पर गिरे हुए घी पर चींटियाँ जमा हो जाती और अनजाने में उन पर पैर गिर जाने से जीव हिंसा होती, जब कि जूती पर घी चुपड़ लेने से जूती मजबूत होगी और हिंसा रुकेगी। उन्होंने कहा कि सद्कार्यों में द्रव्य का उपयोग करो, दुरुपयोग नहीं।

इसके निर्माण के लिए जैसलमेर से पत्थर मंगाया गया था एवं यहां का पानी खारा होने के कारण निर्माण कार्य के लिए पानी यहां से 8 मील दूर नाल नामक गांव से मंगाया गया था ताकि मंदिर सुदृढ़ रहे। उन व्यक्तियों की सूझ-बूझ का ही परिणाम है कि आज लगभग 500 वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी यह उसी शान से सीना ताने खड़ा है। पीले पाषाण के शिखर पर संगमरमर के सफेद चूरे से पलस्तर किया हुआ है।

मंदिर की भमती (फेरी) तीन फेरियों के रूप में है। चौमुख प्रतिमा जी होने के कारण, पहली फेरी गर्भगृह में है, दूसरी फेरी चार भागों में विभक्त है, क्योंकि चारों ओर दर्शनार्थ जगह रखी गई है। इन चार भागों में से प्रत्येक भाग में काउसग्ग मुद्रा में 6 तीर्थंकर मूर्तियाँ, दो यक्ष मूर्तियां एवं चार नृत्यांगनाएं बनी हुई हैं। इस प्रकार पूरी भमती में 24 जिन मूर्तियां, 8 यक्ष एवं 16 नृत्यांगनाएं बनी हुई हैं। कुल 48 मूर्तियां हैं।

मूल नायक के ऊपर विशाल छत्री बनी हुई है, जिसके चारों खम्भों व वेदी पर शुद्ध स्वर्ण से मनोत का अत्यन्त मनोहारी काम किया हुआ है। सभा मण्डप को सजाने में भी चित्रकारों ने कोई कसर नहीं छोड़ी और अपने हुनर का स्वर्णिम प्रदर्शन किया है। मंदिर के अन्दर विभिन्न जैन कथाओं से सम्बन्धित सैंकड़ों चित्र बने हुए हैं, जो ऐसे लगते हैं कि अभी बोलने वाले हैं। इसके अलावा सभी दरवाजों के पार्श्व भाग में भी अति सुन्दर विभिन्न वाद्य यन्त्र लिए हुए चित्र बने हुए हैं। मुख्य प्रवेश द्वार पर तीर्थंकरों के जन्माभिषेक का चित्र बना हुआ है। सभी खम्भों एवं अन्य खाली स्थानों पर सुन्दर फूल पत्ती का काम किया हुआ है।

मंदिर का फर्श सुन्दर इटालियन संगमरमर से कराया गया है एवं फर्श में भी अनेकों सुन्दर-सुन्दर नमूने बनाये गए हैं, जिनका निर्माण आज असंभव सा प्रतीत होता है।

बीकानेर दर्शनार्थ आने वाले व्यक्ति ने अगर यह मंदिर नहीं देखा तो यहां की उसकी यात्रा व्यर्थ गई, दर्शक ऐसा कहते हैं। वर्तमान में इसकी प्रबन्ध व्यवस्था श्री चिन्तामणि जैन मन्दिर प्रन्यास नामक प्रन्यास करता है।

14 श्री सीमन्धर स्वामी का मन्दिर—

श्री भांडाशाह जी के मन्दिर की बाजू में, उसी परिसर में इस मन्दिर का निर्माण उ. क्षमाकल्याण जी के शिष्य, मुनि धर्मानन्द जी के उपदेश से, बीकानेर खरतरगच्छ श्री संघ द्वारा कराया गया। प्रतिष्ठा महोत्सव आषाढ़ शुक्ला 10 संवत् 1887 को श्री जिन हर्ष सूरिजी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। इस मन्दिर में प्रवेश द्वार की बायीं ओर की देहरी में उ. क्षमा कल्याण जी की एक बड़ी प्रतिमा है, व आलों में कई खरतरगच्छीय साध्वियों के चरण हैं। मूल गर्भगृह के सामने की दीवार पर सोने के वर्कों से सुन्दर मनोत का काम किया हुआ है।

मूलनायक के रूप में श्री सीमंधर स्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है, एवं उसके दायें बायें श्री पार्श्वनाथ जी व शांतिनाथ जी की प्रतिमा है। तथा दायीं ओर की देहरी में पार्श्वनाथ जी, श्री मुनिसुव्रत स्वामी (2) तथा बायीं ओर आदिनाथ जी की तथा 2 पार्श्वनाथ जी की प्रतिमाएं विराजमान हैं।

3. श्री महावीर स्वामी का मन्दिर (वैदों का चौक)—

प्राचीनता की दृष्टि से यह मन्दिर नगर का तीसरा मंदिर माना जाता है। इसके निर्माण काल के सम्बन्ध में शिलालेख तो उपलब्ध नहीं है, लेकिन विभिन्न अन्य स्रोतों से जानकारी मिलती है कि श्री रयूण जी वैद ने इसके लिए महाराजा को नजराना भेट कर, भूमि प्राप्त की एवं आसोज सुदी 10 संवत् 1578 को इसका निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया गया।

मूल नायक भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा बालू मिट्टी की बनी हुई है जिस पर विलेपन किया हुआ है, इसके अलावा गर्भगृह मे 2 तथा सभामडप मे दस और प्रतिमाएँ विराजमान है।

4. श्री नमिनाथ जी का मन्दिर—

श्री सुमतिनाथ जैन मंदिर (भाडाशाह के मन्दिर) के पार्श्व भाग में थोडी सी दूरी पर इस जिनालय का निर्माण कार्य मंत्रीश्वर कर्मसिह बच्छावत द्वारा प्रारम्भ कराया गया था, लेकिन मूल नायक की प्रतिष्ठा उनके जीवन काल में नहीं हो सकी। बाद मे उनके पुत्र मं. पीथा ने इस काम को सम्पन्न कराया। इसका शिलालेख निम्न प्रकार है—

'संवत् 1593 वर्षे माघ वदी 1, दिनौ गुरौ, भार्या वाल्हादे पुत्र मं. कर्मसी भार्या कउतिगदे पुत्र राजा भार्या रयणादे पुत्र म. पीथा मं. रभदे, मं जगमाल, मं. मानसिंग, प्रमुख परिवार युतेन मं. पीथा केन स्वपिताम् प्रतिष्ठितिम च वृहत् खरतरगच्छे श्री जिन माणिक्य सूरि भी:।'

इस मन्दिर में श्री जिन कुशल सूरिजी के अतिप्राचीन चरण विद्यमान है जो कि माघ सुदि 10 संवत् 1510 को प्रतिष्ठित हैं।

इस मंदिर के सभामण्डप का प्रवेश द्वार बीकानेर में पाषाण पर खुदाई के कार्य का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। मन्दिर के गुम्बज में भगवान महावीर के जीवन चरित्र मे सम्बन्धित सुन्दर चित्र बने हुए हैं व खम्भों के पाषाण पर अच्छी खुदाई का कार्य किया हुआ है। शिखर भी जैसलमेर के पीले पत्थर का बना हुआ है, जिसके नीचे के भाग पर अच्छी खुदाई की हुई है व ऊपर के भाग पर संगमरमर के चूर्ण का पलस्तर किया हुआ है।

5. श्री वासुपूज्य जी का मन्दिर (बच्छावतों का मोहल्ला)—

इस मन्दिर के निर्माण काल के सम्बन्ध में कोई शिलालेख उपलब्ध नही है, लेकिन विभिन्न अन्य श्रोतों से उपलब्ध जानकारी के आधार पर इसका निर्माण काल वि. सं. 1640 के आसपास माना जाता है।

मूल नायक के रूप में श्री वासुपूज्य भगवान की सर्व धातु की सपरिकर प्रतिमा विराजमान है जो उसके पीछे खुदे लेख के अनुसार 1573 में सिरोही में प्रतिष्ठित है। ऐसा अनुमान है कि श्री कर्मचन्द जी बच्छावत के प्रयासों से दिल्ली से जो प्रतिमाएं लायी गई थी यह उनमें से एक है। मूलनायक के अलावा इस मन्दिर में भगवान पार्श्वनाथ की दो प्रतिमाएं हैं जो वि. संवत् 1155 में प्रतिष्ठित है।

6. श्री ऋषभदेव जी का मन्दिर (नाहटों का चौक)—

इस शिखर बन्द जिनालय के मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान की 68 अंगुल की स्वच्छ सफेद स्फटिक के समान बनी हुई पाषाण प्रतिमा बीकानेर नगर की सबसे बड़ी प्रतिमा है। इसका निर्माण सकल खरतरगच्छ श्री संघ द्वारा कराया गया (ऐसा इसके प्रशस्ति लेख से ज्ञात होता है।) प्रतिष्ठा चैत वदी 7 संवत 1662 को युगप्रधान श्री जिन चन्द्र सूरिजी द्वारा कराई गई। 7 गर्भगृह में मूल नायक दायें बायें दो और छोटी प्रतिमाएं तथा माता मरुदेवी व हाथी व चक्रवर्ती सम्राट भरत की मूर्ति बनी हुई हैं। इसके अलावा गर्भगृह में 14 और मूर्तियां विराजित है तथा चारों ओर कई संगमरमर के पट्ट भी लगे हुए हैं। गुंबद के अंदर बारीक फूल पत्ती का बहुत सुन्दर काम किया हुआ है।

इस मन्दिर मे 1686 में स्थापित श्री जिनचन्द्र सूरिजी की प्रतिमा, श्री जिन सिंह सूरिजी के चरण, 1687 की भरत बाहुबलि की मूर्ति, व 1690 की गौतम स्वामी की मूर्ति है जिसकी प्रतिष्ठा श्री जिन राज सूरिजी द्वारा कराई गई। संवत 1892 में दौलतराम जी द्वारा कराई गई चांदी

की चक्रेश्वरी माता की मूर्ति है तथा 1828 के श्री जिन कुशल सूरिजी के चरण प्रतिष्ठित हैं।

इसके खर्च के लिए बाजार में पांच दुकानें हैं, जिनका किराया आता है।

7. महावीर स्वामी का मन्दिर (डागों की प्रोल के सामने)—

लाल रंग के पत्थर से निर्मित इस शिखर वंद जिनालय के निर्माण काल से सम्बन्धित कोई शिलालेख तो उपलब्ध नहीं होता लेकिन अन्य श्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर इसका निर्माण समय लगभग 1663 के आसपास माना जाता है।

इस मन्दिर में मूल नायक के रूप में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है व सभामण्डप में और प्रतिमाएं विराजित हैं। इस मन्दिर में संवत 1176 का प्रतिष्ठित एक परिकर है जिसके लेख के अनुसार इसकी प्रतिष्ठा जाँगलू के वीर विधि चैत्य में की गई थी। इसके अलावा यहां 11 सर्वधातु की प्रतिमाएं व एक सर्वोत्तभद्र यन्त्र भी है।

8. श्री अजितनाथ जी का मन्दिर (सिरोहियों— कोचरों का चौक)—

इस मन्दिर के निर्माण काल के सम्बन्ध में कोई शिलालेख उपलब्ध नहीं है, लेकिन इसका निर्माण 1670 के आस पास माना जाता है। मूलनायक श्री अजित नाथ भगवान की मूर्ति संवत 1641 में प्रतिष्ठित है, लेकिन इसे किसी दूसरे स्थान से लाकर यहां प्रतिष्ठित किया गया है ऐसा अनुमान है। इसके जीर्णोद्धार के सम्बन्ध में एक लेख अवश्य उपलब्ध है जिसके अनुसार इसका प्रथम जीर्णोद्धार ऋद्धिविजय जी के उपदेश से 1855 में व द्वितीय जीर्णोद्धार संवत 1996 में सिरोहियों द्वारा कराया गया।

9. श्री शान्तिनाथ जी का मन्दिर (वर्तमान)—

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर—(कन्दोई बाजार)—श्री चिन्तामणि जी के बाजू में, उसी परिसर में स्थित यह मन्दिर नगर का नौवां मन्दिर माना जाता है। इसका निर्माण पारख जगरूप के वंश में मुहकम, सुरूप, अभयराज और राजरूप ने मिती मिगसर बदी 5, संवत 1817 को कराया। पूर्व में इसमें शान्ति नाथ भगवान की मूर्ति थी, लेकिन वर्तमान में जेठ वदि 1, संवत 1549 में प्रतिष्ठित श्री पार्श्वनाथ भगवान की बड़ी धातु प्रतिमा विराजमान है। मूल नायक का परिवर्तन कब और किसने किया जानकारी उपलब्ध नहीं है। मूलनायक के अलावा इस मन्दिर में संगमरमर का विशाल समवशरण बना हुआ है, जो लगभग 10 फुट ऊंचा है, व इसके ऊपर सुन्दर चित्रकारी की हुई है। नगर में यह सबसे बड़ा समवशरण है।

10. श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी का मन्दिर (नाहटा चौक)—

यह मंदिर श्री ऋषभदेव जी के मंदिर के बाजू में, उसी परिसर में बना हुआ है। शिलालेख के अनुसार इस मंदिर के मूलनायक श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा आषाढ़ सुदि 9, गुरुवार संवत 1829 को श्री खिमाराम जी वेगाणी की धर्मपत्नी श्रीमती चित्ररंग देव व मुलतान निवासी श्री चौथमल जी भणंसाली की पुत्री श्रीमती वनी देवी ने खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिन लाभसूरि जी के कर-कमलों से कराई।

मूलनायक जी के अलावा इस मंदिर में दस और पाषाण प्रतिमाएं तथा 26 सर्वधातु की प्रतिमाएं विराजमान हैं। इसके अलावा शासन देवी, व नकोड़ा भैरू की प्रतिमाएं हैं।

11. श्री सुपार्श्वनाथ जी का मंदिर (नाहटों का चौक)—

यह मंदिर वर्तमान में नाहटा मौहल्ले में छती बाई के उपासरे के नाम से प्रसिद्ध उपासरे के संलग्न बना हुआ है। शिलालेख के अनुसार इस मंदिर का निर्माण बृहतखरतर गच्छीय श्री संघ ने संवत 1871 में कराया, इसका शिलालेख निम्न प्रकार है—

संवत 1871 रा मिते माघसुदि 11, तिथौ श्री बीकानेर नगरे बृहतखरतर गच्छीय श्री संघेन श्री सुपार्श्वजिन चैत्यं कारितं प्रतिष्ठापितं च जंगम युगप्रधान भट्टारक शिरोमणि श्री 108 श्री जिन चन्द्रसूरि पट्ट प्रभाकर भट्टारक श्री जिन हर्षसूरि धर्मराज्येर्नात। श्रेवश्रेस्तु सवेपां। सूत्रधार दयारामस्य कृतिरियं श्री जैसे सिलावटा।

इसी मंदिर के दूसरे तल्ले में जो देहरियां हैं, उनमें एक चौमुख प्रतिमा है। खरतरगच्छ पट्टावली के अनुसार इसका निर्माण 1904 के माघ सुदि 10 को खरतरगच्छ श्री संघ ने कराया और श्री जिन सौभाग्यसूरिजी ने इसकी प्रतिष्ठा कराई।

मूलनायक जी के अलावा इस मंदिर मे 29 पाषाण प्रतिमाएं व 36 सर्वधातु की प्रतिमाएं व एक सपरिकर नमिनाथ भगवान की चांदी की प्रतिमा हैं जो संवत 1516 की बनी हुई हैं। इनके अलावा श्री जिन कुशल सूरिजी की चांदी की चरणपादुकाएं है जो संवत 1821 की बनी हुई हैं। इन प्रतिमाओं के अलावा यहां सर्वोतभद्र यन्त्र, ह्रींकार पट्ट व पार्श्वनाथ का बाइसिया यन्त्र भी बना हुआ है।

12. श्री पार्श्वनाथ जी का मंदिर (सिरोहियों का चौक)—

शिलालेख के अनुसार इस जिनालय का निर्माण कोचर सिरोहिया श्री संघ ने महाराजा रतनसिंह जी के शासन काल में श्री हंस विजय जी के उपदेश से कराया। एवं मूलनायक जी की प्रतिष्ठा जेठ सुदि 13, संवत 1881 को संपन्न हुई।

13. श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी का मन्दिर, गोगागेट के बाहर

इस मंदिर का निर्माण श्री जिनहर्षसूरिजी के उपदेश से खरतरगच्छ श्री संघ ने 12000 रु. की राशि व्यय करके कराया, एवं इसमें मूलनायकजी की प्रतिष्ठा माघ सुदि 5, संवत 1889 को हुई।

इस मंदिर के बायीं ओर श्री सम्मेत शिखर जी का पट्ट लगा हुआ है जो माघ शुक्ला 9, संवत 1889 को सेठिया अमीचन्द आदी के द्वारा बनवाया गया है। इस मंदिर मे दीवाल पर दो चित्र बने हुए हैं जिनमें से एक श्री ज्ञानसारजी व अमीचन्द सेठिया का तथा दूसरा श्री जिन हर्षसूरिजी का है।

इस मन्दिर के सभामण्डप से बाहर दादासाहब श्री जिनकुशल सूरिजी के चरण, और खरतरगच्छाचार्यों का पट्टावली पट्टक है जिसमें खरतरगच्छ के 70 आचार्यों के चरण बने हुए हैं। इसकी प्रतिष्ठा बैसाख शुक्ला 7 संवत 1866 को उ. क्षमाकल्याण जी द्वारा कराई गई थी।

प्रवेशद्वार के दाहिनी ओर श्री आदिनाथ जी का मंदिर है जिसका निर्माण खरतरगच्छीय दानसागर गणि के उपदेश से धर्मचन्द सुराणा की धर्मपत्नी श्रीमती लाभकुंवर ने कराया। इस मन्दिर में आदिनाथ भगवान की एक चांदी की प्रतिमा व अन्य 25 सर्वधातु की प्रतिमाएं होने का उल्लेख मिलता है।

15. श्री आदिनाथ जी का मंदिर (कोचरों-सिरोहियों का चौक)

यह मन्दिर कोचरों-सिरोहियों के चौक में श्री पार्श्वनाथ जी के मन्दिर के पास स्थित है। इसके निर्माण काल एवं निर्माणकर्ताओं के विषय में जानकारी देने वाला कोई शिलालेख यहां उपलब्ध नही है। किन्तु मूलनायक जी आदीश्वरनाथ भगवान की मूर्ति 1893 में प्रतिष्ठित है।

16. श्री चन्दाप्रभु जी का मन्दिर (बेगाणियों की गवाड़)-

यह मन्दिर बेगाणियों की प्रोल के सामने अवस्थित है। शिलालेख के अनुसार बेगाणी श्री संघ ने इसका निर्माण संवत 1893 में कराया व इसके मूलनायक श्री चन्दाप्रभुजी की प्रतिष्ठा श्री जिन सौभाग्य सूरि जी के हाथों सम्पन्न हुई। चन्दाप्रभुजी की प्रतिमा 1549 में निर्मित है। इसे कहीं बाहर से लाकर यहां प्रतिष्ठित किया गया है।

17. श्री शांतिनाथ जी का मन्दिर (नाहटा चौक)—

खरतरगच्छ की आचार्य शाखा के उपासरे के ठीक सामने स्थित यह मन्दिर आचार्य शाखा से सम्बन्धित है। शिलालेख के अनुसार खरतराचार्य गच्छीय श्री संघ ने इसका निर्माण संवत् 1897 में कराया।

मूलनायक श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा बैसाख सुदी 6 गुरुवार संवत 1897 को श्री जिनोदय सूरि के द्वारा कराई गई। मूलनायक जी के बिम्ब का निर्माण श्री माणकचन्द जी गोलछा के परिवार ने कराया।

पूर्व लेखों के अनुसार इस मन्दिर मे 39 प्रतिमाएं होने का उल्लेख पाया जाताहै। इसमें लगभग 4 फुट ऊंचा

संगमरमर का सुन्दर समवशरण हुआ है तथा दादासाहब के चरण व गौतम स्वामीजी की प्रतिमा भी है।

18. श्री अजित नाथ जी का देहरासर (रांगड़ी चौक)-

यह मन्दिर श्री सुगन जी के उपाश्रय में प्रथम तल्ले पर स्थित है। इसमें मूलनायक की प्रतिष्ठा संवत 1905 के वैसाख सुदी 15 को कोठारी घेवरचन्द द्वारा कराई गई एवं प्रतिष्ठा महोत्सव श्री जिन सौभाग्य सूरिजी द्वारा संपन्न कराया गया। इसके पास में ही गुरु मन्दिर है जिसमें श्री जिनकुशल सूरिजी की मूर्ति 1988, माघ सुदी 10 को नाहटा आसकरण द्वारा उपाध्याय जयचन्दजी के हाथों प्रतिष्ठित कराई गई। उपाश्रय में नीचे चौक से दायीं ओर के बरामदे में उ. क्षमाकल्याण जी की मूर्ति लगी हुई है।

19. श्री पार्श्वनाथ जी मन्दिर (गोगागेट के बाहर)–

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी के मन्दिर के अहाते में स्थित यह मन्दिर श्री सेढ़ जी के मन्दिर के नाम से विख्यात है। खरतरगच्छीय परम्परा के यति समुद्रसोम (सेढ़ू जी) ने इसका निर्माण कराया एवं प्रतिष्ठा भी स्वयं ने संवत 1924 में कराई।

20. श्री कुंथूनाथ जी का मन्दिर (रांगड़ी चौक)–

यह रांगड़ी चौक के मध्य में, बड़े उपासरे के सामने स्थित है। इसमें मूलनायक के रूप में श्री कुंथूनाथ भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा वैसाख सुदि 11 संवत् 1931 को, दफ्तरी सदनमल और उनकी माता श्रीमती छोटी बाई द्वारा श्री जिन हंससूरिजी के हाथों कराई गई। मन्दिर छोटा ही है व निर्माण भी साधारण है।

21. श्री विमलनाथ जी का मन्दिर (कोचरों सिरोहियों का चौक)–

इस मन्दिर का निर्माण कोचर अमीचन्द हजारीमल द्वारा संवत 1964 में कराया गया एवं मूलनायक श्री विमलनाथ भगवान की मूर्ति की प्रतिष्ठा माघ शुक्ला 13 संवत 1964 को भट्टारक मुनिविजयचन्द्र सूरि द्वारा कराई गई एवं मूल बिंब की प्रतिष्ठा संवत 1921 में राजनगर के सा. हेमाभाई के पुत्र शा. खेमाभाई द्वारा कराये जाने का उल्लेख मूलनायक पर है।

मूल मन्दिर में मूलनायक के अलावा एक धातुमय चौवीसी तथा 15 अन्य जिन बिंब होने का उल्लेख है।

22. श्री शान्तिनाथ जी का मन्दिर–कोचरों का उपाश्रय–

कोचरों के उपाश्रय में प्रथम तल्ले पर स्थित इस जिन मंदिर का निर्माण कब और किसके द्वारा कराया गया, इसका उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन पहले यह उपाश्रय में नीचे था अभी 20-25 वर्ष पूर्व प्रथम तल्ले पर स्थापित करा दिया गया।

23. श्री पद्मप्रभुजी का मंदिर (आसाणियों का चौक)–

यह मंदिर आसाणियों के चौक में पन्नी बाई के उपासरे से संलग्न हैं। इसके निर्माण काल के सम्बन्ध कोई लेख उपलब्ध नहीं होता फिर भी इसका निर्माण काल बीसवीं सदी के प्रारम्भ का माना जाता है। मूल नायक श्री पद्म प्रभुजी के अलावा इस मंदिर में 16 धातु प्रतिमाएं होने का उल्लेख पाया जाता है।

24. श्री महावीर स्वामी का मंदिर (आसाणियों का चौक)–

यह मंदिर आसाणियों के चौक में पार्श्वचन्द्र गच्छ के उपासरे से संलग्न है, इसके निर्माण के सम्बन्ध में भी कोई प्रामाणिक जानकारी शिला लेख के रूप में उपलब्ध नहीं होती।

25. श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ जी का मंदिर (आसाणियों का चौक)–

यह मंदिर भी आसाणियों के चौक में श्री महावीर स्वामी के मन्दिर के पास ही बना हुआ है, इसमें भी कोई शिलालेख उपलब्ध नहीं है, मूलनायक जी की प्रतिमा 1593 में प्रतिष्ठित है, बाहर से यहां लायी गई है।

26. श्री आदिनाथ जी का मंदिर (पार्श्वचन्द्र गच्छ की बगीची)–

भ. महावीर मार्ग पर नागपुरिय तपागच्छ के श्री पार्श्वचन्द्र सूरिजी की स्मृति में संवत् 1662 में एक स्तूप का निर्माण करवाकर उनके चरण स्थापित किये गए।

अभी वहां पास ही श्री आदिनाथ भगवान का एक शिखरबन्ध जिनालय बना हुआ है, जिसके निर्माण काल की प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं हुई।

27. श्री महावीर स्वामी का मन्दिर (बोहरों की सेरी)–

बीकानेर नगर में संगमरमर से निर्मित शिखर वाला यह एक मात्र जिनालय है। इस स्थान पर पहले यहां खरतरगच्छ का उपाश्रय था और उसमें वासुपूज्य भगवान का मन्दिर था। मंदिर जीर्ण-शीर्ण हो जाने पर उसके स्थान पर नये सुन्दर मंदिर का निर्माण खरतर गच्छीय सेठ भैरूदान जी हाकिम कोठारी की धर्मपत्नी श्रीमती चांदकवर ने संवत् 2002 मे कराया। इस के पश्चात् नगर मे और कोई जिनालय नही बना।

इस मन्दिर मे अतिमनोहारी चित्रो के माध्यम मे भगवान महावीर के 27 भव, श्री पाल चरित्र, पृथ्वीचन्द्र गुणसागर चरित्र एवं अष्टापद जी का पट्ट बना हुआ है। इन चित्रो के माध्यम मे इसके निर्माण कर्ताओं का कला प्रेम व कलाकारो की योग्यता का जीवंत परिचय होता है।

यहां पूर्व में सवत् 1662 में श्री जिनचन्द्र सूरि जी द्वारा प्रतिष्ठित वासुपूज्य जी की जो मूर्ति थी, उसे वर्तमान में इस मन्दिर के प्रथम तल्ले पर स्थापित किया हुआ है।

इस प्रकार हमने यहां श्री बीकानेर जैन लेख संग्रह-लेखक श्री अगर चन्द जी नाहटा एवं अन्य श्रोतो से प्राप्त जानकारी के आधार पर नगर के विभिन्न मंदिरों का यहां वर्णन किया है। उपरोक्त मदिरो के अलावा नगर के पास खरतरगच्छ की चार दादावाड़ियां भी हैं।

1. श्री जिनचन्द्र सूरिजी की दादावाड़ी (उर्फ रेल दादाजी)

रेल की पटरियों से नजदीक होने के कारण यह स्थान रेल दादाजी के नाम से विख्यात हो गया। यहां बसाख सुदि 3 संवत 1673 मे श्री जिन चन्द्र सूरिजी के चरण एक स्तूप में स्थापित किए गए। इसके अनन्तर इसके आसपास अनेकों यतियों, श्री पूज्यों व साधु-साध्वियों का यहां अग्नि संस्कार होता गया एवं उनके चरण स्थापित किये जाते रहे। जेठ सुदि 5 संवत 1987 को इसी परिसर में श्री जिनदत्त सूरिजी की मूर्ति एवं दत्तसूरिजी, चन्द्र सूरिजी, कुशलसूरि जी व जिनभद्र सूरिजी के संयुक्त चरणों की स्थापना भी की गई।

2. दूगड़ों की दादावाड़ी–

नगर परकोटे के पास ही स्थित इस दादावाड़ी में जिनेश्वरसूरि अभयदेव सूरि, श्री जिन कुशलसूरि और श्री जिनचन्द्र सूरिजी के चरण दूगड़ मंगलचन्द हनुमानमल द्वारा बनाये गए एवं मिती जेठ वदि 9 संवत् 1993 में श्री जिन चरित्र सूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित कराए गए।

3. श्री जिनदत्त सूरिजी की दादावाड़ी–ग्राम उदयरामसर

नगर परकोटे से लगभग 12 कि. मी. दूर इस दादावाड़ी की चरण पादुकाएं बीकानेर संघ द्वारा संवत् 1735 में प्रतिष्ठित कराई गई थी। इसका जीर्णोद्धार संवत 1993, आषाढ सुदि 1 को जैसलमेर निवासी बाफणां बहादुरमल जी आदि के द्वारा श्री जिन हर्षसूरिजी के उपदेश से कराया गया।

यहा प्रतिवर्ष भादवा सुदि पूनम को ओसवाल समाज का मेला होता है, उसका प्रारंभ संवत् 1884 में हुआ माना जाता है। पहले यह खरतरगच्छ के विभिन्न मोहल्लों की गोठ के रूप में होता था, बाद में धीरे-धीरे इसने सामूहिक रूप ले लिया।

4. श्री जिन कुशलसूरिजी की दादावाड़ी–नाल

यहां पर श्री जिनकुशलसूरि जी के चरण स्थापित हैं और यह स्थान भी बीकानेर से लगभग 10 किलो मीटर दूर दक्षिण दिशा में स्थित है। मंत्री कर्मचन्द वंश प्रबन्ध के अनुसार बीकानेर के दीवान वरसिंह बच्छावत यहां से देरावर की यात्रा हेतु निकले और पूर्व में सारगडाला के नाम से विख्यात इस गांव में वे रात्रि विश्राम हेतु ठहरे, मार्ग की कठिनाइयों को देखकर एवं उनकी प्रबल भक्ति के फलस्वरूप गुरुदेव ने उन्हें यही दर्शन दे दिये, व बीकानेर वापस चले जाने का आदेश दे दिया। इस स्थान पर फिर उन्होंने गुरुदेव के चरणों की प्रतिष्ठा लगभग 1573 के आसपास कराई।

इस स्थान का जीर्णोद्धार कराके नयी दादावाड़ी का लाल पत्थर मे निर्माण संवत् 1996 में भैरूदान जी हाकिम कोठारी के द्वारा कराया गया, एवं संगमरमर की सुन्दर छत्री में चरणों की पुन: प्रतिष्ठा कराई गई।

उपधान आराधना



पवन कुमार पारख

अनंत जन्मों से भटकती इस आत्मा को महा पुण्य के कारण ही मानव भव मिला है। मानव भव में भी जिनेश्वर भगवान का शासन मिला है, जिनेश्वर भगवान के शासन में भी जिन दर्शन, पूज्य-सेवा का अहोभाग्य मिला है। अपने अष्टकर्मों को क्षय करके श्रमण भगवान महावीर ने केवल ज्ञान की प्राप्ति के वाद देशनादी, वही देशना जैन शासन की आधारशिला वनी। प्रभुवीर ने प्राणी मात्र के प्रति करुणा की और आत्मा कैसे मोक्ष को प्राप्त कर सकती है इसका सुगम मार्ग वताया। उनके मन में हर जीव के प्रति अपार प्रेम और करुणा रस भरा था।

आपकी वाणी को ही गणधर भगवन्तों ने शास्त्रों का रूप दिया। संसार के किसी धर्म में इतनी गहराई नहीं दिखाई देती, जितनी जैन दर्शन में है। भौतिक जगत से आध्यात्मिक जगत में हम कैसे प्रवेश करें तथा अपने कर्मों को किस प्रकार क्षय करते करते अपने आत्म लक्ष्य को प्राप्त कर सकें इसके सारे रास्ते प्रभुवीर ने वताये हैं। इनमें सर्वोत्तम रास्ता चारित्र है। चारित्र के विना मुक्ति नहीं है। चारित्र लेने से ही सिद्ध शिला पर पहुंचा जा सकता है। कर्म क्षय हेतु प्रभुवीर ने अनेक प्रकार के तप वताए हैं। इन तपों में से एक उपधान तप है।

उपधान जिन शासन में एक विशिष्ट प्रकार का तप है। यह तप 51 दिनों का चारित्र है। इसमें प्रवेश करते ही व्यक्ति संसार के भौतिक सुखों को भूल जाता है। स्वाध्याय, क्रिया, तप, तथा गुरु भगवन्तों द्वारा उपदेश पाकर अन्तरमन से अपने पुरुषार्थ द्वारा कर्मों का क्षय करने लगता है। क्रोध, मान, माया व लोभ की वास्तविकता को जानने लगता है एवम् इनपर विजय प्राप्त करने का प्रयास शुरू करता है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति साधना करता जाता है उसका आत्मवल इतना वढ़ने लगता है कि संसार के सुखों से दूर आध्यात्मिक सुखों के नजदीक पहुंचने लगता है। अपनी आत्मा पर पड़े आवरणों को हटाने की शक्ति वढ़ती जाती है। उतना ही उसका मन प्रभु भक्ति में लीन होता जाता है।

उपधान में प्रवेश करते ही व्यक्ति मन, वचन, काया से प्रभु भक्ति तथा आत्म शुद्धि में लग जाता है। उसकी दिनचर्या प्रात: 3-4 वजे शुरू होती है। एक सौ लोगस्स का कायोत्सर्ग ध्यान करता है। आत्मा और शरीर का सम्वन्ध अनादि काल से है। आत्मा चेतन है शरीर पुद्गल है। साधारणतया हमने शरीर को ही आत्मा मान लिया है। शरीर से भिन्न आत्मा का ध्यान कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग में चित्तवृत्ति को एकाग्र करके आत्मस्वरूप का अनुसंधान किया जाता है। शरीर मैं नहीं, मैं सिद्ध स्वरूपी आत्मा हूँ। इसी आत्म भावना को जगाता है।

उसके वाद प्रतिक्रमण करता है प्रतिक्रमण के अन्तिम चरण में जव महाविदेह क्षेत्र में विराजित श्री सीमंधर स्वामी की स्तुति करता है तो उसका मन मयूर नाचने लगता है कि हे प्रभु कव मेरा वह जन्म होगा जव मैं आपका दर्शन कर पाऊंगा। कारण भरत क्षेत्र से सीधा मोक्ष नहीं मिल सकता। इसी कारण महाविदेह क्षेत्र की नित्य सुवह भावना भाता है। उसके वाद जव पर्वतों में उत्तम तीर्थों में सर्वश्रेष्ठ गिरिराज श्री शत्रुंजय महातीर्थ की स्तुति

करता है और भाव दर्शन में इतना डूब जाता है कि उसके मस्तिष्क में एक प्रकार की फिल्म चालू हो जाती है और वह प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के भाव दर्शन करने लगता है।

प्रतिदिन नवकार महामंत्र की बीस मालाएं फेरता है। इन्हीं दिनों में उसे समय समय पर वांचना के द्वारा गुरु भगवंतों के मुख से प्रथम उपधान वालों को नवकार महामंत्र, इरियावही, अरिहंत चेइयाणं, पुक्खरवद्दी, सिद्धाणं बुद्धाणं इन पाँचों सूत्रों का एवम् द्वितीय उपधान तप वालों को नमोत्थुणं का तथा तृतीय उपधान तप वालों को लोगस्स गिनने का पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है। गुरु मुख से ये अधिकार पाने के बाद में इसका जाप करने का आनन्द ही अलग होता है। इन क्रियाओं को करते समय हमारे से कोई आशातना न हो इसका पूरा पूरा ध्यान रखना पड़ता है। सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों की निगरानी करनी पड़ती है। हमारे द्वारा किसी जीव का स्पर्श न हो, इन सारी बातों का ध्यान रखना पड़ता है। इतने दिनों तक गुरु भगवंतों के साथ रहने का आनन्द अलग ही अहमियत रखता है। दिन कब उगा और कब शाम हुई इसका भी पूरा पता नहीं चलता। मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे उपधान तप करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। ये पल मेरे जीवन की अमूल्य थाती है।

चेतना ही जीवन की समग्रता है। चेतना के अभाव में आखिर जीवन का महत्त्व ही क्या है?

चेतना आत्मा का स्वरूप है। अज्ञान की परतों के कारण हम प्रायः उन्माद की निन्द्रा में खोये हुए हैं, भटके हुए हैं। हमें आवश्यकता है उस जागृति की, चेतना की, जिससे जीवन ज्योतिर्मय हो सके। जीवन का हर क्षण आलोकित हो सके।



प्रवचन देना या सुनना हमारे कर्तव्य की पूर्णता नहीं है। प्रवचन, कर्तव्य-चिन्तन, मनन का मात्र माध्यम है।

कर्तव्यबोध प्राप्तकर जीवन को जीवन्त जीने की विधा अपनाने में ही प्रवचन की सार्थकता है। क्रियान्विति के अभाव में प्रवचन भी औपचारिकता की श्रेणी में आ जाता है।

—गणि मणिप्रभसागर

जिन पूजा



केसरी चन्द सेठिया

श्री जिनेश्वर देव की पूजा पवित्रता की जननी है। चाहे वह पूजा द्रव्य पूजा हो अथवा भाव पूजा। भावना विना द्रव्य पूजा कहां से होगी। कौन जिनेश्वर देव के चरणों में पहुंचेगा। कौन पूजा की साधन सामग्री जुटायेगा। कौन पूजा की विधि सीखेगा। कौन पूजा के लिए समय लगायेगा। वास्तविकता यह है कि द्रव्य के विना भाव उत्पन्न ही नहीं हो सकता। जैन दर्शनानुसार भाव परिणाम के लिए द्रव्य (पुद्गल) ग्रहण करना परम आवश्यक है। यह निश्चित है कि द्रव्य के विना भाव नहीं और भाव के विना द्रव्य नहीं।

पूजा चार प्रकार की है–द्रव्य पूजा, क्षेत्र पूजा, काल-पूजा और भाव पूजा।

1. शरीराकार जिन प्रतिमा। जिन विंव की पूजा अथवा द्रव्य चढ़ा कर पूजा करना 'द्रव्य पूजा' कहलाती है।

2. जिनेश्वर देव के जन्म स्थलों, निष्क्रमण कैवल्य स्थलों, निर्वाण भूमि पर जाकर पूजा करना 'क्षेत्र पूजा' मानी जाती है।

3. जिनेश्वर देव के गर्भावतरण, जन्मदिन, निष्क्रमण दिन, निर्वाणादिन पर पूजा करना 'कालपूजा' का अंग है!

4. जिनेश्वर देव के अनन्तचतुष्ट आदि गुणों का कीर्तन वन्दन गायन, जपन, मनन, करना भाव पूजा है।

जैन धर्म का दृष्टिकोण आध्यात्मिक दृष्टि संपन्न होने से इसकी मान्यता है कि दुर्गति का नाश करने में केवल जिनेश्वर देव की पूजा ही सक्षम है। मोक्ष तक पहुंचाने के पहले कुछ ऐसा पुण्य लाभ भी करवाती है, जिसके द्वारा इन्द्र, चक्रवर्ती, अरिहन्त और तीर्थंकर जैसे विशिष्ट पद भोग का अवसर भी प्राप्त हो जाता है।

एक सशक्त माध्यम —

जिन अरहाकेवली, अविनाशी किसी आकार विशेष से प्रतिबंधित नहीं होकर केवल भावात्मक है। यह चिरंतन, शाश्वत, सत्य होते हुवे भी जिन प्रतिमा, जिन विंब जिनेश्वर, परमात्मा के समान ही पूज्य, स्तुत्य, परम वन्दनीय होते हैं। यथा मित्रों, शत्रुओं के चरित्रों को देख कर राग द्वेष उत्पन्न होना सहज है यद्यपि उनके चरित्रों से हमारा हित/अहित भी नहीं होता है, परन्तु उनके द्वारा तत्कृत उपकार/अनुपकार का स्मरण कराने में वे निमित वन जाते हैं।

वैसे ही जिनों के गुण प्रतिमाओं में नहीं होते हुवे भी अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र (वीतरागता) आदि गुणों की पावन स्मृति कराने में जिनप्रतिमायें अत्यन्त सहायक सिद्ध होती हैं। यह गुण स्मरण, ज्ञान, दर्शन एवं संवर उत्पन्न करता है तथा पूर्ववद्ध कर्मों का निर्जरण भी।

दीक्षा क्यों ?



कु. कुमुद दस्साणी

परिपूर्ण भौतिकता से संव्याप्त इस वैज्ञानिक युग में ये प्रश्न सामने उभर कर आते हैं कि दीक्षा क्यों ली जाती है ? किस कारण से दीक्षा ली जाती है ? कौनसी ऐसी परिस्थिति है जो कि दीक्षा के लिए दीक्षार्थी को विवश बना देती है ? क्या संसार में रहकर यह सब सम्भव नहीं है ? क्या संसार में रहकर मनुष्य को मुक्ति की प्राप्ति नहीं होती ? संसार में रहकर भी साधना सम्भव है, तो फिर दीक्षा क्यों ? इत्यादि। प्रश्न प्रासंगिक है। प्रश्न उठना स्वाभाविक है, क्योंकि चहुँ ओर भोग का साम्राज्य परिलक्षित होता है। उस भोग से ग्रस्त मानव-समूह में से कोई एक पुण्यात्मा इस अपवाद मार्ग पर आरूढ़ होने की चेष्टा करती है और उसी में अपनी आत्मिक अनुभूतियों के दर्शन करती है। तो लोक उसका स्पष्टीकरण चाहता है। दिग्मूढ़ जनता एकांगी दृष्टि-कोण को लेकर चलती है।

बाह्य जीवन से जुड़े हुए जनसमूह को दीक्षा में किसी प्रकार का आकर्षण नहीं दिखता। वे दीक्षा को आकर्षणहीन मानते हैं। वे लोग ऐसा सोचते हैं कि 'ऐसा आकर्षणहीन जीवन अपनाने से क्या प्रयोजन ? क्या कोई पारिवारिक जिम्मे-दारियों से भाग कर इस मार्ग का आश्रय लेता है ? अथवा लोक से विमुख होकर उस विरक्ति से संयुक्त, उदासीन जीवन का निर्वाह करता है ? या अर्थहीनता के कारण मजबूरी से इस मार्ग पर पदार्पण करता है ? ऐसी कौनसी विकट परिस्थिति है, जो व्यक्ति को इस ओर जाने के लिए विह्वल बना देती है ?' इस प्रकार के एकांगी दृष्टिकोण से सम्मुख उभर कर आये प्रश्नों का सही समाधान जब तक जनता तक नहीं पहुँचता, तो जनमेदिनी में 'दीक्षा प्रसंग' के प्रति कोई उच्च-दृष्टिकोण नहीं रहता।

भोग प्रधान इस युग ने पाश्चात्य संस्कृति के विपाक्त प्रभाव से भारतीय संस्कृति को विस्मृत सा कर दिया है। जो भारत प्राचीन युग में तप और त्याग की पावन भूमि था, वह इस अर्वाचीन युग में अपने समस्त वैभव को खो बैठा है। आज तो आनन्द सभी को भौतिक पदार्थों में ही परिल-क्षित होता है। मकान, दुकान, फर्नीचर, सड़कयान, टेप, टी. वी. आदि का स्टेण्डर्ड ही आनन्द की परिपूर्णता है। ऐसा ही दृष्टिकोण जन-समुदाय का बन गया है। क्षणिक सुख की उपलब्धि मानव-मात्र का ध्येय बन गया है। धन-सम्पदा और रूप का लोभी मानव अपने आत्मिक गुणों का सत्यानाश करने को लालायित है। स्वयं सत्तावान् बनकर आत्म-सम्पदा को नष्ट करता है, साथ ही दूसरों के आत्मिक-उत्थान में बाधा पहुँचाना भी उसका परम ध्येय बन गया है।

भारतीय संस्कृति को पैरोंतले रौंदकर पाश्चात्य सभ्यता के गीत गाकर आनन्दानुभव कर रहा है। अपनी माँ का गला घोंटकर, पराई माँ को अपनाने की परिचेष्टा कर, मानव संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहलाने का अधिकारी बन रहा है। कैसी विडम्बना है लोक की ! कैसी विकट परिस्थिति है मानव समुदाय की ! जो अपने घर में आग लगाकर, पराये घर में आवास के लिए लालायित है। भारतीय संस्कृति वस्तुतः त्याग प्रधान रही है। आगम, वेद, पुराण, गीता, रामायण जहाँ कहीं भी नजर डालिए आपको

त्याग की महत्ता ही दिखलाई देगी। जितने भी विशिष्ट महापुरुष हुए उन्होंने अपने जीवन में कुछ विशिष्ट त्याग किया, तभी उच्चत्व पद की सम्प्राप्ति हुई।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम पिता की आज्ञा का पालन करके पितृभक्त कहलाये। एकलव्य ने दाहिने हाथ का अंगूठा द्रोण को समर्पित कर गुरु-भक्त की संज्ञा को संप्राप्त किया। पन्ना धाय ने अपने पुत्र का बलिदान कर 'स्वामी-भक्तिनी' की संज्ञा को सम्प्राप्त किया। रानी लक्ष्मी बाई ने अदम्य साहस का परिचय देकर अपनी कीर्ति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये 'मर्दानी' की संज्ञा को प्राप्त किया। पद्मनी ने जौहर व्रत कर अपने बलिदान को उच्चतम भूमिका पर पहुँचा दिया। आरुणि और उपमन्यु ने गुरु-वचनों की परिपालना कर 'गुरु-आज्ञा-पालत' की संज्ञा सम्प्राप्त की। वर्धमान ने संसार का परित्याग कर महावीर की उपाधि को समलंकृत किया। महात्मा गाँधी ने राष्ट्र-हित के लिए जीवन न्यौछावर कर 'राष्ट्र-पिता' की संज्ञा को संप्राप्त किया। इस प्रकार विशिष्ट बलिदानों से भव्यात्माओं को उच्चत्व की प्राप्ति हुई।

दीक्षा इसी विशिष्ट त्याग की उच्चतम भूमिका है। जो भव्य मुमुक्षु अपने अन्तरतम में रहे हुए आत्मतत्व से साक्षात्कार करने की समीहा रखता है, उसके लिए यही मार्ग श्रेयस्कर है। जो लोग दीक्षा का कारण जानना चाहते हैं, उनको दीक्षा के अन्दर में समाहित तत्वों को भी जानना होगा। अपनी आत्मा को उच्चतम भूमिका पर पहुँचाने के लिए दीक्षा सर्वश्रेष्ठ साधना है। साध्य को पाने के लिए साधन भी तदनुरूप ही होना चाहिए। जहाँ साध्य हमारा मुक्ति या परमानन्द की प्राप्ति रूप है, वहाँ साधन भी आनन्ददायक होना चाहिए। यथा कोई पुरुष जाना चाहता है बम्बई, और प्रस्थान करता है मद्रास की गाड़ी से, तो वह अपने गन्तव्य तक नहीं पहुँच सकता। उसी प्रकार जो भव्य प्राणी जड़-चेतन का भेद समझकर, आत्मा के साथ संलग्न कर्म- पुद्गलों के आवरण को हटाकर, अपने आत्मदेव से साक्षात्कार करने का परमाभिलाषी बनता है, उसके लिए दीक्षा रूपी साधन ही सर्वश्रेष्ठ है।

दीक्षार्थी के मन में नित्य-प्रति तड़फन बनी रहती है, अपने अभीष्ट को पाने की। आराध्य-मिलन की वह समीहा ही दीक्षार्थी को दीक्षा के लिए प्रेरित करती है। उसे प्रति-पल अपने आराध्य की स्मृति ही विह्वल बना देती है। प्रश्न सामने आता है कि 'क्या संसार में रहकर व्यक्ति साधना नहीं कर सकता?' प्रश्न सहज है लेकिन जरा चिन्तन करिये कि 'जो सांसारिक व्यामोह में फंसे हुए हैं, अपने पारिवारिक बन्धनों में जकड़े हुए हैं, वे अपने जीवन का कितना समय साधना या प्रभु-स्मरण में व्यतीत करते हैं।' उनको प्रभु-भजन के लिए समय ही नहीं मिलता। आप प्रभुस्मरण की बात जाने दीजिए। उनको अपने आपके विषय में सोचने का भी समय नहीं मिलता। अतः संसार में रहकर साधना कैसे सम्भव है? इस पर कई लोग कहते हैं कि 'हम गृहस्थ में रहकर अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। अपने माता-पिता की सेवा करते हैं। भोजनादि देकर कर्त्तव्य-पालन करते हैं। यह सब संयम से बढ़कर है। संयम-पालन कर आप किसका पालन-पोषण कर रहे हो? या कौनसा बड़ा दायित्व निभा रहे हो? अतएव संयम से तो गृहस्थ-जीवन ज्यादा श्रेष्ठ है।'

भ्रान्त-लोगों का यह कथन निरा-मिथ्या है। गृहस्थ में रहकर अपने बाल-बच्चों का पालन-पोषण करना तो पशु-पक्षी भी करते हैं, तो मानव उसका पालन करे, इसमें कोई महत्ता या बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है। माता-पितादि पारिवारिक सदस्यों की अर्थ से सेवा करना सर्वोपरि सेवा नहीं है। यदि आप माता-पिता की मन, वचन या शरीर से सेवा करना चाहते हैं तो आपको भी इसी मार्ग का आश्रय लेना पड़ेगा। यदि आप माता-पिता की सच्चे मन से सेवा करते हैं तो उनके कल्याणार्थ आपको उन्हें न्याय-नीति और मर्यादा परिपूर्ण धर्म मार्ग में स्थापित करना होगा। वचन से यदि आप माता-पिता की सेवा करना चाहते हैं तो उनके हित के लिए सत्य-तथ्य प्रामाणिक वचनों का उच्चारण करना होगा। शरीर से उनकी सेवा करना चाहते हैं तो उनके लिए अपने आपके शरीर का भी सुख-त्याग कर धर्म मार्ग को अपनाना होगा। अतः आप केवल अर्थ से माता-पिता की शुद्ध परिपूर्ण सेवा नहीं कर सकते।

इसी तथ्य को उजागर करते हुए प्रभु महावीर ने स्थानाङ्ग सूत्र में कहा है कि 'प्रत्येक व्यक्ति अपने माता-पिता को अपने चर्म के जूते बनाकर भी पहना दे तो वह उनके उपकारों से उऋण नहीं हो सकता किन्तु उनको यदि धर्म-मार्ग का पथिक बना दे, वीतराग-वाणी का रसिक बना दे तो वह माता-पिता के उपकार से उऋण हो सकता है। अतएव मोह-मायाबद्ध गृहस्थ जीवन में विशिष्ट लाभ की सम्प्राप्ति नहीं हो सकती। इस पर कई प्रश्न करते हैं कि 'फिर कई लोगों ने गृहस्थ में रहकर भी सिद्धावस्था को संप्राप्त किया तो वह कैसे सङ्गत होगा?' प्रश्न बड़ा अच्छा है। समाधान भी सरल है कि जो आत्माएँ गृहस्थ में रहकर मर्यादित और न्याय-नीति से त्याग-प्रत्याख्यान करते हुए अपने जीवन में अनासक्त रहकर साधना करती हैं, वे अपने जीवन में सिद्धावस्था जैसी श्रेष्ठ दशा भी प्राप्त कर लेती हैं। लेकिन ऐसी स्थिति अत्यल्प गृहस्थों में देखी जाती है। अतएव ऐसा बहुत कम सम्भव होने से दीक्षा ही सर्वश्रेष्ठ मुक्ति का साधन है।

जो लोग दीक्षा को आकर्षण-हीन मानते हैं उनका कथन अप्रामाणिक है। क्योंकि उन्होंने केवल भौतिकता में ही आनन्द मान लिया है। उन्हें कभी आत्मिक-आनन्दानुभूति नहीं हुई। वे अन्तर रहस्य से अनभिज्ञ, दीक्षा को आकर्षण-हीन मनाते है। वस्तुतः दीक्षा आनन्द का वह खजाना है, जिसको सम्प्राप्त कर मनुष्य आनन्द की चरम सीमा तक पहुँच सकता है। दीक्षार्थी दीक्षा धारण कर लोक से विमुख नहीं हो जाता, अपितु लोक से ऊपर उठकर लोक-हितार्थ भ्रामक जन-समुदाय को दिशा-बोध देता है। वह लोक में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, अनीति, अमर्यादा को दूर करने वाला सच्चा उपदेष्टा है। वह लोक से विमुख नहीं होता अपितु लोक को कल्याण के सम्मुख ले जाता है।

जो भ्रान्त पुरुष अर्थहीनता को दीक्षा का कारण स्वीकार करते हैं, उनकी भ्रान्त धारण निराधार और सर्वथा अप्रामाणिक है। आप स्वयं देखते है कि कितने ही भूखे, नंगे, गरीबी से परिपूर्ण जीवन जीने वाले फुटपातिया लोग अपना सम्पूर्ण जीवन इसी प्रकार से गुजार देते हैं। किन्तु कोई उन्हें यदि त्याग की बात सुनाये तो उसको वे स्वीकार नहीं करते। यदि आप उन्हें एक रात्रि में भोजन के त्याग की बात कहें तो वे उसे स्वीकार नहीं करेंगे। त्यागी की परिभाषा देते हुए दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है—

'जे य कन्ते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठि कुव्वई।
साहीणे चयइ भोए, से हु 'चाइ' त्ति वुच्चई।'

अर्थात् जो प्राप्त हुए काम-भोगों का परिपूर्ण रूप से त्याग कर देता है, वही त्यागी है। इसी तथ्य से जाहिर होता है कि साधक सच्चा त्यागी होता है। उस त्याग में 'अर्थहीनता' कोई कारण नहीं हो सकती। साथ ही इस शिक्षित युग में बालिकाएँ स्वयं अपना निर्वाह करने में सर्वथा समर्थ हैं। अर्थहीनता से दीक्षा का कोई सम्बन्ध नहीं है।

दीक्षा लोक पलायन, आकर्षण-हीन, हेतु-हीन नहीं है अपितु जीवन के चहुँमुखी विकास का श्रेष्ठ साधन है। जो भव्यात्मा अपने जीवन के सार-तत्व को पाने के लिए लालायित रहती है, उसे इस उच्चतम मार्ग का प्रश्रय लेना ही पड़ता है। अपनी आत्मा की शुद्ध पहचान करने वाले ज्ञानियों के लिए यह मार्ग समयोचित है। वस्तुतः प्राणी को अपनी आत्मा का कल्याण बहुत कठिनाई से प्राप्त होता है। अपने इस लघु जीवन में हमारा ध्यान पर-पदार्थों की ओर अधिक चला जाता है किन्तु अपनी आत्मा का हित विषयक चिन्तन बहुत कम व्यक्ति कर पाते हैं। इसी सम्बन्ध में सूत्रकृताङ्ग सूत्र के द्वितीय अध्ययन के द्वितीय-उद्देशक की अन्तिम गाथा में कहा गया है—

'एवं मत्ता महत्तरं, धम्ममिण सहिया बहूजणा।
गुरुणो छंदाणुवत्तगा, तिन्नामहोघमाहियं॥'

अर्थात् प्राणियों को कल्याण की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है। यह जानकर तथा यह आर्हद्धर्म सब धर्मों में श्रेष्ठ है, यह समझकर ज्ञानादि-सम्पन्न गुरु के द्वारा उपदिष्ट मार्ग से चलने वाले पाप से निवृत्त बहुत से लोगों ने संसार सागर को पार किया है, ऐसा सर्वज्ञ तीर्थंकर देव ने कहा है।

अतः प्रभु महावीरादि जिनेश्वर देवों ने भी इसी मार्ग की उपासना करके अपनी आत्मा को समुज्ज्वल बनाया।

गीता में श्री कृष्ण ने इसी तथ्य को बतलाते हुए कहा है–

लोकेऽस्मिन्, द्विविधानिष्ठा, पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन् सांख्यानां, कर्म-योगेन योगिनाम्''

इसी आत्म-कल्याणार्थ व्यक्ति दीक्षा धारण करता है। अपनी आत्मा के अन्तर में निहित जो अनन्त ज्ञान का प्रकाश है, उसे पाने के लिए तथा कर्मों के सघन-आवरण को दूर करने के लिए दीक्षा सर्वश्रेष्ठ प्रयास है। दीक्षा धारण का प्रमुख उद्देश्य स्व परहित, आत्माभ्युत्थान तथा जीवन का रहस्य सम्प्राप्त करना है। अनादिकालीन मोहपाश को काट गिराने का प्रमुख शस्त्र है। आनन्द का परमधाम और आत्मा का कल्याण ही दीक्षा ग्रहण का लक्ष्य है।

सूत्रकृताङ्ग सूत्र में कहा गया है कि जैसे कोई व्यक्ति छिद्र वाली नौका पर चढ़कर पार जाने की इच्छा करता है तो वह सागर से पार नहीं पहुँच सकता किन्तु मध्य में ही रत्नाकर में डूब जाता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति बिना छिद्र वाली नौका पर चढ़कर समुद्र से पार जाना चाहता है, वह समुद्र को पार कर किनारे पहुँच जाता है। ठीक इसी प्रकार जो व्यक्ति राग-द्वेष, कषाय, कर्मबन्धन के कारणों को दूर करने के लिए, मुक्ति की प्राप्ति के लिए, बिना छिद्र वाली संयम रूपी नौका पर चढ़कर सिद्धालय में गमन की इच्छा करता है वही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। किन्तु जो संसार में रहकर निरन्तर आश्रव-परिग्रह रूपी छिद्र युक्त नौका से पार जाने की समीहा करता है वह भवाब्धि में ही डूब जाता है। इसलिए परमात्म तत्व की उपलब्धि दीक्षा से ही सम्भव है।

प्रभु ने सूत्रकृताङ्ग सूत्र में यह भी बतलाया है कि संसार अनित्य है, अतएव संसार से नित्यात्मा सर्वथा भिन्न है। इस अनित्य संसार के बन्धनों द्वारा आत्मा अधोगति-गामी होती है। जिन सांसारिक लोगों के लिए व्यक्ति बुरे कर्म करता है, उनको भोगने के समय कोई पारिवारिक सदस्य काम नहीं आता है किन्तु उस व्यक्ति को अकेले ही उन दुष्कर्मों का फल भोगना पड़ता है। अतएव सर्वथा एकत्व भावना होनी चाहिए। इस संसार में कोई अपना नहीं है। आत्मा अकेली आई है और अकेली पुनः जायेगी। इस प्रकार एकत्व भावना को संजोने वाला कौन संसार में रह सकता है अर्थात् कोई नहीं।'

इस आगम प्रमाण से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि जिसने अपनी आत्मा को सही रूप में पहचान लिया है तथा स्वार्थ के रिश्ते-नाते हैं ऐसा जान लिया है, वह संसार त्यागने का इच्छुक बन जाता है।

सांसारिक बन्धन व्यर्थ का प्रपञ्च है। उत्तराध्ययन सूत्र में इसी संदर्भ में कहा है—

'माया पियाण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
नालं ते मम ताणाए, लुप्पंतस्स सकम्मुणा ।'

अर्थात् माता-पिता, स्नुषा, भार्या ओरस पुत्र कोई भी संसार से रक्षा करने में समर्थ नहीं है। जैसा कर्म किया है वैसा फल भोगना ही पड़ेगा। अतएव जगत् को मोह का कारण समझ कर उसका परित्याग करना दीक्षा का मूलभूत रहस्य है।

इत्यलम्

रौद्र ध्यान का उत्पादक है—क्रोध। क्रोध प्रगट होते ही तीन भयानक विभीषिकाओं का प्रादुर्भाव करता है— 1. स्वयं परितप्त होना 2. दूसरों को परितप्त करना। 3. अकाल मरण।

—गणि मणिप्रभसागर

संयम पथ गामिनी कुमारी शोभा डागा—संक्षिप्त जीवन परिचय

□

सूरजराज जैन

आज की लावण्यमयी किशोरी की आत्मीय चाहत यह रहती है कि आज के इस भौतिक युगीन चकाचौंध भरे विलासिता के युग मे फैशनपरस्ती की होड़ में सबसे आगे रहे। आरामदेही, सुख सुविधा एवं सम्पन्नता के तमाम साधन उसे बिना किसी परिश्रम के उपलब्ध हो जाय और उसके इर्द गिर्द का सारा हुजूम उसकी मनचाही राहों में पलक पांवड़े बिछाये झुक कर सलाम करता रहे। कुल मिलाकर आज की हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण में जी जान से जुटी हुई है। आज परमात्मा और धर्माराधना के प्रति आस्था जाने समाप्त सी हो गयी है।

धन सम्पदा के उपार्जन एवं विलासिता के प्रति जागृत लालसा के इस उन्माद भरे वातावरण में प्रवज्या अंगीकार कर प्रभुवीर के जिन शासन पथ की अविचल सेविका बनने का व्रत लेने की महान् घोषणा करना अपने आप में बेमिसाल है। ऐसा विकट, गुरुतर एवं सुदृढ निर्णय लिया है कुमारी शोभा डागा ने। कुमारी शोभा डागा कोई ग्रामीण अंचल की रूढिवादी सामाजिक व्यवस्था में जीने वाली अबोध बाला नहीं अपितु बीकानेर नगरवासी श्रीमान् विजय चन्द जी डागा की लाड़ली सुपुत्री है। कुमारी शोभा का यह निर्णय भावावेश में आकर अथवा किन्हीं पारिवारिक परिस्थितियों के उत्पीड़न से नहीं अपितु उसका निर्णय आत्मोदित है। आपकी यह मान्यता है कि इस संसार के तमाम भौतिक सुख तो क्षण भंगुर हैं सच्चा सुख तो वैराग्य में है जहां मानव को आत्मशुद्धि का सुअवसर मिलता है। इस नाशवान शरीर का क्या श्रृंगार? मानव जीवन का परम लक्ष्य मुक्ति पथ को पाना है। तप जप और संयम से ही कषायों से मुक्ति मिलती है और इसी से आत्मा शुद्ध होती है और आत्मीय सुख ही सच्चा सुख है। वैराग्य जीवन मुक्ति पथ की राह उजागर करता है। कुमारी शोभा ने दसवीं तक की सामान्य शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् भौतिक उन्माद के थपेड़ों से उत्पीड़ित इस दिशाहीन युवा पीढ़ी की दयनीय स्थिति को अपने सजग नेत्रों से देखा है, परखा है और किंचित् मात्रा में भोग विलास के तूफानी झटकों को सहा है। अत: सांसारिक एवं पंच महाव्रती साधु जीवन का तुलनात्मक अध्ययन कर भागवती दीक्षा अंगीकार करने का निर्णय लिया है। विगत चार वर्षों के दीर्घ अन्तराल से वह आध्यात्मिक क्षेत्र से जुड़ी हुई है। और साधु जीवन की गहन बारीकियों के बारे में जानकारी अर्जित कर रही है। गृहस्थ जीवन का परित्याग कर प्रवज्या पथ हृदयंगम कर रही कुमारी शोभा डागा ने प्रात: स्मरणीया परमपूज्या अनुभव श्री जी महाराज साहिबा की सुशिष्या परम विदुषी एवं प्रखर व्याख्यात्री पूज्या हेमप्रभा श्री जी म. सा. की पावन निश्रा में प्रवज्या अंगीकार करने का सुनिश्चय किया है। दीक्षा महोत्सव की पावन तिथि दिनांक 29 जनवरी 1989 मिती माघ बदी 7 रविवार है।

सांसारिक जीवन में मां बाप एवं बन्धु बांधवों पर आश्रित रही शोभा अपने संयमित साधु जीवन में अपने समाज के लिए बोझ बन कर जीने की चाहत नहीं रख रही है। अपने जीवन के स्वर्णिम अवसर प्रवज्या व्रत को अंगी-

कार करने से पूर्व अपने गुरुजनों एवं विदुषी साध्वीयों के पावन सान्निध्य में रहकर गहन धार्मिक अध्ययन करने में संलग्न है । कुमारी शोभा डागा ने अब तक पंच प्रतिक्रमण, सप्त स्मरण, संस्कृत चैत्य वंदन, चार प्रकरण तीन भाष्य 35 वोल, थोकड़े आदि का संपूर्ण सअर्थ अध्ययन कर इन्हें हृदयंगम किया है और आज भी अविचल भाव से धार्मिक अध्ययन भाषा ज्ञान एवं धर्माराधना में लीन है । कुमारी शोभा डागा परम भाग्यशाली हैं कि उन्हें अपनी भागवती दीक्षा महोत्सवके पावन उपलक्ष्य में प. पू. प्रज्ञा पुरुष आचार्य देव जिन कान्ति सूरीश्वर जी महाराज के प्रधान शिष्य प्रखर व्याख्याता, महाप्रज्ञ मणिप्रभसागर जी म. सा. की पावन निश्रा एवं आशीर्वाद भी प्राप्त होगा ।

कुमारी शोभा डागा से संपर्क कर जब आपके उज्ज्वल भविष्य के बारे में जानकारी चाही तब दृढ़ संकल्पा कुमारी शोभा ने अपने आत्मीय उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वांत सुखाय की प्रबल आकांक्षा के वशीभूत होकर भौतिक व्यामोह में निमग्न इस साँसारिक जीवन का परित्याग कर प्रभुवीर के द्वारा निर्देशित प्रवज्या पथ को अंगीकार करना मेरा दृढ़ निश्चय है और अधिकाधिक आध्यात्मिक अध्ययन कर परजन हिताय के सेवाव्रत के पावन स्वप्न को साकार करने हेतु जीवन की अंतिम धड़कनों तक कृत संकल्प रहूंगी और यही पंचमहाव्रती साधु जीवन की सच्ची सार्थकता है ।

अपने पिताश्री विजय चन्द जी डागा, मातुश्री तीजो वाई डागा दो भ्राता श्री अशोक डागा, सी. ए. (अध्ययन रत), श्री पुखराज डागा एवं भागिनी सुनीता डागा के वृहद परिवार से प्रवज्या व्रत के लिए उद्यत हो रही कुमारी शोभा डागा प्रथम विरांगना नहीं अपितु आपके परिवार से इससे पूर्व आपके बड़े बाप (ताऊजी) स्व. भंवरलाल जी डागा की धर्मपत्नी साधुमार्गी संप्रदाय में इचरज कंवर के नाम से दीक्षित है एवं आपकी भुवाजी की एक सुपुत्री मौसीजी की तीन सुपुत्रियां निरावाध रूप से संयमी जीवन जी रही हैं । तब इस पावन निरावाध होड़ में कुमारी शोभा भी क्यों वंचित रहे ।

गतिमान समय की घड़ियां द्रुत गति से वीत रही हैं और कुमारी शोभा प्रतिपल समर्पित भाव से प्रतीक्षारत है उस पावन स्वर्णिम अवसर के लिए जब वह स्व जीवन के चरमोत्कर्ष प्रवज्या व्रत को हृदयंगम करें । नि:सन्देह परम-पूज्य गुरुदेव उसकी बलवती आकांक्षा को साकार करेंगे ।

29 जनवरी 1989 का वह विराट पावन दिवस कुमारी शोभा डागा के पिताश्री विजय चन्द जी डागा को अभूतपूर्व विजयश्री दिलवायेगा, मातुश्री विरांगना प्रसविनी तीजो बाई को इस मरूधरा के सदा सुरंगे तीज पर्व का आत्मीय आनन्द प्रदान करेगा और कुमारी शोभा डागा अपने डागा कुल, जैन समाज और धर्मधरा वीकानेर की अन्यान्य शोभा वनेगी इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ ।

कुमारी शोभा डागा के प्रवज्या ग्रहण करने से वीकानेर जैन समाज के गौरवपूर्ण इतिहास में एक नूतन स्वर्णिम अध्याय जुड़ेगा ही इसके साथ-साथ युगों-युगों से जीवित जैन धर्म की अमरता को नव संबल प्रदान करेगा । भले ही आज भौतिक व्यामोह के चकाचौंध में आज का यह विश्व डूब रहा है और आज की यह दिशा-हीन युवा पीढ़ी धर्म के प्रति अनास्था भाव को लेकर जी रही है । किन्तु आज भी इस मरूधरा के कण कण में कुमारी शोभा डागा जैसी यश-स्वी वीरांगनाएँ जीवित हैं जो समय-समय पर स्वजीवन को प्रभुवीर के शासन पथ को समर्पित कर दिग्भ्रान्त मानव जाति को दिशाबोध देती रहेगी ।

जय वीर ।

उपधान तप महिमा

(तर्ज—भव से तार)

□

मणिप्रभसागर

तप उपधान, तप उपधान, मंगलकारी तप उपधान ।
है गुणखान, जग में महान्, मंगलकारी तप उपधान ।
तप उपधान करे नरनारी, बन जाते तब वे अधिकारी
महानिशीथे है गुणगान, मंगलकारी तप उपधान ।।१।।
वीर प्रभु यों है फरमाते, तप-उपधान की महिमा गाते ।
इसमें है शुभ-भाव प्रयाण, मंगलकारी तप उपधान ।।२।।
पावन तप है ये सुखकारी, कट जाती कर्मो की भारी ।
आतम बनती सिद्ध समान, मंगलकारी तप उपधान ।।३।।
नवकारं इरियावही सुखकर, शक्रस्तव चैत्यस्तव दुःखहर
नामस्तव पंचम उवहाण, मंगलकारी तप उपधान ।।४।।
छठ्ठा श्रुत सिद्धस्तव सप्तम, सातों हरते अन्तर का तम ।
मिटे अंधेरा, फैले ज्ञान, मंगलकारी तप उपधान ।।५।।
दो बीसड़ फिर हो इक चौकड़, फिर छह दिन का हो शुभ छक्कड़
चौविहार उपवास महान्, मंगलकारी तप उपधान ।।६।।
पहला इक्यावन दिन का तप, दूजे में पैंतीस दिन का तप ।
अट्ठावीसड़ तीजा जान, मंगलकारी तप उपधान ।।७।।
नगर बीकाणे ठाट लगा है, तप जप का शुभ भाव जगा है
नगर लगे इन्द्रलोक समान, मंगलकारी तप उपधान ।।८।।
बैठे हैं द्विशत नरनारी, हेमप्रभाजी की मेहनत भारी
करते सब अमृत रसपान, मंगलकारी तप उपधान ।।९।।
नेमचंदजी ने करवाया, आशादेवी ने रंग लगाया ।
लाभ कमाया कर अनुष्ठान, मंगलकारी तप उपधान ।।१०।।
माघ वदि सातम दिन आता, कान्ति मणिप्रभ तप गुण गाता ।
मोक्ष-माल को हो परिधान, मंगलकारी तप उपधान ।।११।।

अनंत की उड़ान है उपधान



मुक्ति प्रभसागर

उपधान शब्द बड़ा प्यारा, अनूठा एवं उत्कृष्ट-स्थिति का सूचक है। जब व्यक्ति आत्मा के समीप पहुँचता है तो हम कहते हैं कि यह उपधानी है। उप यानि आत्मा, धान यानि निकट। हम सब आत्मा से कोसों दूर हैं। तभी तो हम मायूस हैं, उदास हैं। हमारी अशांति का कुल कारण यह है कि हम अभी उपधान में नहीं हैं। उपधान में होना अर्थात् यात्रा व मंजिल के करीब पहुंचना है। तब हम आत्मा की तलहटी में पहुंच गये समझो। फिर आत्मा का हिमालय दूर नहीं है। अब तक का हमारा सारा जीवन दुख से भरा है, यहां हंसते भी हैं तो ऊपर-ऊपर से। भीतर तो दुख का सागर लहराता है। हमारा यहाँ हंसना मात्र-दिखावा भर है। भीतर हम चिन्ता से घिरे हैं, हम अपने दुःख को दबाए हुए हैं, भले ही हमने बंगले खड़े कर लिये हों, रोलसरोयस कार हो, हमारे पास सुन्दर-पत्नी हो, स्वस्थ बच्चे हों फिर भी भीतर के किसी कोने में झांक कर देखें तो पाएंगे कि आप दुखी हैं।

इन सब के पीछे, इन दुखों के पीछे हमारी स्थिति अनुपधान की है। सदियों से अनुपधान में जीये, आत्मा से दूर जीये, आत्मा का सामीप्य न स्वीकारा और दुख के गर्त में गिरते गये। जैसे मां की गोद में बैठा बच्चा सारे दुखों को विस्मृत कर देता है। कहीं गिर पड़ा हो, चोट लगी हो, खून बह गया हो, गहरा घाव हो, लेकिन जैसे ही मां की गोद उसे मिल जाती है सोने को, मां का कोमल मधुर हाथ का स्पर्श उसके सिर पर, गालों पर होता है। उसके दुख तत्क्षण मिट जाते हैं, और एक नयी ताजगी–प्रफुल्लता आ जाती है। फिर वह तैयार हो जाता है, दौड़ने के लिए।

ऐसे ही है उपधान की प्रक्रिया। आत्मा का गोद तक पहुंचने की क्रिया-प्रक्रिया का नाम है उपधान। जो उपधान की गोदी में सोते हैं उनके लिये मंजिल दूर नहीं है। लेकिन श्रम तो करना होगा। जैसा कि उपधानार्थियों ने किया है। ऊपर से भले ही वे कृश-काय हो गये हों तपश्चर्या के कारण। लेकिन उतने ही वे आत्मा के निकट पड़ाव लगा पाए हैं।

आप अगर शाश्वत एवं न मिटने वाला सुख चाहते हैं तो उपधान में जीएं, उपधान करें और सारे उपाय बाह्य हैं। सुख पाने के उपाय अगर हम बाहर खोजते हैं तो हम गलती पर हैं।

जिस दिन हम उपधान करेंगे फिर हमें सुख को बाहर खोजने के लिये नहीं जाना पड़ेगा। उपधान से गुजरते ही हमारे दुख गिर जाएंगे।

'उपधान एक सफल माध्यम है आत्मा तक पहुंचने का, शाश्वत सुख पाने का। आवश्यकता है उस उपक्रम की जो उपधान तक ले जाये।' उपधान से जोड़े वही क्रिया है। विराट को पाने के लिये, आत्मा की निकटता को पाने के लिये क्रिया करने वाला ही धन्यभागी है। महावीर प्रभु ने फरमाया—विराट को पाने के लिये विराटतम प्रयोग आवश्यक है। उपधान हमारे लिये विराटतम को पाने का परम जागृतिपूर्ण एवं महत प्रयास रूप प्रयोग है।

वैज्ञानिक कहते हैं हम अपनी 15 प्रतिशत प्रतिभा का प्रयोग करते हैं। हम अपनी 5 प्रतिशत ऊर्जा का उपयोग करते हैं। अगर हम अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा एवं प्रतिभा का

उपयोग उपधान के माध्यम से करेंगे तो हम अत्याबाध सुख, अप्रतिम प्रतिभा को संप्राप्त कर सकेंगे।

कृपया उपधान करें। यह आपके लिये ही है। फिर आपके चेहरे पर चिरस्थायी मुस्कान रमेगी। फिर प्रतिपल आपके जीवन का कमल खिला रहेगा। वह कभी मुरझा न सकेगा।

आमन्त्रण है उपधान के लिये गणिवर्य श्री का आपको। आप जलने को तैयार हो तो ही उनके निमंत्रण को स्वीकारना। आप मृत्यु के लिये तैयार हो तो ही यहाँ आना क्योंकि आपकी राख पर ही नये का जन्म होगा। आपकी राख अर्थात् अहं की राख। अहं की राख पर अर्हं का जन्म होगा। आप मिटने को तैयार हो जाओ जैसे बूंद खो जाती है सागर में। हालांकि उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है लेकिन वह सागर की गरिमा को उपलब्ध कर लेती है। यही गणिवर्य श्री का अमृत उद्घोष है। अहंकार की बूंद का समर्पण। मृत्यु ही सागर का, आत्मा का जन्म है अर्थात् अहं गया कि परमात्मा प्रकट हुआ।

आओ बैठें गणिवर्य श्री की आभा से आलोकित आश्रय में। हालांकि उपधान का फंक्शन पूर्ण हो चुका है लेकिन उपधान का अर्थ यह नहीं है कि 51 दिन की क्रिया मात्र। यहाँ गणिवर्य श्री के पास प्रतिपल उपधान घट रहा है। गणि श्री के साथ जीना, उठना, बैठना भी एक उपधान है। यहाँ सर्वत्र खिलखिलाहट है। जो आप अन्यत्र कहीं न पाओगे क्योंकि गणि श्री उन विरल विभूतियों में हैं जिन्हें किसी कोटि में रखना असंभव है। सत्य की गंगोत्री में उनका आवास है। उनका समस्त जीवन एक लयबद्ध संगीत है। इनकी वाणी में प्रखरता और प्रसाद है जो बुद्ध पुरुषों की याद दिलाता है। हमारे अतीत और वर्तमान से बढ़कर वे हमारे लिये गौरीशंकर है।

आप आकाश की तरह सर्वग्राही है। जहाँ सर्व सत्ताएं सिमट आयी है। बैठो इस उपधानमय अमृत प्रवाह में ताकि परमात्मा बन सको।

अन्त में कान्तदर्शी परम प्रज्ञा उपलब्ध सत को असंख्य अगणित नमन।

इन्द्रियों की दासता त्यागे बिना मुक्ति सम्भव नहीं है। हमें इन्द्रियों का मालिक बनना है दास नहीं। इन्द्रियों पर आत्मा का स्वामित्व ही मुक्ति-महल का प्रथम सोपान है। अनन्त काल से हमने इन्द्रियों की गुलामी की है और इसी कारण यह गुलामी भी प्रिय हो गई है। अनन्त जन्मों के इन संस्कारों को तोड़कर, आत्मा को अनावृत करके, उसके दर्शन करना प्राणी-मात्र का पारमार्थिक लक्ष्य है। यह बात इतनी सहज नहीं है। प्रतिदिन पवित्रता के लिये अभ्यास करते हुए हमें आगे बढ़ना है।

—गणि मणिप्रभसागर

है
का बाजार है
का ये द्वार है
न कोई सार है।

है
भटकना बेकार है
पाना न कुछ पार है।
डूबना मझधार है।

है
बन्धु, मित्र परिवार है
किससे क्या सरोकार है
भरमाता बेकार है।

उनके प्रवचन नियमित होते थे। जो ओजस्वी होने के साथ-साथ वैराग्य भावों में डूबे होते थे। आप भी नियमित प्रवचन श्रवणार्थ जातीं। श्रवण परिवर्तन लाया। वैभव एवं भौतिक सुखों से भीगी चेतना में जागरण लाया। वो रुचियां चिन्तन सब कुछ बदल गया। त्याग की रुचि और आत्मचिन्तन प्रबल बने। उनकी सफलता हेतु गुरुवर्या श्री का सत्संग स्वीकार किया। करीब दो साल पू. गुरुवर्या के सान्निध्य में रहकर अध्ययन और संकल्प दृढ़ करने के बाद 19 साल की उम्र में दीक्षा ग्रहण कर ली। गुलाब से अनुभवों की कुंज अनुभव श्री जी बनी।

स्वाध्याय संयम जीवन का प्राण है। उसके बिना साधु जीवन जीवित नही रह सकता। वह मुर्दा बन जाता है। इसीलिये शास्त्रकारो ने साधु जीवन में 18 घण्टों का स्वाध्याय बताया है। सिर्फ दो प्रहर नींद और अन्य कामों के लिये है। रात को एक प्रहर नीद का दिन का तीसरा प्रहर आहार विहार और नीहार का है। सम्पूर्ण समय में साधु स्वाध्यायरत रहे।

अनादिकाल के मनोविकारो को जानने, मानने पहिचानने एवं निकालने का श्रेष्ठतम उपाय स्वाध्याय है। स्वाध्याय के आइने में स्वय का निरीक्षण एवं परीक्षण हो जाता है। स्वाध्याय स्वय मे स्वय की गवेषणा है। स्वाध्याय द्वारा उपलब्ध तरीकों से स्वयं के विकारों को दूर करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। इसीलिये स्वाध्याय को आभ्यंतर तप माना है। इससे मनोविकार दूर ही नही होते, यह केवल दवा ही नही है टॉनिक भी है। यह श्रद्धा एवं संयम को पुष्ट करता है।

पूज्य गुरुवर्या श्री बचपन से ही अध्ययनशील थी। प्रारम्भ मे ही उन्हें पढने-पढाने का बड़ा शौक था। यही कारण था कि संयम ग्रहण के बाद वह पूर्णरूपेण स्वाध्याय को समर्पण हो गयी। स्वाध्याय का यह क्रम उनके जीवन मे अभ्यास-काल से लेकर अन्त तक अविरल-धारा के रूप में बहता रहा। अर्थहीन बातों से समय व्यर्थ करना, उन्हे जरा भी पसंद नही था। समय के व्यर्थ-व्यय को बचाने के लिये कई महिनों तक एकाशन-आयंबिल-नीवि करके चला लेती थी। जब तक कोई विषय समझ नहीं आता उन्हें चैन नही पड़ती, सोचती ही रहती। आहार पानी तक की भी सुधबुध नहीं रहती। यही कारण है कि वे उच्च ज्ञान की धनी बनी।

उनके स्वाध्याय का मुख्य विषय आगम व आगम संबंधी ग्रन्थ थे। इसीलिये उनका आगमिक ज्ञान गहरा व ठोस था। उनकी आगम विवेचन-शैली इतनी सरल, सुबोध थी कि नीरस विषय को भी सरस बना देती थी। गूढ़ से गूढ़ विषय को भी सरल से सरल बनाकर श्रोता को हृदयंगम करा देती थी। द्रव्यानुयोग उनका प्रिय विषय था। उनका संस्कृत प्राकृत का उच्चारण इतना शुद्ध, इतना स्पष्ट, इतना लयबद्ध एवं पाण्डित्यपूर्ण था कि सुनते ही बनता था। चौरासी वर्ष की उम्र में भी उनके जीवन में स्वाध्याय की लौ यथावत् प्रज्वलित थी। शारीरिक रुग्णता, जंघाबल की क्षीणता एवं नेत्र ज्योति की कमी के बावजूद भी उनकी स्वाध्याय निष्ठा में कमी नही आई। आनन्दघन देवचन्द चौबीसी और बीसी का स्वाध्याय तो उनका नियमबद्ध चलता था। जैसे उन्हें स्वयं पढ़ने का शौक था वैसे उन्हें दूसरों को पढ़ाने का भी उतना ही शौक था। शारीरिक अस्वस्थता की स्थिति में चार-चार, पांच-पांच घण्टे नियमित रूप से साध्वियों को अध्ययन कराती थी। उनका यह अध्यापन का क्रम अन्त समय तक चलता ही रहा। कोई साधु-साध्वी या ग्रहस्थ उनके पास आ जाये तो वे ज्ञान-ध्यान की ही चर्चा करती थी। साध्वियों को उच्च शिक्षा दिलाने की प्रबल इच्छा थी इस हेतु वे हर संभव सुविधा कर देने को तैयार थी। कितनी भी तबियत खराब क्यों न हो पठन-पाठन का यह क्रम कभी नही टूटता।

फलत: 'अप्रमत्तता' उनके जीवन में सहज बन गयी थी। 84 साल की उम्र में आसाता की स्थिति में भी मैंने उन्हें कभी दिन में सोते नही देखा, रात में भी दस बजे से पूर्व कभी नही। न कभी सहारा लेकर बैठते देखा। वही सुखासन मुद्रा में पाटे के बीच विराजी हुई या तो पढ़ती हुई या गम्भीर चिन्तन में रत या फिर जाप करती हुई उन्हें सदा देखा है। वे व्यर्थ के परिचय या चर्चा वार्ता में दूर कोसों दूर रहती थी।

स्वाद पर तो उनका पूर्ण नियन्त्रण था। खारे, खट्टे, तीखे, फीके का उनके मन पर कोई असर नहीं। एक वार जहर की तरह कड़वी ककड़ी का शाक आ गया। अन्यों को वापरने में परेशानी होने लगी, किन्तु आपश्री ने वड़े शान्त भाव से पूरा का पूरा शाक वापर लिया। स्वाद लिप्सा कभी जगने न पावे इस हेतु वे इतनी सतर्क थी कि गोचरी में आहार सवको वांट देने के वाद कोई न कोई ऐसा प्रश्न रख देती कि खाने वालों का ध्यान उसी में केन्द्रित रहे और स्वाद के प्रति ध्यान ही न जावे।

'सादा जीवन-उच्च विचार' आपका जीवन-सूत्र था। वस्त्र-पात्र कम्वली-घड़ी-चश्मा-पैन आदि प्रत्येक वस्तुओं में सादगी पसन्द थी। वे हमेशा फरमाती थी कि गृहस्थ तो भाव भक्ति से अच्छे से अच्छे उपकरण वापरते हैं किन्तु साधु को तो साधु मर्यादा का ध्यान रखना चाहिये। साधु का जीवन इतना हल्का होना चाहिये कि ग्रहस्थ पर किसी रूप में भार न वने।

'लहुभूयविहारिणः'

ममता का विसर्जन समता का उदगम है। प्रारम्भ से गुरुवर्या श्री के असाता का उदय अधिक मात्रा में ही रहा। भयंकर असाता के वीच भी वे कभी विचलित और असन्तुलित नहीं वनती थी। भयंकर वेदना के समय भी वह सहिष्णुता की मूर्ति मुस्कुराती रहती थी। तन में व्याधि पर मन में समाधि थी क्योंकि शरीर के प्रति मन में जरा भी ममत्व नहीं था। आत्मा की अमरता, शरीर की नश्वरता, आत्मा और देह की भिन्नता का भाव उनके रोम-रोम में भरा था। रोग को तो वे अति परिचित मेहमान समझती थीं। वे वड़ी ही सहजता से कहती थी—'अति परिचित मेहमान है यहां नहीं आयेगा तो अन्यत्र कहां जायेगा। 'आत्मा छुं, नित्य छुं, देह थी भिन्न छुं' यह उनके जीवन का उच्च आदर्श था। 'भेद ज्ञान' की केवल चर्चा ही नहीं किन्तु यथार्थ मूर्त रूप उनके जीवन में मिलता था।

पूज्य गुरुवर्या श्री से एक वार सुना है कि आप केशरियानाथजी की यात्रार्थ पधार रही थी। गर्मी का समय था। रास्ता वड़ा विकट था। आवास आदि व्यवस्थाओं का सर्वथा अभाव था किन्तु परमात्मा के दर्शन की प्यास उन सभी कष्टों से वेखवर उन्हें उधर ही कदम वढ़ाने को मजवूर कर रही थी। दादा के दर्शन की तड़प वुझाने वे उधर पधारी। प्रातः विहार किया किन्तु यह क्या? चलते चलते पांव रुक गये। पैर में आग-आग लग गयी। एडी से चोटी तक पैर में कांटे-कांटे लग गये हों। एक दो सेकण्ड के लिये चेहरे पर पीड़ा के भाव झलके किन्तु दो सेकण्ड वाद चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी। यह देखकर सभी सोच में पड़ गये कि यह क्या? पूछने पर मालूम हुआ कि पैर में कोई जहरीला जानवर डंक दे गया है। इधर-उधर देखा एक जंगली विच्छू रोड पर था। वात समझते देर नहीं लगी सभी चिन्तित हो उठे कि अव क्या किया जाय। किन्तु उनके चेहरे पर परम प्रसन्नता के भाव थे। वे वोले पीड़ा मुझे कहां है? जो है वह शरीर को है इस मिट्टी की क्या चिन्ता है? सताया होगा कहीं इस जीव को? सभी ने आग्रह किया कि जहर उतरवाया जाये। किन्तु किसका? जहर को कोई जहर माने तो न। उन्होंने कहा कि परमात्मा के नाम स्मरण से अधिक जहर उतरने की शक्ति किसमें है? परमात्मा के नाम में वह शक्ति है जो जहर को भी अमृत वना देती है।

विप अमृत थई परगमे, लहिये अविचल धाम।

वस आसन जमा कर विराज गई। उवसग्गहरं का जाप प्रारम्भ कर दिया। जपते-जपते आंखें कव मुंद गई? मन कहां खो गया? शरीर कव निष्पंद हो गया? वाणी मौन हो गयी कुछ भी पता नहीं पड़ा। एकाग्रता और तन्मयता का साक्षात् स्वरूप देखने वाले को विभोर करने वाला था और वह भी दर्द····पीड़ा और वेदना के समय में सहसा सिर झुक जाता है इस भेद ज्ञान की मूर्ति के चरणों में····हृदय न्योछावर हो जाता है, उनके आत्म रमणता पर।

परमात्मा, जिनाज्ञा एवं गुरुजनों के प्रति उनकी श्रद्धा, आस्था एवं समर्पण अपूर्व, अद्भुत एवं अलौकिक था। परमात्मा दर्शन के समय, चैत्यवन्दन की मुद्रा में उनके समर्पित व्यक्तित्व को देखते ही वनता था। उनकी भाव विभोर मुद्रा देखने वाले को भी भाव-विभोर कर देती थी। परमात्मा के समक्ष आत्म निवेदन करते करते कई वार

उनका हृदय भर जाता, आंखें अश्रुपूरित हो जाती। उनकी तन्मयता आत्मा की गहराइयों में डूबकर आत्मा में निहित आनन्द के अक्षय खजाने को खोजने का एक सफल प्रयोग था।

नाम का मोह उन्हें कभी नही छुआ। जहां एक छोटे से पाटे पर भी नाम लिखवाने का मोह नही छूटता, वहां पू. गुरुवर्या श्री के उपदेश से कई दादावाड़ी, उपाश्रय, आयंबिल भवन, सार्वजनिक धर्मशाला स्कूलों आदि का निर्माण हुआ। जिर्णोद्धार हुए किन्तु कहीं भी नाम नही लिखवाया।

वे दृढ़ संकल्प एवं कठोर संयम की धनी थी। उन्हें अपने विचारों से कोई हटा नही सकता था। जंघाबल क्षीण होने की स्थिति में वे स्थाणापन्न हो गयी थीं। दूर-दूर के भक्तों का अत्याग्रह होने पर भी वे अपने संकल्प में सदा दृढ़ रहीं। डोली का प्रयोग कभी नहीं किया।

उन्होंने कथनी और करनी के अन्तर को बहुत कुछ हद तक अपने जीवन में, कार्य-कलापों में पाट दिया था। उनका हृदय निश्छल, वाणी सरल एवं व्यवहार बड़ा ही कोमल था। उनके बोलने से पूर्व उनका जीवन बोलता था। जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी कठिनाइयों का हंसते हुए सामना किया।

आत्मप्रशंसा और निन्दा से सर्वथा दूरवे हमेशा सत्य, तथ्य और यथार्थ की खोजी थी। मौन, ध्यान और एकान्त उन्हें बहुत प्रिय थे। फलतः उनका जीवन चिन्तन प्रधान था। बुद्धि में स्थिरता, विचारों में दृढ़ता, संकल्पों में तीव्रता और वाणी में सिद्धि थी। उनकी वचनसिद्धि का मुझे स्वयं को अनुभव है।

कई वर्षों से मैं दीक्षा के लिये प्रयत्नशील थी। ज्यों-ज्यों समय निकल रहा था संसार में रहना असह्य हो रहा था। माता-पिता की ममता मुझे हर संभव बंधन में डालना चाहती थी। मैं हर समय चिन्तित रहती थी।

एक बार मैं पू. गुरुवर्या श्री के दर्शनार्थ पाली गई हुई थी। उनसे कर्मग्रन्थ का अध्ययन कर रही थी। सहज में मैंने प्रश्न कर दिया, गुरुवर्या श्री ! मैंने ऐसा क्या कर्मबंधन किया कि इतना प्रयास करने के बावजूद भी सफलता नही मिल रही है ? कुछ देर मौन रहने के बाद वे बोली, शान्ता ! अन्तराय के घने बादल छंट गये हैं.. ....अब वह सवेरा दूर नही जिस दिन तू मेरे साध्वी-मण्डल में प्रविष्ट होगी। मैं उनकी ओर देखती रह गई। क्या अद्भुत तेज था उनकी आंखों में। क्या आत्मविश्वास टपक रहा था उनके चेहरे से मैं तो उन्हें देखते-देखते इतनी भाव-विभोर हो गई कि कुछ कहते नही बना। शब्द मुंह में ही रह गये। पता नहीं कब सिर उनके चरणों में झुक गया। तब ही तन्द्रा टूटी जब उन्होंने बड़े प्यार से मेरे सिर पर हाथ रखते हुए कहा, पगली ! अब क्यों चिन्तित है ! क्या मेरे पर विश्वास नहीं है तुझे ? मैं अवाक् सी उन्हें निहारती रह गई।

पता नहीं क्या ताकत थी उनकी वाणी में। अभी चार माह भी नही बीते कि पिताजी दीक्षा का मुहूर्त्त निकालने के लिये निवेदन करने पाली गये। यद्यपि पू. गुरुवर्या श्री आज नहीं है, किन्तु उनका स्वर आज भी मेरे कानों में गूंज रहा है।

विद्वत्ता हासिल करना कोई बड़ी बात नहीं है किन्तु उसके साथ तात्त्विकता एवं सात्त्विकता का योग होना कठिन है। पू. गुरुवर्या विद्वान होने के साथ तात्त्विक एवं सात्त्विक भी थी। वे मैत्री, करुणा की बातें ही नहीं करती थी, बल्कि उन्हें जीवन में साकार भी किया था। वृद्ध, ग्लान एवं बच्चों के प्रति उनका स्नेह, सद्भाव एवं सेवा भाव उनके बड़प्पन का अंग था।

उनकी वाणी में ओज, चेहरे पर संयम का तेज झलकता था। उन्होंने हर समय....हर परिस्थिति में अपने संयम एवं साधु मर्यादा का ख्याल रखा। यही कारण है कि उनके प्रवचन संयम-प्रेरक, वैराग्यवर्धक एवं प्रभावक होते थे। वाणी में पौरुष था। चेहरे की प्रभावकता हर एक को अभिभूत करने वाली थी। उन्हें आडम्बर...दिखावा कतई पसन्द नहीं था। 'जहा अन्तो तहा बाहो' का जीता जागता उदाहरण थी पू. गुरुवर्या श्री।

इसी का परिणाम था कि—समाधिमरण और बोधिलाभ की स्थिति उनके जीवन में सहजसिद्ध हो गई थी। उनकी मृत्यु....वास्तव में पूर्व तैयारी के साथ चोला बदलना था। पूर्ण जागृति में संथारापूर्वक निर्यामणा के साथ उन्होने यह चोला बदला था। यह उनकी लंबी आराधना एवं आत्मजागृति का ही सुपरिणाम था।

हेमप्रभा गुरुवर्या मेरे



सुश्री सुनीता डागा, बीकानेर

जिन शासन गण खरतर नभ में,
ज्ञान दामिनी चमकी है।
जन जीवन को राह दिखाने,
आज कोकिला कुहकी है।।

शुभ्र ज्योत्स्ना झलके मुख पर,
निर्मल कान्ति नयन युगल में।
होठों पर मुस्कान थिरकती,
छा जाती अन्तस्तल में।।

दमक रहा मुखमंडल तेरा,
चमके ज्यों रवि नभमंडल है।
शीतलता शशि सम पायी है,
ज्यों बहता झरणा कलकल है।।

हेमप्रभा गुरुवर्या मेरे,
मेरी श्रद्धा अर्पित है।
लाखों नर नारी से तेरे,
चरण युगल वन्दित अर्चित है।।

शत शत वंदन



सुश्री कु. कुसुम खजांची

धीर वीर गंभीर गुरुवर,
शान्त सौम्य मनोहारी ।
दूर दूर से दर्शन करने,
आते नर और नारी ।
बुद्धि विचक्षण, प्रतिभा विलक्षण
नव युग के निर्माता ।
सत्य शान्ति के अग्रदूत,
हो तुम जन-जन के त्राता ।

गंगा की धारा सम निर्मल,
जीवन तेरा बहता कल-कल ।
ज्ञान-ध्यान संयम निष्ठा का,
साधन करते तुम पल प्रतिपल ।
जिन वाणी का पान कराकर,
जीवन करते सबका उजागर ।
अगणित श्रद्धा से मणि गुरु को,
शत्-शत् वंदन शीष नमाकर ।

शुभ्र ज्योत्सना सी निर्मल,
देह कान्ति नयनाभिराम ।
सत्यपूत आचार निष्ठ,
जिनका जीवन आनंद धाम ।
सत्प्रेरणा दे उपधान कराकर,
किया जगत में नाम ।
सुवर्ण समान समुज्ज्वल कीर्ति
गुरुवर्या श्री को शत्-शत् प्रणाम ।

बीकानेर में उपधान तप की परम्परा—महोपाध्याय विनयसागर

विक्रमपुर (बीकानेर) की स्थापना के समय से ही इसके निर्माण और विकास में खरतरगच्छ के अनुयायियों का सतत एवं सक्रिय सहयोग रहा है तथा वे सम्मानित उच्च पदों पर आसीन भी रहे हैं। खरतरगच्छ के प्रमुख आचार्यों—जिनहंससूरि, जिनमाणिक्यसूरि, अकबर प्रतिबोधक युग प्रधान जिनचन्द्रसूरि से लेकर जिनहर्षसूरि, जिन सौभाग्यसूरि तक का बीकानेर के नरेशों से घनिष्ठ संबंध भी रहा है। नरेशों का न केवल घनिष्ठ संबंध ही, अपितु वे आचार्यों के परम भक्त एवं पक्षधर भी रहे हैं और उन्हें पूर्ण राजकीय सम्मान भी देते रहे हैं। वस्तुत: देखा जाये तो बीकानेर प्रारंभ से ही खरतरगच्छ का एक प्रमुख गढ़ रहा है।

महानिसीथ आदि शास्त्रों में उपासकवर्ग के लिये पंचमंगल महाश्रुतस्कन्ध उपधान तप को विधिवत् करने की परमावश्यकता बतलाई गई है। इसकी आराधना के बिना सूत्रादि ग्रहण करने का वह अधिकारी नहीं होता।

यह बीकानेर का परम सौभाग्य है कि यहां पंचमंगल महाश्रुत स्कन्ध उपधान तप का प्रारम्भ भी खरतरगच्छ के सुविहित आचार्यों के द्वारा ही हुए हैं। सर्वप्रथम बीकानेर में उपधान तप क्रियोद्धारक खरतरगच्छाचार्य परम यशस्वी श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी महाराज की अध्यक्षता में वि. सं. 1985 में हुआ था। इसका आयोजन श्री प्रेमचन्द जी खजांची ने करवाया था।

पन्द्रह वर्ष के अन्तराल के बाद दूसरी बार महामंगलकारी उपधान तप का सफल आयोजन खरतरगच्छ विभूषण परमगीतार्थ आगमज्ञ उपाध्याय श्री मणिसागरजी म. के उपदेश से स्वर्गीय श्री मोहनलाल जी दफ्तरी की धर्मपत्नी की प्रेरणा से श्री सम्पतलाल जी दफ्तरी ने वि. सं. 2000 में करवाया था। इस तपस्या में श्री रावतमलजी बोथरा जैसे वयोवृद्ध धर्मनिष्ठ भी सम्मिलित हुए थे।

वि. सं. 1985 से 2044 तक के 60 वर्षों के अन्तराल में खरतरगच्छ में यह तीसरा उपधान तप बीकानेर में हो रहा है। खरतरगच्छीया विदुषी श्री हेमप्रभाश्रीजी के उपदेश एवं प्रेरणा से प्रेरित होकर श्री भंवरलाल जी नेमिचंद जी खजांची ने इसका सफल आयोजन किया है और स्व. आचार्य श्री कान्तिसागरसूरि के शिष्य गणिवर्य श्री मणिप्रभसागर जी के तत्वावधान में इसका कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हो रहा है।

वर्तमान समय में खरतरगच्छ परम्परा में उपधान तप की क्रियाओं में देववन्दन करते समय जो चैत्यवन्दन, स्तुतियां और स्तवन पढ़े जाते हैं, उनका निर्माण किस प्रसंग में और किसने किया था? जिज्ञासा होना स्वाभाविक है।

वि. सं. 1998 की घटना है कि उपाध्याय श्री मणि सागर जी म. (आचार्य प्रवर श्री जिनमणिसागर सूरिजी म.) ने खरतरगच्छीय सुखसागरजी म. के समुदाय में सर्वप्रथम उपधान तप जयपुर में करवाया था। आयोजन किया था जौहरी श्री मांगीलालजी गोलेछा ने और कार्यस्थल था श्री नथमलजी गोलेछा का कटला जो वर्तमान में अग्रवाल कॉलेज के नाम से विख्यात है। इस पावन प्रसंग पर उपाध्याय प्रवर श्री मणिसागर जी म. ने मोकलसर में चातुर्मास स्थित गच्छनायक आचार्यवर श्री जिनहरिसागर सूरिजी म. के शिष्यरत्न आशुकवि उद्भट विद्वान् मुनि

श्री कवीन्द्रसागरजी (बाद में जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी) म. को लिखा था कि उपधान तप से संबंधित केवल दो ही स्तवन प्राप्त हैं, आप कुछ स्तवन आदि नवनिर्मित कर भिजवादें।

इस पर श्री कवीन्द्रसागरजी म. ने सहर्ष शीघ्र ही 5 चैत्यवन्दन, 5 स्तुतियां और 5 स्तवन नये बनाकर, स्वकीय हाथों से लिखकर भिजवाये थे। (इसकी स्वलिखित मूल पाण्डुलिपि आज भी मेरे पास सुरक्षित है।) तभी से ये ही स्तवनादि दैनिक देववन्दन आदि क्रियाओं में प्रचलित है।

इस तप की पूर्णाहुति सानन्द एवं निर्विघ्न सम्पन्न हो एवं उपधानवहन करने वाले श्रावक-श्राविका समूह भी वास्तविक अर्थ में सूत्रार्थग्राही बनकर शुद्ध जीवन का निर्माण करें, यही शुभकामना है।

हमारी आत्मा में तुच्छ अहंकार का जो कचरा छिपा हुआ है, वही अधोगती का मूल कारण है। आचार्य हरिभद्र सूरि परम विद्वान् होते हुए भी निरहंकारी थे, अहंकार शून्य थे। इनके शब्दों में प्रेम माधुर्य एवं सरलता के दर्शन होते हैं। सत्य तो यह है–गूढ़ चिन्तन ही हमें निरभिमान की भूमिका तक पहुँचा सकता है।

—गणिमणिप्रभसागर



तपस्या का अर्थ है—अपनी समस्त इन्द्रियों को नियन्त्रित कर आत्माभिमुख होना। तपश्चर्या का केवल इतना ही अर्थ नहीं है कि हम भूखे रहें—यह तो पहली सीढ़ी है। मन का सम्बन्ध जब तक शरीर के साथ है तब तक संसार है ज्योंही मन का संयोग आत्मा से होने लगता है, तप का प्रभाव प्रारम्भ हो जाता है।

—गणिमणिप्रभसागर

इस उपधान तप की विशेषताएँ

- कुल 205 उपधानवाहियों की विशालसंख्या युत वीकानेर में पहला उपधान (यहाँ हुए उपधानों से सबसे ज्यादा आराधक गण) जिसमें प्रथम उपधान–117, द्वितीय उपधान–48, तृतीय उपधान–40 पुरुष वर्ग–24, कुमारिकाएँ–24, शेष 157 महिलाएँ
- उपधान मालारोपण के दिन कुमारी शोभा डागा का भव्य दीक्षा समारोह
- उपधान माला व दीक्षा एक साथ होने पर भी अपूर्व शांति के साथ व्यवस्थित रूप से समारोह का समापन
- उपधानवाही युवक नरेश गोलछा द्वारा उपधान में 21 उपवास की भव्य तपश्चर्या
- दो वहिनों द्वारा उत्कृष्ट मूल विधि से अर्थात् लगातार 16 उपवासों द्वारा तीसरा उपधान
- 25 छोड़ का भव्य उद्यापन (उजमणा) महोत्सव
- 55 से भी ज्यादा उपधान आराधकों द्वारा तेला करके माला परिधान
- सिर्फ 37 मिनट में 117 उपधान आराधकों का विधि विधान युत मालारोपण विधान
- उपधान में 11 जोड़ों (पति-पत्नी) द्वारा आराधना
- अभिनंदन कार्यक्रम में छः वैरागन वहिनों का अभिनंदन
- उपधानपति का नगर की विभिन्न संस्थाओं द्वारा भव्य अभिनंदन
- तपस्वीगणों की विशाल संख्या में निमित्त थी पू. साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म. की प्रेरणा।
- उपधान आराधकों का परस्पर अनूठा सहयोग/प्रेम-भाव।
- पूज्य गणिवर्य श्री द्वारा प्रतिदिन विधियों, हेतु आदि का विशेष प्रशिक्षण
- माल महोत्सव का व वर्षीदान का लम्वा, विशाल वर-घोड़ा वीकानेर के इतिहास में पहली वार
- एकासणा आदि की व्यवस्था में स्थानीय संघ, युवकों, कुमारिकाओं, महिलाओं का पूर्ण सहयोग
- एकासणों में पुरुष वर्ग में पुरुषों द्वारा एवं महिला वर्ग में महिलाओं द्वारा व्यवस्था
- पूज्य गणिवर्य श्री द्वारा स्वलिखित 'उपधानपति' पद प्रदान की घोषणा
- उपधानपति द्वारा हर प्रथम उपधान आराधक का अभिनंदन पत्र द्वारा वहुमान
- सौ. आशादेवी खजांची द्वारा हर आराधक को चावलों से वधाना
- मालारोपण के समय अभूतपूर्व पांडाल व्यवस्था, उपधान आराधक, आदि सवके लिये अलग से व्यवस्थित मंच का आयोजन
- कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रतिदिन हर आराधक से व्यक्तिगत संपर्क करना और उन्हें शाता पूछना व वांछित कार्य सेवा करना।

उपधान आराधकों को विदाई संदेश

□

प्रवचन—गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म. **प्रस्तुति—मुनि मुक्तिप्रभसागर**

आज मेरा धर्म-परिवार मेरे से विदाई ले रहा है। विदाई के क्षणों में विदाई लेने वाले और देने वाले दोनों का मन भारी हो रहा है। हर मानव के लिए ये क्षण बड़े ही संवेदनशील ··· नाजुक एवं हृदय-विदारक होते हैं। न चाहते हुए भी मन की घनीभूत पीड़ा द्रवित हो उठती है। उसी पीड़ा के कारण सभी के नेत्र सजल हो रहे है।

जिस दिन आराधना के इस अनूठे अनुष्ठान में आपने भाग लिया था, आपका चेहरा बड़ा ही प्रफुल्लित था। होठों पर मधुर मुस्कान थी। आंखों में अपूर्व तेज था। हृदय आनन्द-विभोर हो रहा था। आपके शरीर का रोयां-रोयां हर्ष मे गद्‌गद् था। आपके देह का कण-कण खुशी से स्पन्दित था। किन्तु आज सब कुछ बदल गया है। अपने धर्म-परिवार से बिछुड़ने के गम में सब कुछ परिवर्तित हो गया है। आज चेहरा मुरझा गया है। होठों की मुस्कान गायब हो गई है। आंखों मे विषाद छाया हुआ है। दिल धड़क रहा है। शरीर का रोयां-रोयां तड़फ रहा है। देह का कण-कण पीड़ा से बोझिल है। आपकी यह पीड़ा.... आपकी यह बेचैनी....आपकी यह व्याकुलता मैं कई दिनों से समझ रहा हूं। महसूस कर रहा हूं।

क्या हरा-भरा वातावरण 'महावीर-भवन' का! क्या खुशनुमा वातावरण यहां का। चारों ओर तप-त्याग की गूंज। संयम की महक फैल रही थी। आराधक यहां आराधना कर रहे होते हैं। किन्तु उनकी आराधना की अनुगूंज इस धरती के कण-कण से फूट रही होती है। सवेरे चार बजे से प्रारम्भ होने वाला आराधना का यह क्रम रात की दस बजे तक अविरल गतिमान रहता है। आराधना के साथ प्रवचन क्रियाओं का प्रेक्टिकल प्रशिक्षण तत्व चर्चा ध्यान प्रश्नोत्तरी आदि कई महत्वपूर्ण क्रिया-कलापों, रोचक एवं प्रेरक आध्यात्मिक आयोजनों में व्यस्त आपका समय किस अपूर्व शान्ति और आनन्द के साथ व्यतीत हुआ। यह आपके चेहरे से, आपकी आंखों से स्पष्ट मालूम होता था। किन्तु कल आप पुन. उसी वेश-परिवेश में चले जायेंगे। आराधना का यह क्रम टूट जायेगा। साधना का यह सुनहरा अवसर यहीं छूट जायेगा। शेष रह जायेगी सभी के दिल में अंकित आराधना की मधुर स्मृतियां। आज भरा-भरा दीखने-वाला 'महावीर भवन' एकदम सूना हो जायगा। किसे नहीं है इसका गम? किसके हृदय में हलचल नहीं मची है? आंखों से बहने वाले आंसू इसके साक्षी है... गवाह हैं।

कितना सुहावना लगता है वह दृश्य जब 205 आराधक एक साथ चरवला...मुहपत्ति लेकर विविध-मुद्राओं में क्रिया करते है। कैसी शमां बंध जाती है उस समय, जब आप सूत्र, अर्थ व उनके भावों के अनुरूप क्रिया करने में तन्मय हो जाते हैं। यही तन्मयता स्वयं की पहिचान का साधन बनती है। इसी तन्मयता में आत्मा सांसारिक भावों से दूर अतिदूर होकर अपने में स्थित हो जाती है। आपकी ये पलें, आपकी अपनी हो जाती है। बस फिर आनन्द का झरना फूट पड़ता है। यही अमाप आनन्द अन्तर की सारी सीमायें लांघकर...आपकी आंखों से, आपके चेहरे से व आपके हाव-भाव से बाहर फूट रहा है।

मेरे सामने व दायें-बायें बैठे हुए आराधक एक साथ आदेश मांगने और लेने के लिये शास्त्रीय शब्दों का उच्चारण करते हैं, तब ऐसा लगता है मानो किसी महर्षि के तपोवन में सस्वर वेद पाठ हो रहा हो । आपके सामने बैठ कर मैं आपके प्रफुल्लित चेहरों को देखता... मेरा हृदय गद्गद् हो जाता । आपके एक साथ उच्चारण की गूंज से, मेरे हृदय में आनन्द की उर्मियां उछल पड़तीं । यह दृश्य देखकर अपार आत्मतृप्ति मिलती मुझे । आपको क्रिया करने में जितना आनन्द आता, उससे अधिक आनन्द मुझे कराने में आता । क्योंकि आपका आनन्द मेरे आनन्द को द्विगुणित कर देता । अब कहाँ व कब मिलेगा यह दृश्य देखने को मुझे । कब मिलेगा आराधना कराने का ऐसा अपूर्व अवसर मुझे । किसे कराऊंगा प्रात: 6 बजे से क्रियायें ?

घर जाकर आप भूल सकते हैं. इन दृश्यों को, क्रियाओं को एवं मुझे । किन्तु मैं आपको नहीं भूल सकता । क्रियाओं का समय होते ही वह दृश्य सदा घूमेगा मेरी आंखों के सामने । वे आवाजें गूंजेंगी मेरे कानों में । उस वातावरण की स्मृतियां हलचल मचाएंगी मेरे दिल में । आराधकों की अलग-अलग रुचियां... उनकी अलग-अलग प्रवृत्तियां बोलने चालने का ढंग.... जिज्ञासायें...व्यवहार के तरीके.... स्नेह सद्भाव...लम्बे समय का परिचय... समय-समय पर याद आता रहेगा मुझे । कइयों का निश्छल धर्म, स्नेह एवं विनोदी स्वभाव तो भुलाये नहीं भूल सकता ।

धर्म-परिवार से बिछुड़ने का गम तो है ही मुझे किन्तु साथ ही एक बात की खुशी भी है । आप यहां से जा रहे हैं... बदल कर जा रहे हैं... बहुत कुछ लेकर जा रहे हैं । खाली आये थे भरे हुए जा रहे हैं । यूं कहा जाये कि खोने योग्य खोकर और पाने योग्य पाकर जा रहे हैं । अब आपकी चाल बदल गई है... देखने की दृष्टि बदल गई है । सोचने का तरीका बदल गया...भाषा बदल गई...क्रियायें बदल गई हैं ।

पहिले आपकी चाल में, दृष्टि में विचार और वाणी में अहं था....अविवेक था....विषय और कषाय की भयंकर दुर्गन्ध थी । आपके कदम बुरे कार्य के लिये उठ जाते थे । आपकी दृष्टि में विषय कषायों की चिनगारियां फूटती थीं । विचारों में स्वार्थ था, क्रूरता थी एवं वाणी में दुर्भाव था किन्तु अब आपका सब कुछ बदल गया है क्योंकि 51 दिन के लम्बे समय तक आपने केवल क्रियायें ही नहीं की किन्तु जीवन बदलने की प्रक्रियायें भी की हैं । इसका भी अभ्यास किया है । दिशा-बोध पाया है । जीवन परिवर्तन का ज्ञान पाया है । अब आप घर जाकर शान्ति व स्नेह का वातावरण बनायेंगे । जहां छोटी-छोटी बातों को लेकर क्लेश करते थे, वहां स्नेह का वातावरण सृजन कर घर को स्वर्ग बनायेंगे । अन्धकार से आलोक की ओर... अज्ञान से ज्ञान की ओर आपके कदम मुड़ गये हैं । ध्यान रहे अब आपके हृदय में प्रत्येक आत्मा के लिये स्नेह का स्रोत, करुणा का प्रवाह बहेगा । आरंभ समारंभ करते समय दिल रोयेगा । हाथ कांपेंगे, कदम पीछे हटेंगे । आंखों से आंसू बहेंगे । हिंसा... झूठ... चोरी....दुराचार एवं परिग्रह के पाप से छूटने को दिल तड़फेगा ।

मैं मानता हूं कि अब आपका जीवन बिल्कुल बदल गया होगा । मुझे आशा ही नहीं आप पर पूर्ण विश्वास है कि आपकी दिनचर्या निश्चित बदलेगी । इससे पहिले आप आठ बजे उठते थे । शायद कइयों की बैड-टी की भी आदत होगी । कइयों को न देव-दर्शन का नियम था न गुरुवन्दन का । सामायिक प्रतिक्रमण का तो परिचय ही नहीं था । किन्तु 51 दिन का अभ्यास निश्चित आपके जीवन में परिवर्तन लाया है.... मोड़ लाया है । आप घर जाने के बाद, यहां जो कुछ ज्ञान मिला है, उसके प्रकाश में ही अपना जीवन बितायेंगे । आवश्यक क्रियायें, तप... त्याग को यथाशक्ति अपना रुटीन बनायेंगे । आशा है मुक्ति की गहन प्यास आपके हृदय में जगेगी ।

जब भी आपका घर में मन न लगे... जब भी आपको मेरी याद आये, आप सीधे चले आना मेरे पास । मेरा दरवाजा आपके लिये सदा खुला है । मेरे दिल में आपके लिये गहरा स्थान है । मेरे हृदय में आपके प्रति अपार करुणा का प्रवाह बह रहा है । आप जब चाहे मेरे पास पधार जायें । मेरा आपको यही हार्दिक आमंत्रण है...सस्नेह निमंत्रण है ।

आँखो देखा हाल

□

प्रस्तुति—साध्वी विनीतप्रज्ञा सहयोग—साध्वी कल्पलता, साध्वी शुभांजना

दिनांक 6 दिसम्बर 1988, आज पूज्य गुरुदेव का धर्म-धरा बीकानेर की धरती पर प्रथम बार प्रवेश हो रहा है। जब से बीकानेर आगमन की स्वीकृति मिली तभी से बीकानेर की धर्म-प्रेमी जनता उनके आगमन की प्रतीक्षा में पलक पांवड़े बिछाये थी।

पू. गुरुदेव का बीकानेर पधारना उपधान तप की महान आराधना करवाने हेतु हो रहा था। इस वर्ष श्री संघ के पुण्योदय से परम पूजनीया विदुषी आर्या रत्न प्रवर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभा श्रीजी म. सा. का चातुर्मास यहाँ हुआ। चातुर्मास के दौरान श्री नेमचन्द जी खजाञ्ची का बीकानेर आना हुआ। पू. गुरुवर्या श्री की प्रेरणा ने खजाञ्ची जी को शासन प्रभावना की शृंखला में एक और महत्वपूर्ण आयोजन करने को उत्साहित किया और उन्होंने उपधान तप आयोजित करने का निर्णय किया। इस महान् आराधना को पावन-निश्रा देने हेतु पधारने की विनती करने पू. गणिवर्य श्री मणिप्रभसागर जी म. सा. के पास जोधपुर गये। परम सौभाग्य था कि पू. गणिवर्य श्री ने स्वीकृति प्रदान करने के साथ उपधान तप के प्रवेश का मंगल मुहूर्त भी दे दिया।

आखिर वह दिन आ गया जिस दिन की प्रतीक्षा बड़ी बेसब्री से हो रही थी। तीन दिन पूर्व से ही प्रवेश की तैयारियां प्रारम्भ हो गयी थीं। उपधानपति भी सपत्नीक जापान से आ गये थे। चारों ओर शहर की गलियों में हलचल मची हुई थी। शहरी परिसर के मुख्य मार्गों पर लगे हुए स्वागत द्वार, पर्दे उनके आगमन की सूचना दे रहे थे। वातावरण बड़ा ही आनन्दमय एवं उल्लासमय था। सभी के चेहरे एक अज्ञात आकर्षण से खिले हुए थे। सभी का मन समुत्सुक था पू. गुरुदेव के दर्शन करने को...हजारों आंखें बिछी हुई थी, उनकी एक झलक पाने को।

भाण्डाशाह जैन मंदिर बीकानेर का प्राचीन ऐतिहासिक कलात्मक गगनचुम्बी मन्दिर है। जिसे देखकर कापरड़ा तीर्थ की स्मृति तरोताजा हो जाती है। वास्तव में यह मन्दिर शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना है। पू. गुरुदेव का प्रवेश जुलूस यहीं से प्रारम्भ होना था।

8 बजे पू. गुरुदेव की अगवानी के लिये बीकानेर के प्रसिद्ध बैण्ड, भजन-मण्डलियां, घोड़े निशान आदि साज-सज्जा के साथ सैकड़ों की तादाद में जन समुदाय भाण्डाशाह मन्दिर की ओर उमड़ पड़ा।

ठीक 8.30 बजे भगवान महावीर...दादा गुरुदेव एवं पू. गुरुदेव के जयकारों के साथ पू. गुरुदेव को लेकर जुलूस मन्दिर से रवाना हुआ। सबसे आगे बीकानेर का प्रसिद्ध बैण्ड था...स्वागत धुन से वातावरण महक रहा था। संगीत की स्वर लहरियों के साथ सभी के मन थिरक रहे थे। हृदय पुलकित हो रहा था।

तत्पश्चात् थे परमश्रद्धास्पद, महाप्रज्ञ, ज्योतिर्धर गणिवर जी म. सा. अपनी शिष्य मण्डली के साथ। पू. गुरुदेव गम्भीर व चुस्त कदमों से कुछ आगे चल रहे थे। कुछ पीछे दांयें-बांयें मुनिद्वय चल रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो घनीभूत तेजपुंज अपनी आभा बिखेरता हुआ आगे बढ़ रहा हो। उनके पीछे था जयनाद के रूप में, हृदय के अमाप

आनन्द को अभिव्यक्त करता हुआ अपार जन समुदाय। बीच-बीच में गूंजते हुए नारे वातावरण को और अधिक जोशीला बना रहे थे। खुशी के मारे नवयुवक नाच उठे थे।

जनसमुदायक के पीछे था विशाल पूजनीया साध्वी मण्डल। उनके पीछे थी लाल रंग की चटकीली ड्रेसों में सजी संवरी सिर पर स्वागत घट लिये पंक्तिबद्ध चलती हुई लावण्यमयी किशोरियां। जो ऐसी लग रही थी मानो स्वर्ग की परियां धरती पर उतर आयी हों। उनके चेहरे पर छायी हुई प्रसन्नता एवं अधरों पर रमी हुई मुस्कान उनकी धर्म-श्रद्धा व भक्ति की साक्षी पूर रही थी। सिर पर घट थे, होठों पर नारों की गूँज थी।

उनके पीछे था रंग बिरंगी वेशभूपा में सुसज्जित महिला मण्डल। जो बीकानेरी राग में, समवेत स्वर में भाव भरे गीत गा रहा था। इस प्रकार जुलूस लम्बा अनुशासित एवं आकर्पक था। रास्ते के दोनों ओर खड़ी अपार भीड़ जुलूस के विस्तार को चौगुना कर रही थी।

जुलूस छबीली घाटी—सुरानों की गवाड़, वैदों का चौक, बाँठियों का चौक, आसानियों का चौक, रामपुरिया... ख़जाञ्ची...गोलच्छों की गवाड़ में से होता हुआ, नाहटों की गवाड़ में स्थित शहर के प्रमुख़ मन्दिर आदीश्वरजी पहुंचा। तीर्थाधिराज आदिनाथ परमात्मा की विशाल...नयनाभिराम, भव्य मूर्ति के दर्शन कर गिरिराज की स्मृति में मन विभोर हो उठा। वहाँ सभी ने पू. गुरुदेव के साथ चैत्य-वन्दन किया। पू. गुरुदेव ने अति मधुर स्वर में 'मैं आया तेरे द्वार पर कुछ लेकर जाऊंगा' स्तवन बोलकर सभी को भक्ति-रस में भिगो दिया।

वहाँ से भुजिया बाजार में स्थित शहर के सर्वाधिक प्राचीन मन्दिर चिन्तामणि जी गये। वहाँ प्रत्यक्ष प्रभावी दादा गुरुदेव श्री जिनकुशल सूरि जी के वरद हस्तों से प्रतिष्ठित, सर्वधातुमय आदिनाथ परमात्मा की अति प्राचीन प्रतिमा के दर्शन कर मन मयूर नाच उठा। मन्दिर के प्रांगण में बांयीं ओर दादा गुरुदेव की देहरी में कलिकाल कल्पतरु दादा गुरुदेव के दर्शन किये। इस मन्दिर के गर्भगृह में परम श्रावक कर्मचन्द बच्छावत के द्वारा लाई गई ग्यारह सौ से अधिक सर्वधातु की प्रतिमाओं का विशाल भण्डार है। इन प्रतिमाओं में कुछ प्रतिमायें सातिशय हैं। प्राय: आपातकाल में शान्ति के लिये इन प्रतिमाओं को बाहर निकाला जाता है।....बड़े समारोह पूर्वक आठ-दस दिन इनकी पूजा-भक्ति की जाती है ऐसी परम्परा है।

वहाँ से जुलूस रांगड़ी चौक होते हुए सुगन जी म. के उपाश्रय में पहुंचा। वहाँ पर अजित नाथ परमात्मा एवं क्रियोद्धारक...प्रकाण्ड विद्वान भक्त कवि क्षमा कल्याण जी म. की मूर्ति के दर्शन वन्दनादि करके उसी उपाश्रय में स्थानापन्न वयोवृद्ध साध्वी जी श्री सुन्दर श्री जी म. सा. को दर्शन देकर पू. गुरुदेव आगे बढ़े। रास्ता लम्बा होने पर भी लोक घटने के बजाय बढ़ रहे थे। जन-जन के मन में अपार उत्साह था। नारों की आवाजें और अधिक बुलन्द होती जा रही थीं। स्थान-स्थान पर गहुलियों के द्वारा उनके आगमन को बधाया जा रहा था।

शुभ मुहूर्त्त में पूज्य गुरुदेव श्री ने महावीर जैन भवन में प्रवेश किया। यहीं पूज्य गणिवर्य श्री का अभिनंदन व मांगलिक प्रवचन होना था।

आज के कार्यक्रम के संचालक श्रीयुत् सूरजमलजी पुगलिया ने कार्यक्रम के प्रारम्भ की घोपणा भगवान महावीर के जयघोप के साथ की। सर्वप्रथम सुपमा गुलगुलिया, मंजू नाहटा एवं प्रमिला नाहटा ने मधुर आवाज में वन्दना के रूप में अभिनन्दन गीत प्रस्तुत किया। जिसके बोल थे 'गणिवर! आत्मीय वन्दन है।' भजन के शब्द भाव एवं संगीत सभी कुछ इतने मधुर थे कि वातावरण माधुर्य से भर गया।

तत्पश्चात् श्री धनराज जी नाहटा ने पू. गुरुदेव का अभिनन्दन करते हुए यहाँ पधारने हेतु आभार व्यक्त किया। साथ ही जानकारी के लिए पू. गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया।

इसके बाद हर्प विभोर बनी दो नन्ही-मुन्नी बालिकायें राजलक्ष्मी नाहटा एवं विनीता नाहटा ने 'आज सवेरे बैठ

मुंडेरे, कंई-कंई बोल्यो कागलियो' इस लोक गीत पर आधारित युगल नृत्य द्वारा लोगों को झूमा दिया।

अनेक वक्ताओं ने पू. गुरुदेव का भाव-भरा अभिनन्दन करते हुए बीकानेर पधार कर संघ पर जो कृपा की, उस हेतु हार्दिक आभार व्यक्त किया।

परम पूजनीया गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्रीजी म. सा. ने अपने प्रवचन में पूज्य गुरुदेव श्री के गुणात्मक वर्णन के साथ कहा कि पूज्य गुरुदेव श्री को बीकानेर लाने का सारा श्रेय उपधानपति श्री नेमचंदजी खजाची को है।

पूज्य गुरुदेव गणिवर्य श्री ने अपने मंगल प्रवचन के प्रारम्भ में बीकानेर की भूमि को परम पुनीत बताते हुए इसे प्रणाम किया। उन्होंने कहा—बीकानेर नगर से तो हमारी गुरु परम्परा का घनिष्ठ संबंध रहा है।

उन्होंने कहा—उपधान का ही निमित्त मिला है, जो मैं आज पूर्वजों से जुडी इस भूमि के पवित्र परमाणुओं को पा सका हूं। ये सारा श्रेय साध्वी श्री हेमप्रभा श्रीजी को है। उन्हीं के उपदेश से उपधान तप का आयोजन श्री खजांची जी द्वारा किया जा रहा है।

उन्होंने उपधान में अधिक से अधिक श्रावक-श्राविकाओं को सम्मिलित होने की प्रेरणा दी।

हां! मैं यह लिखना तो भूल ही गई... आज मेरी गुरुबहिना पूजनीया कल्पलता श्रीजी म. सा. ने अपने उद्‌गारों से पूज्य गुरुदेव श्री का अभिनंदन किया था।

मैं उनके चेहरे पर छाये श्रद्धा के भावों को देख रही थी जो अपार हर्ष और अथाह आनन्द के कारण अपनी चमक दिखा रहे थे। मैंने सोचा—स्वाभाविक है यह हर्ष! क्योंकि उनकी जन्मभूमि पर पूज्य गणिवर्य श्री का आज पदार्पण हुआ है। उन्होंने कहा—बीकानेर नगर आज आपको अपने बीच पाकर धन्य हो उठा है। इस भूमि का कण-कण श्रद्धा की वीणा के तार हिला रहा है।

प्रवेश समारोह अद्‌भुत था। पूज्य गणिवर्य श्री मांगलिक सुनाकर शीघ्र 'उपधान' की प्रारंभिक तैयारियों का निरीक्षण करने लगे।

कुछ ही देर बाद वे पूजनीया गुरुवर्या श्री के साथ एतद् विषयक वार्तालाप कर रहे थे। गुरुबहिन पू. कल्पलता श्रीजी म. सा. ने गणिवर्य श्री से निवेदन कर यह बताया कि किस प्रकार पूजनीया गुरुवर्या श्री ने घर-घर जाकर उपधान में बैठने के लिए पुरुष वर्ग व स्त्री वर्ग को प्रेरणा दी। और उसी प्रेरणा का तो यह परिणाम था कि बड़ी संख्या में भाई बहिन महान् तप में शामिल हो रहे थे।

नगर की प्राचीर से दुन्दुभि बज उठी है, मन्दिर के घंट डोल उठे हैं, सुबह के आठ बजे हैं ... हमारा आर्यामण्डल दैनिक क्रिया-विधि विधानों से निवृत्त हो चुका है। घडी ने अभी-अभी आठ टकोरे लगाये हैं।

मुझे गुरुवर्या श्री ने काफी दिन पहले ही यह आदेश दे दिया था कि मुझे गुरुदेव श्री के प्रवेश से लेकर माल महोत्सव तक सारा घटना-चक्र अच्छी तरह देखना है और उसमें अपना दृष्टिकोण मिलाते हुए लिपिबद्ध करना है। मेरी योग्यता के बाहर था यह कार्य। पर आदेश तो आदेश ही होता है फिर मुझे कौनसी योग्यता नापनी है। यह कार्य तो गुरुवर्या श्री का ही है क्योंकि जब मैं पूर्णतया समर्पित हो चुकी हूं तो फिर मेरे विषय में निर्णय लेने वाली मैं कौन होती हूं? ना-नुकुर का तो कोई सवाल ही नहीं था। आदेश सुनते ही मेरी आंखें झुकी। मैंने सिर झुकाया और इस तरह आदेश के परिपालना को अभिव्यक्ति दी।

आज का दिन बड़ा महत्त्वपूर्ण दिन है। दिसम्बर 1988 की 10 तारीख है—शनिवार है, प्रतिपदा है मिगसर शुक्ल पक्ष की। मैं कमरे से बाहर निकली...नीचे हॉल में कदम रखा—देखा सारा हॉल ठसाठस भरा हुआ है। महिलाएं/कुमारिकाएं दौड़ रही है। उनके चेहरे पर अनोखा उत्साह स्पष्ट दिख रहा है। महिलाओं का उत्साह गंभीरता लिए है जबकि कुमारिकाओं का उत्साह निर्दोष अल्हड़पन लिये नजर आ रहा है। बस! लगता है ये तरंगें यूं ही बनी रहें और मैं बस आनन्द की उर्मियों को नजरों से पीती रहूं। स्वाभाविक था यह आनन्द। आज ये सब गुरुदेव श्री की निश्रा में एक अति विशिष्ट अभियान में सम्मिलित होने जा रही हैं, एक तरह से ये सब 51 दिनों के लिए समर्पित हो

रही हैं...शासन के प्रति.. आगम के प्रति...अपनी आत्मा के प्रति...।

सभी जा रही हैं महावीर जैन भवन की ओर जहाँ पूज्य गणिवर्य श्री उपधान प्रवेश की सारी तैयारियों का निरीक्षण कर चुके हैं। हॉल भर गया है लगभग 180 स्त्री-पुरुष पौषध के वस्त्रों में सज-धज कर आ चुके हैं। पूज्य गुरुदेव श्री की आज्ञानुसार उन्होंने प्रातः ही प्रतिक्रमण आदि क्रियायें कर ली थी। परमात्मा की पूजा भी कर ली थी। चावल, नारियल, रोकड़ रुपये आदि सामग्री लेकर आये थे।

नंदी विधान हो चुका था। पूज्य श्री पाट पर विराजमान थे। पू. आर्या-मण्डल आ चुका था'

उपधान प्रवेश की क्रिया में करीव घंटा भर लगा और उसके वाद पूज्य गुरुदेव श्री ने सभी को विधिवत् पौषध उचरा दिया। सभी उपधान वालों को अव 51 दिनों के लिये (35-28 दिनों के लिये) लगभग साधु जैसी चर्या करनी थी। उनकी भाषा, उनका व्यवहार सब कुछ बदलना था।

उपधान प्रवेश के समय सभी के चेहरे कमल की तरह खिल रहे थे। पूज्य श्री ने सभी को आलोचना डायरियां बंटवा दी। सबको क्रिया विधि विधान का प्रारंभिक मार्गदर्शन दिया। उपधान के दिनों में क्या करना है, कैसे रहना है? सारी बातें समझाई। श्री नेमचन्द जी खजाञ्ची ने सभी आराधकों का आभार माना।

उपधान के दिन एक-एक कर बीतते जा रहे थे। शाता पूर्वक तप और ज्ञान पूर्वक क्रिया का अद्भुत सामंजस्य था। हमेशा पू. गुरुदेव श्री क्रियाओं का हेतु समझाते....प्रशिक्षण देते। दिन व्यतीत होते जा रहे थे।

सभी व्यवस्थित हो चुके थे। तपस्वियों का दिन कव उगता कव पूरा होता, कुछ पता ही नहीं चलता। इतना व्यस्त कार्यक्रम था और कोई ऊब नहीं, कोई अन्यमनस्कता नहीं, कोई उद्विग्नता नहीं।

प्रातः 3.30 या 4 वजे लगभग उठना, 100 लोगस्स का कायोत्सर्ग करना, प्रतिक्रमण करके पड़िलेहन करना, उसके वाद महावीर जैन भवन में गुरुदेव श्री के पास क्रिया करना, फिर चतुर्विध श्री संघ के साथ मंदिर दर्शन करना, फिर प्रवचन श्रवण करना, उग्घाड़ा पोरिसी की क्रिया करके देव-वन्दन की क्रिया करना। वाद में प्रतिदिन के 100 खमासमणे देना, जो गुरुदेव श्री स्वयं दिलाते थे। तव तक पुरिमड्ढ का समय आ चुका होता। वाद में एकासना करते। उपवास के दिन स्वाध्याय या माला जाप करते। शाम पड़िलेहन कर पुनः क्रिया मंडप में शाम की क्रिया होती। वाद में प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, जाप, संथारा करके शयन करते।

यही उनकी दिनचर्या थी। समय गुजरता जा रहा था। उत्साह व आनन्द दिनोदिन गुणित हो रहे थे। तप के अनुसार वाचनाओं का क्रम भी जारी था। पूज्य श्री वाचना के पदों का तीन वार उच्चारण करवाते। वाद में उस सूत्र का गंभीर अर्थ विशिष्ट शैली में समझाते।

आराधक आश्चर्य-चकित थे। आज तक उन्होंने ऐसा रहस्य नहीं सुना था। जो दूसरा व तीसरा उपधान कर रहे थे वे इस उपधान में ही सारा महत्व, हेतु व उद्देश्य समझ पा रहे थे। इतना खुला, सरल, शास्त्रीय विवेचन श्रवण करने का उनका प्रथम अवसर था। व्यस्तता जव सघन होती है, तो पता नहीं चलता कि समय कव पूरा हो गया।

देखते-देखते 20 दिन पूरे हो गये। प्रथम वीसड़ पूरा हुआ। इक्कीसवें दिन मंगल प्रभात में दूसरे वीसड़ में प्रवेश हुआ। दो वहिन श्रीमती कमला जैन व सुश्री सरिता सेठिया (गंगाशहर) उत्कृष्ट मूल विधि से लगातार 16 उपवास द्वारा तीसरा उपधान करना चाह रही थी। उन्होंने आज उपधान में प्रवेश किया।

तपश्चर्या के कारण आराधकों का शरीर अवश्य कृश हो रहा था किन्तु चेहरे पर आध्यात्मिक तेज की गहरी छाप स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

एकासणों की व्यवस्था भी वड़ी शानदार रहती। कार्यकर्त्ता गण वड़ी मेहनत से सारा काम करते। कार्यकर्त्ताओं ने

दो मास का घर से जैसे संन्यास ले लिया था। वास्तव में जब तक कार्यकर्त्ताओं की एक व्यवस्थित टीम नहीं बनती तब तक कोई कार्य पूर्ण सफल नहीं होता।

और फिर पूज्य गुरुदेव श्री पुरुषों के एकासणें की पूरी देखरेख करते। उन्होंने एक रोज कहा भी था–'ये सब उपधान वाले मेरे धर्म-परिवार के अंग हैं, इसकी सार संभाल करना मेरा कर्त्तव्य है, मेरी जवाबदारी है।' पूज्य गणिवर्य श्री के शब्द, प्रेम छलकाती आंखें वात्सल्य व करुणा बरसाती मुस्कान ये सब उनकी परम प्रगाढ आत्मीयता के प्रतीक थे और सब उपधान वालों के जेहन में परत्व में अपनत्व का संचार कर रहे थे।

पूजनीया गुरुवर्या श्री उपधान करने वाली बहिनों की पूर्ण देखरेख करती। चाहे एकासणे का समय हो, चाहे क्रिया का, चाहे प्रतिक्रमण का हो, चाहे प्रतिलेखन का। पू. गुरुवर्या श्री हर क्रिया को समझाती थी एव उनकी सार संभाल करती थी।

उपधानवाही भी परस्पर एक दूसरे के सहयोगी बने हुए थे। यह बडे आश्चर्य की बात थी इतना लंबा समय-इतनी बड़ी संख्या होने पर भी एक समय के लिये भी ऐसी शिकायत नही आयी कि कोई आपस मे लड़ रहे है।

सबके हृदय मे एक दूसरे के प्रति प्रेम था। यह पूज्य गणिवर्य श्री के विशिष्ट उद्बोधन, उनके प्रवचन, उनकी वाणी और उनकी आत्मीयता का ही प्रभाव था। उसी जादू ने सबको एक डोर मे बांध रखा था।

पुरुष-वर्ग ने तो पूज्य श्री के निर्देशानुसार अपना अध्यक्ष श्री सवरत्नलालजी लोढा को चुना था। पाली निवासी श्री लोढाजी स्वय परम आराधक, परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित परम श्रद्धालु तथा क्रिया विधि विधान के रहस्य वेत्ता हैं, अल्प कषायी है सबको साथ लेकर चलने वाले है। उन्होंने अध्यक्ष पद की जवाबदारी बडी शान से निभाई। हर व्यक्ति को समय पर सारी क्रियायें बड़ी सरलता, सहजता से करवाई। देरी के कारण भी कभी क्रोधित नहीं हुए। पुरुष-वर्ग, स्त्री-वर्ग सभी मे आनन्द छाया हुआ था। मैंने कई बाइयों से इस विषय में वार्तालाप किया और यह जानना चाहा कि तपश्चर्या क्रिया में इतना आनन्द क्यों आ रहा है ? क्या बात है ?

उन्होंने मुझे बताया—'हमें तो पता ही नहीं चल रहा कि हम तपश्चर्या कर रहे हैं। उपवास का आभास ही नहीं होता।' एक बाई ने कहा 'इत्तो सोरो उपवास, इत्ती सोरी तपस्या कदे ही कुनी हुई। ओ तो सगलो गुरु महाराज रे वासक्षेप रो ही ज प्रभाव है, जिणमु ठा इ कोनी पड़े।'

उसने अपनी भाषा में अपना अनुभव अभिव्यक्त किया। सबसे छोटी उम्र (15 वर्ष) की बालिका बसकर खजांची से मैंने पूछा तो उसने कहा, आज तक मैंने इतनी उम्र में कभी उपवास छोड़ एकासना भी नहीं किया। उपधान तप के प्रवेश से पूर्व मुझे बहुत डर था। मैं कैसे कर पाऊंगी इतने उपवास ? पूजनीया गुरुवर्या श्री के वात्सल्य की अप्रत्यक्ष पर मजबूत डोर के बल वश खिची चली आई। उनका प्रेम ही मेरी जिद बना और घरवालों की इजाजत बड़ी मुश्किल मे मिली। फिर मुझे नवकार मंत्र के सिवाय और कुछ आता ही नहीं। पर अब तो मुझे कुछ पता ही नहीं चलता, मैं स्वयं असमंजस की स्थिति में हूँ कि मैं इतने उपवास इतनी क्रिया कैसे कर पा रही हूँ ?

और यह सब कहने के साथ ही उसने अपनी आंखे बन्द की और कहा—बस गुरुदेव श्री की कृपा और उनका चमत्कार ही इसमें कारण है, मैं तो यही मानती हूँ। अब तो बस ऐसा लगता है ये दिन मेरे जीवन में स्थाई बन जाय।

पूज्य गुरुदेव श्री के समक्ष ये सब बातें होती तो गुरुदेव श्री फरमाते यह सब आपकी आराधना का ही परिणाम है। और मुझे याद है प्रातःकालीन या सायंकालीन क्रिया के समय सारे उपधानवाही पूज्य गुरुदेवश्री को द्वादशावर्त्त वंदन करते समय जब पूज्य गुरुदेव श्री सभी तपस्वियों को साता पूछते तब सारे तपस्वी एक साथ बोलते 'आपकी कृपा से' सारा हॉल गूंज जाता। और फिर तपस्वी एक साथ गुरुदेव की शाता पूछते—'आपके सुख शाता है। तब गुरुदेव श्री मुस्कुराते हुए कभी-कभी कहते 'आपकी कृपा से' और

इस समय सारे तपस्वी निश्छल हंसी से आनन्द का अभिव्यक्त करते। गुरुदेव श्री कहते—'आपकी तपश्चर्या, आपकी आराधना, आपकी शुद्ध क्रिया बस। इसी से आनन्द है। तप का ही यह प्रसाद है।

उनके शब्दों में लघुता प्रगट होती—यही तो उनके प्रभुता की कसौटी है।

उपधानपति श्री नेमचन्द जी खजांची प्रवेश कराकर जापान चले गये थे। उनकी धर्मपत्नी सौ. आशा देवी खजांची यहीं थी। वे दिन-रात तपस्वियों की व्यवस्था में जुटी रहती थी। बड़ा आत्म संतोष उन्हें प्राप्त होता था। उपधान तप के कार्यकर्त्ता श्री पन्नालाल जी, हेमन्त कुमार पुगलिया आदि प्रतिदिन सारे उपधानवाहियों से व्यक्तिगत रूप से मिलते और उन्हें शाता पूछते। कोई भी कार्य हो, करते। तपस्वी-गण इस व्यवस्था से बहुत तृप्त थे।

दो बहिनों के 16 उपवास की लगातार तपश्चर्या चल रही थी। पू. गुरुदेव श्री ने उपधान तप प्रारम्भ होने से पूर्व उपधान की महिमा, उसका हेतु आदि शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में समझाया था। उन्होंने कहा था—उपधान ही मूल आधार है जहां से व्यक्ति आत्माभिमुख होने की प्रक्रिया का प्रारम्भ करता है। उन्होंने शास्त्रीय सिद्धान्तों का विवेचन करते हुए उपधान की व्याख्या की थी और उपधान तप की आराधना के मूल स्वरूप से लेकर बाद में आये परिवर्तन और उनका हेतु समझाते हुए वर्तमान स्वरूप का विवेचन किया था। उस दिन जब ये प्रवचन सुना तो इन दोनों के मन में था कि हम उत्कृष्ट मूल विधि से ही उपधान करेंगे। कु. सरिता सेठिया ने छोटी उम्र होने पर भी लगातार 16 उपवास करके और साथ ही सारी क्रियायें विधिवत् करके सम्यक्त्व की गुण श्रेणियां प्राप्त की है।

दोनों बहिनों का श्रीसंघ की ओर से भाव-भरा अभिनन्दन किया गया।

प्रतिदिन प्रवचन चलते पूज्य गणिवर्य श्री के। उनके प्रवचन के पूर्व उनके आदेशानुसार प्रतिदिन 15 मिनट का प्रवचन हमारी छोटी साध्वी मंडल का होता। पूजनीया कल्पलता श्री जी म. पू. अमितयशा श्री जी म., विनीतप्रज्ञा (मेरा) शुद्धाञ्जना श्री जी, शुभ्रांजना श्री जी आदि क्रमशः प्रवचन देते।

एक मास से अधिक समय बीत चुका था।

उपधानवाही युवक नरेश गोलछा ने उपवास प्रारम्भ कर दिये थे।

इस वर्ष पूजनीया गुरुवर्या श्री का बीकानेर चातुर्मास बीकानेर की जनता पर स्वर्ण छाप अंकित कर गया। पूजनीया गुरुवर्या श्री की वाणी, उनका मधुर व्यवहार उनके ओजस्वी, तेजस्वी, हृदय के मर्मस्थल से छूने वाले जीवन को आमूलचूल परिवर्तन कर देने वाले प्रवचनों की शृंखला से यहां के जन-जन का मन-मानस अत्यन्त प्रभावित हुआ। युवा पीढ़ी जो प्रायः धर्म को ढकोसला कहकर उससे दूर रहती है, इस वर्ष पूजनीया गुरुवर्या श्री के शब्दों, प्रवचनों से खिंचे चले आये! प्रतिदिन प्रवचन में युवक लोगों की भीड़ रहती। नरेश गोलछा पहली बार संतों के समीप आया इस चातुर्मास में। और फिर तो ऐसी लगन लगी कि बस चातुर्मास में मास क्षमण की आदर्श तपश्चर्या की थी। छोटी उम्र में मास क्षमण जैसी बड़ी तपस्या करके समाज के सामने एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया।

उसने 21 उपवास करके माला परिधान करने का ठान लिया था। तपश्चर्या बड़े आनन्द के साथ चल रही थी।

ता. 29-1-89 को मालारोपण विधान का मुहूर्त था। ता. 23-1-89 से अट्ठाई महोत्सव प्रारम्भ होना था।

इस बीच एक महत्वपूर्ण घोषणा हुई—कुमारी शोभा की दीक्षा की। शोभा चार वर्षों से अध्ययन रत थी। उसकी तपस्या फल रही थी, उसका लक्ष्य पूरा हो रहा था। प्रवचन के दौरान कु. शोभा के परिवार जनों द्वारा करबद्ध प्रार्थना करने पर पू. गणिवर्य श्री ने कुमारी शोभा को खरतरगच्छ श्रमण-मंडल में प्रव्रजित करने की घोषणा की तथा ता. 29-1-89 का शुभ मुहूर्त प्रदान किया।

माहौल में गर्माहट आती जा रही थी। बाहर से दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती थी।

मालारोपण का विधान-दिवस नजदीक आता जा रहा था। आमंत्रण पत्रिकायें प्रेषित की जा चुकी थी। दीक्षार्थिनी शोभा के वन्दोले के कार्यक्रम चल रहे थे। अट्ठाई महोत्सव प्रारम्भ हो गया था। सारे कार्यक्रमों की घोषणा हो चुकी थी। निर्णय के अनुसार ता. 28-1-89 को प्रातः दीक्षार्थिनी का अभिनन्दन, उपधानपति अभिनन्दन, कार्यकर्त्ता अभिनन्दन का कार्यक्रम था। जबकि मध्याह्न में 2 बजे वरघोड़े का आयोजन था और रात्रि में 'बोलियों' का कार्यक्रम निश्चित किया गया था। उपधानपति श्री नेमचन्द जी खजांची जापान से आ गये थे। कब, किस वक्त, कहां, क्या होगा ! यह सारा निर्णय कागज पर उतर आया था। पूज्य गणिवर्य श्री के निर्देशानुसार कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु विभिन्न कार्यकर्त्ताओं को कार्य सौंपे जा चुके थे। आवास व्यवस्था कांतिलाल कोचर एण्ड ग्रुप के जिम्मे थी, जबकि वरघोड़े का सचालन पन्नालाल जी नाहटा, जिनेन्द्र कुमार नाहटा को सौंपा गया था। मालारोपण के मच आदि की महत्वपूर्ण जवाबदारी कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री सूरजमल जी पुगलिया संभाल रहे थे।

कार्यकर्त्ताओं का पारस्परिक सामंजस्य, कार्य में सफलता, दक्षता व शीघ्रता लाता है। इस सूक्ति का परिणाम यहां प्रत्यक्षतः दृष्टिगोचर हो रहा था।

कैलेण्डर मे आज की तारीख के खाने में 28 का अंक था, सुबह से ही हलचल जारी थी।

पूज्य गुरुदेव श्री ने जब दस्साणियों के चौक में बने भव्य पांडाल में प्रवेश किया तो गुरुदेव श्री के जयकार के साथ सचालक सुमेर जी जैन ने उनका अभिनन्दन किया। पू. श्री के मगलाचरण के साथ ही कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। वक्ताओं ने अभिनन्दन के विषय में उपधानपति के विषय में उनकी दानशीलता के बारे में, तप के बारे में, दीक्षा के बारे मे अपने विचार प्रस्तुत किये। वक्ताओं में श्री तनसुखराज जी डागा, सूरजमल जी पुगलिया, पुखराज जी बेगानी, अशोककुमार डागा, धनराज जी नाहटा आदि प्रमुख थे। सुषमा, सुनीता ने गीत भी प्रस्तुत किया।

पूजनीया बहिना साध्वी कल्पलता श्री जी म. ने अपनत्व भरी भाषा में कुमारी शोभा के वैराग्य काल का विवेचन प्रस्तुत किया और दीक्षा के महत्व को समझाते हुए संकल्प की महिमा प्रस्तुत की। साध्वी शुभ्रांजना श्री जी ने पूजनीया गुरुवर्या श्री के उपकार भावों को स्पष्ट किया और कहा गुरुवर के चरणों में ही आत्मशान्ति की वीणा गूंजती है।

उपधानपति के अभिनन्दन का समय हो चुका था। खरतरगच्छ श्री संघ की ओर से उनका भावभीना अभिनन्दन किया गया।

मैं सोच रही थी उनका अभिनन्दन उनकी दानवीरता का अभिनन्दन है। श्री खजांची जी भाव-विभोर हो रहे थे। उपधान आराधकों ने उनका भावभीना अभिनन्दन किया। इनकी ओर से उपधान आराधक पवन जी पारख ने उपधानपति का आभार माना। इसके अलावा श्री चिन्तामणी जैन मन्दिर प्रन्यास, श्री जैन पाठशाला सभा, वीरायतन-राजगृह आदि विभिन्न संस्थाओं ने भी इस अवसर का लाभ उठाते हुए उनका स्वागत अभिनन्दन किया। विशाल पांडाल खचाखच भरा हुआ था।

कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन चातुर्मास समिति की ओर से, उपधान आराधकों की ओर से किया जा चुका था। अब जबकि मैं मंच की ओर देख रही हूँ वहां कुमारी शोभा के माता-पिता खड़े हैं और उनका अभिनन्दन किया जा रहा है। निश्चित ही ये अभिनन्दन के अधिकारी हैं। इन्होंने शोभा की दृढ़ भावना देखते हुए दीक्षा की अनुमति प्रदान कर शासन में रत्न प्रदान किया है।

माइक पर खड़ी थी कुमारी सुनीता डागा। कुमारी शोभा डागा की छोटी बहिन। गंभीर मुद्रा में अपनी उम्र को जैसे झुठलाती हुई खड़ी थी। छोटी सी उम्र में इतनी गंभीरता ! पर ओह ! अब मुझे समझ में आया—आज तो गंभीरता का ही माहौल था उसके लिये। उसकी बड़ी दीदी शोभा डागा संसार से मुक्त हो रही थी, उसका साथ छोड रही थी। साथ-साथ पढ़े, साथ-साथ खेले, साथ-साथ गुरवर्या श्री की निश्रा में रहे।

उसने अपनी मन की वेदना को वड़ी मुश्किल से गंभीरता के घने लवादे तले छिपाया था।

उसने गीत गाया। गीत के वोल हृदय के कोने-कोने को झकझोरने वाले थे—

संयम के रास्ते पर मेरी दीदी जा रही हैं ।
सुन के मेरी आंखें, आंसू वरसा रही हैं ।।टेर।।

चन्दन सी महकती है, कितनी कोमल काया ।
छोटी सी उमरिया में, मन में संयम भाया ।
हंसती खिलती दीदी, दुनिया तज जा रही है ।।1।।

दीदी संग रहती थी, हरदम मुस्काती थी ।
किसका भी काम हुए, वो दौड़ी आती थी ।
इस पल वो निष्ठुर वन, हमको तज जा रही है ।।2।।

इसको न लगे अच्छा, दुनिया का सुख सारा ।
बस इसका मन चाहे, गुरु मणि शरण प्यारा ।
वस इनका मन चाहे, गुरु हेम शरण प्यारा ।
मां वाप सगे भाई सव छोड़े जा रही है ।।3।।

तुम जाओ दीदी जाओ, पर आशिष इक देना ।
मत जाना भूल मुझे, मेरा हाथ पकड़ लेना ।
तेरी याद में तो मुझको, रुलाई आ रही है ।।4।।

मेरी चाह यही इक है, मैं भी दुनिया छोड़ूँ ।
ले गुरु संयम शरणा, सव कर्मों को तोड़ूं ।
यही आशीष दो मुझको, सुनीता गा रही है ।।5।।

गीत पूरा होते-होते आंसू आंखों से वह चले थे। अव उस वेदना की वाढ़ को रोक पाना असंभव था और गीत पूरा होते ही वहीं मंच पर खड़े-खड़े रो पड़ी, रोई ही नहीं, उसने हर व्यक्ति को रूला दिया। पास ही वैठे उपधानपति श्री नेमचन्द जी खजांची की धर्मपत्नी सौ. आशा देवी तो फफक कर रो पड़ी। उनकी पुत्रवधू सौ. शशि जी भी अपने आंसूओं को नहीं रोक पायी। चारों ओर वातावरण वोझिल वन गया।

वह वेदना-दृश्य स्मृति पटल पर अव भी ज्यों का त्यों उभर रहा है, पर शव्दों में ढालना नामुमकिन है।

और कुछ ही पलों वाद वह घड़ी आ पहुंची जिसका सभी वेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। वैराग्यवती कुमारी शोभा का अभिनन्दन।

अभिनन्दन का तिलक, माला, श्रीफल अभिनन्दन आदि औपचारिकताएँ पूरी होने के वाद कुमारी शोभा ने प्रत्युत्तर दिया। मैं यह देखकर दंग रह गई कि उसके शव्दों में कितना जोश था, कितना माधुर्य था और कितना व्यवस्थित, संतुलित और विषय के अनुसार उसका भाषण था। अपनी उम्र में पहली या दूसरी वार वोल रही थी। इतनी भीड़ के सामने वड़े-वड़े भी जव खड़े होते हैं तो पांवों तले की जमीन खिसकने का भय भरा अनुभव होने लगता है जवकि ये तो गरज रही थी, वरस रही थी, आंखों में प्यास लिये गुरुकृपा को तरस रही थी।

कुछ पल तो मैं उसके शव्दों को प्रयत्न करने पर भी नहीं सुन पाई क्योंकि मेरा सारा ध्यान उसके तेज से चमकते चेहरे पर और दमकते शव्दों पर ही केन्द्रित था। मैं आश्चर्य चकित होने के साथ-साथ अभिभूत भी हो उठी थी। मेरे मन में वड़ा प्रेम जाग उठा था उस पल। रह-रहकर मुझे होता था कि मैं उठूं और उसके इस तेज का, संकल्प का, सिंह गर्जना का अभिनन्दन करूं।

वह वोल रही थी,'मेरे प्राण तो मेरी गुरुवर्या श्री ही हैं उनकी कृपा वरस पड़ी और मेरे भीतर संयम का पौधा लग गया। उनकी शीतल छांव में ही मेरे थके–भूखे–प्यासे-अतृप्त मन को अनोखी तृप्ति, सन्तोष, शांति का वरदान मिला।' मैं ध्यान पूर्वक उसके भाषण के भावों को पकड़ रही थी।

वह संयम की व्याख्या कर रही थी, उसके प्रति उत्कंठित होकर अनुमोदना कर रही थी।

उसने कहा—अभी-अभी मेरी प्रिय वहन सुनीता ने गीत गाया, उससे मेरे मन के तार झनझना उठे। उसने एक वाक्य कहा—तुम जाओ पर मुझे भी अपने साथ ले जाओ। मैं कहती हूं—मेरा हाथ सदैव तुम्हारा इन्तजार करेगा। यदि तेरा संकल्प दृढ़ है तो इस दुनिया की कोई ताकत तुम्हारे कदमों का कांटा नहीं वन सकती। कोई वाधा तुम्हारी राह का रोड़ा नहीं वन सकती।

ओजस्वी शब्दों का चयन सभी श्रोताओं के हृदय को हिला गया।

लोगों की आंखों से आंसू बह चले। यही बालिका कल संसार की माया को तिलांजलि देकर सम्यग् सुख को पाने संयम पथ का अनुसरण करेगी।

पूजनीया गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. ने अपने प्रवचन में सबका अभिनन्दन किया, विशेष तौर पर पूज्य गणिवर्य श्री का। उन्होंने अपने ही प्रवचन का सार एक पद्य द्वारा अभिव्यक्त किया—

गणिवर आप शासन के ताज हैं।
आपकी क्षमता पर हमें बहुत-2 नाज है।
अमर रहे प्रशासन आपका युग-युग
सारे संघ की यही एक मंगल आवाज है।

बाद में कुमारी कान्ता बोथरा के साथ-साथ जयपुर से आई चार वैरागिन बहिनों का भी अभिनन्दन किया गया। समय काफी हो चुका था। श्री पन्नालाल जी खजांची, सूरजमल जी पुगलिया आदि बेचैन नजर आने लगे थे क्योंकि समय ज्यादा हो चुका था फिर भोजन व्यवस्था के बाद वरघोड़े की तैयारिया करनी थी।

पर आज के कार्यक्रम की भव्य सफलता का हर्ष भी उनकी आंखों मे, उनके चेहरे पर डोल रहा था।

श्री पन्नालाल जी खजांची माइक पर प्रगट हुए और उन्होंने दो वाक्य में सभी का, श्रीसंघ की ओर से आभार माना। कार्यक्रम पूरा हो चुका था। लोग पांडाल से बाहर जा रहे थे। मैं पूजनीया गुरुवर्या श्री के साथ उपाश्रय की ओर जा रही थी....मैं सोच रही थी कि कार्यक्रम की सफलता कार्यकर्त्ताओं की कटिबद्धता पर ही निर्भर है। दो मास तक उपधान की आराधना का जो व्यवस्थित क्रम चला, उसके मूल मे तीन कार्यकर्त्ताओं का प्रमुख योगदान था। इनका गठबंधन ही मूल हेतु था। मैंने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया है। श्री पन्नालाल जी खजांची जो सूत्रधार बने थे... वे तो 'ऑल राउण्डर' थे। दूसरे थे श्री सूरजमल जी पुगलिया जिनके जिम्मे सम्पर्क, व्यवहार, ऊपरी देखरेख आदि कार्य थे। तीसरे थे श्री धनपतसिंह जी खजांची जिन्होंने दो मास तक का पूरा समय आराधना को समर्पित कर दिया था। सुबह से शाम तक सारा कार्य संभालना....एकासणे आदि की जो नींव की व्यवस्थाएं थी वो सारी जवाबदारी श्री धनपत बाबू ही संभालते थे! शरीर से फुर्तीले, चेहरे से गम्भीर नजर आने वाले श्री धनपत जी मृदुभाषी, अल्पभाषी और स्पष्टभाषी व्यक्ति हैं। वे बोलते कम हैं काम ज्यादा करते हैं।

मैं सोचती जा रही थी....अचानक मेरा ध्यान साथ चल रही बहिनों के वार्त्तालाप की ओर गया। वे आपस मे कह रही थी—जल्दी चलो, जल्दी तैयार हो जाओ, वरघोडे में चलना है।

मेरा ध्यान बंट गया। और मैं वरघोड़े का काल्पनिक दृश्य मस्तिष्क में संजोये उपाश्रय पहुंच गई।

लगभग सभी उपधान आराधकों के आज उपवास था। अधिकतर आराधकों ने अट्ठम (तेला) के प्रत्याख्यान किये थे। आज उनके बेला था। मैं बड़ी देर से उन आराधकों का चेहरा देख रही थी, उन छोटी बालिकाओं को निहार रही थी, पर कही भी थकान या उदासी नजर नहीं आ रही थी। सभी प्रसन्न थे, प्रफुल्लित थे। अभिनन्दन का कार्यक्रम हो चुका था। कुछ ही देर बाद उन्हें वरघोडे में उपस्थित होना था। समय कम था और काम ज्यादा था, उससे भी ज्यादा जोश था...उत्साह था...लगन थी व आनन्द था। देववदन आदि क्रियाएँ करके सभी आराधक वरघोड़े मे शामिल हो चुके थे।

समूचे बीकानेर नगर में गली-गली, गवाड़-गवाड़, मुहल्ले-मुहल्ले मे एक ही चर्चा थी। उपधान का महोत्सव ही चर्चा का केन्द्र बिन्दु बना हुआ था। उपधानपति श्री नेमचन्दजी सौ. आशा देवी उनका परिवार आज परम आनंदित था। आराधको के आनन्द ने उनके आनन्द को द्विगुणित किया था।

कार्यकर्त्ता गण दिन-रात जुटे हुए थे। न रात में नींद ली थी, न समय पर भोजन कर पाये थे, हां⋯कभी-कमार

उनके हाथों में चाय का कप जरूर दृष्टिगोचर हो जाता था। पर उस समय भी मेरा अनुमान है कि मन में तो कार्यक्रम की संयोजना का चल-चित्र ही घूमता रहा होगा।

श्री पन्नालाल जी खजांची इधर-उधर दौड़ भाग कर रहे थे। दोपहर ठीक 2 बजे वरघोड़ा प्रारम्भ होना ही था। शहर के सबसे प्राचीन जिन मंदिर श्री चिंतामणि जी के मंदिर की ओर सभी के कदम बढ़े जा रहे थे। वहीं से वरघोड़ा शुरू होना था। कार्यकर्त्ता गण पूर्व तैयारी में लगे थे। मैं देख रही थी, कार्यकर्त्ताओं के चेहरे पर कभी तनाव नजर आता और उस कारण इधर-उधर दौड़ रहे होते, कभी इष्ट प्राप्ति का आनन्द चेहरे पर लहरा रहा होता और वे मुस्कान द्वारा अभिव्यक्त करते।

वरघोड़ा समय पर रवाना हो जाय और व्यवस्थित चले, यह उनका मुख्य लक्ष्य था। वरघोड़ा बहुत लम्बा था, क्योंकि बैंड, मंडल, अन्य प्रदर्शनियां लवाजमा आदि विशाल संख्या में था। वर्षीदान भी आज ही हो रहा था।

कार्यक्रम के सूत्रधार बने पन्नालाल जी खजांची, सूरजमल जी पुगलिया, प्रकाश जी सेठिया, पन्नालाल नाहटा, जिनेन्द्रकुमार नाहटा, केसरीचंद जी सेठिया मुनीम जी आदि सामग्री व लवाजमे को व्यवस्थित, क्रमबद्ध करने में जुटे थे। इनकी भाग-दौड़ व उत्साह हमारे हृदय में आनन्द के साथ अहोभाव के भाव भर रहा था।

वे सारी सामग्री को एकटक देख रहे थे, और 'क्या कमी है?' इसे टटोल रहे थे।

मैं दूर खड़ी उनकी भाव भंगिमा व चेहरे पर आ रहे उतार-चढ़ाव से युत उनके भावों को भांप रही थी। उन्होंने अचानक तनाव में आकर एक व्यक्ति को बुलाया और कुछ निर्देश दिया। वह कार्यकर्त्ता अपने कमांडर का आदेश सुनकर परिपालना हेतु दौड़ पड़ा। मुझे संवाद तो सुनाई नहीं दिया पर लगा कि जरूर कोई सामग्री जो अब तक आ जानी चाहिये थी, नहीं आई है और इसी कारण वे बैचेन नजर आ रहे हैं। बांयीं कलाई में बंधी घड़ी पर उनकी नजरें बार-बार पड़ रही थी, साथ-साथ बेचैनी भी बढ़ती जा रही थी।

मुझे लगा कि कार्यक्रम की सफलता के लिये तनाव होना भी जरूरी है, अन्यथा उस कार्यक्रम का महत्व व्यक्ति के दिमाग में नहीं होता। यह तनाव तनाव नहीं बल्कि समारोह या कार्यक्रम के प्रति सम्पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। मैं कार्यकर्त्ताओं की आवश्यक व्यग्रता पर चिंतन कर रही थी... देख रही थी, आज कार्यकर्त्ताओं को बात करने की जरा भी फुरसत नहीं है। और यही तो सफलता का मूल मंत्र है। आज उन्हें बातें नहीं करनी है, काम करना है। और उपधान के कार्यकर्त्ता इस बात को अच्छी तरह जानते हैं...वे आज लोगों से किसी तरह की बात करने के मूड में नजर नहीं आते। उन्हें तो आज केवल एक ही दृश्य दिखता है वरघोड़ा, एक ही बात नजर आती है···वरघोड़ा। वरघोड़े की सफलता के अलावा उनके मन में कोई बात नहीं है, होठों पर कोई शब्द नहीं है।

अचानक मुझे उनके चेहरे पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दी। मैं उसका कारण जानने को उत्सुक हो उठी। कारण स्पष्ट था। वरघोड़े की सारी तैयारियों को अन्तिम रूप दिया जा चुका था। सारे संसाधन बैंड आदि आ चुके थे। लोगों का अपार समूह नजर आ रहा था। लोग भीड़ देखकर आश्चर्यचकित थे। ऐसा माहौल, ऐसा उत्साह बीकानेर के लिये पहला पहला था। आज तक बीकानेर में धार्मिक आयोजन बहुत हुए, पर यह माहौल, यह नजारा, लोगों का सैलाब आज तक नजर नहीं आया।

और वरघोड़ा प्रारम्भ हो गया। बैंड ने धार्मिक धुन छेड़ी, लोगों ने धुन का स्पंदन अपने हृदय में महसूस किया और भक्ति की मस्ती में मस्त बनकर गजराज की चाल से आगे बढ़ने लगे।

वरघोड़ा आगे बढ़ रहा था। आज वरघोड़ा लम्बा था वरघोड़े का रास्ता भी लम्बा था।

मैं उचक उचक कर लोगों की भीड़ देख रही थी और संख्या का अनुमान...वरघोड़े की लम्बाई का अनुमान लगा रही थी पर मुझे तो कहीं ओर-छोर नजर नहीं आ रहा था। आगे पुरुषों की अपार भीड़ थी तो पीछे रोड पर केवल

महिलाओं का साम्राज्य था। वरघोड़ा देखने सारा नगर उमड़ पड़ा था। लोगों की विशाल उपस्थिति हर व्यक्ति के हृदय को आश्चर्य से भर रही थी। वे प्रसन्नता व आश्चर्य दोनों भावों को हृदय में रोक नहीं पा रहे थे और वाह.... वाह की ध्वनियां सीत्कार के साथ सुनाई पड़ रही थी। बैंड की मधुर धुनों के बीच उनकी वाह की ध्वनि मोहक संगीत में बदल रही थी।

वृद्ध व भावुक व्यक्ति तो देख देख कर आंसू बहा रहे थे खुशियों के।

कार्यकर्ता गम्भीर मुस्कान धारण किये इधर-उधर दौड़ रहे थे। वरघोड़े के व्यवस्थित संचालन के लिये आज वे कमर कसकर मैदान में उतरे थे। कोई श्रम बाकी नहीं उठा रखा था उन्होंने।

आसपास के नगरों के श्रावक आज बड़ी संख्या मे उपस्थित थे। वे आपस में चर्चा करते जा रहे थे।

मैंने एक जगह खड़े रहकर उनकी चर्चा सुनी। आज के वरघोड़े की शानदार सफलता ही उनकी चर्चा का एकमात्र विषय था। आपस में प्रशंसा करते वे थकते नहीं थे। उनकी भावना तो ऐसी प्रतीत हो रही थी 'हर व्यक्ति को मैं वरघोड़े की सफलता के समाचार सुनाऊँ और इस प्रकार अपने अहोभाव को अभिव्यक्त करूं।'

कार्यकर्त्ताओं को बधाइयाँ दे रहे थे लोग, पर कार्यकर्त्ताओं को अपनी प्रशंसा सुनने का कोई चाव नहीं था। मैंने देखा, ज्यों ही लोग प्रशंसा करते, कार्यकर्ता तुरन्त आगे बढ़ जाते। उन्हें काम भी तो करना था। हां! सफलता के कारण उनका साहस जरूर द्विगुणित बल्कि शतगुणित हो रहा था।

वरघोड़े में पूजनीया गुरुवर्या श्री एवं मंडल के साथ मैं आगे बढ़ रही थी। मैं वरघोड़े के क्रम को लिपिबद्ध करना चाह रही थी, इसी कारण मैं कुछ आर्याओं के साथ एक गली के मोड़ पर कुछ सीढ़ियां चढ़कर हाथ मे कलम कागज लिये खड़ी हो गई। ऊपर से वरघोड़े के दिव्य भव्य नजारे को देखकर प्रसन्नता के मारे पुलकित हो उठी।

आगे ही आगे 'ढोल' नामक प्राचीन व मधुर वाद्ययंत्र वरघोड़े के आगमन का संकेत दे रहा था।

धर्म ध्वजा लिये एक व्यक्ति शान से आगे बढ़ रहा था—साथ-साथ वरघोड़े का अनुपम दृश्य अपनी आंखों में...हृदय में बसाने के लिये मुड़-मुड़ कर पीछे देखता जा रहा था। बैंड मधुर, धार्मिक धुनें छेड़ रहा था। बीकानेर के प्रसिद्ध भक्ति संगीत मंडल आदीश्वर मंडल, कोचर मंडल, जैन मंडल, वीर मण्डल, महावीर मंडल गीत गा रहे थे। मस्ती में झूम रहे थे। उत्साही युवक नयी पुरानी फिल्मी धुनों पर आधारित भक्ति गीत लयबद्ध–तालबद्ध गा रहे थे और जब मस्ती का आलम दिल दिमाग में छा जाता तो हर्षातिरेक मे.... भक्ति में डूबकर नृत्य भी करते जा रहे थे।

पूज्य गणिवर्य श्री दाढ़ी के बालों को सहलाते गम्भीर मुद्रा में आगे बढ़ रहे थे। आवश्यक निर्देश भी देते जा रहे थे। जनता का अभिवादन झेल रहे थे...उन्हें धर्मलाभ का आशीर्वाद दे रहे थे...। पूज्य गणिवर्य श्री के चेहरे को देखकर उनके विचारों का अनुमान लगाने का विचार कर रही थी। उनके चेहरे पर गम्भीरता, प्रसन्नता के भाव एक साथ विराजमान थे। उनके ही व्यवस्थित व सफल निर्देशन का ही तो यह अतिसुन्दर परिणाम था। निश्चित ही महोत्सव की सफलता ने उन्हें प्रफुल्लित किया था.... पर अपनी गम्भीरता से वे यह प्रकट कर रहे थे कि यह गुरुदेव श्री की कृपा का ही परिणाम है। उनकी यह लघुता उनके व्यक्तित्व को प्रौढ़ता प्रदान कर रही थी।

उनके साथ चल रहे, चरवला मुहपत्ति हाथ में लिये.... धोती दुपट्टा धारण किये उपधानवाही पुरुष वर्ग साधना का परिचय दे रहा था। उनकी बढ़ी हुई दाढ़ी, तपश्चर्या के कारण कृश बना शरीर, फिर भी आंखों में ओज, शान्त रस बरसाता अनोखे तेज से परिपूर्ण चेहरा...उनकी साधना, आराधना को अभिव्यक्त कर रहा था।

मैं सोच रही थी पूज्य गणिवर्य श्री के प्रवचनों के बारे में। जब-जब संयम रस से अनुप्राणित प्रवचन धारा वे बहाते तब तब इस मंडली (उपधानवाही) को उद्बोधन देते

कहते—ये सारी मंडली पाट पर आ जाय तो...ये सभी रजोहरण धारण कर ले तो....।

मुझे लगता आजीवन संयम भले नहीं स्वीकार हो पर 51 दिनों के लिये तो संयम में ही हैं। और यह तो उनकी आराधना का परिणाम था कि चेहरे पर संयम की दिव्यता विराजमान थी। विशाल पुरुष वर्ग उपधान के प्रति, उपधान कारकों के प्रति, उपधानपति के प्रति अपनी मौन निष्ठा अभिव्यक्त करते हुए कदम मिलाते चल रहे थे।

मुझे कुछ देर के लिये कलम को कागज पर से हटा देना पड़ा क्योंकि आगे से विशाल पुरुष वर्ग धीरे-धीरे निकल रहा था। लम्बी भीड़ थी—चौड़ा रास्ता भी संकड़ी गली की तरह लग रहा था।

मैंने देखा नाचते आगे बढ़ रहे युवकों को। हाथों में मंजीरे लिये, आँखों में आस्था लिये, होठों पे भक्ति गीत लिये, हृदय में श्रद्धा लिये, चेहरे पर समर्पण के भाव लिये युवक गा रहे थे....नाच रहे थे, प्रभु की प्रतिमा के समक्ष।

वे गीत द्वारा, नृत्य द्वारा परमात्मा के साथ एक हो जाना चाह रहे थे। उनकी ललक उनकी हर क्रिया से प्रगट हो रही थी। परमात्मा की सवारी को श्रद्धा से लिये आगे बढ़ रहे उन युवकों को देखकर मुझे उस आरोप पर अविश्वास करना पड़ा जिसमें यह कहा जाता है कि आज के युवक नास्तिक हो गये हैं।

पू. साध्वी मंडल नीची नजर किये गम्भीर चाल व मुद्रा में आगे बढ़ रहा था। पूजनीया गुरुवर्या श्री आदि समस्त मंडल आज परम प्रसन्नता से भरा था। स्वाभाविक था उनका यह हर्ष। उपधान की सफलता तो हर्ष का एक कारण था ही, साथ साथ उन्हें शिष्या के रूप में उत्कृष्ट लाभ भी हो रहा था।

एक दिन अपने प्रवचन में पूज्य गणिवर्य श्री ने यही तो कहा था—मुझे याद है उस दिन कु. शोभा को दीक्षा की औपचारिक घोषणा पूज्य गुरुदेव श्री ने की थी। उस दिन कहा था—उन्हीं के शब्दों में–'मैं तो ईर्ष्या से भर रहा हूँ। प्रसन्नता तो साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म. को है जिन्हें शिष्या मिल रहीं। मैं तो हर्षान्वित तब बनूं जब मुझे भी परमात्मा के शासन पथ पर चलने वाला पथिक मिल जाय।' मुक्त व स्वस्थ हास्य के बीच कही गई इस बात का भी कितना महत्व है। क्योंकि मैंने देखा है—इन दो महिनों के प्रवास में पूज्य गणिवर्य श्री ने अपने प्रवचन का विषय वैराग्य व संयम-आराधना का ही रखा। उन्होंने एक भी ऐसा अवसर नहीं छोड़ा जब उन्होंने संयम की प्रेरणा नहीं दी हो, उसके प्रति उत्सुक, आतुर बनने का उद्बोधन न दिया हो। यह बात भी गम्भीर अर्थों में एक महत्वपूर्ण प्रेरणा है।

अचानक पूजनीया गुरुवर्या श्री की नजर मुझ पर पड़ी। मेरा ध्यान तो घटना को शब्दों की बांहों में बांधने में लगा था। कलम चल रही थी, कागज भर रहा था। गुरुवर्या श्री ने ज्यों ही मुझे देखा वे तुरन्त जुलूस की पंक्ति से बाहर होकर मेरी और आने लगे।

उनकी आवाज से जैसे मैं सपने से जागी...मैं चौंक पड़ी। संवाद को तो कोई स्थान ही नहीं था। पूजनीया गुरुवर्या श्री मेरी इस क्रिया पर सहज मुस्कुरा उठी। और मैं... मैं बस उनकी मुस्कराहट में खो गई। पूछने को कुछ बचा न था। सारा जीवन उनकी मुस्कान में सिमट गया था। उनकी मुस्कान ने मेरे भीतर मुस्कुराहटों की लहरें छोड़ दी थी और मैं उन लहरों में लहराती श्रद्धा के पावन गीत में, पावन दीप में डूब गई थी।

गुरुवर्या श्री भी वहाँ खड़े हो गये....उनका सामीप्य मेरा संबल था। महिलाओं के झुंड को वे देखती जा रही थी। महिलाओं की चाल में श्रद्धा की थिरकन थी। उनके होठों पर श्रद्धा की बीणा बज रही थी। महिलाओं के सिर पर मोक्ष-माला का थाल था....जो रंग बिरंगे वस्त्रों में सजाया गया था।

वे थाल लिये आगे बढ़ रही थी...थाल ही थाल नजर आ रहे थे। इस दृश्य को मैं लिखने बैठी पर हार गई...! ओह! इस दृश्य को शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करना नामुमकिन है।

मैं इस दृश्य को कैसे कागज पर उतारूँ यह सोच ही रही थी कि मेरी नजर आगे पड़ी और वहीं स्तब्ध रह गई, क्योंकि यही तो वह दृश्य था जो एक तरह से वरघोड़े का केन्द्र था।

मैं बस इसी दृश्य में खो गई। सामने देखा, एक शानदार बग्घी में बैठी है—कुमारी शोभा...सामने वर्षीदान की सामग्री पड़ी है। मैं उस सजी संवरी बग्घी को न देख सकी.. क्योंकि मेरी आँखें तो कुमारी शोभा के चेहरे पर टिक गई थी। और यह भी क्या सुन्दर अवसर था कि आगे मार्ग अवरुद्ध होने की वजह से वरघोड़ा खड़ा रह गया था। शोभा की बग्घी सामने खड़ी थी। मैं अपलक उसे निहार रही थी उसकी मुस्कान मेरे मानस में विचारों का आंदोलन मचा रही थी। और न केवल मैं बल्कि सारा परिवेश केवल उसे ही देख रहा था। उसे देखकर लग रहा था जैसे दो विरोधी भावों का आज एक साथ दर्शन हो रहा। आज उसके शरीर से पूर्ण संसार झांक रहा था। चेहरे पर मेक अप की परतें चढ़ी थीं....सोने के महंगे आभूषण पहने थे.... आकर्षक चटकीले वस्त्र धारण किये थे...यह संसार था जो उसके बाह्य पक्ष से प्रकट हो रहा था...जब कि आभ्यंतर पक्ष संयम में डूबा था . उसकी मुस्कान...उसकी आंखों में विराजमान शीतलता ..ओजस्विता उसके भीतरी अध्यात्म पक्ष को.. संयम पक्ष को उजागर कर रही थी। अजीब समन्वय था। लगता था आज संसार और संयम के बीच लड़ाई छिड़ी है। और यह बाह्य परिवेश संसार का अन्तिम अस्त्र था जो निःशस्त्र आभ्यन्तर पक्ष से हार गया था। उसका चेहरा कठोर संकल्प और दृढ़ मनोबल को अभिव्यक्त कर रहा था।

मैं कल्पना की दुनिया से बाहर आयी और मेरी आँखें मनोयोग के साथ उसके चेहरे पर जा टिकीं। उसका चेहरा कठोर संकल्प और दृढ़ मनोबल को अभिव्यक्त कर रहा था। मुक्त हाथों से मुक्त दान कर रही थी। उस वर्षीदान के प्रति लोगों की आस्था बड़ी गहरी थी।....भीड़ दौड़ पड़ी.... उससे कुछ पाने को। और बग्घी एक झटके से आगे बढ़ गई। वरघोड़ा गवाड़ों से गुजरता हुआ पुनः चिंतामणि मंदिर पहुंचने वाला था। मैं आज के समारोह पर चिंतन करती करती गुरुवर्या श्री के साथ चली आई महावीर भवन...जहाँ पूज्य गणिवर्य श्री विराज रहे थे। वे वरघोड़े से पधार चुके थे। वे प्रतिलेखना से निवृत्त हुए ही थे कि कुमारी शोभा के परिवार जन उपकरणों की ओटी सजाये वहाँ पहुँच गये।

गुरुदेव श्री ने वर्धमान विद्या द्वारा उसे अभिमंत्रित किया। रात्रि को बोलियों का कार्यक्रम था। प्रातः मुझे ज्ञात हुआ कि प्रथम बोली राजाणी परिवार ने ली थी जबकि दूसरी-तीसरी बोली जोड़े सहित उपधान कर रहे पारख परिवार ने ली थी। बोली के कार्यक्रम में जयपुर वाले भँवरलाल जी बोथरा ने अच्छा रंग जमाया था। वे इस क्षेत्र में 'आल राउन्डर' कहलाते हैं। साथ ही स्थानीय सज्जनों ने भी भक्ति गीतों द्वारा श्रोताओं के तार छेड़े थे।

ता. 29-1-89

रात्रि उपधानवाही सो न सके थे...बल्कि यों कहना चाहिये कि नींद आ ही किसे रही थी। बस केवल एक रात्रि शेष बची थी। प्रातः तो उनकी साधना के कल्पवृक्ष पर मालारोपण का फल पकना था। आज के समारोह की सफलता की चमक उनके चेहरे पर विद्यमान थी। नींद के कारण भारी हो रही आँखें भी तेज बरसा रही थी।

बहुत ही जल्दी सभी निर्दिष्ट समय पर तैयार होकर प्रतिक्रमण....प्रतिलेखना...वस्त्र संशोधनादि क्रियाएँ करके पूज्य गुरुदेव श्री की निश्रा में महावीर जैन भवन में पहुँच गये थे। पूज्य गुरुदेव श्री ने क्रिया करवाई व बाद में विदाई संदेश दिया। उपधान का आज 51 वां दिन था। कल तो इन्हें पुनः सांसारिक परिवेश में प्रवेश करना था।

पूज्य गुरुदेव श्री ने विदाई संदेश में सबको डुबो दिया। उनके मधुर संदेश में उनके वात्सल्य भाव का दर्शन हो रहा था तो विदाई संदेश की भाषा व विषयवस्तु उनके प्रौढ़त्व व विद्वत्ता का परिचय दे रही थी। उन्होंने कहा–उपधान के यज्ञ में आप सभी ने अपनी इच्छाओं की आहुति डाली है। आपके जीवन में अब परिवर्तन आना है। तभी तो यह तप... जप... क्रिया...कायोत्सर्ग सफल बनेंगे। उन्होंने कहा—अब

आपके जीवन की हर क्रिया विशिष्ट दृष्टिकोण के साथ ही सम्पन्न होगी। आपका खान-पान रहन-सहन, आचार-विचार सव कुछ वदल जाना चाहिये। अव आपका जीवन हर व्यक्ति के लिये प्रेरणा वन जाना चाहिये। सूर्योदय हो चुका था। उपधानवाही आज पौषध पा रहे थे। उपधान-वाही पुरुषवर्ग के अध्यक्ष श्री भँवरलाल जी लोढ़ा पाली वाले पौषध पारणे की क्रिया कर और करवा रहे थे। मैं उस समय श्रद्धा से अभिभूत हो उठी यह देखकर कि लोढ़ा जी पौषध पारणे के सूत्र वोल रहे थे पर आवाज निकल नहीं पा रही थी... गला रुंध सा गया था। और भयवं सूत्र वोलते-वोलते वे वच्चे की तरह विलख पड़े....आँखों में से अश्रुधारा वह चली।

मैं चिंतन कर रही थी उनकी निश्छलता व परमात्मा के प्रति उनके समर्पण भावों पर। वे भाव अभिव्यक्त कर रहे थे····'आज मुझे साधना का प्रतीक चरवला छोड़ना पड़ेगा।····पुन: संसार में जाना पड़ेगा···विरति से अविरति में जाना पड़ेगा। चरवले की याद, साधना की याद उन्हें भाव विह्वल वना रही थी।

पूज्य गणिवर्य श्री की सूचना के अनुसार सभी उपधान-वाहियों को परमात्मा की पूजा करके जैन स्कूल के विशाल ग्राउन्ड में वने भव्य पांडाल में पहुंचना था—जहां माला-रोपण विधान होने वाला था। हम सव जल्दी ही तैयार हो गये थे, दीक्षा भी मालारोपण के साथ साथ हो रही थी। उपाश्रय से पूजनीया गुरुवर्या श्री आदि साध्वी मंडल के साथ स्कूल की ओर चल पड़े। आज तो हर व्यक्ति के कदम उसी दिशा की ओर वढ़ रहे थे। सारे मुहल्लों, वाजारों और गलियों में एक ही चर्चा थी। वाहर से हजारों भक्त आ पहुंचे थे। सभी को वहीं पहुंचना था।

भव्य पांडाल की ओर जव आगे वढ़े तो देखा कि पूज्य गणिवर्य श्री पधार चुके थे। उनकी तत्परता और कार्य-निष्ठा निश्चित ही प्रभावित करने वाली थी। पूज्य श्री कार्यकर्त्ताओं को निर्देश देते जा रहे थे। मंच वहुत ही भव्य सजा था। ऐसा होना ही था क्योंकि सारा निर्देशन पूज्य गणिवर्य श्री का था, और मैंने पिछले दिनों में देखा था कि समय की अत्यन्त अल्पता होने पर भी पूज्य श्री तीन वार महावीर भवन से जैन स्कूल के ग्राउंड में गये थे। कार्यकर्त्ताओं को लेकर नापजोख कर सारा नक्शा बनाकर दिया था कि यहां मुनिराज वैठेंगे। यहां साध्वी मंडल के पाट लगेंगे, उप-धान वाले कहां वैठेंगे सारा व्यवस्थित कार्यक्रम उन्होंने कागज पर उतार कर कार्यकर्त्ताओं के हाथों में थमाया था।

मुझे उपधान के आयोजन, मालमहोत्स के आयोजन देखने का अवसर कई वार मिला पर ऐसा व्यवस्थित निर्देशन आज तक नहीं देखा...न ऐसा व्यवस्थित मंच कहीं देखा।

सामने वीचों वीच पूज्य गणिवर्य श्री का पाट लगा था। उनके आगे एक चौकी वनाई गई थी। जिस पर वैरागिन कुमारी शोभा को क्रिया करनी थी। साथ ही वहीं उपधान वालों का मालारोपण विधान होना था। उसके आगे भगवान का चांदी का सिंहासन विराजमान किया गया था। पूज्य गणिवर्य श्री के दायें नीचे के भाग में 117 कुर्सियाँ लगी थी जिस पर क्रमश: माला पहनाने वाले भाई वैठे थे। उसके पास ही उपधानवाही पुरुष वर्ग के पाट लगे थे। वाईं ओर साध्वी मंडल के पाट लगे थे, उनके पास ही उपधान करने वाली महिलाएं क्रमश: वैठी थी।

उपधानवाही आ रहे थे। पांडाल भरने लगा था। मैंने कार्यकर्त्ताओं की ओर निगह डाली। श्री पन्नालालजी खजांची टाई वगैरह धारण किये तेज आंखों से व्यवस्था का तीव्र निरीक्षण कर रहे थे। तेज कदमों से इधर उधर दौड़ कर अपने हाथों से सारा कार्य कर रहे थे। श्री सूरजमलजी पुगलिया माइक को संभाले हुये थे। वे सूचनाएं प्रसारित कर रहे थे, मैंने देखा कि पांडाल में प्रवेश के दो गेट वने थे एक गेट से केवल उन्हें ही प्रवेश मिल रहा था जिनके हाथों में पास थे। मैं कलम लेकर यह व्यवस्था देखने पास में गई तो पता चला कि पास केवल उन्हें ही दिये गये थे जो माला पहनाने वाले थे।

पूज्य गणिवर्य श्री ने 10-12 दिन पूर्व ही यह घोषणा कर दी थी कि मोक्ष माला एक ही व्यक्ति पहनायेगा और इस विषय में उन पर काफी दबाव पड़ा था पर वे इन मामलों में सख्त रहे। माला पहनाने वालों को पास दिये गये थे। उन पर नम्बर भी पड़े थे। क्रमानुसार वे आसन ग्रहण करते जा रहे थे।

उपधानवाही महिलाएं भी क्रमानुसार अपना आसन ग्रहण कर रही थीं। कार्यकर्ता श्री धनपतसिंहजी सजांची, अजित सजांची, प्रकाश सेठिया, हेमन्त पुगलिया आदि उन्हें बिठाने की व्यवस्था में लगे थे। एक ओर कैमरा मैनों की भीड़ थी। लोग आते जा रहे थे। पांडाल खचाखच भर गया था फिर भी आधे लोग बाहर खड़े थे। अपार भीड़ थी। छः फुट ऊंचे बने मंच पर गणिवर्य श्री विराजमान हो चुके थे। तपागच्छीया, पायचंद गच्छीया साध्वी वर्ग आ चुका था। उपधानपति श्री नेमचन्दजी, उनकी धर्मपत्नी अ. सौ. आशा देवी, उनकी पुत्र वधू आदि आ चुके थे। श्री नेमचंदजी की आंखों में चमक ही और थी, बात करने का अन्दाज ही निराला था। उनके हर व्यवहार में प्रसन्नता टपक रही थी, आज वे परम खुश थे, परम सतुष्ट थे, हृदय में निर्दोष गौरव की आनन्दमयी अनुभूतियों की लहरें हिलोरें मार रही थी।

आज उनका पुरुषार्थ चरम सीमा पर पहुंचने वाला था।

वे 'उपधानपति परिवार' के लिये आरक्षित स्थान पर अपना आसन ग्रहण कर चुके थे।

उनके पास का स्थान वैरागन कुमारी शोभा डागा के परिवार वालो के लिये आरक्षित था। उनके परिवार जन बैठ चुके थे। कुछ ही दूर खडे आर्ट स्टूडियो वाले मांगीलाल इस सारे दृश्य को कैमरे द्वारा अंकित कर रहे थे।

पूज्य गुरुदेव श्री बार बार घड़ी की ओर देख रहे थे। नंदी विधान हो चुका था, वैरागन बहिन के वरघोड़े के आगमन का आभास, नजदीक आती जा रही बैंड की मधुर धार्मिक धुनों द्वारा हो रहा था।

और समय जैसे थम गया, शोर शान्ति में बदल गया, ठंडे वातावरण में गर्माहट का आभास होने लगा पूज्य, गणिवर्य श्री ने समारोह के प्रारम्भ की घोषणा कर दी।

सारा वातावरण परिपूर्ण शांत हो गया। मैंने देखा सारे लोग पूज्य गणिवर्य श्री की ओर ही देख रहे थे। माइक उनके सामने लग चुका था। कुमारी शोभा आसन, मुहपत्ति चरवला लिये मंच पर उपस्थित हो गई थी। उपधानवाही सावधान हो चुके थे। क्रिया करने वाले, कराने वाले दर्शक श्रोता सारे जागरुक थे। गुरुदेव श्री के आदेश की प्रतीक्षा में उनकी आंखें, उनके कान, उनका हर अंग-अंग बिछा था। गुरुदेव श्री ने आदेश दिया और कुमारी शोभा के माता-पिता भाई मंच पर माइक के सामने आ गये। शास्त्रीय विधि-विधान के अनुसार शोभा के अभिभावकों ने गुरुदेव श्री से सादर प्रार्थना की.... गुरुदेव ! हमारी लाडली शोभा को आप दीक्षा प्रदान कर अनुग्रहीत करावें। हम इसकी दृढ मनोभावना को देखते हुए चतुर्विध श्री संघ की साक्षी से इसे दीक्षा की अनुमति प्रदान करते हैं। इससे हमारा कुल, हमारा गोत्र गौरवान्वित बना है। तथा इसे हम अपना सद्भाग्य समझते हैं।

मैंने देखा वे अनुमति प्रदान कर रहे थे और उनकी आंखों से आंसू झर रहे थे।

प्रिय पुत्री शोभा आज उनकी नहीं रहेगी। वे सोच रहे थे... अब हम किसे शोभा-शोभा कह कर पुकारेंगे। अब यही शोभा नंगे पांव चलेगी, केश लुंचन करायेंगी, जैसा भी आहार मिलेगा–करेंगी न सर्दी की चिंता होगी, न गर्मी की परवाह होगी। सभी कष्ट सहेगी। यही चिंतन उनकी आंखों से आंसू बहा रहा था। मैं उनकी इस दशा पर सोच ही रही थी कि पूज्य गुरुदेव श्री ने क्रिया विधि प्रारम्भ कर दी। सभी उपधान वालों ने, कुमारी शोभा ने गुरुदेव श्री के आदेशानुसार विधि-विधान प्रारम्भ किया।

सर्वप्रथम अंगन्यास, करन्यास व आत्म रक्षा स्तोत द्वारा विशिष्ट मंत्राक्षरों द्वारा शारीरिक शुद्धि की गई, साथ-साथ मांत्रिक सुरक्षा के उपाय किये। दीक्षा की कुछ विशिष्ट

विधि होने के बाद देववंदन का विधान प्रारम्भ हुआ। 18 स्तुतियों वाला देववंदन सभी उपधानवाही व वैरागन कर रहे थे। और पूज्य गणिवर्य श्री उनका हेतु समझा रहे थे। लोग आश्चर्य चकित थे। सारा पांडाल मौन था। मौन नीरव, शांत वातावरण देखकर यह लग ही नहीं रहा था कि 20-25 हजार व्यक्ति यहां बैठे हैं, कोई कोलाहल नहीं, कोई हो-हल्ला नहीं। सभी क्रिया देख रहे थे। सभी क्रिया के महत्व को श्रवण कर रहे थे।

सारे दर्शक पहली बार ऐसा विधान देख रहे थे। दीक्षाएं-मालारोपण का विधान तो बहुत से व्यक्तियों ने कई बार देखा होगा, पर मेरा ऐसा निश्चित मानना है कि हेतु, उपयोगिता आदि दृष्टिकोण से समझपूर्वक हो रहे इस प्रकार के विधान को वे पहली बार देख रहे थे। मेरे इस अनुमान का ठोस एवं प्रामाणिक आधार था-लोगों के चेहरे पर विराजमान उत्सुकता के भाव, आँखों की तेज चमक, उनकी गुरुदेव श्री के चेहरे पर लगी टकटकी।

कोई आवाज नहीं कर रहा था...कोई आवाज करने की हिम्मत भी नहीं कर रहा था—क्योंकि पड़ौसी तुरन्त टोक देता—भाई, चुप रहो...विधान सुनने दो।

माइक पर गणिवर्य श्री का सिंहनाद जैसे हो रहा था। आवाज में मिठास थी, बुलन्दी थी, दबंगता थी, गंभीरता थी तो गहरे भावों के प्रक्षेपण की सशक्तता भी थी।

शब्दों में एक अनजानी पर मजबूत डोर थी जो दर्शकों को बांधे थी।

गोत्र देवता, कुलदेवता, शासन देवता वगैरह कई तरह के देवी देवताओं के कायोत्सर्ग करवाये थे। मेरे मन में संशय उठा—दीक्षा हो रही, माला विधान हो रहा। यहाँ देवी देवताओं को याद करने की क्या तुक है। और फिर उनके निमित्त में कायोत्सर्ग करने का क्या तात्पर्य है।

पता नहीं—मेरे संशय-ग्रस्त मन का पता पूज्य गणिवर्य श्री को कैसे हुआ? इधर मेरे मन में संशय हुआ और इधर गणिवर्य श्री ने इन कायोत्सर्गों का हेतु समझाना प्रारम्भ किया। मैं आज भी इस दृश्य को याद करती हूँ तो मुझे रोमांच हो आता है।

पूज्य श्री फरमा रहे थे...आज कुमारी शोभा संसार का विसर्जन कर संयम के मार्ग में आत्मसर्जन हेतु प्रस्थान कर रही...उपधान वाले माल परिधान का विधान कर रहे...।

ये कायोत्सर्ग आत्म शुद्धि के हेतु हैं। इन कायोत्सर्गों द्वारा दो भावनाओं का प्रकटन हो रहा है। एक तो यह कि गत समय में मेरे द्वारा गौत्र, कुल या और जो भी देवी देव हैं उनके प्रति कोई आशातना अवज्ञा हुई हो तो उसके लिए क्षमा याचना करना। इस मिथ्या दुष्कृत के द्वारा ये निःशल्य हो रहे हैं। चाहे रजोहरण धारण करना हो चाहे माला परिधान करना हो, निःशल्य होना ही होगा। शल्य सहित संभव नहीं है।

कायोत्सर्ग का दूसरा हेतु है प्रार्थना का—इन शब्दों में कि हम जिसे स्वीकार कर रहे, उस मार्ग में, उस लक्ष्य में ये सारे देवी देवता हमारे सहायक बने।

मैंने तर्कयुक्त इस समाधान पर चिंतन किया। मुझे लगा कि छोटी-छोटी बातों में भी कितना रहस्य छिपा है।

मैंने देखा देववंदन का विधान पूरा हो चुका है। उपधान वालों को बैठने का आदेश दे दिया गया है। वैरागन शोभा को क्रियायें करवाई जा रही हैं।

मैंने अपनी आँखें जनता की ओर घुमाई और अचानक पूज्य गणिवर्य श्री की कड़कती आवाज मेरे कानों में पड़ी, मैं एकदम घबरा गई, कांपती आँखों से मंच की ओर देखा।

पूज्य गणिवर्य श्री कह रहे थे—पुजारी—तुम किसे पूछकर इधर उधर घूम रहे हो।

मैंने गुरुदेव श्री की आवाज में कड़कपन महसूस किया। मैंने देखा पुजारी कारण वश भगवान के त्रिगडे और मंच के बीच से निकल गया था।

शास्त्रों के अनुसार यह अविधि थी। गणिवर्य श्री ने तुरन्त क्रिया रोक दी और इरियावहि कराकर पुनः क्रिया

का प्रारम्भ किया। मैंने देखा पूज्य गणिवर्य श्री का मिष्ठ व्यवहार भी क्रिया विधि विधान के चुस्त पालन के लिये सजगता पूर्वक कितना कठोर बन जाता है, पर यह कठोरता भी अनिवार्य है। मैं पूज्य गणिवर्य श्री के ऊपर से लगने वाले विरोधाभासी दो व्यक्तित्वों के बारे में चिंतन कर रही थी कि पूज्य गणिवर्य श्री अपने आसन से खड़े हो गये। उपकरणों की ओडी पुनः अभिमंत्रित की जा चुकी थी।

पूज्य गणिवर्य श्री फरमा रहे थे जिस पल का इन्तजार वर्षों से था आज उसका आगमन कुमारी शोभा के जीवन मे बस होने ही वाला है। कुछ ही सैकिण्डो के बाद कुमारी शोभा के हाथों में ओघा शोभ रहा होगा, आप देखेंगे कि किस प्रकार शोभा के हाथों में ओघा आते ही इसके पाँवों में नृत्य का आगमन होता है।

सभी सांस थामे इस पल को अपनी आँखों मे बसा लेना चाहते थे।

गुरुदेव श्री ने स्वर-लग्न की स्थिरता व पावनता का पुनः परीक्षण किया और ओघा झेला दिया। वाजित्र बज उठे, जय-जय का गुंजारव गूंज उठा, हर्षध्वनि वातावरण में डोल उठी।

शोभा का हर्ष नृत्य बनकर खिल उठा। हृदय अनोखी वीणा के संगीत से भर गया। लोग उसके उत्साह को बधा रहे थे स्वयं उत्साहित होकर। लोग उसके हर्ष को झेल रहे थे अपनी आंखो से हर्षाश्रु बहाकर।

इस दृश्य को वे देख नहीं, पी रहे थे।

शोभा अपने परिजनो के साथ समीपस्थ जैन स्कूल के एक नियत गृह की ओर जा चुकी थी—उसका यह कदम ही तो जीवन मे क्रान्ति लाने वाला था-वही तो उसे संसार को अंतिम विदा देनी थी—वही तो उसे संयम के मंगल प्रभात में अपना पहला पाठ पढ़ना था—पहला कदम बढाकर।

मेरी गुरु बहिनें भी साथ गई थी, मैं उसके कदमों को विचारों के तराजू से तोलती हुई साथ गई थी पर मुझे तो शीघ्र ही पुनः पांडाल में प्रवेश करना था। गुरुदेव श्री उपधान वालों को मालारोपण की क्रिया करवा रहे थे।

कुछ ही समय बाद उपधान वालों का सपना सार्थक होने वाला था। मोक्ष माला का परिधान विधान होने वाला था। जीवन में केवल एक बार घटित होने वाली मनमोहक घटना घटने वाली थी। इस पल को वे पूरी तरह से बधा लेने को आतुर थे।

पूज्य गुरुदेव श्री फरमा रहे थे—बस ! कुछ ही पलों के बाद आपके गले में मोक्ष माला सुशोभित होगी। मोक्ष माला परिधान से पूर्व कषाय मुक्त होना आवश्यक है तभी मोक्ष माला के द्वारा भगवत्ता आपके मानस को आलोकित कर सकेगी।

मालारोपण विधान के पूर्व की सारी क्रियाएँ सुसम्पन्न हो चुकी थी। सबको गुरुदेव श्री की घोषणा का इन्तजार था।

पूज्य गणिवर्य श्री पाट पर खड़े हो गये थे। उन्होंने श्रीयुत नेमचन्दजी खजांची को आवाज दी। खजांची जी जैसे आदेश की प्रतीक्षा में थे, फुर्ती से खड़े हो गये। जेब में से रुमाल निकाला, मुंह पोंछा, क्षत्रियत्व का संदेश देती फड़कती मूछों को संवारा और मंच की ओर बढ़ गये। श्रीमती आशा देवी खजांची भी मंच पर आ चुकी थीं।

पूज्य गणिवर्य श्री फरमा रहे थे—उपधान आराधना एक परम शास्त्रीय आराधना है। खजांची जी ने इसका आयोजन कर परम पुण्य का कार्य किया है। पूज्य श्री ने झुककर पाट पर पड़े एक फ्रेम को हाथ में लिया और उसे पढ़ना शुरू किया।

मैं जिनेश्वर देव महावीर प्रभु के सिद्धान्तों के अनुरूप उपधान तप का आयोजन करने के उपलक्ष में श्रेष्ठिवर्य श्री नेमचन्दजी खजान्ची को शास्त्रविहित उपधानपति पद प्रदान करने की घोषणा करता हूँ।

पूज्य श्री ने इतना वाचन कर श्री नेमचन्द जी खजांची को 'उपधानपति' पद का विशिष्ट संबोधन दिया। शासन, गच्छ व गुरुदेव श्री के प्रति पूर्ण समर्पित खजांची जी गद्‌गद् हो उठे। उन्होंने गुरुदेव श्री के चरणों में अपना शीष झुका दिया। उपधान पति पद प्रदान कर घोषणा-पत्र खजाची के हाथ में थमाया। मैं नेमचन्द जी की ओर ही देख रही

थी, हमेशा सख्त रहने वाला उनका व्यक्तित्व आज हर्ष के आंसू बहा रहा था। वे हर्ष को अपने भीतर झेल नहीं पा रहे थे, समा नहीं पा रहे थे।

मोक्ष माला परिधान का मंगल मुहूर्त आ चुका था, पूज्य गणिवर्य श्री स्वर परीक्षण कर चुके थे।

और पूज्य गणिवर्य श्री ने आदेश दिया—कुमारी कुसुम खजांची को। वह रोमांचित बनी और आसन से उठकर मंच की ओर बढ़ने लगी। मैंने गौर से उसके चेहरे पर कम्पित हो रहे भावों के गहन उतार-चढ़ाव को देखा। उसके पांव कांप रहे थे। खुशियों के मारे वह उछल सी रही थी। यही तो वह परम-पुण्यशाली कुमारिका थी, जिसके गले में सर्वप्रथम मोक्ष माला पहनाई जाने वाली थी।

उपधान वाले दर्शक गण जैसे आँखें झपकाना ही भूल से गये थे। कुमारी कुसुम नीची नजर किये आगे बढ़ रही थी। दूसरी ओर से उन्हें माला पहिनाकर अपने आपको परम सौभाग्यशाली मान रहे अजीत खजांची व्यवस्थित कदमों से आगे बढ़ रहे थे। उनके हाथ में माला थी—हाथ कांप रहे थे। हर्ष की उछाल के कारण आँखें हर्षाश्रुओं से भर गई थी। गला रुंध गया था।

पूज्य गणिवर्य श्री ने प्रथम माला परिधान की घोषणा की। दोनों के सिर पर वासक्षेप डाला। माला अभिमंत्रित की, दोनों मंच के आगे बढ़े। एक दूसरे को तिलक किया। मालारोपण हुआ। और......और सारा पांडाल भगवान महावीर के जयोद्घोष से गूंज उठा। तपस्वियों की जय बोली जा रही थी। प्रथम माला का परिधान हो चुका था। मंच से नीचे उतरते समय उपधानपति श्री नेमचन्द जी खजांची अपनी ओर से हर तपस्वी को प्रभावना अर्पित कर रहे थे—चांदी की प्लेट, कटोरी, केसर आदि। साथ-साथ अभिनन्दन पत्र भी प्रदान कर रहे थे। दूसरी ओर सौ. श्रीमती आशा देवी खजांची अभिमंत्रित चावलों से बधा रही थी। माला परिधान का क्रम जारी था। सारे उपधान वाले अपने क्रम की प्रतीक्षा में तैयार बैठे थे। माला परिधान के हर्ष को मन में संम्हाल नहीं पा रहे थे। कुमारी कुसुम प्रसन्नता से दमकती चमकती अपने आसन पर जा बैठी।

दूसरी माला पहनने वाले पवन जी मंच पर आ चुके थे। माला पहनी जा चुकी थी। पूज्य गुरुदेव श्री वासक्षेप डाल रहे थे। माला अभिमंत्रित कर रहे थे....क्रमानुसार आगे के नाम बोले जा रहे थे... मैं कुछ देर के लिये दर्शकों के चेहरे पर उभर आये मन के भावों की थाह लेने लगी जो इस अभूतपूर्व दृश्य को देखकर परम आनन्दित हो रहे थे। कुछ ही देर बाद जब मेरा ध्यान पुनः मंच की ओर केन्द्रित हुआ तो मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हो गई...कुछ ही मिनटों में 36 माला निपट चुकी थी और 37 वीं माला का विधान जारी था। इतने कम समय में....इतना व्यवस्थित मालारोपण विधान...इतना जल्दी! आश्चर्य! लोग चकित थे—उपधानवाही मुग्ध थे...। और मैंने देखा पूज्य गणिवर्य श्री ने 117 वीं माला को अभिमंत्रित किया।

और भगवान महावीर के जय-जयकार के साथ ही इस महोत्सव, 51 दिन चली इस महान तपश्चर्या के चरमोत्कृष्ट विधान की परिसमाप्ति की घोषणा हुई। तालियों की गड़-गड़ाहट निश्चित ही इन्द्र लोक तक पहुँची होगी। निश्चित ही इस अनोखे दृश्य के दर्शन करने... तपस्वियों को बधाई देने देवता गण आसपास मौजूद रहे होंगे।

और मैंने देखा...पूज्य गुरुवर्या श्री ने हाथ जोड़कर पूज्य गुरुदेव गणिवर्य श्री को बधाई दी। पूज्या गुरुवर्या श्री अभिभूत हो चुकी थी। हर्षातिरेक व्यवस्थित संवाद में बाधक बन रहा था। वे केवल इतना कह पाई.... आपने आज जिस पद्धति से... जिस शास्त्रीय विधान से सुव्यवस्थित ढंग से यह विधान सम्पन्न कराया.... निश्चित ही आप बधाई... अभिनन्दन के पात्र हैं, पूज्य गणिवर्य श्री के चेहरे पर आत्म तुष्टि की गौरवभरी मुस्कान थिरक रही थी।

पूज्य गणिवर्य श्री मंच पर विराज चुके थे। सभी उपधानवाही पुनः अपने-अपने आसनों पर बैठ चुके थे। पूज्य गणिवर्य श्री ने घोषणा कर दी थी कि अभी आपकी क्रियाएं शेष हैं। सभी दर्शक विमुग्ध बने बैठे थे। कोई अपने स्थान

से हिल भी नही रहा था। भीड़ की कोई सीमा नहीं थी। यह बीकानेर का पहला धार्मिक उत्सव था जहां इतनी भीड़ उमड़ी थी। और इतने शान्तिपूर्ण तरीके से महोत्सव संपन्न हुआ था।

दीक्षा की विधि बाकी थी। कुमारी शोभा श्वेत शुक्ल वस्त्र धारण कर आने वाली थी... संयम के उपकरणों मे सज्जित होकर।

इस बीच परिवार वालों ने उपकरण वहराये। पूज्य गणिवर्य श्री ने परम्परा व मर्यादानुसार उन वस्त्रों को वहिरने के पूर्व कोई भी छोटा मोटा नियम लेने का उपदेश दिया।

शोभा के परिवार जन आ रहे थे। उपकरण वहरा रहे थे...नियम स्वीकार कर वासक्षेप ग्रहण कर पुनः आसन की ओर जा रहे थे।

कुमारी शोभा डागा के पिताजी श्री विजयकुमार जी डागा उपकरण वहिराने आगे आये...गुरुदेव श्री ने नियम लेने के लिये कहा.. मैंने देखा....नियम की बात सुनते ही डागा जी पल भर के लिये विचारों मे खो गये...आंखें बंद कर ली, और फिर गंभीर स्वर मे कहा–गुरुदेव ! जब तक मेरे जीवन में यह परम भागवती दीक्षा उदय में नही आ जाती तब तक घेवर का त्याग करूगा।

गुरुदेव श्री इस संकल्प को देखकर अभिभूत हो उठे। डागाजी को जानने वाले जानते हैं कि घेवर उन्हे भाने वाली सबसे प्यारी मिठाई है।

कुछ ही क्षणों बाद शोभा का छोटा भाई पुखराज डागा उपकरण वहिराने लगा। और जब हमने यह जाना कि उसने आजीवन ब्रह्मचर्य का नियम ले लिया है चारों ओर अहोभाग्य का नाद गूंज उठा। पुखराज दीक्षा की भावना मन में वर्षो से सजोये है उसे अंतराय कर्म पर रोष है।

उसकी इस घोषणा को सुना तो मुझे आज प्रातः काल ही घटी एक सहज घटना का रहस्य समझ मे आ गया।

आज सुबह ही तो पुखराज उपाश्रय आया था। चेहरा बड़ा उदास, आंखें लाल...जैसे घंटों रोता रहा हो।

मैंने उससे पूछा—'कुल्लु' (घर में इसे सब कुल्लु कहते हैं) तुम इतने उदास क्यों हो ? क्या तुम्हें यह गम सता रहा है कि तुम्हारी दीदी आज संन्यस्त हो जायेगी।

पुखराज ने कहा था–नही महाराज साहब ! दीदी के लिये दुःख होना स्वाभाविक है, पर आज मैं बहुत उदास हूँ। अब मैं अपने मन की पीड़ा किसे सुनाऊँ।

आगे वह वजह बताने ही वाला था कि कारणवश संवाद वहीं स्थगित हो गया था।

अब मुझे समझ आ गया था कि किस कारण उसका हृदय रो रहा था—वह सोच रहा था—क्या वह मंगल प्रभात आज की तारीख का नहीं हो सकता था।

मैं भी गुरुदेव के चरणों में समर्पित होकर संयम की ओर अपना कदम बढ़ा देता। पर परिस्थितियों के कारण मेरा यह सपना अभी पूरा नहीं हो सका।

वह कह रहा था अपने मन से कि अब तो गुरुदेव का ही सहारा है वही मेरी बाधाओं को काटेंगे और मेरे सपने को यथार्थ स्वरूप प्रदान करेंगे।

पूज्य गणिवर्य श्री चावलों को चांदी के थाल में विशिष्ट मुद्राओं द्वारा अभिमंत्रित कर रहे थे। उनके आदेश से कुमारी शोभा का भाई अशोक डागा दो शब्द कह रहा था अपनी बहिन की विदाई में।

सारी जनता एक उत्सव देख चुकी थी....दूसरे महोत्सव को देखने की अधीरता थी।, कब शोभा धवल वस्त्रों में सज्जित होकर आए और हम उस सच्चे राही आत्मा को वंदन कर कृतार्थ बनें, देखकर तृप्त बनें।

पूज्य गणिवर्य श्री ने निर्देश भेज दिया था कि अब शीघ्रता करो। उनकी दृष्टि घड़ी पर लगी हुई थी, वे एक पन्ने पर नजर डालकर गंभीरता से उसे पढ़ / देख रहे थे। मैंने देखा—उसमें दीक्षा कुंडली नवमांश कुंडली निकाली हुई थी–मुहूर्त का निश्चय उन्होंने कर ही लिया था। समय प्रगट नही किया गया था।

और दूर से झालर बजने की आवाज सुनाई दी। सारे लोगों के कान उसी दिशा में घूम गये। यह आवाज मन में कल्पना जगा रही थी। मैं यहाँ मंच पर बैठी थी पर मेरा मन तो वहीं रमा हुआ था।

पूज्य गणिवर्य श्री का एक ही निर्देश ऐसा था कि एक भी व्यक्ति अपने आसन से उठा नहीं—कोई कोलाहल नहीं।

मेरे मन में कल्पनाओं की तरंगें उछल रहीं थीं, शोभा कैसी लगेगी? उसके तन पर धवल वस्त्रों की धवलिमा कितनी शोभ रही होगी?

झालर की आवाज बड़ी मधुर लग रही थी। लोग उचक उचक कर देखने लगे थे...सांसें तेज हो गई थी.... धड़कनों ने गति पकड़ ली थी....आँखों में एकाग्रता का प्रवेश हो गया था।

और शोभा ने साध्वी वेश में धीर-गंभीर चाल से नीची नजर किये पांडाल में प्रवेश किया। सारा पांडाल नूतन साध्वी की जयकार से गूंज उठा। जयकार में शब्दों के कम्पन के साथ उत्साह का तेज भी समाया हुआ था। श्री पन्नालाल जी खजांची, सूरजमल जी पुगलिया व्यवस्था संभाल रहे थे।

मैंने धीरे-धीरे मंच की ओर आती-बढ़ती शोभा को देखा और देखते ही रह गई। अब यह मेरी गुरु बहिन बन चुकी थी... मैं इसके चेहरे की दिव्य कान्ति को देख रही थी, जो मुंडन संस्कार के बाद शतगुणित हो गई थी.... मैं इसकी आँखों में अनूठी चमक महसूस कर रही थी जो सादगी पाकर गम्भीर बन गई थी, मैं इसकी नपी तुली चाल परख रही थी जो परमात्म पथ को पाकर पूर्ण प्रेममयी बन गई थी...। वह नीची नजर किये आ रही थी, उसके होठों पर जमी गम्भीर सहज मुस्कान उसकी खुशियों का ढिंढोरा पीट रही थी।

मैं आगे बढ़कर उसका हाथ थामकर गुरुवर्या श्री के पास ले आई, चरणों में वन्दन कर मंच पर आसन लगाकर क्रिया विधि की तैयारी करने लगी। साध्वी श्री शुभ्रांजना श्री जी म. क्रिया विधि करने में उसे सहयोग प्रदान कर रहे थे।

बाह्य परिवर्तन हो चुका था.... आभ्यन्तर के लिये प्रत्याख्यान करना था....सम्पूर्ण सावद्य योग के त्याग रूप 'करेमिभन्ते' का पाठ उच्चरना था।

पूज्य गणिवर्य श्री ने क्रिया प्रारम्भ की। क्रिया कराने में पूज्य मुनि मुक्तिप्रभ सागर जी म. सा उनके सहयोगी बने थे। केश लुंचन की विधि के बाद जब शोभा को करेमिभंते का पाठ उच्चराया गया, उसका मन नाच उठा।

आज उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति हो चुकी थी। उसके चेहरे की आभा हृदय में आलोक बिखेरने लगी। कुछ ही समय की क्रिया शेष बची थी। नामकरण संस्कार शेष था। गुरुदेव श्री द्वारा अभिमंत्रित चावल वितरित किये जा चुके थे। निर्देश दिया जा चुका था कि इन चावलों का प्रक्षेपण नूतन साध्वी जी पर तब करना है जब वे प्रदक्षिणा देंगी।

पूज्य गणिवर्य श्री ने चावल प्रक्षेपण विधि का हेतु समझाकर इस शंका का समाधान कर दिया कि व्यर्थ में चावल उछालने से क्या लाभ है?

पूज्य गुरुदेव ने कहा—ये विशिष्ट मुद्राओं व मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित चावल हैं, आज चतुर्विध श्री संघ की साक्षी से यह बालिका साध्वी जीवन में प्रवेश कर रही है। श्री संघ अभिमंत्रित चावलों से बधायेगा, अभिनन्दन करेगा तथा आशीर्वाद देगा कि तुम्हें भी इन चावलों जैसा बनना है। चावल जैसे दुबारा नहीं उगता उसी प्रकार तुम भी जन्म-मरण की चक्रधारा से मुक्त हो जाओ। श्री संघ यह कामना करेगा कि 'तेरापंथ बने उजमाल... संयम पथ पा बनो निहाल....।'

और नामकरण की वेला आ गई। पूज्य गणिवर्य श्री खड़े थे। सारे लोग उत्कंठित थे यह सुनने कि इसका नाम क्या रखा जायेगा। चारों ओर शान्ति ही शान्ति थी।

पूज्य श्री ने 'कोटिक गण' आदि शब्दों का सिंहनाद किया। सकल श्री संघ की साक्षी में इसे विदुषी आर्या-रत्न पूजनीया गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. की शिष्या के

रूप में साध्वी शीलांजना नाम दिया गया। पूज्य गणिवर्य श्री ने इस नाम की वासक्षेप डाली और सकल श्री संघ ने साध्वी शीलांजना श्री जी की जय वोलकर अपने अहोभाव की मुहर लगा दी। मुनि मंडल, पूज्य गुरुवर्या श्री ने सकल साध्वी मंडल ने वासक्षेप डाली। सकल श्री मंघ ने चावलो से वधाया, तीन बार नामकरण किया गया!

दीक्षा विधान पूरा हो चुका था। वन्दन विधान बाकी था। उपधानवाहियों ने और साध्वी शीलांजना जी ने गुरुदेव श्री को द्वादशावर्त वन्दन किया! बाद में सकल संघ ने जब नूतन साध्वी शीलांजना श्री जी को वन्दन किया तो साध्वी शीलांजना जी शरमा गई। जबकि लोग आतुर थे....पहला धर्मलाभ सुनने।

क्रिया विधि विधान पूरा हो चुका था। उपधान आराधकों का परिवार जनों द्वारा अभिनंदन का कार्यक्रम पाडाल के बाहर रखा था। घड़ी पौने एक बजा रही थी। सिर्फ ढाई घंटे में सारा कार्यक्रम संपन्न हो चुका था। गुरुदेव श्री द्वारा सर्वमंगल किया जा चुका था। उपधानपति परिवार द्वारा पूज्य गुरुदेव श्री को कामली ओढाई जा चुकी थी। पूज्य गणिवर्य श्री पाट पर से खड़े हो गये थे। वापस शहर, महावीर भवन आने की तैयारी में। पूजनीया गुरुवर्या श्री आदि साध्वी मंडल पूज्य श्री के पास पहुंचा। प्रमुख कार्यकर्ता श्री पन्नालालजी खजांची पास ही खड़े थे।

पूज्य गणिवर्य श्री के चेहरे पर परम संतोष का रस छलकता आनंद नृत्य कर रहा था। उन्होंने गुरुवर्या श्री को कहा—आपकी प्रेरणा ने आज परम सफलता को प्राप्त कर लिया। मैं आपकी प्रेरणा का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ।

पूजनीया गुरुवर्या श्री के हर्ष का तो कोई पार नहीं था। पूज्य गणिवर्य श्री ने तो हर्ष पर गम्भीरता का लबादा ओढ़कर उसे भीतर रख लिया था पर पूजनीया गुरुवर्या श्री तो हर्ष रोक नहीं पा रही थी। उनके शब्दों द्वारा, चेहरे के भावों द्वारा, उनकी चाल से, आनंद ही आनंद बरस रहा था। उन्होंने कहा—यह सब आपके ही पुरुषार्थ का परिणाम है। खजांची जी ने वार्तालाप में हस्तक्षेप किया—यह सत्य तथ्य है... आज परिश्रम सफल बना। मैं उनके चेहरे पर छाये तेज को देख रही थी, वे इतने हर्षित थे कि अपनी बात भी नहीं कह पा रहे थे। हृदय में हर्ष की उछलती उर्मिया अभिव्यक्ति में बाधा बन गई थी। पूज्य गणिवर्य श्री ने कहा—यह आप जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के परिश्रम का परिणाम है। रात दिन एक कर जो कार्य किया, मैं उसका वर्णन नही कर सकता। पूजनीया गुरुवर्या श्री भी उनके कार्य की प्रशंसा कर रही थी। और पन्नालालजी जैसे आज इन शब्दो को पाकर गौरवान्वित, रोमांचित हो उठे थे। उन्होंने रूमाल निकालकर आंखों से बाहर आने को बेचैन हो उठे हर्ष के आंसू पोंछ लिये। चेहरा जैसे स्वाभाविक स्वाभिमान से तन गया था। उन्होंने अपनी मूंछों को व्यवस्थित किया और मुस्कुरा उठे।

सारे धर्मों का उद्देश्य आत्मा की शुद्धता उपलब्ध करने का है। केवल नाम और बाह्य क्रियाकाण्डों का भेद है, पर मूल में तो वही तत्त्व है।

विश्व धर्म को लेकर अशांति इसी कारण से है कि हमारे हृदय में असहिष्णुता का साम्राज्य स्थापित हो गया है।

—गणिमणिप्रभसागर

गुरु समर्पण



पुखराज डागा (कूल्लू)

जिनवाणी का सिंहनाद कर
तुमने हमें जगाया ।
सत्य-धर्म की राह दिखाकर,
ज्ञान का दीप जलाया ।
कान्तिसूरि के शिष्य गणिवर
मणिप्रभ नाम कहाया ।
तेरी आभा ने जिन शासन में
स्वर्णिम सूर्य उगाया ।।१।।
तेजोमय मुखमुद्रा तेरी,
ओजभरी प्रिय वाणी ।
कलकल गंगाजल-सी वहती,
करती धर्म की लाणी ।
एक वार दर्शन पाते वे,
हो जाते नौनिहाल ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान निधि से
वनते मालामाल ।।२।।
सत्य प्रतिष्ठित जीवन तेरा
अटल आस्था स्वर में ।
चिन्तन में श्रद्धान भरा,
वैराग्य गूंजता रग में ।
हाथों में वरदान,चरण में
लक्ष्मी करती वास ।
वाल-शिष्य पुखराज लगाये
वैठा तेरी आस ।।३।।

शुभाशंसनम्

धन्यो मणिप्रभो विद्वान् क्रियाकाण्डे धुरन्धरः ।
कान्तिसागर सूरीणां वितनोति यशोऽमलम् ।।

भवन्तु सुखिनः सर्वे कर्तारोऽप्यनुमोदकाः ।
दातारो वसुधाराणां सेवा धर्म परायणाः ।।

जैन धर्मरता मान्या शान्ता पीयूष वर्षिणी ।
सती हेमप्रभा विज्ञा, वितनोतु सतां शिवम् ।।

उपधानाभिधं चेदं तपश्चातीव दुर्लभम् ।
कुर्वान्ति कारयन्ते ये ते सर्वे शिव गामिनः ।।

जिनालये सुसम्पन्ने कलशा रोपणं वरम् ।
उपधानतपः प्रान्ते दीक्षा दानं महाफलम् ।।

दक्षिणातु पुरा लब्धा आशीर्वादो वितीयते ।
इहोपेत्य विधातव्यः स्मारकोऽनुभवाश्रियाः ।।

—आचार्य रामकिशोर पाण्डेय

नित उठ वन्दन करता हूँ



हेमन्त कुमार पुगलिया, वीकानेर

प्रखर प्रवक्ता परम प्रतापी परम प्रभावी उपकारी ।
प्रवचन सुनने दौड़े आते बड़ी संख्या में नरनारी ।।
अपनी आस्था अरु श्रद्धा का भाव सुमन मैं धरता हूँ ।
गणिवर मणिप्रभसागर गुरु को नित उठ वंदन करता हूँ ।।१।।

श्री जिन कान्तिसागर गुरु के शिष्य बने छोटी वय में ।
योग्य गुरु के योग्य शिष्य शिक्षा वीणा बजती लय में ।।
ज्ञान किरण तुमसे पाकर मैं अपने मन को भरता हूँ ।
गणिवर मणिप्रभसागर गुरु को नित उठ वंदन करता हूँ ।।२।।

धर्म प्रभावक वोध प्रदायक तप जप आराधक ध्यानी ।
कुशल साधना कुशल गुरु की करते रहते इकतानी ।।
उनकी वाणी योग सिद्धि में चमत्कार अनुभवता हूँ ।
गणिवर मणिप्रभसागर गुरु को नित उठ वंदन करता हूँ ।। ३।।

ऐसे ज्ञानी गुरुवर को पा मेरे मन का ये चिन्तन ।
अर्पण कर दूं श्री चरणों में मैं अपना सारा जीवन ।।
युग-युग अमर रहे गणि मणिवर यही कामना करता हूँ ।
गणिवर मणिप्रभसागर गुरु को नित उठ वंदन करता हूँ ।।४।।

वीकानेर नगर में जिनशासन का मंगल घंट बजा ।
जिनके चौमासे में धर्म की लहराई अति भव्य ध्वजा ।।
मधुरी वाणी ओज तेज युत सुनकर आनंद भरता हूँ ।
हेमप्रभाजी गुरुवर्या को नित उठ वंदन करता हूँ ।।५।।

जिनके कारण वोध मिला मुझ जैसे नास्तिक व्यक्ति को ।
गुण जीवनभर गाऊँ मैं निशदिन नमता उस शक्ति को ।।
दिव्य भव्य तेरे उपदेशों को मैं नित अनुसरता हूँ ।
हेमप्रभाजी गुरुवर्या को नित उठ वंदन करता हूँ ।।६।।

प्रणाम थांने नित नित म्हारा



सुश्री बरकर खजांची

मणिप्रभजी मणि ज्यूं चमके ए,
गौरव गुण मैं गावां जी।
हिवड़े मांही सदा विराजे।
हिलमिल सीस झुकावां जी ॥१॥

मोकलसर में जन्म्या गुरुवर।
रोहिणी मां रा बाल जी॥
पारसमल जी रा नंद नगीना।
लूंकड़ कुल रा लाल जी ॥२॥

कान्ति सूरि रा सीस बण्या थे।
गुरु चरणां में बैठ भण्या॥
भण्या नहीं थे खरा गुण्या।
थांरा बखाण में घणा सुण्या ॥३॥

बोली थांरी हीरा तोली।
जाणे उण में मिश्री घोली॥
हिवड़े री आंख्यां थे खोली।
सुण श्रोता री नसड़ी डोली ॥४॥

पगल्यां म्हे नित पूजां थांरा।
दाय न आवे दूजा सारा॥
थे गुरुवर सगला सूं न्यारा।
प्रणाम थांने नित नित म्हारा ॥५॥

उपधान पति श्री नेमचन्दजी खजांची

□

सूरजमल पुगलिया

मरुभूमि धर्मधरा बीकानेर के सपूत श्री नेमचन्द जी खजांची भारतवर्ष से बहुत दूर आज विश्व के सर्वोन्नत देशों की गणना में आने वाले देश जापान में निवास करते हैं। अपने पिता श्री भंवर लाल जी खजांची एवं मातु श्री सज्जन देवी से मिले धार्मिक संस्कारों की बदौलत एवं जापानियों की मातृभूमि के प्रति असीम श्रद्धा के परिवेश में रहने के कारण आपके जीवन में इन दोनों गुणों का सुंदर समावेश देखा जा सकता है। बचपन से मिले धार्मिक संस्कारों के कारण 'बहुजन हिताय—बहुजन सुखाय' की विभिन्न योजनाओं में आपने समय-समय पर गहरी रुचि ली है एवं इस क्षेत्र में अपनी मातृभूमि बीकानेर को सदा प्राथमिकता दी है।

वर्तमान में हुए उपधान तप के स्थल, एवं आज बीकानेर जैन समाज की विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र श्री महावीर जैन भवन का पुनः निर्माण आज से लगभग ढ़ाई वर्ष पूर्व 19 मई 1986 को आप ही के अर्थ सहयोग से संभव हुआ, एवं इसके निर्माण ने यह सिद्ध कर दिया कि आप धन कमाने और उसे सद्कार्यों में खर्च करने, इन दोनों कलाओं में पारंगत हैं, तथा आपके दिल में जिन शासन के विभिन्न सिद्धान्तों के प्रति गहरी आस्था है।

धन का बाहुल्य अहंकार को प्रदीप्त करता है, लेकिन यह कथन आपके जीवन की सरलता, सहजता, और सहृदयता को देखते हुए मिथ्या प्रतीत होता है। जैसे जल का आधिक्य सरिताओं के नियमित प्रवाह को तो भिन्न-भिन्न करने में सक्षम हो सकता है, पर समुद्र की धीर गंभीर मर्यादा को भंग नहीं कर सकता। दान देते समय आप अपनी धन गंगा में तन और मन की निष्ठा को सामिल करके उसे त्रिवेणी का रूप प्रदान कर देते हैं। आपके व्यक्तित्व का परिचय देने में शब्दों का सामर्थ्य किञ्चित निर्बल प्रतीत होता है, फिर भी हम यहां आपका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं।

श्री नेमचन्दजी खजाञ्ची ने बीकानेर नगर में दिनांक 19 दिसम्बर 1935 ईस्वी को कुशल जौहरी श्री भंवरलाल जी खजाञ्ची के घर श्रीमती सज्जन देवी की कुक्षि से पुत्र रत्न के रूप में जन्म ग्रहण किया था। अल्पायु से ही वे रत्नों और रत्नाभूषणों के अपने पैतृक व्यवसाय की ओर आकर्षित हुए और क्रमशः निष्ठावान होते चले गये। पन्द्रह वर्ष तक वे बीकानेर नगर में ही अपने निजी व्यवसाय में सहयोग करते रहे, इसके पश्चात् सन् 1951 में उन्होंने व्यवसाय के आकार और सुविधा के अनुरूप बम्बई नगर को अपना व्यवसाय केन्द्र चुन लिया और सपरिवार वहीं निवास प्रारम्भ कर दिया।

इस बीच परम्परानुसार 16 वर्ष की आयु में ही आपका विवाह एक प्रतिष्ठित जौहरी घराने में श्री लालचन्द जी कोठारी की सुपुत्री आशादेवी के साथ संपन्न हो गया। सन् 1962 में आपने स्वतंत्र रूप से अपना व्यापार दिल्ली महानगरी में प्रारंभ किया और यहां से विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करके आप 1967 में यहां से जापान के लिए प्रस्थान कर गये। अपनी प्रतिभा, कुशलता,

मधुर व्यवहार, ईमानदारी, और परिश्रम से आप निरंतर सफलता की सीढ़ियां चढ़ते गए। वर्तमान में आपकी फर्म जापान के मोती व्यवसायियों में एक प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है, और आपका विश्व के अनेक देशों के साथ व्यापारिक लेनदेन होता है। आपकी फर्म मैसर्स जवाहिरान पर्ल एक्सपोर्ट कं. लि. का मुख्य कार्यालय जापान के कोबे नगर में स्थित है। आपके दो पुत्रों में से अग्रज श्री सुरेन्द्र कुमार जी व्यापार में आपके सहयोगी हैं और अनुज श्री अमित विक्रम खजांची अभी अध्ययन रत है। आपकी पुत्री श्रीमती तारा बोथरा जो श्री राजेन्द्र कुमार जी बोथरा से विवाहित हैं वही जापान में निवास करती हैं एवं श्री राजेन्द्र जी भी शिक्षा से चार्टेड एकाउन्टेन्ट हैं वही मोती के व्यवसाय में लगे हुए हैं।

आपके सभी परिवार जनों के मन में जैन धर्म के विभिन्न सिद्धान्तों के प्रति गहरी आस्था है, और आप दुखी एवं पीडित मानव की सेवा के लिए सदा तत्पर रहते हैं। अभी लगभग पांच वर्ष पूर्व आपने बीकानेर नगर के पास ही के कस्बे लूणकरणसर में गरीब असहाय ग्रामीण जनता की चिकित्सार्थ एक कैंप लगवाया था, जिसमें सभी प्रकार के रोगों से पीड़ित हजारों ग्रामीण जनों को चिकित्सा सेवायें उपलब्ध कराई गई। उसके पश्चात आपने रोटेरी क्लब बीकानेर के सहयोग मे कोलायत तहसील में आंखों के ओपरेशन के दो कैंप लगवाये, जिसमें सैकड़ों की संख्या में बूढ़े-बीमार लोगों की आखों का इलाज किया गया, और उसके फलस्वरूप वे आज आसानी से अपना दैनिक जीवन यापन कर सकते हैं।

विकलाग बच्चों की सहायता के लिए बनाये जा रहे रोटेरी भवन को आपने एक लाख रुपये की धनराशि प्रदान करके अपनी उदारता का परिचय दिया है। पिछले चार वर्षों मे राजस्थान में भयंकर अकाल पड़ा और इस अकाल में हजारों निरीह प्राणी काल कलवित हो गए, ऐसे समय मैं आपने पशुधन को बचाने के लिए चलायी जाने वाली विभिन्न योजनाओं में मुक्तहस्त दान देकर, अपने हृदय की करुणा का जीवंत परिचय दिया है।

शिक्षा के विकास के प्रति आपकी गहरी रुचि है और इसी के फलस्वरूप आपने बीकानेर नगर की सर्वोच्च शिक्षण संस्था–जो प्राथमिक कक्षा से स्नातकोत्तर महाविद्यालय तक की शिक्षण संस्थाएँ चलाती है, पिछले वर्ष एक लाख रुपये की सहायता प्रदान की है।

भारत और भारतीय संस्कारों के प्रति आपकी गहरी आस्था है एवं अपनी मातृभूमि बीकानेर से आपका गहरा लगाव है, और इसी कारण आपका निरंतर बीकानेर आना जाना बना रहता है। आज बीकानेर नगर के अनेकों व्यवसायियों का अपने-अपने क्षेत्र में अच्छा प्रभुत्व है लेकिन दुर्भाग्य से वे लोग अपनी मातृभूमि को लगभग भूल से चुके है, और स्थानीय समाज की आवश्यकताओं एवं समस्यायों में उनकी कोई रुचि नही है लेकिन ऐसे समय में आप बीकानेर वासियों के लिए एक ज्योतिपुंज के रूप में प्रकट हुए हैं, एवं यहां की विभिन्न समस्याओं के प्रति गहरी रुचि लेकर आप उन्हें दूर करने में अपना हर संभव प्रयास कर रहे हैं, एवं अपनी तरफ से तन मन धन से पूरा सहयोग कर रहे हैं। स्थानीय जैन समाज को आपसे बहुत आशाएँ हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती आशा देवी एक अत्यन्त धर्म निष्ठ महिला हैं, एवं विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों में आप सदा अपने पति को प्रेरणा देती रहती हैं, एवं हर कार्य में उनकी अनुगामिनी बनी रहकर एक आदर्श भारतीय नारी के रूप में अपने आपको एक अनुकरण के रूप में प्रस्तुत किया है।

परम पिता से हमारी यही प्रार्थना है कि वह निरंतर इस युगल पर एव सभी परिवार जनों पर अपनी असीम कृपा बनाये रक्खे ताकि यह परिवार निरंतर जिन शासन की शोभा में चार चांद लगाता रहे।

चातुर्मास समिति के प्रमुख सहयोगियों का परिचय

श्रीमान् शिवचन्द जी झाबक

(उम्र लगभग 88 वर्ष)



श्रीमान् शिवचन्दजी झाबक

यदि दिल में समाज के प्रति लगाव हो तो उम्र उसमें किसी भी प्रकार से बाधक नहीं बन सकती, यह तथ्य श्री मान् शिवचन्द जी झाबक के जीवन से सत्य प्रकट होती है। लगभग 88 वर्षीय श्रीमान् झाबक जी में आज भी विभिन्न सामाजिक कार्यों के प्रति वही सजगता एवं चिन्ता है, जो युवावस्था में थी, आलस्य का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं है आपके पिता श्री मंगलचन्द जी झाबक भी खरतरगच्छ के प्रमुख श्रावकों में से थे। आपकी मद्रास में लगभग 150 वर्ष पुरानी पेढ़ी है। इसके अलावा पटना में भी आपका अच्छा कारोबार था। अपने जीवन काल में आपने बिहार, मद्रास व बीकानेर की विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं को अपने सक्रिय सहयोग से लाभान्वित किया है, एवं अनेकों संस्थाओं के पदाधिकारी रहे हैं। इस चातुर्मास में भी आपने चातुर्मास कमेटी के संरक्षक के रूप में समिति को अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। वर्तमान में आप खरतरगच्छ जैन समिति के भी अध्यक्ष हैं। हम आपके स्वस्थ दीर्घ जीवन की मंगल कामना करते हैं।

श्री माणकचन्द जी बेगाणी

(उम्र लगभग 75 वर्ष)



श्री माणकचन्दजी बेगाणी

मूल रूप से बीकानेर निवासी श्री बेगाणी जी व्यावसायिक दृष्टि से कलकत्ता में निवास करते हैं लेकिन विभिन्न पारिवारिक एवं सामाजिक उत्सवों पर आपका बीकानेर में आवागमन रहता है। आपका जीवन बचपन से ही धार्मिक संस्कारों से रंगा हुआ है और इस उम्र में भी आपको प्रतिदिन जिनेश्वर देव की पूजा भक्ति के बिना चैन नहीं होता।

प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. चातुर्मास आयोजन समिति के अध्यक्ष के रूप में आपने इस वर्ष अपने सभी व्यावसायिक कार्यों को परे रखकर पूरा चातुर्मास बीकानेर में ही बिताया एवं इस अवधि में हुए विभिन्न कार्यक्रमों में आपने खुले दिल से अर्थ सहयोग प्रदान किया।

थोड़े शब्दों में अधिक महत्व की बात कहना एवं अपने विचारों को बिना किसी पक्षपात के अभिव्यक्त करना आपके व्यक्तित्व का विशेष गुण है।

श्री जतनमल जी लूणिया

(उम्र लगभग 58 वर्ष)

बीकानेर में जन्मे श्री लूणिया जी स्थायी रूप से

कलकत्ता में निवास करते हैं एवं वहां आपका कपड़ा मिलों की दलाली एवं कपड़े का थोक व्यवसाय है। धार्मिक एवं सामाजिक भावना के संस्कार आपको पिता श्री हीरालाल जी लूणिया एवं माता श्रीमती मगन देवी से विरासत में प्राप्त हुए हैं। स्वभाव से हसमुख सरल, सरस एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी श्री लूणिया जी कलकत्ता खरतरगच्छ संघ के एक सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं। आपका शास्त्रीय संगीत के प्रति अच्छा रुझान है, एवं स्वयं भी शास्त्रीय संगीत के अच्छे गायक भी हैं। श्री जैन श्वे. मित्र मण्डल कलकत्ता के मंत्री है। प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. चातुर्मास आयोजन समिति के आप उपाध्यक्ष रहे हैं।



श्री जतनमल जी लूणिया

इस चातुर्मास में आपने व्यावसायिक कार्यों को परे रखकर चातुर्मास का अधिकांश समय बीकानेर में ही विताया और इस अवधि में हुए विभिन्न कार्यक्रमों में आप सदैव विवेकपूर्ण मार्ग-दर्शन देते रहे एवं आपने मुक्तहस्त आर्थिक सह-योग भी प्रदान किया है। इसके अलावा आपने व्यक्तिगत रूप से कई धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है एवं अनेकों पुस्तकों के प्रकाशन में अच्छा आर्थिक सहयोग दिया है।

श्री हनुमान दास जी सीपाणी

धीर गंभीर मुद्रा के धनी श्री सीपाणी जी का जन्म श्रीमान् सेठ रिधकरण जी सीपाणी की धर्मपत्नी की कुक्षी से आसोज वदी 2 संवत् 1989 को हुआ। आपके परिवार में पुस्तैनी हाथी दांत का व्यापार होता था, लेकिन आपने अपने परिश्रम से ऊन का व्यापार शुरू किया और आज आपकी फर्म पन्नालाल हीराचन्द बीकानेर के ऊन व्यवसाय की एक प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है। व्यवसाय के



श्री हनुमानदासजी सीपाणी

अलावा आप बीकानेर जैन समाज की विभिन्न गतिविधियों में निरंतर रुचि लेते रहे हैं। वर्तमान में आप श्री आत्मानंद जैन सभा बीकानेर के संरक्षक, एवं श्री गंगा जुबिली पिंजरापोल के न्यासी हैं। प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. के इस बीकानेर चातुर्मास में बनाई गई चातुर्मास कमेटी के सदस्य के रूप में इस चातुर्मास में हुए विभिन्न कार्यों में आपने अंतरमन से पूरा सहयोग प्रदान किया है।

श्री झंवरीचन्द जी खजांची



श्री झंवरीचन्दजी खजांची

बीकानेर के प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमान् सेठ प्रेमचन्द जी खजांची के पौत्र एवं श्रीमान् माणक चन्द जी खजांची के सुपुत्र श्री झंवरी चन्द जी का जन्म दि. 2 फरवरी 1932 को हुआ। बचपन से मिले सुसंस्कारों के कारण आपकी विभिन्न धार्मिक कार्यों मे सदा रुचि रही है। आपका व्यक्तित्व गौर वर्ण, स्पष्ट वक्ता का है। इस चातुर्मास में नगर के बाहर से दर्शनार्थ आने वाली यात्री बसों की भोजन व्यवस्था करके एवं चातुर्मास में हुए श्रृंखला तेलों के तपस्यार्थियों तथा पंचरंगी तप के तपस्यार्थियों का बहुमान करके आपने अपनी अनन्य स्वधर्मी सेवा भावना का परिचय दिया है।

चातुर्मास कमेटी के प्रमुख कार्यकर्ताओं का परिचय

श्री लालचन्द जी सुराणा

(जन्म संवत् 1974 मिती मिगसर सुदी 12)



श्री लालचन्दजी सुराणा

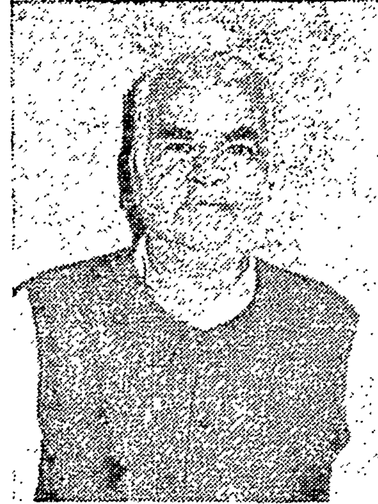
उम्र 72 वर्ष किन्तु कार्य करने का उत्साह और शक्ति 27 वर्ष के नवयुवक सी। पिछले पचास वर्षों से आप विना किसी पद प्रतिष्ठा की आकाँक्षा के वीकानेर जैन समाज की विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं को तन-मन से अपना सहयोग देते आ रहे हैं। व्यावसायिक रूप से आपका वीकानेर, गंगानगर एवं जयपुर में कपड़ का व्यवसाय है। आपने इस वर्ष पू. हेम प्रभा श्री जी चातुर्मास आयोजन समिति के कोषाध्यक्ष के रूप में समिति की विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय सहयोग दिया है। इसके अलावा आप कपड़ा व्यवसायी संघ वीकानेर के कोषाध्यक्ष तथा श्री महावीर जैन मण्डल वीकानेर के आधार स्तम्भ हैं। वीकानेर में होने वाले विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में आपने सदा सक्रिय सहयोग दिया है।

वीकानेर में जैन समाज के जरूरतमंद भाई बहिनों के सहयोगार्थ चलाये जाने वाले स्वधर्मी सहायता फंड के आप आधार स्तम्भ हैं एवं सूचना मिलते ही तुरंत जरूरतमंद व्यक्ति की सहायतार्थ आप पहुंच जाते हैं।

स्वभाव से शान्त, सरल एवं सहनशील व्यक्तित्व के धनी श्री सुराणा जी यशोलिप्सा से दूर निष्काम भाव से सदा रचनात्मक कार्यों में जुटे रहते हैं। आलस्य का आपके जीवन में तनिक भी स्थान नहीं है।

श्री चान्दरतन जी पारख

(जन्म संवत् 1990 कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा)



श्री चान्दरत्नजी पारख

पिता श्री किशन चन्द जी पारख से विरासत में प्राप्त सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों के संस्कार के फलस्वरूप श्री पारख जी भी सहज भाव से विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में पूरी निष्ठा से जुट जाते हैं। सरल, शान्त एवं सौम्य प्रकृति के धनी पारख जी व्यावसायिक रूप से विद्युत उपकरणों का व्यवसाय करते हैं।

प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. के वीकानेर चातुर्मास में आपने विभिन्न अवसरों पर की जाने वाली भोजन व्यवस्था में अपना सर्वाधिक समय देकर उसके सफल संचालन में सक्रिय सहयोग दिया है। वर्तमान में चल रहे उपधान तप की भोजन व्यवस्था में भी आप अपने व्यावसायिक कार्यों को ताक पर रखकर दिन भर जुटे रहते हैं। इसके अलावा पिछले तीन वर्षों में लगे दो शिक्षण शिविरों में तथा कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर समाज के सामूहिक प्रसाद के अवसरों पर होने वाली भोजन व्यवस्था के भी आप प्रमुख सहयोगी रहे हैं। विभिन्न अवसरों पर मंदिरों में होने वाली पूजाओं में भी आप विना नागा उपस्थित होते हैं।

55 वर्ष की उम्र में भी आप अत्यन्त उत्साही एव निष्ठावान हैं। जिस कार्य को हाथ में लेते हैं जब तक वह पूरा न हो, पूरी लगन के साथ उसमें जुटे रहते हैं।

श्री बाबूलाल जी मुसरफ
(जन्म संवत् 1988 मिती चैत वदी 11)



श्री बाबूलालजी मुसरफ

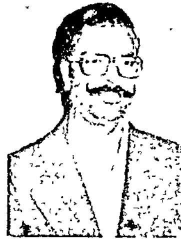
मूल रूप में खरतरगच्छीय श्रावक श्री मुसरफ जी की सेवाएँ सभी के लिए सहज भाव से उपलब्ध रहती हैं। कपड़े के थोक व्यवसायी श्री मुसरफ जी एक स्वनिर्मित व्यक्ति हैं। पिछले कई वर्षों में बीकानेर में होने वाले विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में आपने सदा सहयोग दिया है। इस वर्ष के चातुर्मास में हुए विभिन्न कार्यक्रमों में आपने तन मन धन से सक्रिय सहयोग दिया है।

इस अवधि में अपने व्यावसायिक कार्यों की परवाह न करते हुए आपने चातुर्मास में आने वाले यात्रियों की आवास व्यवस्था में, शिविर की व्यवस्था में एवं वर्तमान मे चलने वाले उपधान तप की विभिन्न व्यवस्थाओं में सक्रिय सहयोग देकर स्वधर्मी वात्सल्य का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

57 वर्ष की उम्र में भी आपमें युवकों सी स्फूर्ति, तत्परता एवं उत्साह है। आलस्य का आपके जीवन में कोई स्थान नही है। सदा हसमुख रहना आपके व्यक्तित्व का गुण है।

श्री पन्नालाल जी खजांची
(जन्म संवत् 2004 काती वदी 12)

श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. चातुर्मास आयोजन समिति के मंत्री श्रीखजांची जी चातुर्मास एवं उपधान तप के दौरान हुए समस्त कार्यक्रमों एवं आयोजनों के सूत्रधार के रूप में उभर कर सामने आये है। निजी कार्यों एवं व्यवसाय को ताक पर रखकर पिछले लगभग 7 माह से निरंतर विभिन्न व्यवस्थाओं के सफल संपादन में जुटे रहने की शक्ति, क्षमता एवं अदम्य उत्साह संजोये रखना इस जुझारू व्यक्ति के ही वश की बात थी। पर पीड़ा में सम्बल के रूप में



श्री पन्नालालजी खजांची

जाकर खड़े हो जाने का गुण पिता श्री लूणकरण जी से आपको विरासत में मिला। पेचीदा एवं उलझन भरे कार्यों में हाथ डालकर विरोधों एवं अवरोधों का डटकर मुकाबला करते हुए साहसपूर्वक उसे सफलता के सोपान तक पहुंचा देना इनके दृढ़ विश्वास का प्रतीक है। आप वर्तमान में श्री खरतरगच्छ जैन समिति के मंत्री, श्री नमीनाथ जैन मन्दिर प्रन्यास एवं सर्राफा एसोसियेसन के कोषाध्यक्ष, श्री चिन्तामणि जैन मन्दिर प्रन्यास एवं श्री जैन श्वे. ओसवाल खरतरगच्छ श्री संघ के प्रन्यासी हैं। श्री महावीर जैन भवन के निर्माण में आने वाली उलझनों को कुशलतापूर्वक सुलझाते हुए आपने इसके निर्माण में सर्वाधिक समय दान किया है। बीकानेर के विभिन्न जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार में आपका सक्रिय सहयोग रहा है।

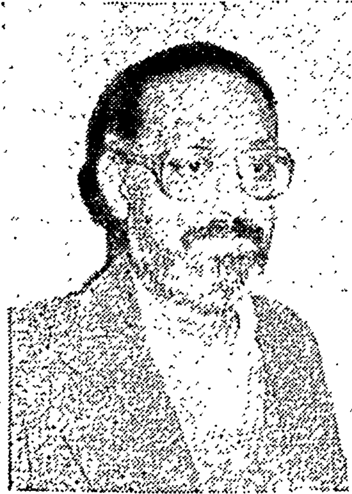
व्यावसायिक रूप से आप सर्राफे का कार्य करते है। बीकानेर जिला जनता पार्टी के भी आप पूर्व में कोषाध्यक्ष रहे है।

श्री धनपत सिंह जी खजांची
(जन्म ईस्वी 19 अप्रेल 1947)

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी श्री धनपत सिंह जी खजांची को सामाजिक कार्यों के प्रति लगन अपने पितामह श्री प्रेमचन्द जी खजांची एवं पिता श्री माणक चन्द जी खजांची से विरासत में मिली है। आपकी मातु श्री अंतर देवी

एक धर्म निष्ठ महिला हैं एवं बीकानेर खरतरगच्छ संघ की एक प्रमुख श्राविका हैं। आप पद प्रतिष्ठा की आकांक्षा से दूर रहकर निःस्वार्थ भाव से सेवा करने में विश्वास रखते हैं। इस चातुर्मास में हुए विभिन्न आयोजनों एवं कार्यक्रमों में आपने तन मन धन से पूरा सहयोग दिया है। अभी बीकानेर में चल रहे उपधान तप में भी आप अपने व्यावसायिक कार्यों को ताक पर रख कर दिन रात जुटे हुए हैं। उपधान तप की श्रेष्ठ भोजन व्यवस्था आपकी सूझ एवं मार्गदर्शन का परिणाम है।

व्यावसायिक रूप से आप विद्युत उपकरणों का व्यवसाय करते हैं एवं विद्युत व्यवसायी संघ के आप अध्यक्ष हैं।



इसके अलावा आपने बीकानेर जैन समाज के युवकों को संगठित करने की दिशा में काफी प्रयास किया है एवं वर्तमान में जैन युवक मंडल के आप संरक्षक हैं। सार्दुल क्लब बीकानेर की कार्य-कारिणी के आप सदस्य हैं।

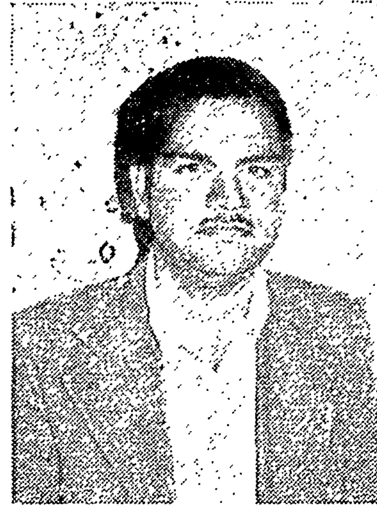
श्री धनपतसिंह जी खजांची

सरल स्वभाव के स्पष्ट वक्ता श्री खजांची जी मिलनसार एवं सहयोगी प्रकृति के हैं।

श्री सूरजमल जी पुगलिया

(जन्म ईस्वी 9 मई 1949)

आप चालीस वर्ष के तेज तर्रार युवक हैं किन्तु विभिन्न विषयों में एक प्रौढ़ का सा अनुभव रखते हैं। पिता श्री जीवणमल जी एवं माता श्रीमती नाथी देवी से श्रम, सेवा एवं धार्मिक भावना विरासत में मिली है। अपने विद्यार्थी जीवन में एक मेधावी छात्र रहे हैं व महाविद्यालय के एक वर्ष के लिए सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी घोषित किये गए। व्यावसायिक दृष्टि से वर्तमान में यूको बैंक में सहायक



श्री सूरजमलजी पुगलिया

प्रबन्धक के पद पर नियुक्त हैं। बचपन से ही इनकी सामाजिक कार्यों में रुचि रही है। प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. चातुर्मास आयोजन समिति के सह मंत्री के रूप में आपने इस चातुर्मास में हुए विभिन्न आयोजनों एवं कार्यक्रमों में तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग दिया है। वर्तमान में आप श्री चिन्तामणि जैन मन्दिर प्रन्यास व श्री खरतरगच्छ जैन समिति के कोषाध्यक्ष, श्री जैन पाठशाला सभा बीकानेर के सह मंत्री, श्रीमती छोटा देवी नाहटा परमार्थ ट्रस्ट के मंत्री व श्री जैन भवन पालीताणा के प्रन्यासी हैं। रोटेरी क्लब बीकानेर के भी आप सदस्य हैं। श्री महावीर जैन भवन के निर्माण में एवं बीकानेर नगर तथा आसपास के गांवों में स्थित प्राचीन जिन मंदिरों के जीर्णोद्धार में आपने सक्रिय सहयोग दिया है।

वर्तमान में चल रहे उपधान तप की विभिन्न गति-विधियों में आप सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं व खजांची उपधान तप समिति के सदस्य हैं। इस प्रकार विभिन्न संस्थाओं से जुड़े श्री पुगलिया जी योग्यता श्रम सेवा एवं उत्साह के पुंज हैं। विभिन्न उलझन भरे कार्यों को एक साथ सुलझाने व निपटान करने की आपमें विशेष योग्यता है। इस वर्ष दिल्ली में श्री श्रमण साहित्य संस्थान द्वारा भारतवर्ष के विशिष्ट जैन सामाजिक कार्यकर्ताओं के सम्मानार्थ किए गए आयोजन में आपको केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी द्वारा सम्मानित किया गया।

—धनराज नाहटा

उपधानवाही – पुरुष वर्ग

क्र.सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्र	पिता का नाम	स्थान	उपधान
1.	श्री नरेश कुमार गोलछा	पुत्र	श्री चंदराज जी गोलछा	बीकानेर	प्रथम
2.	श्री पानमल जी नाहटा	पुत्र	श्री चंपालाल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
3.	श्री छगनमल जी मरोठी	पुत्र	श्री भीखम चन्द जी मरोठी	बीकानेर	प्रथम
4.	श्री सुशील कुमार नाहटा	पुत्र	श्री गोरूलाल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
5.	श्री पवन कुमार जी पारख	पुत्र	श्री जेठमल जी पारख	बीकानेर	प्रथम
6.	श्री झंवर लाल जी सीपाणी	पुत्र	श्री देवचन्द जी सीपाणी	बीकानेर	प्रथम
7.	श्री पदम चन्द जी खजांची	पुत्र	श्री झंवरी चन्द जी खजांची	नागौर	प्रथम
8.	श्री मूल चन्द जी खजांची	पुत्र	श्री उगम चन्द जी खजांची	नागौर	प्रथम
9.	श्री भंवरलाल जी डागा	पुत्र	श्री विजैमल जी डागा	नागौर	प्रथम
10.	श्री अनोप चन्द जी कोटड़िया	पुत्र	श्री भभूतमल जी कोटड़िया	राजनंद गांव	प्रथम
11.	श्री महावीर संचेती	पुत्र	श्री लालचन्द जी संचेती	फलौदी	प्रथम
12.	श्री पन्नालाल जी चोपड़ा	पुत्र	श्री केशरी चन्द जी चोपड़ा	ब्यावर	प्रथम
13.	श्री मदन लाल जी कोठारी	पुत्र	श्री घासीलाल जी कोठारी	ब्यावर	प्रथम
14.	श्री चतुरभुज जी बोथरा	पुत्र	श्री खुशाल चन्द जी बोथरा	धूलिया	प्रथम
15.	श्री भंवर लाल जी लोढ़ा	पुत्र	श्री मुन्नीलाल जी लोढ़ा	पाली	प्रथम
16.	श्री आणंद राज जी भंसाली	पुत्र	श्री हणवंत राज जी भंसाली	जोधपुर	प्रथम
17.	श्री प्रेम कुमार जी राखेचा	पुत्र	श्री सादुल मल जी राखेचा	गंगाशहर	प्रथम
18.	श्री झंवर लाल जी सेठिया	पुत्र	श्री नेमचन्द जी सेठिया	गंगाशहर	द्वितीय
19.	श्री जतनमल जी नाहटा	पुत्र	श्री मेघराज जी नाहटा	बीकानेर	द्वितीय
20.	श्री छोटूलाल जी बैद	पुत्र	श्री उदयचन्द जी बैद	बीकानेर	द्वितीय
21.	श्री भंवर लाल जी सुराणा	पुत्र	श्री बागमल जी सुराणा	बीकानेर	द्वितीय
22.	श्री मोहन लाल जी पारख	पुत्र	श्री इन्द्रचन्द जी पारख	नारायणपुरा	द्वितीय
23.	श्री बसंती लाल जी लूंकड़	पुत्र	श्री भंवर लाल जी लूंकड़	उदयपुर	तृतीय
24.	श्री मोतीलाल जी मुसरफ	पुत्र	श्री चंपालाल जी मुसरफ	बीकानेर	तृतीय

महिला वर्ग–प्रथम उपधान

क्र.सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/धर्मपत्नी	नाम पिता/पति	स्थान	उपधान
1.	श्रीमती कंचन देवी खजांची	धर्मपत्नी	श्री पन्नालाल जी खजांची	बीकानेर	प्रथम
2.	श्रीमती अंतर देवी खजांची	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी खजांची	बीकानेर	प्रथम
3.	कु. कुसुम खजांची	पुत्री	श्री चान्द मल जी खजांची	बीकानेर	प्रथम
4.	कु. बस्कर खजांची	पुत्री	श्री मेहर चन्द जी खजांची	बीकानेर	प्रथम
5.	श्रीमती पुष्पा गोलछा	धर्मपत्नी	श्री कमल चन्द जी गोलछा	बीकानेर	प्रथम
6.	कु. सुषमा गुलगुलिया	पुत्री	श्री सोहन लाल जी गुलगुलिया	बीकानेर	प्रथम
7.	श्रीमती जवर देवी गुलगुलिया	धर्मपत्नी	श्री सोहन लाल जी गुलगुलिया	बीकानेर	प्रथम
8.	श्रीमती ममोल बाई गुलगुलिया	धर्मपत्नी	श्री तिलोक चन्द जी गुलगुलिया	बीकानेर	प्रथम
9.	श्रीमती भीखी बाई गुलगुलिया	पुत्री	श्री वृद्धि चन्द जी गुलगुलिया	बीकानेर	प्रथम
10.	श्रीमती आशा बाई गुलगुलिया	धर्मपत्नी	श्री वंशीलाल जी गुलगुलिया	बीकानेर	प्रथम
11.	श्रीमती जया गोलछा	धर्मपत्नी	श्री मानमल जी गोलछा	बीकानेर	प्रथम
12.	कु. ममता सीपाणी	पुत्री	श्री जयचन्द लाल जी सीपाणी	बीकानेर	प्रथम
13.	कु. उर्मिला चोरडिया	पुत्री	श्री मूलचन्द जी चोरडिया	बीकानेर	प्रथम
14.	श्रीमती गवरा देवी नाहटा	धर्मपत्नी	श्री उत्तम चन्द जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
15.	श्रीमती जय सुन्दरी बाई नाहाटा	धर्मपत्नी	श्री सज्जन लाल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
16.	श्रीमती मूली बाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री रावतमल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
17.	कु. प्रमिला नाहटा	पुत्री	श्री जिनेन्द्र कुमार जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
18.	श्रीमती अमराव बाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री शिखर चन्द जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
19.	श्रीमती गुलाब बाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री प्रतापमल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
20.	कु. मंजू नाहटा	पुत्री	श्री पानमल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
21.	श्रीमती तारा बाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री पानमल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
22.	श्रीमती विमला बाई मरोठी	धर्मपत्नी	श्री छगनमल जी मरोठी	बीकानेर	प्रथम
23.	श्रीमती मंजूदेवी नाहटा	धर्मपत्नी	श्री सुशील कुमार नाहटा	बीकानेर	प्रथम
24.	श्रीमती चैन बाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री कन्हैयालाल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
25.	श्रीमती मनोरी बाई भुगड़ी	धर्मपत्नी	श्री आसकरण जी भुगड़ी	बीकानेर	प्रथम
26.	श्रीमती सुन्दर बाई भुगड़ी	धर्मपत्नी	श्री मंगल चन्द जी भुगड़ी	बीकानेर	प्रथम
27.	कु. मंजू भुगड़ी	पुत्री	श्री ज्ञान चन्द जी भुगड़ी	बीकानेर	प्रथम
28.	श्रीमती स्वरूप देवी माल्लू	धर्मपत्नी	श्री नथमल जी माल्लू	बीकानेर	प्रथम
29.	श्रीमती कमला बाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री केशरीचन्द जी कोठारी	बीकानेर	प्रथम
30.	कु. धनेश कोठारी	पुत्री	श्री प्रसन्नचन्द जी कोठारी	बीकानेर	प्रथम
31.	श्रीमती कमला बाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री प्रसन्नचन्द जी कोठारी	बीकानेर	प्रथम

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
32.	श्रीमती गीता बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री ज्ञानमल जी बोथरा	बीकानेर	प्रथम
33.	श्रीमती जेठी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री बंशीलाल जी बोथरा	बीकानेर	प्रथम
34.	कु. प्रभा बोथरा	पुत्री	श्री भंवर लाल जी बोथरा	बीकानेर	प्रथम
35.	श्रीमती सुन्दर बाई पुगलिया	धर्मपत्नी	श्री तिलोकचन्द जी पुगलिया	बीकानेर	प्रथम
36.	श्रीमती कंचन बाई पुगलिया	धर्मपत्नी	श्री जयचन्द लाल जी पुगलिया	बीकानेर	प्रथम
37.	श्रीमती कमला देवी दूगड़	धर्मपत्नी	श्री भंवरलाल जी दूगड़	बीकानेर	प्रथम
38.	श्रीमती सरला देवी पुगलिया	धर्मपत्नी	श्री सूरजमल जी पुगलिया	बीकानेर	प्रथम
39.	श्रीमती सम्पत बाई बडेर	धर्मपत्नी	श्री हालचन्द जी बडेर	बीकानेर	प्रथम
40.	श्रीमती रतन बाई पारख	धर्मपत्नी	श्री संपतलाल जी पारख	बीकानेर	प्रथम
41.	श्रीमती मगन बाई डागा	धर्मपत्नी	श्री प्रतापमल जी डागा	बीकानेर	प्रथम
42.	श्रीमती बाधू बाई सेठिया	धर्मपत्नी	श्री आसकरण जी सेठिया	बीकानेर	प्रथम
43.	श्रीमती सिरिया बाई पारख	धर्मपत्नी	श्री जेठमल जी पारख	बीकानेर	प्रथम
44.	श्रीमती सुशीला देवी सेठिया	धर्मपत्नी	श्री मेघराज जी सेठिया	बीकानेर	प्रथम
45.	श्रीमती रतन देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री कान्तिचन्द जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
46.	श्रीमती कमला देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री गुलाबचन्द जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
47.	श्रीमती भंवर देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री मोहनलाल जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
48.	श्रीमती चंचल देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री ज्ञानचन्द जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
49.	श्रीमती संतोष देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री मानमल जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
50.	श्रीमती किरण देवी पारख	धर्मपत्नी	श्री पवनकुमार जी पारख	बीकानेर	प्रथम
51.	श्रीमती भंवरी बाई लूणिया	धर्मपत्नी	श्री मेघराज जी लूणिया	बीकानेर	प्रथम
52.	श्रीमती सरोज देवी मुसरफ	धर्मपत्नी	श्री संतोकचन्द जी मुसरफ	बीकानेर	प्रथम
53.	श्रीमती सिरे कंवर मुसरफ	धर्मपत्नी	श्री बाबूलाल जी मुसरफ	बीकानेर	प्रथम
54.	श्रीमती कमला बाई बेगाणी	धर्मपत्नी	श्री कल्याणमल जी बेगाणी	बीकानेर	प्रथम
55.	श्रीमती उमराव देवी कोठारी	धर्मपत्नी	श्री राजमल जी कोठारी	बीकानेर	प्रथम
56.	श्रीमती अमराव देवी ढढ्ढा	धर्मपत्नी	श्री बुलाकी चन्द जी ढढ्ढा	बीकानेर	प्रथम
57.	श्रीमती कमला देवी बोथरा	धर्मपत्नी	श्री कुन्दन मल जी बोथरा	बीकानेर	प्रथम
58.	श्रीमती पुष्पा देवी सीपाणी	धर्मपत्नी	श्री कैलाश चन्द जी सीपाणी	बीकानेर	प्रथम
59.	कु. सुमन गोलछा	पुत्री	श्री हीरालाल जी गोलछा	बीकानेर	प्रथम
60.	श्रीमती सुगन बाई	धर्मपत्नी	श्री तोलाराम जी	बीकानेर	प्रथम
61.	कु. प्रमिला डागा	पुत्री	श्री शान्तिलाल जी डागा	बीकानेर	प्रथम
62.	श्रीमती बरजी बाई लूणिया	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी लूणिया	बीकानेर	प्रथम
63.	कु. बसंता छल्लाणी	पुत्री	श्री तिलोक चन्द जी छल्लाणी	गंगाशहर	प्रथम
64.	श्रीमती पोपा देवी वैद	धर्मपत्नी	श्री मगनमल जी वैद	बीकानेर	प्रथम

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/धर्मपत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
65.	श्रीमती फूल बाई बांठिया	धर्मपत्नी	श्री रामकरण जी बांठिया	भीनासर	प्रथम
66.	श्रीमती ज्ञान देवी खजांची	धर्मपत्नी	श्री पदम चन्द जी खजांची	नागौर	प्रथम
67.	श्रीमती सरला देवी जैन	धर्मपत्नी	श्री महेन्द्र जी जैन	नागौर	प्रथम
68.	श्रीमती कमला देवी डागा	धर्मपत्नी	श्री गौतम चन्द जी डागा	नागौर	प्रथम
69.	श्रीमती चंचल देवी डागा	धर्मपत्नी	श्री भंवर लाल जी डागा	नागौर	प्रथम
70.	श्रीमती पारस बाई डागा	धर्मपत्नी	श्री विजैमल जी डागा	नागौर	प्रथम
71.	कु. सुनीता डागा	पुत्री	श्री सरदार मल जी डागा	नागौर	प्रथम
72.	कु. कमला डागा	पुत्री	श्री प्रसन्न चन्द जी डागा	नागौर	प्रथम
73.	श्रीमती किरण बाई डागा	धर्मपत्नी	श्री सुखमल जी डागा	नागौर	प्रथम
74.	श्रीमती कंचनदेवी कोठारी	धर्मपत्नी	श्री मांगीलाल जी कोठारी	नागौर	प्रथम
75.	श्रीमती माडी देवी बोथरा	धर्मपत्नी	श्री चांदमल जी बोथरा	नागौर	प्रथम
76.	श्रीमती अकल कंवर मेहता	धर्मपत्नी	श्री जवाहर मल जी मेहता	जोधपुर	प्रथम
77.	श्रीमती शान्ता देवी भंसाली	धर्मपत्नी	श्री आनन्द राज सा भंसाली	जोधपुर	प्रथम
78.	श्रीमती प्रसन्न कंवर सिंघवी	धर्मपत्नी	श्री रमेश सिंह जी सिंघवी	जोधपुर	प्रथम
79.	श्रीमती विदाम कंवर सर्राफ	धर्मपत्नी	श्री पूनमचन्द जी सर्राफ	जोधपुर	प्रथम
80.	श्रीमती तारा बाई भंडारी	धर्मपत्नी	श्री संपत राज जी भंडारी	जोधपुर	प्रथम
81.	श्रीमती विमला बाई झाड़झूड़	धर्मपत्नी	श्री रतन चन्द जी झाड़झूड़	जयपुर	प्रथम
82.	श्रीमती प्रभा बाई पारख	धर्मपत्नी	श्री हीरालाल जी पारख	जयपुर	प्रथम
83.	श्रीमती विमला बाई मेहम्मवाल	धर्मपत्नी	श्री चंपालाल जी मेहम्मवाल	जयपुर	प्रथम
84.	श्रीमती चमेली बाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री भंवर लाल जी कोठारी	जयपुर	प्रथम
85.	श्रीमती कंचन बाई बरडिया	धर्मपत्नी	श्री पन्नालाल जी बरडिया	कलकत्ता	प्रथम
86.	श्रीमती धापी बाई पारख	धर्मपत्नी	श्री रामकुमार सिंह जी पारख	कलकत्ता	प्रथम
87.	श्रीमती सायर बाई बुरड	धर्मपत्नी	श्री मूलचन्द जी बुरड	इन्दौर	प्रथम
88.	श्रीमती कमला बाई बाफना	धर्मपत्नी	श्री हस्तीमल जी बाफना	उज्जैन	प्रथम
89.	श्रीमती कनक बाई रंगावत	धर्मपत्नी	श्री प्रकाश चन्द जी रंगावत	कोटा	प्रथम
90.	श्रीमती शान्ति बाई दुवेड़िया	धर्मपत्नी	श्री दीपचन्द जी दुवेड़िया	चिदम्बरम्	प्रथम
91.	श्रीमती अन्नू बाई गोलछा	धर्मपत्नी	श्री गुलाब चन्द जी गोलछा	फलौदी	प्रथम
92.	श्रीमती जेठी बाई गोलछा	धर्मपत्नी	श्री मिलाप चन्द जी गोलछा	फलौदी	प्रथम
93.	श्रीमती विमला बाई गोलछा	धर्मपत्नी	श्री हस्तीमल जी गोलछा	फलौदी	प्रथम
94.	श्रीमती सुन्दर बाई चोपड़ा	धर्मपत्नी	श्री पन्नालाल जी चोपड़ा	ब्यावर	प्रथम
95.	श्रीमती कंचन देवी कोठारी	धर्मपत्नी	श्री दीपचन्द जी कोठारी	ब्यावर	प्रथम
96.	श्रीमती शान्ति देवी बोथरा	धर्मपत्नी	श्री मांगीलाल जी बोथरा	बाड़मेर	प्रथम
97.	श्रीमती ढ़ेली बाई भंसाली	धर्मपत्नी	श्री केशरीमल जी भंसाली	बाड़मेर	प्रथम

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/धर्मपत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
98.	श्रीमती सुकी बाई संकलेचा	धर्मपत्नी	श्री दौलतराम जी संकलेचा	बाड़मेर	प्रथम
99.	श्रीमती कमला बाई कोटड़िया	धर्मपत्नी	श्री अनोप चन्द जी कोटड़िया	राजनंद गांव	प्रथम
100.	श्रीमती किरण कुमारी लूणावत	धर्मपत्नी	श्री पी. सी. लूणावत	वाराणसी	प्रथम

महिला वर्ग–द्वितीय उपधान

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
1.	श्रीमती विमला देवी दूगड़	धर्मपत्नी	श्री पुखराज जी दूगड़	बीकानेर	द्वितीय
2.	कु. संजू नाहटा	पुत्री	श्री चन्द्रप्रकाश जी नाहटा	बीकानेर	द्वितीय
3.	कु. कुसुम गोलछा	पुत्री	श्री चंपालाल जी गोलछा	बीकानेर	द्वितीय
4.	श्रीमती जेठी देवी भंसाली	धर्मपत्नी	श्री रावतमल जी भंसाली	बीकानेर	द्वितीय
5.	श्रीमती जतन बाई सेठिया	धर्मपत्नी	श्री सरदारमल जी सेठिया	बीकानेर	द्वितीय
6.	श्रीमती भंवरी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री मोहन लाल जी बोथरा	बीकानेर	द्वितीय
7.	श्रीमती माणक बाई सेठिया	धर्मपत्नी	श्री शान्ति लाल जी सेठिया	बीकानेर	द्वितीय
8.	श्रीमती धन्नी बाई सिरोहिया	धर्मपत्नी	श्री झंवर लाल जी सिरोहिया	बीकानेर	द्वितीय
9.	श्रीमती शीला देवी सिरोहिया	धर्मपत्नी	श्री विजय सिंह जी सिरोहिया	बीकानेर	द्वितीय
10.	श्रीमती बूड़ी बाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री अबीर चन्द जी कोचर	बीकानेर	द्वितीय
11.	श्रीमती छोटा देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री गुलाब चन्द जी कोचर	बीकानेर	द्वितीय
12.	श्रीमती मैना देवी पारख	धर्मपत्नी	श्री जुगराज जी पारख	बीकानेर	द्वितीय
13.	कु. रीटा मुसरफ	पुत्री	श्री मोतीलाल जी मुसरफ	बीकानेर	द्वितीय
14.	कु. मंजू गोलछा	पुत्री	श्री आसकरण जी गोलछा	बीकानेर	द्वितीय
15.	श्रीमती इन्दर बाई सावणसुखा	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी सावणसुखा	बीकानेर	द्वितीय
16.	श्रीमती राजा देवी बैद	धर्मपत्नी	श्री आसकरण जी बैद	बीकानेर	द्वितीय
17.	कु. सुमन सावणसुखा	पुत्री	श्री भंवर लाल जी सावणसुखा	बीकानेर	द्वितीय
18.	श्रीमती भंवरी बाई बैद	धर्मपत्नी	श्री मोहन लाल जी बैद	बीकानेर	द्वितीय
19.	श्रीमती शान्ति देवी बैद	धर्मपत्नी	श्री मूलचन्द जी बैद	बीकानेर	द्वितीय
20.	श्रीमती मूली बाई बांठिया	धर्मपत्नी	श्री भैरूदान जी बांठिया	बीकानेर	द्वितीय
21.	श्रीमती झंवरी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री बंशीलाल जी बोथरा	बीकानेर	द्वितीय
22.	श्रीमती चौथा देवी गोलछा	धर्मपत्नी	श्री केशरीचन्द जी गोलछा	बीकानेर	द्वितीय
23.	श्रीमती कमला देवी बक्सी	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी बक्सी	बीकानेर	द्वितीय
24.	श्रीमती चान्द कंवर खजाची	धर्मपत्नी	श्री मूलचन्द जी खजांची	नागौर	द्वितीय
25.	श्रीमती उमराव कंवर ललवाणी	धर्मपत्नी	श्री घासीराम जी ललवाणी	नागौर	द्वितीय
26.	श्रीमती माणक बाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री इन्द्रचन्द जी नाहटा	मद्रास	द्वितीय

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
27.	श्रीमती शान्ति देवी पारख	धर्मपत्नी	श्री जसवन्त राज जी पारख	जोधपुर	द्वितीय
28.	श्रीमती पुष्प कंवर भंसाली	धर्मपत्नी	श्री बलवंत राज जी भंसाली	जोधपुर	द्वितीय
29.	श्रीमती उम्मेद कंवर डोसी	धर्मपत्नी	श्री लालचन्द जी डोसी	जोधपुर	द्वितीय
30.	श्रीमती पूनम कंवर पारख	धर्मपत्नी	श्री सोमचन्द जी पारख	जोधपुर	द्वितीय
31.	श्रीमती अमृत कंवर भंसाली	धर्मपत्नी	श्री कल्याणचन्द जी भंसाली	जोधपुर	द्वितीय
32.	श्रीमती भंवर बाई गोलच्छा	धर्मपत्नी	श्री माणकचन्द जी गोलच्छा	जयपुर	द्वितीय
33.	श्रीमती लक्ष्मी देवी पारख	धर्मपत्नी	श्री शिवलाल जी पारख	जयपुर	द्वितीय
34.	श्रीमती रतनी देवी सेठिया	धर्मपत्नी	श्री केशरीचन्द जी सेठिया	गंगाशहर (बीकानेर)	द्वितीय
35.	श्रीमती कस्तूरी बाई सेठिया	धर्मपत्नी	श्री झंवरलाल जी सेठिया	बीकानेर	द्वितीय
36	श्रीमती अणंदी बाई बच्छावत	धर्मपत्नी	श्री गुलाबचन्द जी बच्छावत	फलौदी	द्वितीय
37.	श्रीमती सोहन देवी खटोल	धर्मपत्नी	श्री मिश्रीलाल जी खटोल	ब्यावर	द्वितीय
38.	श्रीमती धर्मी देवी मालू	धर्मपत्नी	श्री माणकमल सा मालू	बाड़मेर	द्वितीय
39.	श्रीमती ढ़ेली बाई मालू	धर्मपत्नी	श्री कन्हैयालाल जी मालू	बाड़मेर	द्वितीय
40.	श्रीमती अनोपी बाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री राणूलाल जी कोचर	अकल कूंआ	द्वितीय
41.	श्रीमती हीरा देवी गोलछा	धर्मपत्नी	श्री जतनमल जी गोलछा	कलकत्ता	द्वितीय
42.	श्रीमती पारस देवी कास्टिया	धर्मपत्नी	श्री फूलचन्द जी कास्टिया	कलकत्ता	द्वितीय
43.	कु. खुशबू मालू	पुत्री	श्री इन्दरचन्द जी मालू	श्रीडूंगरगढ़	द्वितीय

महिला वर्ग–तृतीय उपधान

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
1.	कु. कुसम लता गोलछा	पुत्री	श्री मूलचन्द जी गोलछा	बीकानेर	तृतीय
2.	श्रीमती आशादेवी सावणसुखा	धर्मपत्नी	श्री मानमल जी सावणसुखा	बीकानेर	तृतीय
3.	श्रीमती लक्ष्मी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री चान्दमल जी बोथरा	बीकानेर	तृतीय
4.	श्रीमती संपत बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री संपतलाल जी बोथरा	बीकानेर	तृतीय
5.	श्रीमती भंवरी बाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी कोचर	बीकानेर	तृतीय
6.	श्रीमती सूरज बाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री रोशनलाल जी कोचर	बीकानेर	तृतीय
7.	श्रीमती ममोल बाई पारख	धर्मपत्नी	श्री बंशीलाल जी पारख	बीकानेर	तृतीय
8.	श्रीमती मोहनी बाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री राजमल जी कोठारी	बीकानेर	तृतीय
9.	श्रीमती पानबाई लूणिया	धर्मपत्नी	श्री लच्छीराम जी लूणिया	बीकानेर	तृतीय
10.	कु. सुनीता ढढ़ा	पुत्री	श्री कपूर चन्द जी ढढ़ा	बीकानेर	तृतीय
11.	श्रीमती सूरज कंवर बोथरा	धर्मपत्नी	श्री टोडरमल जी बोथरा	नागौर	तृतीय

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
12.	श्रीमती धापी बाई सुराणा	धर्मपत्नी	श्री धीसूमल जी सुराणा	नागौर	तृतीय
13.	श्रीमती रतनी बाई खजांची	धर्मपत्नी	श्री कल्याणमल जी खजांची	नागौर	तृतीय
14.	श्रीमती भंवरी बाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री मांगीलाल जी कोठरी	नागौर	तृतीय
15.	श्रीमती गज्जी देवी मालू	धर्मपत्नी	श्री सतावनदास जी मालू	बाड़मेर	तृतीय
16.	श्रीमती गौरी देवी सेठिया	धर्मपत्नी	श्री रावतमल जी सेठिया	बाड़मेर	तृतीय
17.	श्रीमती पन्नी देवी छाजेड़	धर्मपत्नी	श्री टीकाजी छाजेड़	बाड़मेर	तृतीय
18.	श्रीमती गज्जीदेवी छाजेड़	धर्मपत्नी	श्री चिमनी राम जी छाजेड़	बाड़मेर	तृतीय
19.	श्रीमती मथरी देवी पडइया	धर्मपत्नी	श्री माणकमल जी पटइया	बाड़मेर	तृतीय
20.	श्रीमती धर्मी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री मेवाराम जी बोथरा	बाड़मेर	तृतीय
21.	श्रीमती एजीदेवी सुकलेचा	धर्मपत्नी	श्री राणामल जी सुकलेचा	बाड़मेर	तृतीय
22.	श्रीमती मथरा बाई गोलछा	धर्मपत्नी	श्री असराज जी गोलछा	फलौदी	तृतीय
23.	श्रीमती जाडाबाई बच्छावत	धर्मपत्नी	श्री मांगीलाल जी बच्छावत	फलौदी	तृतीय
24.	श्रीमती टीपू बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री शंकरलाल जी बोथरा	पाली	तृतीय
25.	श्रीमती जवर कंवर भंसाली	धर्मपत्नी	श्री सुमेरराज जी भंसाली	जोधपुर	तृतीय
26.	श्रीमती सोहन कंवर भंसाली	धर्मपत्नी	श्री अचलराज जी भंसाली	जोधपुर	तृतीय
27.	श्रीमती सोहन कंवर मेहता	धर्मपत्नी	श्री निहाल चन्द जी मेहता	जोधपुर	तृतीय
28.	श्रीमती प्रेमी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री सुगनमल जी बोथरा	जोधपुर	तृतीय
29.	श्रीमती राजकुमारी भंसाली	धर्मपत्नी	श्री सोहनराज जी भंसाली	जोधपुर	तृतीय
30.	श्रीमती अकल कंवर पटवा	धर्मपत्नी	श्री सायरमल जी पटवा	जोधपुर	तृतीय
31.	श्रीमती तेजकंवर ललवाणी	धर्मपत्नी	श्री घेवर चन्द जी ललवाणी	जोधपुर	तृतीय
32.	श्रीमती सज्जन बाई खजांची	धर्मपत्नी	श्री भीमराज जी खजांची	जयपुर	तृतीय
33.	श्रीमती भीमाबाई बांठिया	धर्मपत्नी	श्री मोहनलाल जी बांठिया	जयपुर	तृतीय
34.	श्रीमती इचरज बाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री रतन चन्द जी कोचर	जयपुर	तृतीय
35.	श्रीमती इन्दर बाई मेहता	धर्मपत्नी	श्री उमरावसिंह जी मेहता	कोटा	तृतीय
36.	श्रीमती कमला बाई गग	धर्मपत्नी	श्री लूणकरण जी गंग	बीकानेर	तृतीय
37.	कु. सरिता सेठिया	पुत्री	श्री भंवरलाल जी सेठिया	गंगाशहर	तृतीय



प्रातः स्मरणीय गणनायक श्री क्षमाकल्याणजी म.



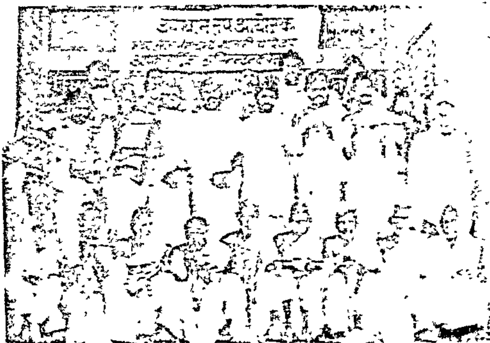
पूज्य गणिवर्य श्री क्रिया विधि करवाते हुए



पूज्य आचार्य श्री मणिप्रभसागर जी म. एवं मुनि मंडल



प्रवचन फरमा रही पू. विदुषी आर्या रत्न श्री हेमप्रभा श्री जी म



उपधान वाही पुरुष वर्ग



साध्वी मंडल



पूज्य गणिवर्य श्री प्रवचन फरमाते एक विशिष्ट मुद्रा में जिसमें वे ओघा दिखाकर संयम का उपदेश दे रहे हैं।



पूज्य गणिवर्य श्री साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी से गंभीर वि करते हुए.



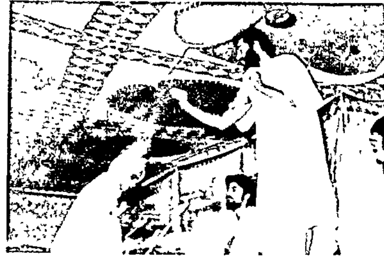
पूज्य गणिवर्य श्री से सलाह मशविरा करते हुए उपधानपति श्री नेमचंदजी खजांची.



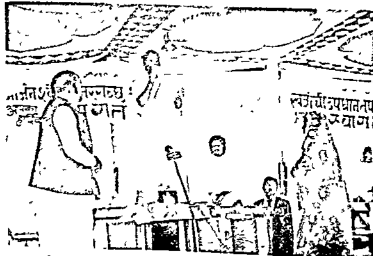
पूज्य गणिवर्य श्री से प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री पन्नालाल जी मार्गदर्शन प्राप्त करते ।



वैरागन शोभा को ओघा प्रदान करते हुए गणिवर्य श्री



कु. शोभा को दीक्षा मंत्र प्रदान कर नामकरण करते हुए गणिवर्य श्री



पूज्य गणिवर्य श्री श्री नेमचंद जी खजांची को "उपधानपति" पद प्रदान करते हुए।



मोक्ष माला परिधान करने के बाद उपदेश श्रवण कर रहा पुरूषवर्ग

उपधानवाही महिलाओं के सामूहिक चित्र







उपधानवाही महिलाओं के सामूहिक चित्र







विशिष्ट उपधानवाही



श्री छगनलाल मारोठी S/O श्री विक्रमचंद जी, बीकानेर
श्रीमती विमलादेवी मारोठी W/O श्री छगनलाल जी



श्री मूलचंद खजांची S/O श्री उगमचंद जी, नागौर
श्रीमती चांददेवी खजांची W/O श्री मूलचंद जी

विशिष्ट उपधानवाही



नरेश गोलछा
s/o श्रीचन्दराज जी



जयादेवी गोलछा, बीकानेर
w/o मानमल जी



श्रीमदनलाल कोठारी
S/o श्री घासीलाल कोठारी, ब्यावर



सुषमा
D/o सोहनलाल गुलगुलियां



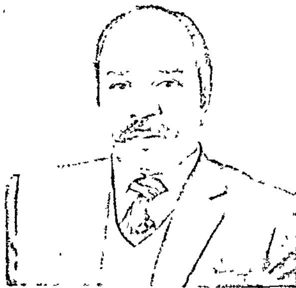
कु सुनिता ढ़ढ़ा
D/o श्री कपूर चंद जी ढ़ढ़ा

पूज्यनीया साध्वी श्री रतनमालाश्री जी म०
(पूज्यनीय गणिवर्य श्री के माता जी म०)



पू० विदुषी आर्या श्री विद्युत्प्रभा श्री जी म०
(पू० गणिवर्य श्री की बहन म०)

जिनेश्वर ... महावीर प्रभु के सिद्धान्तों के
उपधान तप का आयोजन करने के उपलक्ष
... श्री नेमचंदजी ...
... घोषणा करता हूँ।
बीकानेर मालारोपण दिवस
ता. २१ .१.९१ रविवार
गणि ...

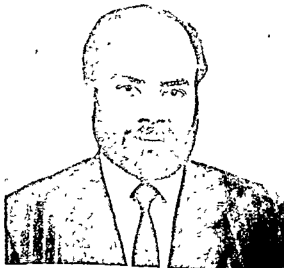


श्री नेमचंद जी खजांची



सौ. आशा देवी खजांची

उपधानपति परिवार



श्री सुरेन्द्र कुमार खजांची (पुत्र)



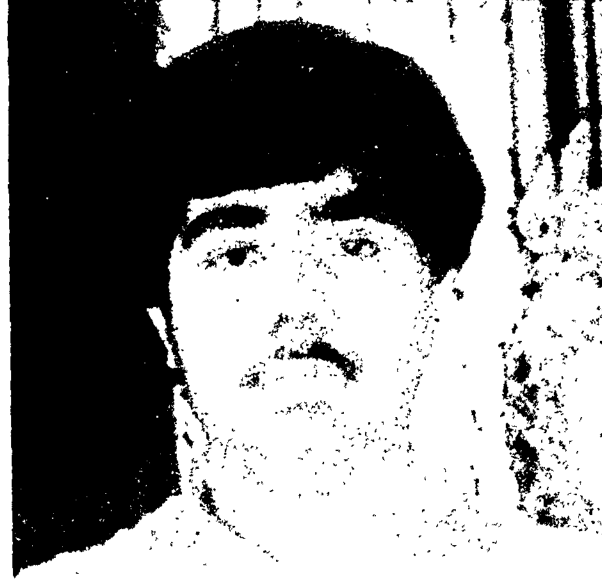
सौ. शशीकला खजांची (पुत्रवधू)



श्री राजेन्द्र कुमार जी बोथरा (दामाद)



सौ. तारादेवी बोथरा (पुत्री)



श्री अमित कुमार खजांची (पुत्र)





तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द

मणि गुरुवर तुम हो आला।
वाणी अमृत का प्याला।
जिन शासन का रखवाला।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द।
जन जन के हो आनन्द कन्द॥

तेजोमय दीप्ति पूर्ण भाला।
सम्मोहक प्रेरक चुस्त चाल।
काले घुँघराले घने बाल।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द।
जन जन के हो आनन्द कन्द॥

प्रवचन मानो रसपूर्ण थाल।
कईयों का जीवन दिया ढाल।
मिट गया सभी का दुख जाल।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द।
जन जन के हो आनन्द कन्द॥

सादा जीवन है बेमिशाल।
तुम महाप्रज्ञ ज्योतिर्विशाल।
दर्शन पाकर होते निहाल।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द॥
जन जन के हो आनन्द कन्द

कान्ति गुरुवर के दिव्य प्राण।
रखना शासन की आन बान।
करते निशदिन तव कीर्तिगान।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द॥
जन जन के हो आनन्द कन्द॥

विशिष्ट उपधानवाही



सुश्री बसकर खजांची
सुपुत्री श्री मेहरचन्द जी खजांची



कंचन देवी खजांची
w/o पन्नालाल जी



श्रीमती अन्तर देवी खजांची
w/o माणक चंद जी



श्रीमती इन्द्रबाई सावणसुखा
w/o माणकचंद जी सावणसुखा



श्रीमती सरला देवी पूगलिया
w/o सूरजमल जी, बीकानेर

विशिष्ट उपधानवाही



श्रीमती कमला बाई बाफना
W/O श्री हस्तीमल, उज्जैन



श्रीमती मैना देवी पारख
W/o श्री जुगराज जी पारख



श्रीमती कंचनदेवी बरडिया
W/o श्री पन्नालाल जी, कलकत्ता



श्रीमती धापीदेवी पारख
W/O रामकुमार सिंह जी, कलकत्ता



श्रीमती किरण कुमारी लुणावत
W/O पी.सी. लुणावत, बनारस

उपधानवाही महिलाओं के सामूहिक चित्र







विशिष्ट उपधानवाही



श्री सुशील कुमार नाहटा S/O श्री गोरूलाल जी
श्रीमति मंजूदेवी नाहटा W/O सुशील कुमार जी



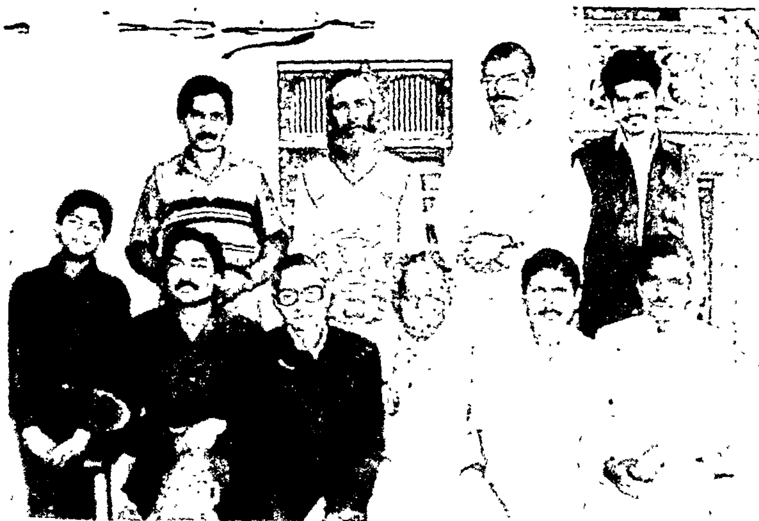
श्री पवनकुमार पारख S/O श्री जेठमल जी, बीकानेर
श्रीमती किरणदेवी पारख W/O श्री पवनकुमार जी



मोक्ष माला व दीक्षा के अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमूह।



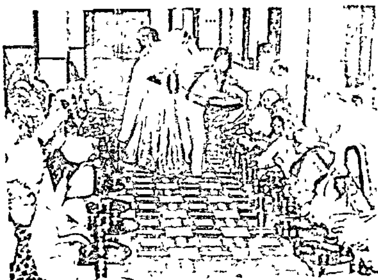
मोक्ष माला व दीक्षा के अवसर पर उपस्थित विशाल न



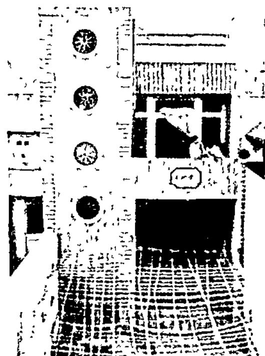
प्रमुख कार्यकर्त्ता
खड़े बांये से दांये – पन्ना लाल नाहटा, वंशीलाल बोथरा, पन्नालाल खजांची, हेमन्त कुमार पुगलिया।
बैठे बांये से दांये—सुनील पारख, अजीत खजांची, केसरी चंद सेठिया,



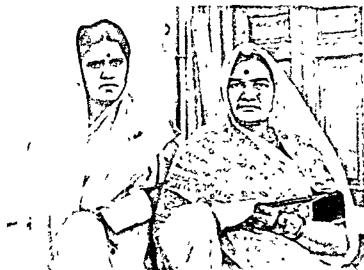
एकाशना करते हुए उपधान तपस्वीगण



एकासणा करती तपस्विनी महिलाये



उपधानपति श्री नेमचंद जी द्वारा निर्मित श्री महावीर जैन भवन
(जहाँ उपधान का क्रिया विधि विधान संपन्न हुआ)



श्रीमति सिरेकवर धर्मपत्नी श्री बाबुलाल जी मुसरफ एवं श्रीमति
सरोज धर्मपत्नी श्री सन्तोष चन्द जी मुसरफ, बीकानेर।



खड़े वांये से दांये—श्री पन्नालाल खजांची (मंत्री), श्री वावूलाल मुसरफ, श्री धनपतसिंग खजांची, श्री चांदरतन पारख, श्री धनराज नाहटा, श्री झंवरलाल सीपाणी, श्री सूरजमल पुगलिया (सहमंत्री)

वैठे वांये से दांये—श्री अणंदमल वेगाणी, श्री माणकचन्द वेगाणी (अध्यक्ष), श्री शिवचन्द झावक (संरक्षक), श्री लालचन्द सुराणा (कोषाध्यक्ष)

कामिनी और कंचन को त्यागे बिना आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती।

— रामकृष्ण परमहंस

उपधान तप के आराधकों को हमारी ओर से शुभकामनाऐं



श्री आदिनाथाय नमः



बीकानेर के जिन मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए
पंचवर्षीय योजना के सदस्य बनकर
पुण्य लाभ के भागीदार बनें।

निवेदक

श्री जिन मंदिर जीर्णोद्धार समिति
डागा सेठिया मौहल्ला, बीकानेर

"भोग समर्थ होते हुए भी जो भोगों का परित्याग करता है, वह कर्मों की महान् निर्जरा करता है, उसे मुक्ति रूप महाफल प्राप्त होता है।"

भ. महावीर



चांदमल बरडिया

बीकानेर

"जो पुरुष प्राप्त हुए कान्त और प्रिय भोगों को स्वेच्छा से त्याग देता है,
वह निश्चय ही त्यागी कहलाता है।"

श्रमण महावीर



"इच्छा निरोध तप से मोक्ष की प्राप्ति होती है।"

"समे दज्जे, सव्वपाण भूयेषु, से हु समणे"
समस्त प्राणियों के प्रति जो समभाव रखता है
वही सच्चा साधक है।



धनराज ढढ्ढ़ा

तिलोकचन्द ढढ्ढ़ा

कपूरचन्द ढढ्ढ़ा

बीकानेर

इनाम उसे मिलता है, जिसका काम होता है,
पत्र उसे मिलता है, जिसका नाम होता है,
स्वयंवर आमन्त्रित होने से क्या हुआ
सीता उसे मिलती है जिसमें राम होता है।

किसी को धिक्कारना नहीं सत्कारना सीखो,
किसी को फटकारना नहीं, पुचकारना सीखो।

किसी को जीतने की इच्छा रखते हो तो,
उससे जीतना नहीं हारना सीखो ।।



खजाना

२. ३. खजांची मार्केट, महात्मा गांधी मार्ग

बीकानेर-३३४००१

Presented to Sunita
by Mukti Prabh Sagar.

संयम पथ गामिनी कुमारी शोभा डागा—संक्षिप्त जीवन परिचय



सूरजराज जैन

आज की लावण्यमयी किशोरी की आत्मीय चाहत यह रहती है कि आज के इस भौतिक युगीन चकाचौंध भरे विलासिता के युग मे फैशनपरस्ती की होड़ में सबसे आगे रहे। आरामदेही, सुख सुविधा एवं सम्पन्नता के तमाम साधन उसे बिना किसी परिश्रम के उपलब्ध हो जाय और उसके इर्द गिर्द का सारा हुजूम उसकी मनचाही राहों में पलक पांवड़े बिछाये झुक कर सलाम करता रहे। कुल मिलाकर आज की हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण में जी जान से जुटी हुई है। आज परमात्मा और धर्माराधना के प्रति आस्था जाने समाप्त सी हो गयी है।

धन सम्पदा के उपार्जन एवं विलासिता के प्रति जागृत लालसा के इस उन्माद भरे वातावरण में प्रवज्या अंगीकार कर प्रभुवीर के जिन शासन पथ की अविचल सेविका बनने का व्रत लेने की महान् घोषणा करना अपने आप में बेमिसाल है। ऐसा विकट, गुरुतर एवं सुदृढ निर्णय लिया है कुमारी शोभा डागा ने। कुमारी शोभा डागा कोई ग्रामीण अंचल की रूढिवादी सामाजिक व्यवस्था में जीने वाली अबोध बाला नहीं अपितु बीकानेर नगरवासी श्रीमान् विजय चन्द जी डागा की लाड़ली सुपुत्री है। कुमारी शोभा का यह निर्णय भावावेश में आकर अथवा किन्हीं पारिवारिक परिस्थितियों के उत्पीड़न से नहीं अपितु उसका निर्णय आत्मोदित है। आपकी यह मान्यता है कि इस संसार के तमाम भौतिक सुख तो क्षण भंगुर हैं सच्चा सुख तो वैराग्य में है जहां मानव को आत्मशुद्धि का सुअवसर मिलता है। इस नाशवान शरीर का क्या शृंगार? मानव जीवन का परम लक्ष्य मुक्ति पथ को पाना है। तप जप और संयम से ही कषायों से मुक्ति मिलती है और इसी से आत्मा शुद्ध होती है और आत्मीय सुख ही सच्चा सुख है। वैराग्य जीवन मुक्ति पथ की राह उजागर करता है। कुमारी शोभा ने दसवीं तक की सामान्य शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् भौतिक उन्माद के थपेड़ों से उत्पीड़ित इस दिशाहीन युवा पीढ़ी की दयनीय स्थिति को अपने सजग नेत्रों से देखा है, परखा है और किंचित् मात्रा में भोग विलास के तूफानी झटकों को सहा है। अत: सांसारिक एवं पंच महाव्रती साधु जीवन का तुलनात्मक अध्ययन कर भागवती दीक्षा अंगीकार करने का निर्णय लिया है। विगत चार वर्षों के दीर्घ अन्तराल से वह आध्यात्मिक क्षेत्र से जुड़ी हुई है। और साधु जीवन की गहन बारीकियों के बारे में जानकारी अर्जित कर रही है। गृहस्थ जीवन का परित्याग कर प्रवज्या पथ हृदयंगम कर रही कुमारी शोभा डागा ने प्रात: स्मरणीया परमपूज्या अनुभव श्री जी महाराज साहिबा की सुशिष्या परम विदुषी एवं प्रखर व्याख्यात्री पूज्या हेमप्रभा श्री जी म. सा. की पावन निश्रा में प्रवज्या अंगीकार करने का सुनिश्चय किया है। दीक्षा महोत्सव की पावन तिथि दिनांक 29 जनवरी 1989 मिती माघ वदी 7 रविवार है।

सांसारिक जीवन में मां बाप एवं बन्धु बांधवों पर आश्रित रही शोभा अपने संयमित साधु जीवन में अपने समाज के लिए बोझ बन कर जीने की चाहत नहीं रख रही है। अपने जीवन के स्वर्णिम अवसर प्रवज्या व्रत को अंगी-

कार करने से पूर्व अपने गुरुजनों एवं विदुषी साध्वीयों के पावन सान्निध्य में रहकर गहन धार्मिक अध्ययन करने में संलग्न है। कुमारी शोभा डागा ने अब तक पंच प्रतिक्रमण, सप्त स्मरण, संस्कृत चैत्य वंदन, चार प्रकरण तीन भाष्य 35 बोल, थोकड़े आदि का संपूर्ण सअर्थ अध्ययन कर इन्हें हृदयंगम किया है और आज भी अविचल भाव से धार्मिक अध्ययन भाषा ज्ञान एवं धर्माराधना में लीन है। कुमारी शोभा डागा परम भाग्यशाली हैं कि उन्हें अपनी भागवती दीक्षा महोत्सवके पावन उपलक्ष्य में प. पू. प्रज्ञा पुरुष आचार्य देव जिन कान्ति सूरीश्वर जी महाराज के प्रधान शिष्य प्रखर व्याख्याता, महाप्रज्ञ मणिप्रभसागर जी म. सा. की पावन निश्रा एवं आशीर्वाद भी प्राप्त होगा।

कुमारी शोभा डागा से संपर्क कर जब आपके उज्ज्वल भविष्य के बारे में जानकारी चाही तब दृढ़ संकल्पा कुमारी शोभा ने अपने आत्मीय उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वांत सुखाय की प्रबल आकांक्षा के वशीभूत होकर भौतिक व्यामोह में निमग्न इस साँसारिक जीवन का परित्याग कर प्रभुवीर के द्वारा निर्देशित प्रवज्या पथ को अंगीकार करना मेरा दृढ़ निश्चय है और अधिकाधिक आध्यात्मिक अध्ययन कर परजन हिताय के सेवाव्रत के पावन स्वप्न को साकार करने हेतु जीवन की अंतिम धड़कनों तक कृत संकल्प रहूंगी और यही पंचमहाव्रती साधु जीवन की सच्ची सार्थकता है।

अपने पिताश्री विजय चन्द जी डागा, मातुश्री तीजो बाई डागा दो भ्राता श्री अशोक डागा, सी. ए. (अध्ययन रत), श्री पुखराज डागा एवं भागिनी सुनीता डागा के वृहद परिवार से प्रवज्या व्रत के लिए उद्यत हो रही कुमारी शोभा डागा प्रथम विरांगना नहीं अपितु आपके परिवार से इससे पूर्व आपके बड़े बाप (ताऊजी) स्व. भंवरलाल जी डागा की धर्मपत्नी साधुमार्गी संप्रदाय में इचरज कंवर के नाम से दीक्षित है एवं आपकी भुवाजी की एक सुपुत्री मौसीजी की तीन सुपुत्रियां निराबाध रूप से संयमी जीवन जी रही हैं। तब इस पावन निराबाध होड़ में कुमारी शोभा भी क्यों वंचित रहे।

गतिमान समय की घड़ियां द्रुत गति से बीत रही हैं और कुमारी शोभा प्रतिपल समर्पित भाव से प्रतीक्षारत है उस पावन स्वर्णिम अवसर के लिए जब वह स्व जीवन के चरमोत्कर्ष प्रवज्या व्रत को हृदयंगम करें। निःसन्देह परम-पूज्य गुरुदेव उसकी बलवती आकांक्षा को साकार करेंगे।

29 जनवरी 1989 का वह विराट पावन दिवस कुमारी शोभा डागा के पिताश्री विजय चन्द जी डागा को अभूतपूर्व विजयश्री दिलवायेगा, मातुश्री विरांगना प्रसविनी तीजो बाई को इस मरूधरा के सदा सुरंगे तीज पर्व का आत्मीय आनन्द प्रदान करेगा और कुमारी शोभा डागा अपने डागा कुल, जैन समाज और धर्मधरा बीकानेर की अन्यान्य शोभा बनेगी इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ।

कुमारी शोभा डागा के प्रवज्या ग्रहण करने से बीकानेर जैन समाज के गौरवपूर्ण इतिहास में एक नूतन स्वर्णिम अध्याय जुड़ेगा ही इसके साथ-साथ युगों-युगों से जीवित जैन धर्म की अमरता को नव संबल प्रदान करेगा। भले ही आज भौतिक व्यामोह के चकाचौंध में आज का यह विश्व डूब रहा है और आज की यह दिशा-हीन युवा पीढ़ी धर्म के प्रति अनास्था भाव को लेकर जी रही है। किन्तु आज भी इस मरूधरा के कण कण में कुमारी शोभा डागा जैसी यश-स्वी वीरांगनाएँ जीवित हैं जो समय-समय पर स्वजीवन को प्रभुवीर के शासन पथ को समर्पित कर दिग्भ्रान्त मानव जाति को दिशाबोध देती रहेगी।

जय वीर।

उपधान तप महिमा
(तर्ज—भव से तार)



मणिप्रभसागर

तप उपधान, तप उपधान, मंगलकारी तप उपधान ।
है गुणखान, जग में महान्, मंगलकारी तप उपधान ।
तप उपधान करे नरनारी, बन जाते तब वे अधिकारी
महानिशीथे है गुणगान, मंगलकारी तप उपधान ।।१।।
वीर प्रभु यों है फरमाते, तप-उपधान की महिमा गाते ।
इसमें है शुभ-भाव प्रयाण, मंगलकारी तप उपधान ।।२।।
पावन तप है ये सुखकारी, कट जाती कर्मों की भारी ।
आतम बनती सिद्ध समान, मंगलकारी तप उपधान ।।३।।
नवकारं इरियावही सुखकर, शक्रस्तव चैत्यस्तव दुःखहर
नामस्तव पंचम उवहाण, मंगलकारी तप उपधान ।।४।।
छठ्ठा श्रुत सिद्धस्तव सप्तम, सातों हरते अन्तर का तम ।
मिटे अंधेरा, फैले ज्ञान, मंगलकारी तप उपधान ।।५।।
दो बीसड़ फिर हो इक चौकड़, फिर छह दिन का हो शुभ छक्कड़
चौविहार उपवास महान्, मंगलकारी तप उपधान ।।६।।
पहला इक्यावन दिन का तप, दूजे में पैंतीस दिन का तप ।
अट्ठावीसड़ तीजा जान, मंगलकारी तप उपधान ।।७।।
नगर बीकाणे ठाट लगा है, तप जप का शुभ भाव जगा है
नगर लगे इन्द्रलोक समान, मंगलकारी तप उपधान ।।८।।
बैठे हैं द्विशत नरनारी, हेमप्रभाजी की मेहनत भारी
करते सब अमृत रसपान, मंगलकारी तप उपधान ।।९।।
नेमचंदजी ने करवाया, आशादेवी ने रंग लगाया ।
लाभ कमाया कर अनुष्ठान, मंगलकारी तप उपधान ।।१०।।
माघ वदि सातम दिन आता, कान्ति मणिप्रभ तप गुण गाता ।
मोक्ष-माल को हो परिधान, मंगलकारी तप उपधान ।।११।।

अनंत की उड़ान है उपधान



मुक्ति प्रभसागर

उपधान शब्द बड़ा प्यारा, अनूठा एवं उत्कृष्ट-स्थिति का सूचक है। जब व्यक्ति आत्मा के समीप पहुँचता है तो हम कहते हैं कि यह उपधानी है। उप यानि आत्मा, धान यानि निकट। हम सब आत्मा से कोसों दूर हैं। तभी तो हम मायूस हैं, उदास हैं। हमारी अशांति का कुल कारण यह है कि हम अभी उपधान में नहीं हैं। उपधान में होना अर्थात् यात्रा व मंजिल के करीब पहुंचना है। तब हम आत्मा की तलहटी में पहुंच गये समझो। फिर आत्मा का हिमालय दूर नहीं है। अब तक का हमारा सारा जीवन दुख से भरा है, यहां हंसते भी हैं तो ऊपर-ऊपर से। भीतर तो दुख का सागर लहराता है। हमारा यहाँ हंसना मात्र-दिखावा भर है। भीतर हम चिन्ता से घिरे हैं, हम अपने दुःख को दबाए हुए हैं, भले ही हमने बंगले खड़े कर लिये हों, रोल्सरोयस कार हो, हमारे पास सुन्दर-पत्नी हो, स्वस्थ बच्चे हों फिर भी भीतर के किसी कोने में झांक कर देखें तो पाएंगे कि आप दुखी हैं।

इन सब के पीछे, इन दुखों के पीछे हमारी स्थिति अनुपधान की है। सदियों से अनुपधान में जीये, आत्मा से दूर जीये, आत्मा का सामीप्य न स्वीकारा और दुख के गर्त में गिरते गये। जैसे मां की गोद में बैठा बच्चा सारे दुखों को विस्मृत कर देता है। कहीं गिर पड़ा हो, चोट लगी हो, खून बह गया हो, गहरा घाव हो, लेकिन जैसे ही मां की गोद उसे मिल जाती है सोने को, माँ का कोमल मधुर हाथ का स्पर्श उसके सिर पर, गालों पर होता है। उसके दुख तत्क्षण मिट जाते हैं, और एक नयी ताजगी–प्रफुल्लता आ जाती है। फिर वह तैयार हो जाता है, दौड़ने के लिए।

ऐसे ही है उपधान की प्रक्रिया। आत्मा का गोद तक पहुंचने की क्रिया-प्रक्रिया का नाम है उपधान। जो उपधान की गोदी में सोते हैं उनके लिये मंजिल दूर नहीं है। लेकिन श्रम तो करना होगा। जैसा कि उपधानार्थियों ने किया है। ऊपर से भले ही वे कृश-काय हो गये हों तपश्चर्या के कारण। लेकिन उतने ही वे आत्मा के निकट पड़ाव लगा पाए हैं।

आप अगर शाश्वत एवं न मिटने वाला सुख चाहते हैं तो उपधान में जीएं, उपधान करें और सारे उपाय बाह्य हैं। सुख पाने के उपाय अगर हम बाहर खोजते हैं तो हम गलती पर हैं।

जिस दिन हम उपधान करेंगे फिर हमें सुख को बाहर खोजने के लिये नहीं जाना पड़ेगा। उपधान से गुजरते ही हमारे दुख गिर जाएंगे।

'उपधान एक सफल माध्यम है आत्मा तक पहुंचने का, शाश्वत सुख पाने का। आवश्यकता है उस उपक्रम की जो उपधान तक ले जाये।' उपधान से जोड़े वही क्रिया है। विराट को पाने के लिये, आत्मा की निकटता को पाने के लिये क्रिया करने वाला ही धन्यभागी है। महावीर प्रभु ने फरमाया—विराट को पाने के लिये विराटतम प्रयोग आवश्यक है। उपधान हमारे लिये विराटतम को पाने का परम जागृतिपूर्ण एवं महत प्रयास रूप प्रयोग है।

वैज्ञानिक कहते हैं हम अपनी 15 प्रतिशत प्रतिभा का प्रयोग करते हैं। हम अपनी 5 प्रतिशत ऊर्जा का उपयोग करते हैं। अगर हम अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा एवं प्रतिभा का

उपयोग उपधान के माध्यम से करेंगे तो हम अत्याबाध सुख, अप्रतिम प्रतिभा को संप्राप्त कर सकेंगे।

कृपया उपधान करें। यह आपके लिये ही है। फिर आपके चेहरे पर चिरस्थायी मुस्कान रमेगी। फिर प्रतिपल आपके जीवन का कमल खिला रहेगा। वह कभी मुरझा न सकेगा।

आमन्त्रण है उपधान के लिये गणिवर्य श्री का आपको। आप जलने को तैयार हो तो ही उनके निमंत्रण को स्वीकारना। आप मृत्यु के लिये तैयार हो तो ही यहाँ आना क्योंकि आपकी राख पर ही नये का जन्म होगा। आपकी राख अर्थात् अहं की राख। अहं की राख पर अर्हं का जन्म होगा। आप मिटने को तैयार हो जाओ जैसे बूंद खो जाती है सागर में। हालांकि उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है लेकिन वह सागर की गरिमा को उपलब्ध कर लेती है। यही गणिवर्य श्री का अमृत उद्घोष है। अहंकार की बूंद का समर्पण। मृत्यु ही सागर का, आत्मा का जन्म है अर्थात् अहं गया कि परमात्मा प्रकट हुआ।

आओ बैठें गणिवर्य श्री की आभा से आलोकित आश्रय में। हालांकि उपधान का फंक्शन पूर्ण हो चुका है लेकिन उपधान का अर्थ यह नहीं है कि 51 दिन की क्रिया मात्र। यहाँ गणिवर्य श्री के पास प्रतिपल उपधान घट रहा है। गणि श्री के साथ जीना, उठना, बैठना भी एक उपधान है। यहाँ सर्वत्र खिलखिलाहट है। जो आप अन्यत्र कहीं न पाओगे क्योंकि गणि श्री उन विरल विभूतियों में हैं जिन्हें किसी कोटि में रखना असंभव है। सत्य की गंगोत्री में उनका आवास है। उनका समस्त जीवन एक लयबद्ध संगीत है। इनकी वाणी में प्रखरता और प्रसाद है जो बुद्ध पुरुषों की याद दिलाता है। हमारे अतीत और वर्तमान से बढ़कर वे हमारे लिये गौरीशंकर है।

आप आकाश की तरह सर्वग्राही है। जहाँ सर्व सत्ताएं सिमट आयी है। बैठो इस उपधानमय अमृत प्रवाह में ताकि परमात्मा बन सको।

अन्त में कान्तदर्शी परम प्रज्ञा उपलब्ध सत को असंख्य अगणित नमन।

इन्द्रियों की दासता त्यागे बिना मुक्ति सम्भव नहीं है। हमें इन्द्रियों का मालिक बनना है दास नहीं। इन्द्रियों पर आत्मा का स्वामित्व ही मुक्ति-महल का प्रथम सोपान है। अनन्त काल से हमने इन्द्रियों की गुलामी की है और इसी कारण यह गुलामी भी प्रिय हो गई है। अनन्त जन्मों के इन संस्कारों को तोड़कर, आत्मा को अनावृत करके, उसके दर्शन करना प्राणी-मात्र का पारमार्थिक लक्ष्य है। यह बात इतनी सहज नहीं है। प्रतिदिन पवित्रता के लिये अभ्यास करते हुए हमें आगे बढ़ना है।

—गणि मणिप्रभसागर

है
का बाजार है
का ये द्वार है
न कोई सार है।

है
भटकना बेकार है
पाना न कुछ पार है।
डूबना मझधार है।

है
बन्धु, मित्र परिवार है
किससे क्या सरोकार है
भरमाना बेकार है।

उनके प्रवचन नियमित होते थे। जो ओजस्वी होने के साथ-साथ वैराग्य भावों में डूबे होते थे। आप भी नियमित प्रवचन श्रवणार्थ जातीं। श्रवण परिवर्तन लाया। वैभव एवं भौतिक सुखों से भीगी चेतना में जागरण लाया। वो रुचियां चिन्तन सब कुछ बदल गया। त्याग की रुचि और आत्मचिन्तन प्रबल बने। उनकी सफलता हेतु गुरुवर्या श्री का सत्संग स्वीकार किया। करीब दो साल पू. गुरुवर्या के सान्निध्य में रहकर अध्ययन और संकल्प दृढ़ करने के बाद 19 साल की उम्र में दीक्षा ग्रहण कर ली। गुलाब से अनुभवों की कुंज अनुभव श्री जी बनी।

स्वाध्याय संयम जीवन का प्राण है। उसके बिना साधु जीवन जीवित नही रह सकता। वह मुर्दा बन जाता है। इसीलिये शास्त्रकारो ने साधु जीवन में 18 घण्टों का स्वाध्याय बताया है। सिर्फ दो प्रहर नींद और अन्य कामों के लिये है। रात को एक प्रहर नींद का दिन का तीसरा प्रहर आहार विहार और नीहार का है। सम्पूर्ण समय में साधु स्वाध्यायरत रहे।

अनादिकाल के मनोविकारो को जानने, मानने पहिचानने एवं निकालने का श्रेष्ठतम उपाय स्वाध्याय है। स्वाध्याय के आइने में स्वय का निरीक्षण एवं परीक्षण हो जाता है। स्वाध्याय स्वय मे स्वय की गवेषणा है। स्वाध्याय द्वारा उपलब्ध तरीकों से स्वयं के विकारों को दूर करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। इसीलिये स्वाध्याय को आभ्यंतर तप माना है। इससे मनोविकार दूर ही नही होते, यह केवल दवा ही नही है टॉनिक भी है। यह श्रद्धा एवं संयम को पुष्ट करता है।

पूज्य गुरुवर्या श्री बचपन से ही अध्ययनशील थी। प्रारम्भ मे ही उन्हें पढने-पढाने का बड़ा शौक था। यही कारण था कि संयम ग्रहण के बाद वह पूर्णरूपेण स्वाध्याय को समर्पण हो गयी। स्वाध्याय का यह क्रम उनके जीवन मे अभ्यास-काल से लेकर अन्त तक अविरल-धारा के रूप में बहता रहा। अर्थहीन बातों से समय व्यर्थ करना, उन्हे जरा भी पसंद नही था। समय के व्यर्थ-व्यय को बचाने के लिये कई महिनों तक एकाशन-आयंबिल-नीवि करके चला लेती थी। जब तक कोई विषय समझ नहीं आता उन्हें चैन नही पड़ती, सोचती ही रहती। आहार पानी तक की भी सुधबुध नहीं रहती। यही कारण है कि वे उच्च ज्ञान की धनी बनी।

उनके स्वाध्याय का मुख्य विषय आगम व आगम संबंधी ग्रन्थ थे। इसीलिये उनका आगमिक ज्ञान गहरा व ठोस था। उनकी आगम विवेचन-शैली इतनी सरल, सुबोध थी कि नीरस विषय को भी सरस बना देती थी। गूढ़ से गूढ़ विषय को भी सरल से सरल बनाकर श्रोता को हृदयंगम करा देती थी। द्रव्यानुयोग उनका प्रिय विषय था। उनका संस्कृत प्राकृत का उच्चारण इतना शुद्ध, इतना स्पष्ट, इतना लयबद्ध एवं पाण्डित्यपूर्ण था कि सुनते ही बनता था। चौरासी वर्ष की उम्र में भी उनके जीवन में स्वाध्याय की लौ यथावत् प्रज्वलित थी। शारीरिक रुग्णता, जंघाबल की क्षीणता एवं नेत्र ज्योति की कमी के बावजूद भी उनकी स्वाध्याय निष्ठा में कमी नही आई। आनन्दघन देवचन्द चौबीसी और बीसी का स्वाध्याय तो उनका नियमबद्ध चलता था। जैसे उन्हें स्वयं पढ़ने का शौक था वैसे उन्हें दूसरों को पढ़ाने का भी उतना ही शौक था। शारीरिक अस्वस्थता की स्थिति में चार-चार, पांच-पांच घण्टे नियमित रूप से साध्वियों को अध्ययन कराती थी। उनका यह अध्यापन का क्रम अन्त समय तक चलता ही रहा। कोई साधु-साध्वी या ग्रहस्थ उनके पास आ जाये तो वे ज्ञान-ध्यान की ही चर्चा करती थी। साध्वियों को उच्च शिक्षा दिलाने की प्रबल इच्छा थी इस हेतु वे हर संभव सुविधा कर देने को तैयार थी। कितनी भी तबियत खराब क्यों न हो पठन-पाठन का यह क्रम कभी नहीं टूटता।

फलत: 'अप्रमत्तता' उनके जीवन में सहज बन गयी थी। 84 साल की उम्र में आसाता की स्थिति में भी मैंने उन्हें कभी दिन में सोते नही देखा, रात में भी दस बजे से पूर्व कभी नही। न कभी सहारा लेकर बैठते देखा। वही सुखासन मुद्रा में पाटे के बीच विराजी हुई या तो पढ़ती हुई या गम्भीर चिन्तन में रत या फिर जाप करती हुई उन्हें सदा देखा है। वे व्यर्थ के परिचय या चर्चा वार्ता मे दूर कोसों दूर रहती थी।

स्वाद पर तो उनका पूर्ण नियन्त्रण था। खारे, खट्टे, तीखे, फीके का उनके मन पर कोई असर नहीं। एक वार जहर की तरह कड़वी ककड़ी का शाक आ गया। अन्यों को वापरने में परेशानी होने लगी, किन्तु आपश्री ने बड़े शान्त भाव से पूरा का पूरा शाक वापर लिया। स्वाद लिप्सा कभी जगने न पावे इस हेतु वे इतनी सतर्क थी कि गोचरी में आहार सबको बांट देने के वाद कोई न कोई ऐसा प्रश्न रख देती कि खाने वालों का ध्यान उसी में केन्द्रित रहे और स्वाद के प्रति ध्यान ही न जावे।

'सादा जीवन-उच्च विचार' आपका जीवन-सूत्र था। वस्त्र-पात्र कम्वली-घड़ी-चश्मा-पैन आदि प्रत्येक वस्तुओं में सादगी पसन्द थी। वे हमेशा फरमाती थी कि गृहस्थ तो भाव भक्ति से अच्छे से अच्छे उपकरण वापरते हैं किन्तु साधु को तो साधु मर्यादा का ध्यान रखना चाहिये। साधु का जीवन इतना हल्का होना चाहिये कि ग्रहस्थ पर किसी रूप में भार न वने।

'लहुभूयविहारिण:'

ममता का विसर्जन समता का उदगम है। प्रारम्भ से गुरुवर्या श्री के असाता का उदय अधिक मात्रा में ही रहा। भयंकर असाता के वीच भी वे कभी विचलित और असन्तुलित नहीं वनती थी। भयंकर वेदना के समय भी वह सहिष्णुता की मूर्ति मुस्कुराती रहती थी। तन में व्याधि पर मन में समाधि थी क्योंकि शरीर के प्रति मन में जरा भी ममत्व नहीं था। आत्मा की अमरता, शरीर की नश्वरता, आत्मा और देह की भिन्नता का भाव उनके रोम-रोम में भरा था। रोग को तो वे अति परिचित मेहमान समझती थीं। वे वड़ी ही सहजता से कहती थी—'अति परिचित मेहमान है यहां नहीं आयेगा तो अन्यत्र कहां जायेगा। 'आत्मा छुं. नित्य छुं, देह थी भिन्न छुं' यह उनके जीवन का उच्च आदर्श था। 'भेद ज्ञान' की केवल चर्चा ही नहीं किन्तु यथार्थ मूर्त रूप उनके जीवन में मिलता था।

पूज्य गुरुवर्या श्री से एक वार सुना है कि आप केशरियानाथजी की यात्रार्थ पधार रही थीं। गर्मी का समय था। रास्ता वड़ा विकट था। आवास आदि व्यवस्थाओं का सर्वथा अभाव था किन्तु परमात्मा के दर्शन की प्यास उन सभी कष्टों से वेखबर उन्हें उधर ही कदम वढ़ाने को मजवूर कर रही थी। दादा के दर्शन की तड़प वुझाने वे उधर पधारी। प्रात: विहार किया किन्तु यह क्या ? चलते चलते पांव रुक गये। पैर में आग-आग लग गयी। एडी से चोटी तक पैर में कांटे-कांटे लग गये हों। एक दो सेकण्ड के लिये चेहरे पर पीड़ा के भाव झलके किन्तु दो सेकण्ड वाद चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी। यह देखकर सभी सोच में पड़ गये कि यह क्या ? पूछने पर मालूम हुआ कि पैर में कोई जहरीला जानवर डंक दे गया है। इधर-उधर देखा एक जंगली विच्छू रोड पर था। वात समझते देर नहीं लगी सभी चिन्तित हो उठे कि अव क्या किया जाय। किन्तु उनके चेहरे पर परम प्रसन्नता के भाव थे। वे वोले पीड़ा मुझे कहां है ? जो है वह शरीर को है इस मिट्टी की क्या चिन्ता है ? सताया होगा कहीं इस जीव को ? सभी ने आग्रह किया कि जहर उतरवाया जाये। किन्तु किसका ? जहर को कोई जहर माने तो न। उन्होंने कहा कि परमात्मा के नाम स्मरण से अधिक जहर उतरने की शक्ति किसमें है ? परमात्मा के नाम में वह शक्ति है जो जहर को भी अमृत वना देती है।

विष अमृत थई परगमे, लहिये अविचल धाम।

वस आसन जमा कर विराज गई। उवसग्गहरं का जाप प्रारम्भ कर दिया। जपते-जपते आंखें कव मुंद गई ? मन कहां खो गया ? शरीर कव निष्पंद हो गया ? वाणी मौन हो गयी कुछ भी पता नहीं पड़ा। एकाग्रता और तन्मयता का साक्षात् स्वरूप देखने वाले को विभोर करने वाला था और वह भी दर्द····पीड़ा और वेदना के समय में सहसा सिर झुक जाता है इस भेद ज्ञान की मूर्ति के चरणों में····हृदय न्योछावर हो जाता है, उनके आत्म रमणता पर।

परमात्मा, जिनाज्ञा एवं गुरुजनों के प्रति उनकी श्रद्धा, आस्था एवं समर्पण अपूर्व, अद्भुत एवं अलौकिक था। परमात्मा दर्शन के समय, चैत्यवन्दन की मुद्रा में उनके सर्मपित व्यक्तित्व को देखते ही वनता था। उनकी भाव विभोर मुद्रा देखने वाले को भी भाव-विभोर कर देती थी। परमात्मा के समक्ष आत्म निवेदन करते करते कई वार

उनका हृदय भर जाता, आंखें अश्रुपूरित हो जाती। उनकी तन्मयता आत्मा की गहराइयों में डूबकर आत्मा में निहित आनन्द के अक्षय खजाने को खोजने का एक सफल प्रयोग था।

नाम का मोह उन्हें कभी नही छुआ। जहां एक छोटे से पाटे पर भी नाम लिखवाने का मोह नही छूटता, वहां पू. गुरुवर्या श्री के उपदेश से कई दादावाड़ी, उपाश्रय, आयंबिल भवन, सार्वजनिक धर्मशाला स्कूलों आदि का निर्माण हुआ। जिर्णोद्धार हुए किन्तु कहीं भी नाम नही लिखवाया।

वे दृढ़ संकल्प एवं कठोर संयम की धनी थीं। उन्हें अपने विचारों से कोई हटा नही सकता था। जंघाबल क्षीण होने की स्थिति में वे स्थाणापन्न हो गयी थीं। दूर-दूर के भक्तों का अत्याग्रह होने पर भी वे अपने संकल्प में सदा दृढ़ रही। डोली का प्रयोग कभी नहीं किया।

उन्होंने कथनी और करनी के अन्तर को बहुत कुछ हद तक अपने जीवन में, कार्य-कलापों में पाट दिया था। उनका हृदय निश्छल, वाणी सरल एवं व्यवहार बड़ा ही कोमल था। उनके बोलने से पूर्व उनका जीवन बोलता था। जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी कठिनाइयों का हंसते हुए सामना किया।

आत्मप्रशंसा और निन्दा से सर्वथा दूर वे हमेशा सत्य, तथ्य और यथार्थ की खोजी थी। मौन, ध्यान और एकान्त उन्हें बहुत प्रिय थे। फलतः उनका जीवन चिन्तन प्रधान था। बुद्धि में स्थिरता, विचारों में दृढ़ता, संकल्पों में तीव्रता और वाणी में सिद्धि थी। उनकी वचनसिद्धि का मुझे स्वयं को अनुभव है।

कई वर्षों से मैं दीक्षा के लिये प्रयत्नशील थी। ज्यों-ज्यों समय निकल रहा था संसार में रहना असह्य हो रहा था। माता-पिता की ममता मुझे हर संभव बंधन में डालना चाहती थी। मैं हर समय चिन्तित रहती थी।

एक बार मैं पू. गुरुवर्या श्री के दर्शनार्थ पाली गई हुई थी। उनसे कर्मग्रन्थ का अध्ययन कर रही थी। सहज में मैंने प्रश्न कर दिया, गुरुवर्या श्री ! मैंने ऐसा क्या कर्मबंधन किया कि इतना प्रयास करने के बावजूद भी सफलता नही मिल रही है ? कुछ देर मौन रहने के बाद वे बोली, शान्ता ! अन्तराय के घने बादल छंट गये है.. ....अब वह सवेरा दूर नही जिस दिन तू मेरे साध्वी-मण्डल में प्रविष्ट होगी। मैं उनकी ओर देखती रह गई। क्या अद्भुत तेज था उनकी आंखों में। क्या आत्मविश्वास टपक रहा था उनके चहेरे से मैं तो उन्हें देखते-देखते इतनी भाव-विभोर हो गई कि कुछ कहते नही बना। शब्द मुंह में ही रह गये। पता नही कब सिर उनके चरणों में झुक गया। तब ही तन्द्रा टूटी जब उन्होंने बडे प्यार से मेरे सिर पर हाथ रखते हुए कहा, पगली ! अब क्यों चिन्तित है ! क्या मेरे पर विश्वास नहीं है तुझे ? मैं अवाक् सी उन्हें निहारती रह गई।

पता नही क्या ताकत थी उनकी वाणी में। अभी चार माह भी नही बीते कि पिताजी दीक्षा का मुहूर्त्त निकालने के लिये निवेदन करने पाली गये। यद्यपि पू. गुरुवर्या श्री आज नहीं है, किन्तु उनका स्वर आज भी मेरे कानों में गूंज रहा है।

विद्वत्ता हासिल करना कोई बड़ी बात नहीं है किन्तु उसके साथ तात्त्विकता एवं सात्त्विकता का योग होना कठिन है। पू. गुरुवर्या विद्वान होने के साथ तात्त्विक एवं सात्त्विक भी थी। वे मैत्री, करुणा की बातें ही नहीं करती थी, बल्कि उन्हें जीवन में साकार भी किया था। वृद्ध, ग्लान एवं बच्चों के प्रति उनका स्नेह, सद्भाव एवं सेवा भाव उनके बड़प्पन का अंग था।

उनकी वाणी में ओज, चेहरे पर संयम का तेज झलकता था। उन्होंने हर समय....हर परिस्थिति में अपने संयम एवं साधु मर्यादा का खयाल रखा। यही कारण है कि उनके प्रवचन संयम-प्रेरक, वैराग्यवर्धक एवं प्रभावक होते थे। वाणी में पौरुष था। चेहरे की प्रभावकता हर एक को अभिभूत करने वाली थी। उन्हें आडम्बर...दिखावा कतई पसन्द नहीं था। 'जहा अन्तों तहा बाहीं' का जीता जागता उदाहरण थी पू. गुरुवर्या श्री।

इसी का परिणाम था कि—समाधिमरण और बोधिलाभ की स्थिति उनके जीवन में सहजसिद्ध हो गई थी। उनकी मृत्यु....वास्तव में पूर्व तैयारी के साथ चोला बदलना था। पूर्ण जागृति में संथारापूर्वक निर्यामणा के साथ उन्होंने यह चोला बदला था। यह उनकी लंबी आराधना एवं आत्मजागृति का ही सुपरिणाम था।

हेमप्रभा गुरुवर्या मेरे



सुश्री सुनीता डागा, बीकानेर

जिन शासन गण खरतर नभ में,
ज्ञान दामिनी चमकी है।
जन जीवन को राह दिखाने,
आज कोकिला कुहकी है।।

शुभ्र ज्योत्स्ना झलके मुख पर,
निर्मल कान्ति नयन युगल में।
होठों पर मुस्कान थिरकती,
छा जाती अन्तस्तल में।।

दमक रहा मुखमंडल तेरा,
चमके ज्यों रवि नभमंडल है।
शीतलता शशि सम पायी है,
ज्यों बहता झरणा कलकल है।।

हेमप्रभा गुरुवर्या मेरे,
मेरी श्रद्धा अर्पित है।
लाखों नर नारी से तेरे,
चरण युगल वन्दित अर्चित है।।

शत शत वंदन

□

सुश्री कु. कुसुम खजांची

धीर वीर गंभीर गुरुवर,
शान्त सौम्य मनोहारी।
दूर दूर से दर्शन करने,
आते नर और नारी।
बुद्धि विचक्षण, प्रतिभा विलक्षण
नव युग के निर्माता।
सत्य शान्ति के अग्रदूत,
हो तुम जन-जन के त्राता।

गंगा की धारा सम निर्मल,
जीवन तेरा बहता कल-कल।
ज्ञान-ध्यान संयम निष्ठा का,
साधन करते तुम पल प्रतिपल।
जिन वाणी का पान कराकर,
जीवन करते सबका उजागर।
अगणित श्रद्धा से मणि गुरु को,
शत्-शत् वंदन शीप.नमाकर।

शुभ्र ज्योत्सना सी निर्मल,
देह कान्ति नयनाभिराम।
सत्यपूत आचार निष्ठ,
जिनका जीवन आनंद धाम।
सत्प्रेरणा दे उपधान कराकर,
किया जगत में नाम।
सुवर्ण समान समुज्ज्वल कीर्ति
गुरुवर्या श्री को शत्-शत् प्रणाम।

बीकानेर में उपधान तप की परम्परा—महोपाध्याय विनयसागर

विक्रमपुर (बीकानेर) की स्थापना के समय से ही इसके निर्माण और विकास में खरतरगच्छ के अनुयायियों का सतत एवं सक्रिय सहयोग रहा है तथा वे सम्मानित उच्च पदों पर आसीन भी रहे हैं। खरतरगच्छ के प्रमुख आचार्यों–जिनहंससूरि, जिनमाणिक्यसूरि, अकबर प्रतिबोधक युग प्रधान जिनचन्द्रसूरि से लेकर जिनहर्षसूरि, जिन सौभाग्यसूरि तक का बीकानेर के नरेशों से घनिष्ठ संबंध भी रहा है। नरेशों का न केवल घनिष्ठ संबंध ही, अपितु वे आचार्यों के परम भक्त एवं पक्षधर भी रहे हैं और उन्हें पूर्ण राजकीय सम्मान भी देते रहे हैं। वस्तुत: देखा जाये तो बीकानेर प्रारंभ से ही खरतरगच्छ का एक प्रमुख गढ़ रहा है।

महानिसीथ आदि शास्त्रों में उपासकवर्ग के लिये पंचमंगल महाश्रुतस्कन्ध उपधान तप को विधिवत् करने की परमावश्यकता बतलाई गई है। इसकी आराधना के बिना सूत्रादि ग्रहण करने का वह अधिकारी नहीं होता।

यह बीकानेर का परम सौभाग्य है कि यहां पंचमंगल महाश्रुत स्कन्ध उपधान तप का प्रारम्भ भी खरतरगच्छ के सुविहित आचार्यों के द्वारा ही हुए हैं। सर्वप्रथम बीकानेर में उपधान तप क्रियोद्धारक खरतरगच्छाचार्य परम यशस्वी श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी महाराज की अध्यक्षता में वि. सं. 1985 में हुआ था। इसका आयोजन श्री प्रेमचन्द जी खजांची ने करवाया था।

पन्द्रह वर्ष के अन्तराल के बाद दूसरी बार महामंगलकारी उपधान तप का सफल आयोजन खरतरगच्छ विभूषण परमगीतार्थ आगमज्ञ उपाध्याय श्री मणिसागरजी म. के उपदेश से स्वर्गीय श्री मोहनलाल जी दफ्तरी की धर्मपत्नी की प्रेरणा से श्री सम्पतलाल जी दफ्तरी ने वि. सं. 2000 में करवाया था। इस तपस्या में श्री रावतमलजी बोथरा जैसे वयोवृद्ध धर्मनिष्ठ भी सम्मिलित हुए थे।

वि. सं. 1985 से 2044 तक के 60 वर्षों के अन्तराल में खरतरगच्छ में यह तीसरा उपधान तप बीकानेर में हो रहा है। खरतरगच्छीया विदुषी श्री हेमप्रभाश्रीजी के उपदेश एवं प्रेरणा से प्रेरित होकर श्री भंवरलाल जी नेमिचंद जी खजांची ने इसका सफल आयोजन किया है और स्व. आचार्य श्री कान्तिसागरसूरि के शिष्य गणिवर्य श्री मणिप्रभसागर जी के तत्वावधान में इसका कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हो रहा है।

वर्तमान समय में खरतरगच्छ परम्परा में उपधान तप की क्रियाओं में देववन्दन करते समय जो चैत्यवन्दन, स्तुतियां और स्तवन पढ़े जाते हैं, उनका निर्माण किस प्रसंग में और किसने किया था? जिज्ञासा होना स्वाभाविक है।

वि. सं. 1998 की घटना है कि उपाध्याय श्री मणिसागर जी म. (आचार्य प्रवर श्री जिनमणिसागर सूरिजी म.) ने खरतरगच्छीय सुखसागरजी म. के समुदाय में सर्वप्रथम उपधान तप जयपुर में करवाया था। आयोजन किया था जौहरी श्री मांगीलालजी गोलेछा ने और कार्यस्थल था श्री नथमलजी गोलेछा का कटला जो वर्तमान में अग्रवाल कॉलेज के नाम से विख्यात है। इस पावन प्रसंग पर उपाध्याय प्रवर श्री मणिसागर जी म. ने मोकलसर में चातुर्मास स्थित गच्छनायक आचार्यवर श्री जिनहरिसागर सूरिजी म. के शिष्यरत्न आशुकवि उद्भट विद्वान् मुनि

श्री कवीन्द्रसागरजी (बाद में जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी) म. को लिखा था कि उपधान तप से संबंधित केवल दो ही स्तवन प्राप्त हैं, आप कुछ स्तवन आदि नवनिर्मित कर भिजवादें।

इस पर श्री कवीन्द्रसागरजी म. ने सहर्ष शीघ्र ही 5 चैत्यवन्दन, 5 स्तुतियां और 5 स्तवन नये बनाकर, स्वकीय हाथों से लिखकर भिजवाये थे। (इसकी स्वलिखित मूल पाण्डुलिपि आज भी मेरे पास सुरक्षित है।) तभी से ये ही स्तवनादि दैनिक देववन्दन आदि क्रियाओं में प्रचलित है।

इस तप की पूर्णाहुति सानन्द एवं निर्विघ्न सम्पन्न हो एवं उपधानवहन करने वाले श्रावक-श्राविका समूह भी वास्तविक अर्थ में सूत्रार्थग्राही बनकर शुद्ध जीवन का निर्माण करें, यही शुभकामना है।

हमारी आत्मा में तुच्छ अहंकार का जो कचरा छिपा हुआ है, वही अधोगती का मूल कारण है। आचार्य हरिभद्र सूरि परम विद्वान् होते हुए भी निरहंकारी थे, अहंकार शून्य थे। उनके शब्दों में प्रेम माधुर्य एवं सरलता के दर्शन होते हैं। सत्य तो यह है–गूढ़ चिन्तन ही हमें निरभिमान की भूमिका तक पहुँचा सकता है।

—गणिमणिप्रभसागर



तपस्या का अर्थ है—अपनी समस्त इन्द्रियों को नियन्त्रित कर आत्माभिमुख होना। तपश्चर्या का केवल इतना ही अर्थ नहीं है कि हम भूखे रहें—यह तो पहली सीढ़ी है। मन का सम्बन्ध जब तक शरीर के साथ है तब तक संसार है ज्योंही मन का संयोग आत्मा से होने लगता है, तप का प्रभाव प्रारम्भ हो जाता है।

—गणिमणिप्रभसागर

इस उपधान तप की विशेषताएँ

- कुल 205 उपधानवाहियों की विशालसंख्या युत बीकानेर में पहला उपधान (यहाँ हुए उपधानों से सबसे ज्यादा आराधक गण) जिसमें प्रथम उपधान–117, द्वितीय उपधान–48, तृतीय उपधान–40 पुरुष वर्ग–24, कुमारिकाएँ–24, शेष 157 महिलाएँ
- उपधान मालारोपण के दिन कुमारी शोभा डागा का भव्य दीक्षा समारोह
- उपधान माला व दीक्षा एक साथ होने पर भी अपूर्व शांति के साथ व्यवस्थित रूप से समारोह का समापन
- उपधानवाही युवक नरेश गोलछा द्वारा उपधान में 21 उपवास की भव्य तपश्चर्या
- दो बहिनों द्वारा उत्कृष्ट मूल विधि से अर्थात् लगातार 16 उपवासों द्वारा तीसरा उपधान
- 25 छोड़ का भव्य उद्यापन (उजमणा) महोत्सव
- 55 से भी ज्यादा उपधान आराधकों द्वारा तेला करके माला परिधान
- सिर्फ 37 मिनट में 117 उपधान आराधकों का विधि विधान युत मालारोपण विधान
- उपधान में 11 जोड़ों (पति-पत्नी) द्वारा आराधना
- अभिनंदन कार्यक्रम में छ: वैरागन बहिनों का अभिनंदन
- उपधानपति का नगर की विभिन्न संस्थाओं द्वारा भव्य अभिनंदन
- तपस्वीगणों की विशाल संख्या में निमित्त थी पू. साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म. की प्रेरणा ।
- उपधान आराधकों का परस्पर अनूठा सहयोग/प्रेम-भाव ।
- पूज्य गणिवर्य श्री द्वारा प्रतिदिन विधियों, हेतु आदि का विशेष प्रशिक्षण
- माल महोत्सव का व वर्षीदान का लम्बा, विशाल वर-घोड़ा बीकानेर के इतिहास में पहली बार
- एकासणा आदि की व्यवस्था में स्थानीय संघ, युवकों, कुमारिकाओं, महिलाओं का पूर्ण सहयोग
- एकासणों में पुरुष वर्ग में पुरुषों द्वारा एवं महिला वर्ग में महिलाओं द्वारा व्यवस्था
- पूज्य गणिवर्य श्री द्वारा स्वलिखित 'उपधानपति' पद प्रदान की घोषणा
- उपधानपति द्वारा हर प्रथम उपधान आराधक का अभिनंदन पत्र द्वारा बहुमान
- सौ. आशादेवी खजांची द्वारा हर आराधक को चावलों से वधाना
- मालारोपण के समय अभूतपूर्व पांडाल व्यवस्था, उपधान आराधक, आदि सबके लिये अलग से व्यवस्थित मंच का आयोजन
- कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रतिदिन हर आराधक से व्यक्तिगत संपर्क करना और उन्हें शाता पूछना व वांछित कार्य सेवा करना ।

उपधान आराधकों को विदाई संदेश



प्रवचन—गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म. **प्रस्तुति—मुनि मुक्तिप्रभसागर**

आज मेरा धर्म-परिवार मेरे से विदाई ले रहा है। विदाई के क्षणों में विदाई लेने वाले और देने वाले दोनों का मन भारी हो रहा है। हर मानव के लिए ये क्षण बड़े ही संवेदनशील ··· नाजुक एवं हृदय-विदारक होते हैं। न चाहते हुए भी मन की घनीभूत पीड़ा द्रवित हो उठती है। उसी पीड़ा के कारण सभी के नेत्र सजल हो रहे है।

जिस दिन आराधना के इस अनूठे अनुष्ठान में आपने भाग लिया था, आपका चेहरा बड़ा ही प्रफुल्लित था। होठों पर मधुर मुस्कान थी। आंखों में अपूर्व तेज था। हृदय आनन्द-विभोर हो रहा था। आपके शरीर का रोयां-रोयां हर्ष मे गद्‌गद् था। आपके देह का कण-कण खुशी से स्पन्दित था। किन्तु आज सब कुछ बदल गया है। अपने धर्म-परिवार मे बिछुड़ने के गम मे सब कुछ परिवर्तित हो गया है। आज चेहरा मुरझा गया है। होठों की मुस्कान गायब हो गई है। आंखों मे विषाद छाया हुआ है। दिल धड़क रहा है। शरीर का रोयां-रोयां तड़फ रहा है। देह का कण-कण पीडा से बोझिल है। आपकी यह पीड़ा.... आपकी यह बेचैनी....आपकी यह व्याकुलता मैं कई दिनों मे समझ रहा हूं। महसूस कर रहा हूं।

क्या हरा-भरा वातावरण 'महावीर-भवन' का! क्या खुशनुमा वातावरण यहां का। चारों ओर तप-त्याग की गूंज। संयम की महक फैल रही थी। आराधक यहां आराधना कर रहे होते हैं। किन्तु उनकी आराधना की अनुगूंज इस धरती के कण-कण से फूट रही होती है। सवेरे चार बजे से प्रारम्भ होने वाला आराधना का यह क्रम रात की दस बजे तक अविरल गतिमान रहता है। आराधना के साथ प्रवचन क्रियाओं का प्रेक्टिकल प्रशिक्षण तत्व चर्चा ध्यान प्रश्नोत्तरी आदि कई महत्वपूर्ण क्रिया-कलापों, रोचक एवं प्रेरक आध्यात्मिक आयोजनों में व्यस्त आपका समय किस अपूर्व शान्ति और आनन्द के साथ व्यतीत हुआ। यह आपके चेहरे से, आपकी आंखों मे स्पष्ट मालूम होता था। किन्तु कल आप पुन. उसी वेश-परिवेश में चले जायेंगे। आराधना का यह क्रम टूट जायेगा। साधना का यह सुनहरा अवसर यही छूट जायेगा। शेष रह जायेगी सभी के दिल में अंकित आराधना की मधुर स्मृतियां। आज भरा-भरा दीखने-वाला 'महावीर भवन' एकदम सूना हो जायगा। किसे नही है इसका गम? किसके हृदय में हलचल नहीं मची है? आंखों से बहने वाले आंसू इसके साक्षी है... गवाह हैं।

कितना सुहावना लगता है वह दृश्य जब 205 आराधक एक साथ चखला...मुहपत्ति लेकर विविध-मुद्राओं मे क्रिया करते है। कैसी शमां बंध जाती है उस समय, जब आप सूत्र, अर्थ व उनके भावों के अनुरूप क्रिया करने में तन्मय हो जाते हैं। यही तन्मयता स्वयं की पहिचान का साधन बनती है। इसी तन्मयता में आत्मा सांसारिक भावों से दूर अतिदूर होकर अपने में स्थित हो जाती है। आपकी ये पलें, आपकी अपनी हो जाती है। बस फिर आनन्द का झरना फूट पड़ता है। यही अमाप आनन्द अन्तर की सारी सीमायें लांघकर...आपकी आंखों से, आपके चेहरे से व आपके हाव-भाव से बाहर फूट रहा है।

मेरे सामने व दायें-बायें बैठे हुए आराधक एक साथ आदेश मांगने और लेने के लिये शास्त्रीय शब्दों का उच्चारण करते हैं, तब ऐसा लगता है मानो किसी महर्षि के तपोवन में सस्वर वेद पाठ हो रहा हो। आपके सामने बैठ कर मैं आपके प्रफुल्लित चेहरों को देखता... मेरा हृदय गद्गद् हो जाता। आपके एक साथ उच्चारण की गूंज से, मेरे हृदय में आनन्द की उर्मियां उछल पड़तीं। यह दृश्य देखकर अपार आत्मतृप्ति मिलती मुझे। आपको क्रिया करने में जितना आनन्द आता, उससे अधिक आनन्द मुझे कराने में आता। क्योंकि आपका आनन्द मेरे आनन्द को द्विगुणित कर देता। अब कहाँ व कब मिलेगा यह दृश्य देखने को मुझे। कब मिलेगा आराधना कराने का ऐसा अपूर्व अवसर मुझे। किसे कराऊंगा प्रात: 6 बजे से क्रियायें ?

घर जाकर आप भूल सकते हैं. इन दृश्यों को, क्रियाओं को एवं मुझे। किन्तु मैं आपको नहीं भूल सकता। क्रियाओं का समय होते ही वह दृश्य सदा घूमेगा मेरी आंखों के सामने। वे आवाजें गूंजेंगी मेरे कानों में। उस वातावरण की स्मृतियां हलचल मचाएंगी मेरे दिल में। आराधकों की अलग-अलग रुचियां... उनकी अलग-अलग प्रवृत्तियां बोलने चालने का ढंग.... जिज्ञासायें...व्यवहार के तरीके.... स्नेह सद्भाव...लम्बे समय का परिचय... समय-समय पर याद आता रहेगा मुझे। कइयों का निश्छल धर्म, स्नेह एवं विनोदी स्वभाव तो भुलाये नहीं भूल सकता।

धर्म-परिवार से बिछुड़ने का गम तो है ही मुझे किन्तु साथ ही एक बात की खुशी भी है। आप यहां से जा रहे हैं... बदल कर जा रहे हैं... बहुत कुछ लेकर जा रहे हैं। खाली आये थे भरे हुए जा रहे हैं। यूं कहा जाये कि खोने योग्य खोकर और पाने योग्य पाकर जा रहे हैं। अब आपकी चाल बदल गई है... देखने की दृष्टि बदल गई है। सोचने का तरीका बदल गया...भाषा बदल गई...क्रियायें बदल गई हैं।

पहिले आपकी चाल में, दृष्टि में विचार और वाणी में अहं था....अविवेक था....विषय और कषाय की भयंकर दुर्गन्ध थी। आपके कदम बुरे कार्य के लिये उठ जाते थे। आपकी दृष्टि में विषय कषायों की चिनगारियां फूटती थीं। विचारों में स्वार्थ था, क्रूरता थी एवं वाणी में दुर्भाव था किन्तु अब आपका सब कुछ बदल गया है क्योंकि 51 दिन के लम्बे समय तक आपने केवल क्रियायें ही नहीं की किन्तु जीवन बदलने की प्रक्रियायें भी की हैं। इसका भी अभ्यास किया है। दिशा-बोध पाया है। जीवन परिवर्तन का ज्ञान पाया है। अब आप घर जाकर शान्ति व स्नेह का वातावरण बनायेंगे। जहां छोटी-छोटी बातों को लेकर क्लेश करते थे, वहां स्नेह का वातावरण सृजन कर घर को स्वर्ग बनायेंगे। अन्धकार से आलोक की ओर... अज्ञान से ज्ञान की ओर आपके कदम मुड़ गये हैं। ध्यान रहे अब आपके हृदय में प्रत्येक आत्मा के लिये स्नेह का स्रोत, करुणा का प्रवाह बहेगा। आरंभ समारंभ करते समय दिल रोयेगा। हाथ कांपेंगे, कदम पीछे हटेंगे। आंखों से आंसू बहेंगे। हिंसा... झूठ... चोरी....दुराचार एवं परिग्रह के पाप से छूटने को दिल तड़फेगा।

मैं मानता हूं कि अब आपका जीवन बिल्कुल बदल गया होगा। मुझे आशा ही नहीं आप पर पूर्ण विश्वास है कि आपकी दिनचर्या निश्चित बदलेगी। इससे पहिले आप आठ बजे उठते थे। शायद कइयों की बैड-टी की भी आदत होगी। कइयों को न देव-दर्शन का नियम था न गुरुवन्दन का। सामायिक प्रतिक्रमण का तो परिचय ही नहीं था। किन्तु 51 दिन का अभ्यास निश्चित आपके जीवन में परिवर्तन लाया है.... मोड़ लाया है। आप घर जाने के बाद, यहां जो कुछ ज्ञान मिला है, उसके प्रकाश में ही अपना जीवन बितायेंगे। आवश्यक क्रियायें, तप... त्याग को यथाशक्ति अपना रुटीन बनायेंगे। आशा है मुक्ति की गहन प्यास आपके हृदय में जगेगी।

जब भी आपका घर में मन न लगे... जब भी आपको मेरी याद आये, आप सीधे चले आना मेरे पास। मेरा दरवाजा आपके लिये सदा खुला है। मेरे दिल में आपके लिये गहरा स्थान है। मेरे हृदय में आपके प्रति अपार करुणा का प्रवाह बह रहा है। आप जब चाहे मेरे पास पधार जायें। मेरा आपको यही हार्दिक आमंत्रण है...सस्नेह निमंत्रण है।

आँखो देखा हाल

□

प्रस्तुति—साध्वी विनीतप्रज्ञा **सहयोग—साध्वी कल्पलता, साध्वी शुभांजना**

दिनांक 6 दिसम्बर 1988, आज पूज्य गुरुदेव का धर्म-धरा बीकानेर की धरती पर प्रथम बार प्रवेश हो रहा है। जब से बीकानेर आगमन की स्वीकृति मिली तभी से बीकानेर की धर्म-प्रेमी जनता उनके आगमन की प्रतीक्षा में पलक पांवड़े बिछाये थी।

पू. गुरुदेव का बीकानेर पधारना उपधान तप की महान आराधना करवाने हेतु हो रहा था। इस वर्ष श्री संघ के पुण्योदय से परम पूजनीया विदुषी आर्या रत्न प्रवर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभा श्रीजी म. सा. का चातुर्मास यहाँ हुआ। चातुर्मास के दौरान श्री नेमचन्द जी खजान्ची का बीकानेर आना हुआ। पू. गुरुवर्या श्री की प्रेरणा ने खजान्ची जी को शासन प्रभावना की शृंखला में एक और महत्वपूर्ण आयोजन करने को उत्साहित किया और उन्होंने उपधान तप आयोजित करने का निर्णय किया। इस महान् आराधना को पावन-निश्रा देने हेतु पधारने की विनती करने पू. गणिवर्य श्री मणिप्रभसागर जी म. सा. के पास जोधपुर गये। परम सौभाग्य था कि पू. गणिवर्य श्री ने स्वीकृति प्रदान करने के साथ उपधान तप के प्रवेश का मंगल मुहूर्त भी दे दिया।

आखिर वह दिन आ गया जिस दिन की प्रतीक्षा बड़ी बेसब्री से हो रही थी। तीन दिन पूर्व से ही प्रवेश की तैयारियां प्रारम्भ हो गयी थी। उपधानपति भी सपत्नीक जापान से आ गये थे। चारों ओर शहर की गलियों में हलचल मची हुई थी। शहरी परिसर के मुख्य मार्गों पर लगे हुए स्वागत द्वार, पर्दे उनके आगमन की सूचना दे रहे थे। वातावरण बड़ा ही आनन्दमय एवं उल्लासमय था। सभी के चेहरे एक अज्ञात आकर्षण से खिले हुए थे। सभी का मन समुत्सुक था पू. गुरुदेव के दर्शन करने को...हजारों आंखें बिछी हुई थी, उनकी एक झलक पाने को।

भाण्डाशाह जैन मंदिर बीकानेर का प्राचीन ऐतिहासिक कलात्मक गगनचुम्बी मन्दिर है। जिसे देखकर कापरड़ा तीर्थ की स्मृति तरोताजा हो जाती है। वास्तव में यह मन्दिर शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना है। पू. गुरुदेव का प्रवेश जुलूस यहीं से प्रारम्भ होना था।

8 बजे पू. गुरुदेव की अगवानी के लिये बीकानेर के प्रसिद्ध बैण्ड, भजन-मण्डलियां, घोड़े निशान आदि साज-सज्जा के साथ सैकड़ों की तादाद में जन समुदाय भाण्डाशाह मन्दिर की ओर उमड़ पड़ा।

ठीक 8.30 बजे भगवान महावीर...दादा गुरुदेव एवं पू. गुरुदेव के जयकारों के साथ पू. गुरुदेव को लेकर जुलूस मन्दिर से रवाना हुआ। सबसे आगे बीकानेर का प्रसिद्ध बैण्ड था...स्वागत धुन से वातावरण महक रहा था। संगीत की स्वर लहरियों के साथ सभी के मन थिरक रहे थे। हृदय पुलकित हो रहा था।

तत्पश्चात् थे परमश्रद्धास्पद, महाप्रज्ञ, ज्योतिर्धर गणिवर जी म. सा. अपनी शिष्य मण्डली के साथ। पू. गुरुदेव गम्भीर व चुस्त कदमों से कुछ आगे चल रहे थे। कुछ पीछे दायें-बायें मुनिद्वय चल रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो घनीभूत तेजपुंज अपनी आभा बिखेरता हुआ आगे बढ़ रहा हो। उनके पीछे था जयनाद के रूप में, हृदय के अमाप

आनन्द को अभिव्यक्त करता हुआ अपार जन समुदाय। बीच-बीच में गूंजते हुए नारे वातावरण को और अधिक जोशीला बना रहे थे। खुशी के मारे नवयुवक नाच उठे थे।

जनसमुदायक के पीछे था विशाल पूजनीया साध्वी मण्डल। उनके पीछे थी लाल रंग की चटकीली ड्रेसों में सजी संवरी सिर पर स्वागत घट लिये पंक्तिवद्ध चलती हुई लावण्यमयी किशोरियां। जो ऐसी लग रही थी मानो स्वर्ग की परियां धरती पर उतर आयी हों। उनके चेहरे पर छायी हुई प्रसन्नता एवं अधरों पर रमी हुई मुस्कान उनकी धर्म-श्रद्धा व भक्ति की साक्षी पूर रही थी। सिर पर घट थे, होठों पर नारों की गूँज थी।

उनके पीछे था रंग त्रिरंगी वेशभूषा में सुसज्जित महिला मण्डल। जो बीकानेरी राग में, समवेत स्वर में भाव भरे गीत गा रहा था। इस प्रकार जुलूस लम्बा अनुशासित एवं आकर्षक था। रास्ते के दोनों ओर खड़ी अपार भीड़ जुलूस के विस्तार को चौगुना कर रही थी।

जुलूस छबीली घाटी—सुरानों की गवाड़, वैदों का चौक, बाँठियों का चौक, आसानियों का चौक, रामपुरिया... खजान्ची...गोलच्छों की गवाड़ में से होता हुआ, नाहटों की गवाड़ में स्थित शहर के प्रमुख मन्दिर आदीश्वरजी पहुंचा। तीर्थाधिराज आदिनाथ परमात्मा की विशाल...नयनाभिराम, भव्य मूर्ति के दर्शन कर गिरिराज की स्मृति में मन विभोर हो उठा। वहाँ सभी ने पू. गुरुदेव के साथ चैत्य-वन्दन किया। पू. गुरुदेव ने अति मधुर स्वर में 'मैं आया तेरे द्वार पर कुछ लेकर जाऊंगा' स्तवन बोलकर सभी को भक्ति-रस में भिगो दिया।

वहाँ से भुजिया बाजार में स्थित शहर के सर्वाधिक प्राचीन मन्दिर चिन्तामणि जी गये। वहाँ प्रत्यक्ष प्रभावी दादा गुरुदेव श्री जिनकुशल सूरि जी के वरद हस्तों से प्रतिष्ठित, सर्वधातुमय आदिनाथ परमात्मा की अति प्राचीन प्रतिमा के दर्शन कर मन मयूर नाच उठा। मन्दिर के प्रांगण में बांयीं ओर दादा गुरुदेव की देहरी में कलिकाल कल्पतरु दादा गुरुदेव के दर्शन किये। इस मन्दिर के गर्भगृह में परम श्रावक कर्मचन्द बच्छावत के द्वारा लाई गई ग्यारह सौ से अधिक सर्वधातु की प्रतिमाओं का विशाल भण्डार है। इन प्रतिमाओं में कुछ प्रतिमायें सातिशय हैं। प्रायः आपातकाल में शान्ति के लिये इन प्रतिमाओं को बाहर निकाला जाता है।....बड़े समारोह पूर्वक आठ-दस दिन इनकी पूजा-भक्ति की जाती है ऐसी परम्परा है।

वहाँ से जुलूस रांगड़ी चौक होते हुए सुगन जी म. के उपाश्रय में पहुंचा। वहाँ पर अजित नाथ परमात्मा एवं क्रियोद्धारक...प्रकाण्ड विद्वान भक्त कवि क्षमा कल्याण जी म. की मूर्ति के दर्शन वन्दनादि करके उसी उपाश्रय में स्थानापन्न वयोवृद्ध साध्वी जी श्री सुन्दर श्री जी म. सा. को दर्शन देकर पू. गुरुदेव आगे बढ़े। रास्ता लम्बा होने पर भी लोक घटने के बजाय बढ़ रहे थे। जन-जन के मन में अपार उत्साह था। नारों की आवाजें और अधिक बुलन्द होती जा रही थीं। स्थान-स्थान पर गहुलियों के द्वारा उनके आगमन को बधाया जा रहा था।

शुभ मुहूर्त्त में पूज्य गुरुदेव श्री ने महावीर जैन भवन में प्रवेश किया। यहीं पूज्य गणिवर्य श्री का अभिनंदन व मांगलिक प्रवचन होना था।

आज के कार्यक्रम के संचालक श्रीयुत् सूरजमलजी पुगलिया ने कार्यक्रम के प्रारम्भ की घोषणा भगवान महावीर के जयघोष के साथ की। सर्वप्रथम सुषमा गुलगुलिया, मंजू नाहटा एवं प्रमिला नाहटा ने मधुर आवाज में वन्दना के रूप में अभिनन्दन गीत प्रस्तुत किया। जिसके बोल थे 'गणिवर! आत्मीय वन्दन है।' भजन के शब्द भाव एवं संगीत सभी कुछ इतने मधुर थे कि वातावरण माधुर्य से भर गया।

तत्पश्चात् श्री धनराज जी नाहटा ने पू. गुरुदेव का अभिनन्दन करते हुए यहाँ पधारने हेतु आभार व्यक्त किया। साथ ही जानकारी के लिए पू. गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया।

इसके बाद हर्ष विभोर बनी दो नन्ही-मुन्नी बालिकायें राजलक्ष्मी नाहटा एवं विनीता नाहटा ने 'आज सवेरे बैठ

मुंडेरे, कई-कई बोल्यो कागलियो' इस लोक गीत पर आधारित युगल नृत्य द्वारा लोगों को झूमा दिया।

अनेक वक्ताओं ने पू. गुरुदेव का भाव-भरा अभिनन्दन करते हुए बीकानेर पधार कर संघ पर जो कृपा की, उस हेतु हार्दिक आभार व्यक्त किया।

परम पूजनीया गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्रीजी म. सा. ने अपने प्रवचन में पूज्य गुरुदेव श्री के गुणात्मक वर्णन के साथ कहा कि पूज्य गुरुदेव श्री को बीकानेर लाने का सारा श्रेय उपधानपति श्री नेमचंदजी खजाची को है।

पूज्य गुरुदेव गणिवर्य श्री ने अपने मंगल प्रवचन के प्रारम्भ में बीकानेर की भूमि को परम पुनीत बताते हुए इसे प्रणाम किया। उन्होंने कहा—बीकानेर नगर से तो हमारी गुरु परम्परा का घनिष्ठ संबंध रहा है।

उन्होंने कहा—उपधान का ही निमित्त मिला है, जो मैं आज पूर्वजों से जुडी इस भूमि के पवित्र परमाणुओं को पा सका हू। ये सारा श्रेय साध्वी श्री हेमप्रभा श्रीजी को है। उन्हीं के उपदेश से उपधान तप का आयोजन श्री खजांची जी द्वारा किया जा रहा है।

उन्होंने उपधान में अधिक से अधिक श्रावक-श्राविकाओं को सम्मिलित होने की प्रेरणा दी।

हाँ! मैं यह लिखना तो भूल ही गई... आज मेरी गुरुबहिना पूजनीया कल्पलता श्रीजी म. सा. ने अपने उद्‌गारों से पूज्य गुरुदेव श्री का अभिनंदन किया था।

मैं उनके चेहरे पर छाये श्रद्धा के भावों को देख रही थी जो अपार हर्ष और अथाह आनन्द के कारण अपनी चमक दिखा रहे थे। मैंने सोचा—स्वाभाविक है यह हर्ष! क्योंकि उनकी जन्मभूमि पर पूज्य गणिवर्य श्री का आज पदार्पण हुआ है। उन्होंने कहा—बीकानेर नगर आज आपको अपने बीच पाकर धन्य हो उठा है। इस भूमि का कण-कण श्रद्धा की बीणा के तार हिला रहा है।

प्रवेश समारोह अद्‌भुत था। पूज्य गणिवर्य श्री मांगलिक सुनाकर शीघ्र 'उपधान' की प्रारंभिक तैयारियों का निरीक्षण करने लगे।

कुछ ही देर बाद वे पूजनीया गुरुवर्या श्री के साथ एतद् विषयक वार्तालाप कर रहे थे। गुरुबहिन पू. कल्पलता श्रीजी म. सा. ने गणिवर्य श्री से निवेदन कर यह बताया कि किस प्रकार पूजनीया गुरुवर्या श्री ने घर-घर जाकर उपधान में बैठने के लिए पुरुष वर्ग व स्त्री वर्ग को प्रेरणा दी। और उसी प्रेरणा का तो यह परिणाम था कि बड़ी संख्या में भाई बहिन महान् तप में शामिल हो रहे थे।

नगर की प्राचीर से दुन्दुभि बज उठी है, मन्दिर के घंट डोल उठे हैं, सुबह के आठ बजे हैं ... हमारा आर्यामण्डल दैनिक क्रिया-विधि विधानों से निवृत्त हो चुका है। घडी ने अभी-अभी आठ टकोरे लगाये हैं।

मुझे गुरुवर्या श्री ने काफी दिन पहले ही यह आदेश दे दिया था कि मुझे गुरुदेव श्री के प्रवेश से लेकर माल महोत्सव तक सारा घटना-चक्र अच्छी तरह देखना है और उसमें अपना दृष्टिकोण मिलाते हुए लिपिबद्ध करना है। मेरी योग्यता के बाहर था यह कार्य। पर आदेश तो आदेश ही होता है फिर मुझे कौनसी योग्यता नापनी है। यह कार्य तो गुरुवर्या श्री का ही है क्योंकि जब मैं पूर्णतया समर्पित हो चुकी हूं तो फिर मेरे विषय में निर्णय लेने वाली मैं कौन होती हूं? ना-नुकुर का तो कोई सवाल ही नहीं था। आदेश सुनते ही मेरी आंखें झुकी। मैंने सिर झुकाया और इस तरह आदेश के परिपालना को अभिव्यक्ति दी।

आज का दिन बड़ा महत्त्वपूर्ण दिन है। दिसम्बर 1988 की 10 तारीख है—शनिवार है, प्रतिपदा है मिगसर शुक्ल पक्ष की। मैं कमरे से बाहर निकली...नीचे हॉल में कदम रखा—देखा सारा हॉल ठसाठस भरा हुआ है। महिलाएं/कुमारिकाएं दौड़ रही है। उनके चेहरे पर अनोखा उत्साह स्पष्ट दिख रहा है। महिलाओं का उत्साह गंभीरता लिए है जबकि कुमारिकाओं का उत्साह निर्दोष अल्हड़पन लिये नजर आ रहा है। बस! लगता है ये तरंगें यूं ही बनी रहें और मैं बस आनन्द की उर्मियों को नजरों से पीती रहूं। स्वाभाविक था यह आनन्द। आज ये सब गुरुदेव श्री की निश्रा में एक अति विशिष्ट अभियान में सम्मिलित होने जा रही हैं, एक तरह से ये सब 51 दिनों के लिए समर्पित हो

रही हैं...शासन के प्रति.. आगम के प्रति...अपनी आत्मा के प्रति...।

सभी जा रही हैं महावीर जैन भवन की ओर जहाँ पूज्य गणिवर्य श्री उपधान प्रवेश की सारी तैयारियों का निरीक्षण कर चुके हैं। हॉल भर गया है लगभग 180 स्त्री-पुरुष पौषध के वस्त्रों में सज-धज कर आ चुके हैं। पूज्य गुरुदेव श्री की आज्ञानुसार उन्होंने प्रातः ही प्रतिक्रमण आदि क्रियायें कर ली थीं। परमात्मा की पूजा भी कर ली थी। चावल, नारियल, रोकड़ रुपये आदि सामग्री लेकर आये थे।

नंदी विधान हो चुका था। पूज्य श्री पाट पर विराजमान थे। पू. आर्या-मण्डल आ चुका था'

उपधान प्रवेश की क्रिया में करीव घंटा भर लगा और उसके वाद पूज्य गुरुदेव श्री ने सभी को विधिवत् पौषध उचरा दिया। सभी उपधान वालों को अव 51 दिनों के लिये (35-28 दिनों के लिये) लगभग साधु जैसी चर्या करनी थी। उनकी भाषा, उनका व्यवहार सब कुछ वदलना था।

उपधान प्रवेश के समय सभी के चेहरे कमल की तरह खिल रहे थे। पूज्य श्री ने सभी को आलोचना डायरियां वंटवा दी। सवको क्रिया विधि विधान का प्रारंभिक मार्ग-दर्शन दिया। उपधान के दिनों में क्या करना है, कैसे रहना है? सारी वातें समझाई। श्री नेमचन्द जी खजाञ्ची ने सभी आराधकों का आभार माना।

उपधान के दिन एक-एक कर वीतते जा रहे थे। ज्ञाता पूर्वक तप और ज्ञान पूर्वक क्रिया का अद्भुत सामंजस्य था। हमेशा पू. गुरुदेव श्री क्रियाओं का हेतु समझाते....प्रशिक्षण देते। दिन व्यतीत होते जा रहे थे।

सभी व्यवस्थित हो चुके थे। तपस्वियों का दिन कव उगता कव पूरा होता, कुछ पता ही नहीं चलता। इतना व्यस्त कार्यक्रम था और कोई ऊव नहीं, कोई अन्यमनस्कता नहीं, कोई उद्विग्नता नहीं।

प्रातः 3.30 या 4 वजे लगभग उठना, 100 लोगस्स का कायोत्सर्ग करना, प्रतिक्रमण करके पड़िलेहन करना, उसके वाद महावीर जैन भवन में गुरुदेव श्री के पास क्रिया करना, फिर चतुर्विध श्री संघ के साथ मंदिर दर्शन करना, फिर प्रवचन श्रवण करना, उग्घाड़ा पोरिसी की क्रिया करके देव-वन्दन की क्रिया करना। वाद में प्रतिदिन के 100 खमासमणे देना, जो गुरुदेव श्री स्वयं दिलाते थे। तव तक पुरिमड्ढ का समय आ चुका होता। वाद में एकासना करते। उपवास के दिन स्वाध्याय या माला जाप करते। शाम पड़िलेहन कर पुनः क्रिया मंडप में शाम की क्रिया होती। वाद में प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, जाप, संथारा करके शयन करते।

यही उनकी दिनचर्या थी। समय गुजरता जा रहा था। उत्साह व आनन्द दिनोदिन गुणित हो रहे थे। तप के अनुसार वाचनाओं का क्रम भी जारी था। पूज्य श्री वाचना के पदों का तीन वार उच्चारण करवाते। वाद में उस सूत्र का गंभीर अर्थ विशिष्ट शैली में समझाते।

आराधक आश्चर्य-चकित थे। आज तक उन्होंने ऐसा रहस्य नहीं सुना था। जो दूसरा व तीसरा उपधान कर रहे थे वे इस उपधान में ही सारा महत्व, हेतु व उद्देश्य समझ पा रहे थे। इतना खुला, सरल, शास्त्रीय विवेचन श्रवण करने का उनका प्रथम अवसर था। व्यस्तता जव सघन होती है, तो पता नहीं चलता कि समय कव पूरा हो गया।

देखते-देखते 20 दिन पूरे हो गये। प्रथम वीसड़ पूरा हुआ। इक्कीसवें दिन मंगल प्रभात में दूसरे वीसड़ में प्रवेश हुआ। दो वहिन श्रीमती कमला जैन व सुश्री सरिता सेठिया (गंगाशहर) उत्कृष्ट मूल विधि से लगातार 16 उपवास द्वारा तीसरा उपधान करना चाह रही थी। उन्होंने आज उपधान में प्रवेश किया।

तपश्चर्या के कारण आराधकों का शरीर अवश्य कृश हो रहा था किन्तु चेहरे पर आध्यात्मिक तेज की गहरी छाप स्पष्ट दिखाई दे रही थी।

एकासणों की व्यवस्था भी वड़ी शानदार रहती। कार्य-कर्त्ता गण वड़ी मेहनत से सारा काम करते। कार्यकर्त्ताओं ने

दो मास का घर से जैसे संन्यास ले लिया था। वास्तव में जब तक कार्यकर्त्ताओं की एक व्यवस्थित टीम नही बनती तब तक कोई कार्य पूर्ण सफल नहीं होता।

और फिर पूज्य गुरुदेव श्री पुरुषों के एकासणे की पूरी देखरेख करते। उन्होंने एक रोज कहा भी था–'ये सब उपधान वाले मेरे धर्म-परिवार के अंग हैं, इसकी सार संभाल करना मेरा कर्त्तव्य है, मेरी जवाबदारी है।' पूज्य गणिवर्य श्री के शब्द, प्रेम छलकाती आंखें वात्सल्य व करुणा बरसाती मुस्कान ये सब उनकी परम प्रगाढ आत्मीयता के प्रतीक थे और सब उपधान वालों के जेहन में परत्व में अपनत्व का संचार कर रहे थे।

पूजनीया गुरुवर्या श्री उपधान करने वाली बहिनों की पूर्ण देखरेख करती। चाहे एकासणे का समय हो, चाहे क्रिया का, चाहे प्रतिक्रमण का हो, चाहे प्रतिलेखन का। पू. गुरुवर्या श्री हर क्रिया को समझाती थी एव उनकी सार संभाल करती थी।

उपधानवाही भी परस्पर एक दूसरे के सहयोगी बने हुए थे। यह बड़े आश्चर्य की बात थी इतना लंबा समय-इतनी बड़ी सख्या होने पर भी एक समय के लिये भी ऐसी शिकायत नही आयी कि कोई आपस मे लड़ रहे हैं।

सबके हृदय मे एक दूसरे के प्रति प्रेम था। यह पूज्य गणिवर्य श्री के विशिष्ट उद्बोधन, उनके प्रवचन, उनकी वाणी और उनकी आत्मीयता का ही प्रभाव था। उसी जादू ने सबको एक डोर मे बांध रखा था।

पुरुष-वर्ग ने तो पूज्य श्री के निर्देशानुसार अपना अध्यक्ष श्री भवरलालजी लोढा को चुना था। पाली निवासी श्री लोढाजी स्वय परम आराधक, परमात्मा के प्रति पूर्ण समर्पित परम श्रद्धालु तथा क्रिया विधि विधान के रहस्य वेत्ता हैं, अल्प कषायी है सबको साथ लेकर चलने वाले है। उन्होंने अध्यक्ष पद की जवाबदारी बडी शान से निभाई। हर व्यक्ति को समय पर सारी क्रियायें बड़ी सरलता, सहजता से करवाई। देरी के कारण भी कभी क्रोधित नहीं हुए। पुरुष-वर्ग, स्त्री-वर्ग सभी मे आनन्द छाया हुआ था। मैंने कई बाइयों से इस विषय में वार्तालाप किया और यह जानना चाहा कि तपश्चर्या क्रिया में इतना आनन्द क्यों आ रहा है? क्या बात है?

उन्होंने मुझे बताया—'हमें तो पता ही नहीं चल रहा कि हम तपश्चर्या कर रहे हैं। उपवास का आभास ही नहीं होता।' एक बाई ने कहा 'इत्तो सोरो उपवास, इत्ती सोरी तपस्या कदे ही कुनी हुई। ओ तो सघनो गुरु महाराज रे वासक्षेप रो ही ज प्रभाव है, जिणमु ठा इ कोनी पड़े।'

उसने अपनी भाषा में अपना अनुभव अभिव्यक्त किया। सबसे छोटी उम्र (15 वर्ष) की बालिका बसकर खजांची से मैंने पूछा तो उसने कहा, आज तक मैंने इतनी उम्र में कभी उपवास छोड़ एकासना भी नहीं किया। उपधान तप के प्रवेश से पूर्व मुझे बहुत डर था। मैं कैसे कर पाऊंगी इतने उपवास? पूजनीया गुरुवर्या श्री के वात्सल्य की अप्रत्यक्ष पर मजबूत डोर के बल वश खिंची चली आई। उनका प्रेम ही मेरी जिद बना और घरवालों की इजाजत बड़ी मुश्किल मे मिली। फिर मुझे नवकार मंत्र के सिवाय और कुछ आता ही नहीं। पर अब तो मुझे कुछ पता ही नहीं चलता, मैं स्वयं असमंजस की स्थिति में हूँ कि मैं इतने उपवास इतनी क्रिया कैसे कर पा रही हूँ?

और यह सब कहने के साथ ही उसने अपनी आंखें बन्द की और कहा—बस गुरुदेव श्री की कृपा और उनका चमत्कार ही इसमें कारण है, मैं तो यही मानती हूँ। अब तो बस ऐसा लगता है ये दिन मेरे जीवन में स्थाई बन जाय।

पूज्य गुरुदेव श्री के समक्ष ये सब बातें होती तो गुरुदेव श्री फरमाते यह सब आपकी आराधना का ही परिणाम है। और मुझे याद है प्रातःकालीन या सायंकालीन क्रिया के समय सारे उपधानवाही पूज्य गुरुदेवश्री को द्वादशावर्त्त वंदन करते समय जब पूज्य गुरुदेव श्री सभी तपस्वियों को साता पूछते तब सारे तपस्वी एक साथ बोलते 'आपकी कृपा से' सारा हॉल गूंज जाता। और फिर तपस्वी एक साथ गुरुदेव की शाता पूछते—'आपके सुख शाता है। तब गुरुदेव श्री मुस्कुराते हुए कभी-कभी कहते 'आपकी कृपा से' और

इस समय सारे तपस्वी निश्छल हंसी से आनन्द का अभिव्यक्त करते। गुरुदेव श्री कहते—'आपकी तपश्चर्या, आपकी आराधना, आपकी शुद्ध क्रिया बस। इसी से आनन्द है। तप का ही यह प्रसाद है।

उनके शब्दों में लघुता प्रगट होती—यही तो उनके प्रभुता की कसौटी है।

उपधानपति श्री नेमचन्द जी खजांची प्रवेश कराकर जापान चले गये थे। उनकी धर्मपत्नी सौ. आशा देवी ख़जांची यहीं थी। वे दिन-रात तपस्वियों की व्यवस्था में जुटी रहती थी। बड़ा आत्म संतोष उन्हें प्राप्त होता था। उपधान तप के कार्यकर्त्ता श्री पन्नालाल जी, हेमन्त कुमार पुगलिया आदि प्रतिदिन सारे उपधानवाहियों से व्यक्तिगत रूप से मिलते और उन्हें शाता पूछते। कोई भी कार्य हो, करते। तपस्वी-गण इस व्यवस्था से वहुत तृप्त थे।

दो वहिनों के 16 उपवास की लगातार तपश्चर्या चल रही थी। पू. गुरुदेव श्री ने उपधान तप प्रारम्भ होने से पूर्व उपधान की महिमा, उसका हेतु आदि शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में समझाया था। उन्होंने कहा था—उपधान ही मूल आधार है जहां से व्यक्ति आत्माभिमुख होने की प्रक्रिया का प्रारम्भ करता है। उन्होंने शास्त्रीय सिद्धान्तों का विवेचन करते हुए उपधान की व्याख्या की थी और उपधान तप की आराधना के मूल स्वरूप से लेकर बाद में आये परिवर्तन और उनका हेतु समझाते हुए वर्तमान स्वरूप का विवेचन किया था। उस दिन जव ये प्रवचन सुना तो इन दोनों के मन में था कि हम उत्कृष्ट मूल विधि से ही उपधान करेंगे। कु. सरिता सेठिया ने छोटी उम्र होने पर भी लगातार 16 उपवास करके और साथ ही सारी क्रियायें विधिवत् करके सम्यक्त्व की गुण श्रेणियां प्राप्त की है।

दोनों वहिनों का श्रीसंघ की ओर से भाव-भरा अभिनन्दन किया गया।

प्रतिदिन प्रवचन चलते पूज्य गणिवर्य श्री के। उनके प्रवचन के पूर्व उनके आदेशानुसार प्रतिदिन 15 मिनट का प्रवचन हमारी छोटी साध्वी मंडल का होता। पूजनीया कल्पलता श्री जी म. पू. अमितयशा श्री जी म., विनीतप्रज्ञा (मेरा) शुद्धाञ्जना श्री जी, शुभ्रांजना श्री जी आदि क्रमशः प्रवचन देते।

एक मास से अधिक समय वीत चुका था।

उपधानवाही युवक नरेश गोलछा ने उपवास प्रारम्भ कर दिये थे।

इस वर्ष पूजनीया गुरुवर्या श्री का वीकानेर चातुर्मास वीकानेर की जनता पर स्वर्ण छाप अंकित कर गया। पूजनीया गुरुवर्या श्री की वाणी, उनका मधुर व्यवहार उनके ओजस्वी, तेजस्वी, हृदय के मर्मस्थल से छूने वाले जीवन को आमूलचूल परिवर्तन कर देने वाले प्रवचनों की शृंखला से यहां के जन-जन का मन-मानस अत्यन्त प्रभावित हुआ। युवा पीढ़ी जो प्रायः धर्म को ढकोसला कहकर उसमे दूर रहती है, इस वर्ष पूजनीया गुरुवर्या श्री के शब्दों, प्रवचनों से खिंचे चले आये! प्रतिदिन प्रवचन में युवक लोगों की भीड़ रहती। नरेश गोलछा पहली वार संतों के समीप आया इस चातुर्मास में। और फिर तो ऐसी लगन लगी कि वस चातुर्मास में मास क्षमण की आदर्श तपश्चर्या की थी। छोटी उम्र में मास क्षमण जैसी वड़ी तपस्या करके समाज के सामने एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया।

उसने 21 उपवास करके माला परिधान करने का ठान लिया था। तपश्चर्या वड़े आनन्द के साथ चल रही थी।

ता. 29-1-89 को मालारोपण विधान का मुहूर्त था। ता. 23-1-89 से अट्ठाई महोत्सव प्रारम्भ होना था।

इस वीच एक महत्वपूर्ण घोपणा हुई—कुमारी शोभा की दीक्षा की। शोभा चार वर्षों से अध्ययन रत थी। उसकी तपस्या फल रही थी, उसका लक्ष्य पूरा हो रहा था। प्रवचन के दौरान कु. शोभा के परिवार जनों द्वारा करवद्ध प्रार्थना करने पर पू. गणिवर्य श्री ने कुमारी शोभा को खरतरगच्छ श्रमण-मंडल में प्रव्रजित करने की घोपणा की तथा ता. 29-1-89 का शुभ मुहूर्त प्रदान किया।

माहौल में गर्माहट आती जा रही थी। वाहर से दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती थी।

मालारोपण का विधान-दिवस नजदीक आता जा रहा था। आमंत्रण पत्रिकायें प्रेषित की जा चुकी थी। दीक्षार्थिनी शोभा के वन्दोले के कार्यक्रम चल रहे थे। अट्ठाई महोत्सव प्रारम्भ हो गया था। सारे कार्यक्रमों की घोषणा हो चुकी थी। निर्णय के अनुसार ता. 28-1-89 को प्रातः दीक्षार्थिनी का अभिनन्दन, उपधानपति अभिनन्दन, कार्यकर्त्ता अभिनन्दन का कार्यक्रम था। जबकि मध्याह्न में 2 बजे वरघोडे का आयोजन था और रात्रि में 'बोलियों' का कार्यक्रम निश्चित किया गया था। उपधानपति श्री नेमचन्द जी खजांची जापान से आ गये थे। कब, किस वक्त, कहां, क्या होगा! यह सारा निर्णय कागज पर उतर आया था। पूज्य गणिवर्य श्री के निर्देशानुसार कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु विभिन्न कार्यकर्त्ताओं को कार्य सौंपे जा चुके थे। आवास व्यवस्था कांतिलाल कोचर एण्ड ग्रुप के जिम्मे थी, जबकि वरघोडे का संचालन पन्नालाल जी नाहटा, जिनेन्द्र कुमार नाहटा को सौंपा गया था। मालारोपण के मंच आदि की महत्त्वपूर्ण जवाबदारी कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री सूरजमल जी पुगलिया संभाल रहे थे।

कार्यकर्त्ताओं का पारम्परिक सामंजस्य, कार्य में सफलता, दक्षता व शीघ्रता लाता है। इस सूक्ति का परिणाम यहां प्रत्यक्षतः दृष्टिगोचर हो रहा था।

कैलेण्डर में आज की तारीख के खाने में 28 का अंक था, सुबह से ही हलचल जारी थी।

पूज्य गुरुदेव श्री ने जब दस्साणियों के चौक में बने भव्य पांडाल में प्रवेश किया तो गुरुदेव श्री के जयकार के साथ संचालक सुमेर जी जैन ने उनका अभिनन्दन किया। पू. श्री के मंगलाचरण के साथ ही कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। वक्ताओं ने अभिनन्दन के विषय में उपधानपति के विषय में उनकी दानशीलता के बारे में, तप के बारे में, दीक्षा के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये। वक्ताओं में श्री तनसुखराज जी डागा, सूरजमल जी पुगलिया, पुखराज जी बेगानी, अशोककुमार डागा, घनराज जी नाहटा आदि प्रमुख थे। सुषमा, सुनीता ने गीत भी प्रस्तुत किया।

पूजनीया बहिना साध्वी कल्पलता श्री जी म. ने अपनत्व भरी भाषा में कुमारी शोभा के वैराग्य काल का विवेचन प्रस्तुत किया और दीक्षा के महत्व को समझाते हुए संकल्प की महिमा प्रस्तुत की। साध्वी शुभ्रांजना श्री जी ने पूजनीया गुरुवर्या श्री के उपकार भावों को स्पष्ट किया और कहा गुरुवर के चरणों में ही आत्मशान्ति की वीणा गूंजती है।

उपधानपति के अभिनन्दन का समय हो चुका था। खरतरगच्छ श्री संघ की ओर से उनका भावभीना अभिनन्दन किया गया।

मैं सोच रही थी उनका अभिनन्दन उनकी दानवीरता का अभिनन्दन है। श्री खजांची जी भाव-विभोर हो रहे थे। उपधान आराधकों ने उनका भावभीना अभिनन्दन किया। इनकी ओर से उपधान आराधक पवन जी पारख ने उपधानपति का आभार माना। इसके अलावा श्री चिन्तामणी जैन मन्दिर प्रन्यास, श्री जैन पाठशाला सभा, वीरायतन-राजगृह आदि विभिन्न संस्थाओं ने भी इस अवसर का लाभ उठाते हुए उनका स्वागत अभिनन्दन किया। विशाल पांडाल खचाखच भरा हुआ था।

कार्यकर्त्ताओं का अभिनन्दन चातुर्मास समिति की ओर से, उपधान आराधकों की ओर से किया जा चुका था। अब जबकि मैं मंच की ओर देख रही हूं वहां कुमारी शोभा के माता-पिता खड़े हैं और उनका अभिनन्दन किया जा रहा है। निश्चित ही ये अभिनन्दन के अधिकारी है। इन्होंने शोभा की दृढ़ भावना देखते हुए दीक्षा की अनुमति प्रदान कर शासन में रत्न प्रदान किया है।

माइक पर खड़ी थी कुमारी सुनीता डागा। कुमारी शोभा डागा की छोटी बहिन। गंभीर मुद्रा में अपनी उम्र को जैसे झुठलाती हुई खड़ी थी। छोटी सी उम्र में इतनी गंभीरता! पर ओह! अब मुझे समझ में आया—आज तो गंभीरता का ही माहोल था उसके लिये। उसकी बड़ी दीदी शोभा डागा संसार से मुक्त हो रही थी, उसका साथ छोड रही थी। साथ-साथ पढ़े, साथ-साथ खेले, साथ-साथ गुरुवर्या श्री की निश्रा में रहे।

उसने अपनी मन की वेदना को बड़ी मुश्किल से गंभीरता के घने लवादे तले छिपाया था।

उसने गीत गाया। गीत के बोल हृदय के कोने-कोने को झकझोरने वाले थे—

संयम के रास्ते पर मेरी दीदी जा रही हैं ।
सुन के मेरी आंखें, आंसू वरसा रही हैं ।।टेर।।

चन्दन सी महकती है, कितनी कोमल काया ।
छोटी सी उमरिया में, मन में संयम भाया ।
हंसती खिलती दीदी, दुनिया तज जा रही है ।।1।।

दीदी संग रहती थी, हरदम मुस्काती थी ।
किसका भी काम हुए, वो दौड़ी आती थी ।
इस पल वो निष्ठुर बन, हमको तज जा रही है ।।2।।

इसको न लगे अच्छा, दुनिया का सुख सारा ।
बस इसका मन चाहे, गुरु मणि शरण प्यारा ।
वस इनका मन चाहे, गुरु हेम शरण प्यारा ।
मां वाप सगे भाई सव छोड़े जा रही है ।।3।।

तुम जाओ दीदी जाओ, पर आशिष इक देना ।
मत जाना भूल मुझे, मेरा हाथ पकड़ लेना ।
तेरी याद में तो मुझको, रुलाई आ रही है ।।4।।

मेरी चाह यही इक है, मैं भी दुनिया छोड़ूँ ।
ले गुरु संयम शरणा, सव कर्मों को तोड़ूं ।
यही आशीष दो मुझको, सुनीता गा रही है ।।5।।

गीत पूरा होते-होते आँसू आंखों से वह चले थे। अव उस वेदना की बाढ़ को रोक पाना असंभव था और गीत पूरा होते ही वहीं मंच पर खड़े-खड़े रो पड़ी, रोई ही नहीं, उसने हर व्यक्ति को रूला दिया। पास ही वैठे उपधानपति श्री नेमचन्द जी खजांची की धर्मपत्नी सौ. आशा देवी तो फफक कर रो पड़ी। उनकी पुत्रवधू सौ. शशि जी भी अपने आंसूओं को नहीं रोक पायी। चारों ओर वातावरण वोझिल वन गया।

वह वेदना-दृश्य स्मृति पटल पर अव भी ज्यों का त्यों उभर रहा है, पर शब्दों में ढालना नामुमकिन है।

और कुछ ही पलों वाद वह घड़ी आ पहुंची जिसका सभी वेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। वैराग्यवती कुमारी शोभा का अभिनन्दन।

अभिनन्दन का तिलक, माला, श्रीफल अभिनन्दन आदि औपचारिकताएँ पूरी होने के वाद कुमारी शोभा ने प्रत्युत्तर दिया। मैं यह देखकर दंग रह गई कि उसके शब्दों में कितना जोश था, कितना माधुर्य था और कितना व्यवस्थित, संतुलित और विषय के अनुसार उसका भाषण था। अपनी उम्र में पहली या दूसरी वार वोल रही थी। इतनी भीड़ के सामने वड़े-वड़े भी जव खड़े होते हैं तो पांवों तले की जमीन खिसकने का भय भरा अनुभव होने लगता है जवकि ये तो गरज रही थी, वरस रही थी, आंखों में प्यास लिये गुरुकृपा को तरस रही थी।

कुछ पल तो मैं उसके शब्दों को प्रयत्न करने पर भी नहीं सुन पाई क्योंकि मेरा सारा ध्यान उसके तेज से चमकते चेहरे पर और दमकते शब्दों पर ही केन्द्रित था। मैं आश्चर्य चकित होने के साथ-साथ अभिभूत भी हो उठी थी। मेरे मन में वड़ा प्रेम जाग उठा था उस पल। रह-रहकर मुझे होता था कि मैं उठूं और उसके इस तेज का, संकल्प का, सिंह गर्जना का अभिनन्दन करूं।

वह वोल रही थी,'मेरे प्राण तो मेरी गुरुवर्या श्री ही हैं उनकी कृपा वरस पड़ी और मेरे भीतर संयम का पौधा लग गया। उनकी शीतल छांव में ही मेरे थके–भूखे–प्यासे-अतृप्त मन को अनोखी तृप्ति, सन्तोष, शांति का वरदान मिला।' मैं ध्यान पूर्वक उसके भाषण के भावों को पकड़ रही थी।

वह संयम की व्याख्या कर रही थी, उसके प्रति उत्कंठित होकर अनुमोदना कर रही थी।

उसने कहा—अभी-अभी मेरी प्रिय वहन सुनीता ने गीत गाया, उससे मेरे मन के तार झनझना उठे। उसने एक वाक्य कहा—तुम जाओ पर मुझे भी अपने साथ ले जाओ। मैं कहती हूं—मेरा हाथ सदैव तुम्हारा इन्तजार करेगा। यदि तेरा संकल्प दृढ़ है तो इस दुनिया की कोई ताकत तुम्हारे कदमों का कांटा नहीं वन सकती। कोई वाधा तुम्हारी राह का रोड़ा नहीं वन सकती।

ओजस्वी शब्दों का चयन सभी श्रोताओं के हृदय को हिला गया।

लोगों की आंखों से आँसू बह चले। यही बालिका कल संसार की माया को तिलांजलि देकर सम्यग् सुख को पाने मयम पथ का अनुसरण करेगी।

पूजनीया गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. ने अपने प्रवचन में सबका अभिनन्दन किया, विशेष तौर पर पूज्य गणिवर्य श्री का। उन्होंने अपने ही प्रवचन का सार एक पद्य द्वारा अभिव्यक्त किया—

गणिवर आप शासन के ताज हैं।
आपकी क्षमता पर हमें बहुत-2 नाज है।
अमर रहे प्रशासन आपका युग-युग
मारे संघ की यही एक मंगल आवाज है।

बाद में कुमारी कान्ता बोथरा के साथ-साथ जयपुर से आई चार वैरागिन बहिनों का भी अभिनन्दन किया गया। समय काफी हो चुका था। श्री पन्नालाल जी खजांची, सूरजमल जी पुगलिया आदि बेचैन नजर आने लगे थे क्योंकि समय ज्यादा हो चुका था फिर भोजन व्यवस्था के बाद वरघोड़े की तैयारिया करनी थी।

पर आज के कार्यक्रम की भव्य सफलता का हर्ष भी उनकी आंखों मे, उनके चेहरे पर डोल रहा था।

श्री पन्नालाल जी खजांची माइक पर प्रगट हुए और उन्होंने दो वाक्य में सभी का, श्रीसंघ की ओर से आभार माना। कार्यक्रम पूरा हो चुका था। लोग पांडाल से बाहर जा रहे थे। मैं पूजनीया गुरुवर्या श्री के साथ उपाश्रय की ओर जा रही थी....मैं सोच रही थी कि कार्यक्रम की सफलता कार्यकर्त्ताओं की कटिबद्धता पर ही निर्भर है। दो मास तक उपधान की आराधना का जो व्यवस्थित क्रम चला, उसके मूल मे तीन कार्यकर्त्ताओं का प्रमुख योगदान था। इनका गठबंधन ही मूल हेतु था। मैंने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया है। श्री पन्नालाल जी खजांची जो सूत्रधार बने थे... वे तो 'ऑल राउण्डर' थे। दूसरे थे श्री सूरजमल जी पुगलिया जिनके जिम्मे सम्पर्क, व्यवहार, ऊपरी देखरेख आदि कार्य थे। तीसरे थे श्री धनपतसिंह जी खजांची जिन्होंने दो मास तक का पूरा समय आराधना को समर्पित कर दिया था। सुबह से शाम तक सारा कार्य संभालना....एकासणे आदि की जो नींव की व्यवस्थाएं थी वो सारी जवाबदारी श्री धनपत बाबू ही संभालते थे! शरीर से फुर्तीले, चेहरे से गम्भीर नजर आने वाले श्री धनपत जी मृदुभाषी, अल्पभाषी और स्पष्टभाषी व्यक्ति हैं। वे बोलते कम हैं काम ज्यादा करते है।

मैं सोचती जा रही थी....अचानक मेरा ध्यान साथ चल रही बहिनों के वार्त्तालाप की ओर गया। वे आपस मे कह रही थी—जल्दी चलो, जल्दी तैयार हो जाओ, वरघोड़े में चलना है।

मेरा ध्यान बंट गया। और मैं वरघोड़े का काल्पनिक दृश्य मस्तिष्क में संजोये उपाश्रय पहुंच गई।

लगभग सभी उपधान आराधकों के आज उपवास था। अधिकतर आराधकों ने अट्ठम (तेला) के प्रत्याख्यान किये थे। आज उनके बेला था। मैं बड़ी देर से उन आराधकों का चेहरा देख रही थी, उन छोटी बालिकाओं को निहार रही थी, पर कही भी थकान या उदासी नजर नही आ रही थी। सभी प्रसन्न थे, प्रफुल्लित थे। अभिनन्दन का कार्यक्रम हो चुका था। कुछ ही देर बाद उन्हें वरघोडे में उपस्थित होना था। समय कम था और काम ज्यादा था, उससे भी ज्यादा जोश था...उत्साह था...लगन थी व आनन्द था। देववदन आदि क्रियाएँ करके सभी आराधक वरघोड़े मे शामिल हो चुके थे।

समूचे बीकानेर नगर में गली-गली, गवाड़-गवाड़, मुहल्ले-मुहल्ले मे एक ही चर्चा थी। उपधान का महोत्सव ही चर्चा का केन्द्र बिन्दु बना हुआ था। उपधानपति श्री नेमचन्दजी सौ. आशा देवी उनका परिवार आज परम आनंदित था। आराधको के आनन्द ने उनके आनन्द को द्विगुणित किया था।

कार्यकर्त्ता गण दिन-रात जुटे हुए थे। न रात में नींद ली थी, न समय पर भोजन कर पाये थे, हां'''कभी-कमार

उनके हाथों में चाय का कप जरूर दृष्टिगोचर हो जाता था। पर उस समय भी मेरा अनुमान है कि मन में तो कार्यक्रम की संयोजना का चल-चित्र ही घूमता रहा होगा।

श्री पन्नालाल जी खजांची इधर-उधर दौड़ भाग कर रहे थे। दोपहर ठीक 2 वजे वरघोड़ा प्रारम्भ होना ही था। शहर के सबसे प्राचीन जिन मंदिर श्री चिंतामणि जी के मंदिर की ओर सभी के कदम वढ़े जा रहे थे। वहीं से वरघोड़ा शुरू होना था। कार्यकर्त्ता गण पूर्व तैयारी में लगे थे। मैं देख रही थी, कार्यकर्त्ताओं के चेहरे पर कभी तनाव नजर आता और उस कारण इधर-उधर दौड़ रहे होते, कभी इष्ट प्राप्ति का आनन्द चेहरे पर लहरा रहा होता और वे मुस्कान द्वारा अभिव्यक्त करते।

वरघोड़ा समय पर रवाना हो जाय और व्यवस्थित चले, यह उनका मुख्य लक्ष्य था। वरघोड़ा वहुत लम्वा था, क्योंकि वैंड, मंडल, अन्य प्रदर्शनियां लवाजमा आदि विशाल संख्या में था। वर्षीदान भी आज ही हो रहा था।

कार्यक्रम के सूत्रधार वने पन्नालाल जी खजांची, सूरजमल जी पुगलिया, प्रकाश जी सेठिया, पन्नालाल नाहटा, जिनेन्द्रकुमार नाहटा, केसरीचंद जी सेठिया मुनीम जी आदि सामग्री व लवाजमे को व्यवस्थित, क्रमवद्ध करने में जुटे थे। इनकी भाग-दौड़ व उत्साह हमारे हृदय में आनन्द के साथ अहोभाव के भाव भर रहा था।

वे सारी सामग्री को एकटक देख रहे थे, और 'क्या कमी है ?' इसे टटोल रहे थे।

मैं दूर खड़ी उनकी भाव भंगिमा व चेहरे पर आ रहे उतार-चढ़ाव से युत उनके भावों को भांप रही थी। उन्होंने अचानक तनाव में आकर एक व्यक्ति को वुलाया और कुछ निर्देश दिया। वह कार्यकर्त्ता अपने कमांडर का आदेश सुन-कर परिपालना हेतु दौड़ पड़ा। मुझे संवाद तो सुनाई नहीं दिया पर लगा कि जरूर कोई सामग्री जो अव तक आ जानी चाहिये थी, नहीं आई है और इसी कारण वे वैचेन नजर आ रहे हैं। वांयीं कलाई में वंधी घड़ी पर उनकी नजरें वार-वार पड़ रही थी, साथ-साथ वेचैनी भी वढ़ती जा रही थी।

मुझे लगा कि कार्यक्रम की सफलता के लिये तनाव होना भी जरूरी है, अन्यथा उस कार्यक्रम का महत्व व्यक्ति के दिमाग में नहीं होता। यह तनाव तनाव नहीं वल्कि समा-रोह या कार्यक्रम के प्रति सम्पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। मैं कार्यकर्त्ताओं की आवश्यक व्यग्रता पर चिंतन कर रही थी... देख रही थी, आज कार्यकर्त्ताओं को वात करने की जरा भी फुरसत नहीं है। और यही तो सफलता का मूल मंत्र है। आज उन्हें वातें नहीं करनी है, काम करना है। और उप-धान के कार्यकर्त्ता इस वात को अच्छी तरह जानते हैं...वे आज लोगों से किसी तरह की वात करने के मूड में नजर नहीं आते। उन्हें तो आज केवल एक ही दृश्य दिखता है वरघोड़ा, एक ही वात नजर आती है···वरघोड़ा। वरघोड़े की सफलता के अलावा उनके मन में कोई वात नहीं है, होठों पर कोई शव्द नहीं है।

अचानक मुझे उनके चेहरे पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दी। मैं उसका कारण जानने को उत्सुक हो उठी। कारण स्पष्ट था। वरघोड़े की सारी तैयारियों को अन्तिम रूप दिया जा चुका था। सारे संसाधन वैंड आदि आ चुके थे। लोगों का अपार समूह नजर आ रहा था। लोग भीड़ देखकर आश्चर्यचकित थे। ऐसा माहौल, ऐसा उत्साह वीकानेर के लिये पहला पहला था। आज तक वीकानेर में धार्मिक आयोजन वहुत हुए, पर यह माहौल, यह नजारा, लोगों का सैलाव आज तक नजर नहीं आया।

और वरघोड़ा प्रारम्भ हो गया। बैंड ने धार्मिक धुन छेड़ी, लोगों ने धुन का स्पंदन अपने हृदय में महसूस किया और भक्ति की मस्ती में मस्त वनकर गजराज की चाल से आगे वढ़ने लगे।

वरघोड़ा आगे वढ़ रहा था। आज वरघोड़ा लम्वा था वरघोड़े का रास्ता भी लम्वा था।

मैं उचक उचक कर लोगों की भीड़ देख रही थी और संख्या का अनुमान...वरघोड़े की लम्वाई का अनुमान लगा रही थी पर मुझे तो कहीं ओर-छोर नजर नहीं आ रहा था। आगे पुरुषों की अपार भीड़ थी तो पीछे रोड पर केवल

महिलाओं का साम्राज्य था। वरघोड़ा देखने सारा नगर उमड़ पड़ा था। लोगों की विशाल उपस्थिति हर व्यक्ति के हृदय को आश्चर्य से भर रही थी। वे प्रसन्नता व आश्चर्य दोनों भावों को हृदय में रोक नहीं पा रहे थे और वाह.... वाह की ध्वनियां सीत्कार के साथ सुनाई पड़ रही थी। बैंड की मधुर धुनों के बीच उनकी वाह की ध्वनि मोहक संगीत में बदल रही थी।

वृद्ध व भावुक व्यक्ति तो देख देख कर आंसू बहा रहे थे खुशियों के।

कार्यकर्ता गम्भीर मुस्कान धारण किये इधर-उधर दौड़ रहे थे। वरघोड़े के व्यवस्थित संचालन के लिये आज वे कमर कसकर मैदान में उतरे थे। कोई श्रम बाकी नहीं उठा रखा था उन्होंने।

आसपास के नगरों के श्रावक आज बड़ी संख्या में उपस्थित थे। वे आपस में चर्चा करते जा रहे थे।

मैंने एक जगह खड़े रहकर उनकी चर्चा सुनी। आज के वरघोड़े की शानदार सफलता ही उनकी चर्चा का एकमात्र विषय था। आपस में प्रशंसा करते वे थकते नहीं थे। उनकी भावना तो ऐसी प्रतीत हो रही थी 'हर व्यक्ति को मैं वरघोड़े की सफलता के समाचार सुनाऊँ और इस प्रकार अपने अहोभाव को अभिव्यक्त करूं।'

कार्यकर्त्ताओं को बधाइयाँ दे रहे थे लोग, पर कार्यकर्त्ताओं को अपनी प्रशसा सुनने का कोई चाव नहीं था। मैंने देखा, ज्यों ही लोग प्रशंसा करते, कार्यकर्त्ता तुरन्त आगे बढ़ जाते। उन्हें काम भी तो करना था। हां! सफलता के कारण उनका साहस जरूर द्विगुणित बल्कि शतगुणित हो रहा था।

वरघोड़े में पूजनीया गुरुवर्या श्री एवं मंडल के साथ मैं आगे बढ़ रही थी। मैं वरघोड़े के क्रम को लिपिबद्ध करना चाह रही थी, इसी कारण मैं कुछ आर्याओं के साथ एक गली के मोड़ पर कुछ सीढ़ियां चढ़कर हाथ में कलम कागज लिये खड़ी हो गई। ऊपर से वरघोड़े के दिव्य भव्य नजारे को देखकर प्रसन्नता के मारे पुलकित हो उठी।

आगे ही आगे 'ढोल' नामक प्राचीन व मधुर वाद्ययंत्र वरघोड़े के आगमन का संकेत दे रहा था।

धर्म ध्वजा लिये एक व्यक्ति शान से आगे बढ़ रहा था—साथ-साथ वरघोड़े का अनुपम दृश्य अपनी आंखों में...हृदय में बसाने के लिये मुड़-मुड़ कर पीछे देखता जा रहा था। बैंड मधुर, धार्मिक धुनें छेड़ रहा था। बीकानेर के प्रसिद्ध भक्ति संगीत मंडल आदीश्वर मंडल, कोचर मंडल, जैन मंडल, वीर मण्डल, महावीर मंडल गीत गा रहे थे। मस्ती में झूम रहे थे। उत्साही युवक नयी पुरानी फिल्मी धुनों पर आधारित भक्ति गीत लयबद्ध–तालबद्ध गा रहे थे और जब मस्ती का आलम दिल दिमाग में छा जाता तो हर्षातिरेक से.... भक्ति में डूबकर नृत्य भी करने जा रहे थे।

पूज्य गणिवर्य श्री दाढ़ी के बालों को सहलाते गम्भीर मुद्रा में आगे बढ़ रहे थे। आवश्यक निर्देश भी देते जा रहे थे। जनता का अभिवादन झेल रहे थे...उन्हें धर्मलाभ का आशीर्वाद दे रहे थे... । पूज्य गणिवर्य श्री के चेहरे को देखकर उनके विचारों का अनुमान लगाने का विचार कर रही थी। उनके चेहरे पर गम्भीरता, प्रसन्नता के भाव एक साथ विराजमान थे। उनके ही व्यवस्थित व सफल निर्देशन का ही तो यह अतिसुन्दर परिणाम था। निश्चित ही महोत्सव की सफलता ने उन्हें प्रफुल्लित किया था.... पर अपनी गम्भीरता से वे यह प्रकट कर रहे थे कि यह गुरुदेव श्री की कृपा का ही परिणाम है। उनकी यह लघुता उनके व्यक्तित्व को प्रौढ़ता प्रदान कर रही थी।

उनके साथ चल रहे, चरवला मुहपत्ति हाथ में लिये.... धोती दुपट्टा धारण किये उपधानवाही पुरुष वर्ग साधना का परिचय दे रहा था। उनकी बढ़ी हुई दाढ़ी, तपश्चर्या के कारण कृश बना शरीर, फिर भी आंखों में ओज, शान्त रस बरसाता अनोखे तेज से परिपूर्ण चेहरा...उनकी साधना, आराधना को अभिव्यक्त कर रहा था।

मैं सोच रही थी पूज्य गणिवर्य श्री के प्रवचनों के बारे में। जब-जब संयम रस से अनुप्राणित प्रवचन धारा वे बहाते तब तब इस मंडली (उपधानवाही) को उद्बोधन देते

कहते—ये सारी मंडली पाट पर आ जाय तो...ये सभी रजोहरण धारण कर ले तो....।

मुझे लगता आजीवन संयम भले नहीं स्वीकार हो पर 51 दिनों के लिये तो संयम में ही हैं। और यह तो उनकी आराधना का परिणाम था कि चेहरे पर संयम की दिव्यता विराजमान थी। विशाल पुरुष वर्ग उपधान के प्रति, उपधान कारकों के प्रति, उपधानपति के प्रति अपनी मौन निष्ठा अभिव्यक्त करते हुए कदम मिलाते चल रहे थे।

मुझे कुछ देर के लिये कलम को कागज पर से हटा देना पड़ा क्योंकि आगे से विशाल पुरुष वर्ग धीरे-धीरे निकल रहा था। लम्बी भीड़ थी—चौड़ा रास्ता भी संकड़ी गली की तरह लग रहा था।

मैंने देखा नाचते आगे बढ़ रहे युवकों को। हाथों में मंजीरे लिये, आँखों में आस्था लिये, होठों पे भक्ति गीत लिये, हृदय में श्रद्धा लिये, चेहरे पर समर्पण के भाव लिये युवक गा रहे थे....नाच रहे थे, प्रभु की प्रतिमा के समक्ष।

वे गीत द्वारा, नृत्य द्वारा परमात्मा के साथ एक हो जाना चाह रहे थे। उनकी ललक उनकी हर क्रिया से प्रगट हो रही थी। परमात्मा की सवारी को श्रद्धा से लिये आगे बढ़ रहे उन युवकों को देखकर मुझे उस आरोप पर अविश्वास करना पड़ा जिसमें यह कहा जाता है कि आज के युवक नास्तिक हो गये हैं।

पू. साध्वी मंडल नीची नजर किये गम्भीर चाल व मुद्रा में आगे बढ़ रहा था। पूजनीया गुरुवर्या श्री आदि समस्त मंडल आज परम प्रसन्नता से भरा था। स्वाभाविक था उनका यह हर्ष। उपधान की सफलता तो हर्ष का एक कारण था ही, साथ साथ उन्हें शिष्या के रूप में उत्कृष्ट लाभ भी हो रहा था।

एक दिन अपने प्रवचन में पूज्य गणिवर्य श्री ने यही तो कहा था—मुझे याद है उस दिन कु. शोभा को दीक्षा की औपचारिक घोषणा पूज्य गुरुदेव श्री ने की थी। उस दिन कहा था—उन्हीं के शब्दों में—'मैं तो ईर्ष्या से भर रहा हूँ। प्रसन्नता तो साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म. को है जिन्हें शिष्या मिल रहीं। मैं तो हर्षान्वित तब बनूं जब मुझे भी परमात्मा के शासन पथ पर चलने वाला पथिक मिल जाय।' मुक्त व स्वस्थ हास्य के बीच कही गई इस बात का भी कितना महत्व है। क्योंकि मैंने देखा है—इन दो महिनों के प्रवास में पूज्य गणिवर्य श्री ने अपने प्रवचन का विषय वैराग्य व संयम-आराधना का ही रखा। उन्होंने एक भी ऐसा अवसर नहीं छोड़ा जब उन्होंने सयम की प्रेरणा नहीं दी हो, उसके प्रति उत्सुक, आतुर बनने का उद्‌बोधन न दिया हो। यह बात भी गम्भीर अर्थों में एक महत्वपूर्ण प्रेरणा है।

अचानक पूजनीया गुरुवर्या श्री की नजर मुझ पर पड़ी। मेरा ध्यान तो घटना को शब्दों की बांहों में बांधने में लगा था। कलम चल रही थी, कागज भर रहा था। गुरुवर्या श्री ने ज्यों ही मुझे देखा वे तुरन्त जुलूस की पंक्ति से बाहर होकर मेरी ओर आने लगे।

उनकी आवाज से जैसे मैं सपने से जागी...मैं चौंक पड़ी। संवाद को तो कोई स्थान ही नहीं था। पूजनीया गुरुवर्या श्री मेरी इस क्रिया पर सहज मुस्कुरा उठी। और मैं... मैं बस उनकी मुस्कराहट में खो गई। पूछने को कुछ बचा न था। सारा जीवन उनकी मुस्कान में सिमट गया था। उनकी मुस्कान ने मेरे भीतर मुस्कुराहटों की लहरें छोड़ दी थी और मैं उन लहरों में लहराती श्रद्धा के पावन गीत में, पावन दीप में डूब गई थी।

गुरुवर्या श्री भी वहाँ खड़े हो गये....उनका सामीप्य मेरा संबल था। महिलाओं के झुंड को वे देखती जा रही थी। महिलाओं की चाल में श्रद्धा की थिरकन थी। उनके होठों पर श्रद्धा की वीणा बज रही थी। महिलाओं के सिर पर मोक्ष-माला का थाल था....जो रंग बिरंगे वस्त्रों में सजाया गया था।

वे थाल लिये आगे बढ़ रही थी...थाल ही थाल नजर आ रहे थे। इस दृश्य को मैं लिखने बैठी पर हार गई...! ओह! इस दृश्य को शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करना नामुमकिन है।

मैं इस दृश्य को कैसे कागज पर उतारूँ यह सोच ही रही थी कि मेरी नजर आगे पड़ी और वहीं स्तब्ध रह गई, क्योंकि यही तो वह दृश्य था जो एक तरह से वरघोड़े का केन्द्र था।

मैं बस इसी दृश्य में खो गई। सामने देखा, एक शानदार बग्घी में बैठी है—कुमारी शोभा...सामने वर्षीदान की सामग्री पड़ी है। मैं उस सजी संवरी बग्घी को न देख सकी.. क्योंकि मेरी आँखें तो कुमारी शोभा के चेहरे पर टिक गई थी। और यह भी क्या सुन्दर अवसर था कि आगे मार्ग अवरुद्ध होने की वजह से वरघोड़ा खड़ा रह गया था। शोभा की बग्घी सामने खड़ी थी। मैं अपलक उसे निहार रही थी उसकी मुस्कान मेरे मानस में विचारों का आंदोलन मचा रही थी। और न केवल मैं बल्कि सारा परिवेश केवल उसे ही देख रहा था। उसे देखकर लग रहा था जैसे दो विरोधी भावों का आज एक साथ दर्शन हो रहा। आज उसके शरीर से पूर्ण संसार टपक रहा था। चेहरे पर मेक अप की परतें चढ़ी थीं....सोने के महंगे आभूषण पहने थे.... आकर्षक चटकीले वस्त्र धारण किये थे...यह संसार था जो उसके बाह्य पक्ष से प्रकट हो रहा था...जब कि आभ्यंतर पक्ष संयम में डूबा था . उसकी मुस्कान...उसकी आंखों में विराजमान शीतलता ..ओजस्विता उसके भीतरी अध्यात्म पक्ष को.. संयम पक्ष को उजागर कर रही थी। अजीब समन्वय था। लगता था आज संसार और संयम के बीच लड़ाई छिड़ी है। और यह बाह्य परिवेश संसार का अन्तिम अस्त्र था जो निःशस्त्र आभ्यन्तर पक्ष से हार गया था। उसका चेहरा कठोर सकल्प और दृढ मनोबल को अभिव्यक्त कर रहा था।

मैं कल्पना की दुनिया से बाहर आयी और मेरी आँखें मनोयोग के साथ उसके चेहरे पर जा टिकीं। उसका चेहरा कठोर संकल्प और दृढ मनोबल को अभिव्यक्त कर रहा था। मुक्त हाथों से मुक्त दान कर रही थी। उस वर्षीदान के प्रति लोगों की आस्था बड़ी गहरी थी।....भीड़ दौड़ पड़ी.... उससे कुछ पाने को। और बग्घी एक झटके से आगे बढ़ गई। वरघोड़ा गवाड़ों से गुजरता हुआ पुनः चिंतामणि मंदिर पहुंचने वाला था। मैं आज के समारोह पर चिन्तन करती अपनी गुरुवर्या श्री के साथ चली आई महावीर भवन...जहां पूज्य गणिवर्य श्री विराज रहे थे। वे वरघोड़े से पधार चुके थे। वे प्रतिलेखना से निवृत्त हुए ही थे कि कुमारी शोभा के परिवार जन उपकरणों की ओटी सजाये वहां पहुँच गये।

गुरुदेव श्री ने वर्धमान विद्या द्वारा उसे अभिमंत्रित किया। रात्रि को बोलियों का कार्यक्रम था। प्रातः मुझे ज्ञात हुआ कि प्रथम बोली गजांणी परिवार ने ली थी जबकि दूसरी-तीसरी बोली जोड़े सहित उपधान कर रहे पारख परिवार ने ली थी। बोली के कार्यक्रम में नागौर वाले भँवरलाल जी बोथरा ने अच्छा रंग जमाया था। वे इस क्षेत्र में 'भक्ति राउन्डर' कहलाते हैं। साथ ही स्थानीय मंडलों ने भी भक्ति गीतों द्वारा श्रोताओं के तार छेड़े थे।

ता. 29-1-89

रात्रि उपधानवाही सो न सके थे...बल्कि यों कहना चाहिये कि नींद आ ही किसे रही थी। बस केवल एक रात्रि शेष बची थी। प्रातः तो उनकी साधना के कल्पवृक्ष पर मालारोपण का फल पकना था। आज के समारोह की सफलता की चमक उनके चेहरे पर विद्यमान थी। नींद के कारण भारी हो रही आँखें भी तेज बरसा रही थी।

बहुत ही जल्दी सभी निर्दिष्ट समय पर तैयार होकर प्रतिक्रमण....प्रतिलेखना...वस्ति संशोधनादि क्रियाएँ करके पूज्य गुरुदेव श्री की निश्रा में महावीर जैन भवन में पहुँच गये थे। पूज्य गुरुदेव श्री ने क्रिया करवाई व बाद में विदाई संदेश दिया। उपधान का आज 51 वां दिन था। कल तो इन्हें पुनः सांसारिक परिवेश में प्रवेश करना था।

पूज्य गुरुदेव श्री ने विदाई संदेश में सबको डूबो दिया। उनके मधुर संदेश में उनके वात्सल्य भाव का दर्शन हो रहा था तो विदाई संदेश की भाषा व विषयवस्तु उनके प्रौढत्व व विद्वत्ता का परिचय दे रही थी। उन्होंने कहा–उपधान के यज्ञ में आप सभी ने अपनी इच्छाओं की आहुति डाली है। आपके जीवन में अब परिवर्तन आना है। तभी तो यह तप... जप...क्रिया...कायोत्सर्ग सफल बनेंगे। उन्होंने कहा—अब

आपके जीवन की हर क्रिया विशिष्ट दृष्टिकोण के साथ ही सम्पन्न होगी। आपका खान-पान रहन-सहन, आचार-विचार सब कुछ बदल जाना चाहिये। अब आपका जीवन हर व्यक्ति के लिये प्रेरणा बन जाना चाहिये। सूर्योदय हो चुका था। उपधानवाही आज पौषध पा रहे थे। उपधान-वाही पुरुषवर्ग के अध्यक्ष श्री भँवरलाल जी लोढ़ा पाली वाले पौषध पारणे की क्रिया कर और करवा रहे थे। मैं उस समय श्रद्धा से अभिभूत हो उठी यह देखकर कि लोढ़ा जी पौषध पारणे के सूत्र बोल रहे थे पर आवाज निकल नहीं पा रही थी... गला रुंध सा गया था। और भयवं सूत्र बोलते-बोलते वे बच्चे की तरह बिलख पड़े....आँखों में से अश्रुधारा बह चली।

मैं चिंतन कर रही थी उनकी निश्छलता व परमात्मा के प्रति उनके समर्पण भावों पर। वे भाव अभिव्यक्त कर रहे थे····'आज मुझे साधना का प्रतीक चरवला छोड़ना पड़ेगा।····पुनः संसार में जाना पड़ेगा···विरति से अविरति में जाना पड़ेगा। चरवले की याद, साधना की याद उन्हें भाव विह्वल बना रही थी।

पूज्य गणिवर्य श्री की सूचना के अनुसार सभी उपधान-वाहियों को परमात्मा की पूजा करके जैन स्कूल के विशाल ग्राउन्ड में बने भव्य पांडाल में पहुंचना था—जहां माला-रोपण विधान होने वाला था। हम सब जल्दी ही तैयार हो गये थे, दीक्षा भी मालारोपण के साथ साथ हो रही थी। उपाश्रय से पूजनीया गुरुवर्या श्री आदि साध्वी मंडल के साथ स्कूल की ओर चल पड़े। आज तो हर व्यक्ति के कदम उसी दिशा की ओर बढ़ रहे थे। सारे मुहल्लों, बाजारों और गलियों में एक ही चर्चा थी। बाहर से हजारों भक्त आ पहुंचे थे। सभी को वहीं पहुंचना था।

भव्य पांडाल की ओर जब आगे बढ़े तो देखा कि पूज्य गणिवर्य श्री पधार चुके थे। उनकी तत्परता और कार्य-निष्ठा निश्चित ही प्रभावित करने वाली थी। पूज्य श्री कार्यकर्त्ताओं को निर्देश देते जा रहे थे। मंच बहुत ही भव्य सजा था। ऐसा होना ही था क्योंकि सारा निर्देशन पूज्य गणिवर्य श्री का था, और मैंने पिछले दिनों में देखा था कि समय की अत्यन्त अल्पता होने पर भी पूज्य श्री तीन बार महावीर भवन से जैन स्कूल के ग्राउंड में गये थे। कार्यकर्त्ताओं को लेकर नापजोख कर सारा नक्शा बनाकर दिया था कि यहां मुनिराज बैठेंगे। यहां साध्वी मंडल के पाट लगेंगे, उप-धान वाले कहां बैठेंगे सारा व्यवस्थित कार्यक्रम उन्होंने कागज पर उतार कर कार्यकर्त्ताओं के हाथों में थमाया था।

मुझे उपधान के आयोजन, मालमहोत्स के आयोजन देखने का अवसर कई बार मिला पर ऐसा व्यवस्थित निर्देशन आज तक नहीं देखा...न ऐसा व्यवस्थित मंच कहीं देखा।

सामने बीचों बीच पूज्य गणिवर्य श्री का पाट लगा था। उनके आगे एक चौकी बनाई गई थी। जिस पर वैरागिन कुमारी शोभा को क्रिया करनी थी। साथ ही वहीं उपधान वालों का मालारोपण विधान होना था। उसके आगे भगवान का चांदी का सिंहासन विराजमान किया गया था। पूज्य गणिवर्य श्री के दायें नीचे के भाग में 117 कुर्सियाँ लगी थी जिस पर क्रमशः माला पहनाने वाले भाई बैठे थे। उसके पास ही उपधानवाही पुरुष वर्ग के पाट लगे थे। बाईं ओर साध्वी मंडल के पाट लगे थे, उनके पास ही उपधान करने वाली महिलाएं क्रमशः बैठी थी।

उपधानवाही आ रहे थे। पांडाल भरने लगा था। मैंने कार्यकर्त्ताओं की ओर निगह डाली। श्री पन्नालालजी खजांची टाई वगैरह धारण किये तेज आंखों से व्यवस्था का तीव्र निरीक्षण कर रहे थे। तेज कदमों से इधर उधर दौड़ कर अपने हाथों से सारा कार्य कर रहे थे। श्री सूरजमलजी पुगलिया माइक को संभाले हुये थे। वे सूचनाएं प्रसारित कर रहे थे, मैंने देखा कि पांडाल में प्रवेश के दो गेट बने थे एक गेट से केवल उन्हें ही प्रवेश मिल रहा था जिनके हाथों में पास थे। मैं कलम लेकर यह व्यवस्था देखने पास में गई तो पता चला कि पास केवल उन्हें ही दिये गये थे जो माला पहनाने वाले थे।

पूज्य गणिवर्य श्री ने 10-12 दिन पूर्व ही यह घोषणा कर दी थी कि मोक्ष माला एक ही व्यक्ति पहनायेगा और इस विषय में उन पर काफी दबाव पड़ा था पर वे इन मामलों में सख्त रहे। माला पहनाने वालों को पास दिये गये थे। उन पर नम्बर भी पड़े थे। क्रमानुसार वे आसन ग्रहण करते जा रहे थे।

उपधानवाही महिलाएं भी क्रमानुसार अपना आसन ग्रहण कर रही थीं। कार्यकर्त्ता श्री धनपतसिंहजी खजांची, अजित खजांची, प्रकाश सेठिया, हेमन्त पुगलिया आदि उन्हें बिठाने की व्यवस्था में लगे थे। एक ओर कैमरा मैनों की भीड़ थी। लोग आते जा रहे थे। पांडाल खचाखच भर गया था फिर भी आधे लोग बाहर खड़े थे। अपार भीड़ थी। छः फुट ऊंचे बने मंच पर गणिवर्य श्री विराजमान हो चुके थे। तपागच्छीया, पायचंद गच्छीया साध्वी वर्ग आ चुका था। उपधानपति श्री नेमचन्दजी, उनकी धर्मपत्नी अ. सौ. आशा देवी, उनकी पुत्र वधू आदि आ चुके थे। श्री नेमचंदजी की आंखों में चमक ही और थी, बात करने का अन्दाज ही निराला था। उनके हर व्यवहार में प्रसन्नता टपक रही थी, आज वे परम खुश थे, परम सतुष्ट थे, हृदय में निर्दोष गौरव की आनन्दमयी अनुभूतियों की लहरें हिलोरें मार रही थी।

आज उनका पुरुषार्थ चरम सीमा पर पहुंचने वाला था।

वे 'उपधानपति परिवार' के लिये आरक्षित स्थान पर अपना आसन ग्रहण कर चुके थे।

उनके पास का स्थान वैरागन कुमारी शोभा डागा के परिवार वालो के लिये आरक्षित था। उनके परिवार जन बैठ चुके थे। कुछ ही दूर खडे आर्ट स्टूडियो वाले मांगीलाल इस सारे दृश्य को कैमरे द्वारा अंकित कर रहे थे।

पूज्य गुरुदेव श्री बार बार घड़ी की ओर देख रहे थे। नंदी विधान हो चुका था, वैरागन बहिन के वरघोड़े के आगमन का आभास, नजदीक आती जा रही बैंड की मधुर धार्मिक धुनों द्वारा हो रहा था।

और समय जैसे थम गया, शोर शान्ति में बदल गया, ठंडे वातावरण में गर्माहट का आभास होने लगा पूज्य, गणिवर्य श्री ने समारोह के प्रारम्भ की घोषणा कर दी।

सारा वातावरण परिपूर्ण शांत हो गया। मैंने देखा सारे लोग पूज्य गणिवर्य श्री की ओर ही देख रहे थे। माइक उनके सामने लग चुका था। कुमारी शोभा आसन, मुहपत्ति चरवला लिये मंच पर उपस्थित हो गई थी। उपधानवाही सावधान हो चुके थे। क्रिया करने वाले, कराने वाले दर्शक श्रोता सारे जागरुक थे। गुरुदेव श्री के आदेश की प्रतीक्षा में उनकी आंखें, उनके कान, उनका हर अंग-अंग बिछा था। गुरुदेव श्री ने आदेश दिया और कुमारी शोभा के माता-पिता भाई मंच पर माइक के सामने आ गये। शास्त्रीय विधि-विधान के अनुसार शोभा के अभिभावकों ने गुरुदेव श्री से सादर प्रार्थना की.... गुरुदेव ! हमारी लाडली शोभा को आप दीक्षा प्रदान कर अनुगृहीत करावें। हम इसकी दृढ मनोभावना को देखते हुए चतुर्विध श्री संघ की साक्षी से इसे दीक्षा की अनुमति प्रदान करते हैं। इससे हमारा कुल, हमारा गौत्र गौरवान्वित बना है। तथा इसे हम अपना सद्भाग्य समझते हैं।

मैंने देखा वे अनुमति प्रदान कर रहे थे और उनकी आंखों से आंसू झर रहे थे।

प्रिय पुत्री शोभा आज उनकी नहीं रहेगी। वे सोच रहे थे... अब हम किसे शोभा-शोभा कह कर पुकारेंगे। अब यही शोभा नंगे पांव चलेगी, केश लुंचन करायेंगी, जैसा भी आहार मिलेगा–करेंगी न सर्दी की चिंता होगी, न गर्मी की परवाह होगी। सभी कष्ट सहेगी। यही चिंतन उनकी आंखों से आंसू बहा रहा था। मैं उनकी इस दशा पर सोच ही रही थी कि पूज्य गुरुदेव श्री ने क्रिया विधि प्रारम्भ कर दी। सभी उपधान वालों ने, कुमारी शोभा ने गुरुदेव श्री के आदेशानुसार विधि-विधान प्रारम्भ किया।

सर्वप्रथम अंगन्यास, करन्यास व आत्म रक्षा स्तोत द्वारा विशिष्ट मंत्राक्षरों द्वारा शारीरिक शुद्धि की गई, साथ-साथ मांत्रिक सुरक्षा के उपाय किये। दीक्षा की कुछ विशिष्ट

विधि होने के बाद देववंदन का विधान प्रारम्भ हुआ। 18 स्तुतियों वाला देववंदन सभी उपधानवाही व वैरागन कर रहे थे। और पूज्य गणिवर्य श्री उनका हेतु समझा रहे थे। लोग आश्चर्य चकित थे। सारा पांडाल मौन था। मौन नीरव, शांत वातावरण देखकर यह लग ही नहीं रहा था कि 20–25 हजार व्यक्ति यहां बैठे हैं, कोई कोलाहल नहीं, कोई हो-हल्ला नहीं। सभी क्रिया देख रहे थे। सभी क्रिया के महत्व को श्रवण कर रहे थे।

सारे दर्शक पहली बार ऐसा विधान देख रहे थे। दीक्षाएं–मालारोपण का विधान तो बहुत से व्यक्तियों ने कई बार देखा होगा, पर मेरा ऐसा निश्चित मानना है कि हेतु, उपयोगिता आदि दृष्टिकोण से समझपूर्वक हो रहे इस प्रकार के विधान को वे पहली बार देख रहे थे। मेरे इस अनुमान का ठोस एवं प्रामाणिक आधार था–लोगों के चेहरे पर विराजमान उत्सुकता के भाव, आँखों की तेज चमक, उनकी गुरुदेव श्री के चेहरे पर लगी टकटकी।

कोई आवाज नहीं कर रहा था...कोई आवाज करने की हिम्मत भी नहीं कर रहा था—क्योंकि पड़ौसी तुरन्त टोक देता—भाई, चुप रहो...विधान सुनने दो।

माइक पर गणिवर्य श्री का सिंहनाद जैसे हो रहा था। आवाज में मिठास थी, बुलन्दी थी, दबंगता थी, गंभीरता थी तो गहरे भावों के प्रक्षेपण की सशक्तता भी थी।

शब्दों में एक अनजानी पर मजबूत डोर थी जो दर्शकों को बांधे थी।

गोत्र देवता, कुलदेवता, शासन देवता वगैरह कई तरह के देवी देवताओं के कायोत्सर्ग करवाये थे। मेरे मन में संशय उठा—दीक्षा हो रही, माला विधान हो रहा। यहाँ देवी देवताओं को याद करने की क्या तुक है। और फिर उनके निमित्त में कायोत्सर्ग करने का क्या तात्पर्य है।

पता नहीं—मेरे संशय-ग्रस्त मन का पता पूज्य गणिवर्य श्री को कैसे हुआ ? इधर मेरे मन में संशय हुआ और इधर गणिवर्य श्री ने इन कायोत्सर्गों का हेतु समझाना प्रारम्भ किया। मैं आज भी इस दृश्य को याद करती हूँ तो मुझे रोमांच हो आता है।

पूज्य श्री फरमा रहे थे...आज कुमारी शोभा संसार का विसर्जन कर संयम के मार्ग में आत्मसर्जन हेतु प्रस्थान कर रही...उपधान वाले माल परिधान का विधान कर रहे...।

ये कायोत्सर्ग आत्म शुद्धि के हेतु हैं। इन कायोत्सर्गों द्वारा दो भावनाओं का प्रकटन हो रहा है। एक तो यह कि गत समय में मेरे द्वारा गौत्र, कुल या और जो भी देवी देव हैं उनके प्रति कोई आशातना अवज्ञा हुई हो तो उसके लिए क्षमा याचना करना। इस मिथ्या दुष्कृत के द्वारा ये निःशल्य हो रहे हैं। चाहे रजोहरण धारण करना हो चाहे माला परिधान करना हो, निःशल्य होना ही होगा। शल्य सहित संभव नहीं है।

कायोत्सर्ग का दूसरा हेतु है प्रार्थना का—इन शब्दों में कि हम जिसे स्वीकार कर रहे, उस मार्ग में, उस लक्ष्य में ये सारे देवी देवता हमारे सहायक बने।

मैंने तर्कयुक्त इस समाधान पर चिंतन किया। मुझे लगा कि छोटी-छोटी बातों में भी कितना रहस्य छिपा है।

मैंने देखा देववंदन का विधान पूरा हो चुका है। उपधान वालों को बैठने का आदेश दे दिया गया है। वैरागन शोभा को क्रियायें करवाई जा रही हैं।

मैंने अपनी आँखें जनता की ओर घुमाई और अचानक पूज्य गणिवर्य श्री की कड़कती आवाज मेरे कानों में पड़ी, मैं एकदम घबरा गई, कांपती आँखों से मंच की ओर देखा।

पूज्य गणिवर्य श्री कह रहे थे—पुजारी—तुम किसे पूछकर इधर उधर घूम रहे हो।

मैंने गुरुदेव श्री की आवाज में कड़कपन महसूस किया। मैंने देखा पुजारी कारण वश भगवान के त्रिगडे और मंच के बीच से निकल गया था।

शास्त्रों के अनुसार यह अविधि थी। गणिवर्य श्री ने तुरन्त क्रिया रोक दी और इरियावहि कराकर पुनः क्रिया

का प्रारम्भ किया। मैंने देखा पूज्य गणिवर्य श्री का मिष्ठ व्यवहार भी क्रिया विधि विधान के चुस्त पालन के लिये सजगता पूर्वक कितना कठोर बन जाता है, पर यह कठोरता भी अनिवार्य है। मैं पूज्य गणिवर्य श्री के ऊपर मे लगने वाले विरोधाभासी दो व्यक्तित्वों के बारे में चिंतन कर रही थी कि पूज्य गणिवर्य श्री अपने आसन से खड़े हो गये। उपकरणों की ओडी पुनः अभिमंत्रित की जा चुकी थी।

पूज्य गणिवर्य श्री फरमा रहे थे जिस पल का इन्तजार वर्षों से था आज उसका आगमन कुमारी शोभा के जीवन मे बस होने ही वाला है। कुछ ही सैकिण्डो के बाद कुमारी शोभा के हाथों में ओघा शोभ रहा होगा, आप देखेंगे कि किस प्रकार शोभा के हाथों में ओघा आते ही इसके पांवों में नृत्य का आगमन होता है।

सभी सांस थामे इस पल को अपनी आंखों मे बसा लेना चाहते थे।

गुरुदेव श्री ने स्वर-लग्न की स्थिरता व पावनता का पुनः परीक्षण किया और ओघा झेला दिया। वाजित्र बज उठे, जय-जय का गुंजारव गूंज उठा, हर्षध्वनि वातावरण में डोल उठी।

शोभा का हर्ष नृत्य बनकर खिल उठा। हृदय अनोखी वीणा के संगीत से भर गया। लोग उसके उत्साह को बधा रहे थे स्वयं उत्साहित होकर। लोग उसके हर्ष को झेल रहे थे अपनी आंखो मे हर्षाश्रु बहाकर।

इस दृश्य को वे देख नहीं, पी रहे थे।

शोभा अपने परिजनो के साथ समीपस्थ जैन स्कूल के एक नियत गृह की ओर जा चुकी थी—उसका यह कदम ही तो जीवन मे क्रान्ति लाने वाला था—वही तो उसे संसार को अंतिम विदा देनी थी—वही तो उसे संयम के मंगल प्रभात में अपना पहला पाठ पढ़ना था—पहला कदम बढ़ाकर।

मेरी गुरु बहिनें भी साथ गई थी, मैं उसके कदमों को विचारों के तराजू से तोलती हुई साथ गई थी पर मुझे तो शीघ्र ही पुनः पांडाल में प्रवेश करना था। गुरुदेव श्री उपधान वालों को मालारोपण की क्रिया करवा रहे थे।

कुछ ही समय बाद उपधान वालों का सपना सार्थक होने वाला था। मोक्ष माला का परिधान विधान होने वाला था। जीवन में केवल एक बार घटित होने वाली मनमोहक घटना घटने वाली थी। इस पल को वे पूरी तरह से बधा लेने को आतुर थे।

पूज्य गुरुदेव श्री फरमा रहे थे—बस ! कुछ ही पलों के बाद आपके गले में मोक्ष माला सुशोभित होगी। मोक्ष माला परिधान से पूर्व कषाय मुक्त होना आवश्यक है तभी मोक्ष माला के द्वारा भगवत्ता आपके मानस को आलोकित कर सकेगी।

मालारोपण विधान के पूर्व की सारी क्रियाएँ सुसम्पन्न हो चुकी थी। सबको गुरुदेव श्री की घोषणा का इन्तजार था।

पूज्य गणिवर्य श्री पाट पर खड़े हो गये थे। उन्होंने श्रीयुत नेमचन्दजी खजांची को आवाज दी। खजांची जी जैसे आदेश की प्रतीक्षा में थे, फुर्ती से खड़े हो गये। जेब में से रुमाल निकाला, मुंह पोंछा, क्षत्रियत्व का संदेश देती फड़कती मूछों को संवारा और मंच की ओर बढ़ गये। श्रीमती आशा देवी खजांची भी मंच पर आ चुकी थीं।

पूज्य गणिवर्य श्री फरमा रहे थे—उपधान आराधना एक परम शास्त्रीय आराधना है। खजांची जी ने इसका आयोजन कर परम पुण्य का कार्य किया है। पूज्य श्री ने झुककर पाट पर पड़े एक फ्रेम को हाथ में लिया और उसे पढ़ना शुरू किया।

मैं जिनेश्वर देव महावीर प्रभु के सिद्धान्तों के अनुरूप उपधान तप का आयोजन करने के उपलक्ष में श्रेष्ठिवर्य श्री नेमचन्दजी खजान्ची को शास्त्रविहित उपधानपति पद प्रदान करने की घोषणा करता हूँ।

पूज्य श्री ने इतना वाचन कर श्री नेमचन्द जी खजांची को 'उपधानपति' पद का विशिष्ट संबोधन दिया। शासन, गच्छ व गुरुदेव श्री के प्रति पूर्ण समर्पित खजांची जी गद्गद् हो उठे। उन्होंने गुरुदेव श्री के चरणों में अपना शीष झुका दिया। उपधान पति पद प्रदान कर घोषणा-पत्र खजांची के हाथ में थमाया। मैं नेमचन्द जी की ओर ही देख रही

थी, हमेशा सख्त रहने वाला उनका व्यक्तित्व आज हर्ष के आंसू वहा रहा था। वे हर्ष को अपने भीतर झेल नहीं पा रहे थे, समा नहीं पा रहे थे।

मोक्ष माला परिधान का मंगल मुहूर्त आ चुका था, पूज्य गणिवर्य श्री स्वर परीक्षण कर चुके थे।

और पूज्य गणिवर्य श्री ने आदेश दिया—कुमारी कुसुम खजांची को। वह रोमांचित वनी और आसन से उठकर मंच की ओर बढ़ने लगी। मैंने गौर से उसके चेहरे पर कम्पित हो रहे भावों के गहन उतार-चढ़ाव को देखा। उसके पांव कांप रहे थे। खुशियों के मारे वह उछल सी रही थी। यही तो वह परम-पुण्यशाली कुमारिका थी, जिसके गले में सर्वप्रथम मोक्ष माला पहनाई जाने वाली थी।

उपधान वाले दर्शक गण जैसे आँखें झपकाना ही भूल से गये थे। कुमारी कुसुम नीची नजर किये आगे वढ़ रही थी। दूसरी ओर से उन्हें माला पहिनाकर अपने आपको परम सौभाग्यशाली मान रहे अजीत खजांची व्यवस्थित कदमों से आगे वढ़ रहे थे। उनके हाथ में माला थी—हाथ कांप रहे थे। हर्ष की उछाल के कारण आँखें हर्षाश्रुओं से भर गई थी। गला रुंध गया था।

पूज्य गणिवर्य श्री ने प्रथम माला परिधान की घोषणा की। दोनों के सिर पर वासक्षेप डाला। माला अभिमंत्रित की, दोनों मंच के आगे बढ़े। एक दूसरे को तिलक किया। मालारोपण हुआ। और......और सारा पांडाल भगवान महावीर के जयोद्घोष से गूंज उठा। तपस्वियों की जय बोली जा रही थी। प्रथम माला का परिधान हो चुका था। मंच से नीचे उतरते समय उपधानपति श्री नेमचन्द जी खजांची अपनी ओर से हर तपस्वी को प्रभावना अर्पित कर रहे थे—चांदी की प्लेट, कटोरी, केसर आदि। साथ-साथ अभिनन्दन पत्र भी प्रदान कर रहे थे। दूसरी ओर सौ. श्रीमती आशा देवी खजांची अभिमंत्रित चावलों से वधा रही थी। माला परिधान का क्रम जारी था। सारे उपधान वाले अपने क्रम की प्रतीक्षा में तैयार वैठे थे। माला परिधान के हर्ष को मन में संम्हाल नहीं पा रहे थे। कुमारी कुसुम प्रसन्नता से दमकती चमकती अपने आसन पर जा वैठी।

दूसरी माला पहनने वाले पवन जी मंच पर आ चुके थे। माला पहनी जा चुकी थी। पूज्य गुरुदेव श्री वासक्षेप डाल रहे थे। माला अभिमंत्रित कर रहे थे....क्रमानुसार आगे के नाम बोले जा रहे थे... मैं कुछ देर के लिये दर्शकों के चेहरे पर उभर आये मन के भावों की थाह लेने लगी जो इस अभूतपूर्व दृश्य को देखकर परम आनन्दित हो रहे थे। कुछ ही देर वाद जव मेरा ध्यान पुनः मंच की ओर केन्द्रित हुआ तो मैं यह देखकर आश्चर्यचकित हो गई...कुछ ही मिनटों में 36 माला निपट चुकी थी और 37 वीं माला का विधान जारी था। इतने कम समय में....इतना व्यवस्थित मालारोपण विधान...इतना जल्दी! आश्चर्य! लोग चकित थे—उपधानवाही मुग्ध थे...। और मैंने देखा पूज्य गणिवर्य श्री ने 117 वीं माला को अभिमंत्रित किया।

और भगवान महावीर के जय-जयकार के साथ ही इस महोत्सव, 51 दिन चली इस महान तपश्चर्या के चरमोत्कृष्ट विधान की परिसमाप्ति की घोषणा हुई। तालियों की गड़-गड़ाहट निश्चित ही इन्द्र लोक तक पहुँची होगी। निश्चित ही इस अनोखे दृश्य के दर्शन करने... तपस्वियों को वधाई देने देवता गण आसपास मौजूद रहे होंगे।

और मैंने देखा...पूज्य गुरुवर्या श्री ने हाथ जोड़कर पूज्य गुरुदेव गणिवर्य श्री को वधाई दी। पूज्या गुरुवर्या श्री अभिभूत हो चुकी थी। हर्षातिरेक व्यवस्थित संवाद में वाधक वन रहा था। वे केवल इतना कह पाई.... आपने आज जिस पद्धति से... जिस शास्त्रीय विधान से सुव्यवस्थित ढंग से यह विधान सम्पन्न कराया.... निश्चित ही आप वधाई... अभिनन्दन के पात्र हैं, पूज्य गणिवर्य श्री के चेहरे पर आत्म तुष्टि की गौरवभरी मुस्कान थिरक रही थी।

पूज्य गणिवर्य श्री मंच पर विराज चुके थे। सभी उपधानवाही पुनः अपने-अपने आसनों पर वैठ चुके थे। पूज्य गणिवर्य श्री ने घोषणा कर दी थी कि अभी आपकी क्रियाएं शेष हैं। सभी दर्शक विमुग्ध वने वैठे थे। कोई अपने स्थान

से हिल भी नहीं रहा था। भीड़ की कोई सीमा नहीं थी। यह बीकानेर का पहला धार्मिक उत्सव था जहां इतनी भीड़ उमड़ी थी। और इतने शान्तिपूर्ण तरीके से महोत्सव संपन्न हुआ था।

दीक्षा की विधि बाकी थी। कुमारी शोभा श्वेत शुक्ल वस्त्र धारण कर आने वाली थी... संयम के उपकरणों से सज्जित होकर।

इस बीच परिवार वालों ने उपकरण वहराये। पूज्य गणिवर्य श्री ने परम्परा व मर्यादानुसार उन वस्त्रों को वहिराने के पूर्व कोई भी छोटा मोटा नियम लेने का उपदेश दिया।

शोभा के परिवार जन आ रहे थे। उपकरण वहरा रहे थे...नियम स्वीकार कर वासक्षेप ग्रहण कर पुनः आसन की ओर जा रहे थे।

कुमारी शोभा डागा के पिताजी श्री विजयकुमार जी डागा उपकरण वहिराने आगे आये...गुरुदेव श्री ने नियम लेने के लिये कहा.. मैंने देखा....नियम की बात सुनते ही डागा जी पल भर के लिये विचारों में खो गये...आंखें बंद कर ली, और फिर गंभीर स्वर में कहा–गुरुदेव ! जब तक मेरे जीवन में यह परम भागवती दीक्षा उदय में नहीं आ जाती तब तक घेवर का त्याग करूंगा।

गुरुदेव श्री इस संकल्प को देखकर अभिभूत हो उठे। डागाजी को जानने वाले जानते हैं कि घेवर उन्हें भाने वाली सबसे प्यारी मिठाई है।

कुछ ही क्षणों बाद शोभा का छोटा भाई पुखराज डागा उपकरण वहिराने लगा। और जब हमने यह जाना कि उसने आजीवन ब्रह्मचर्य का नियम ले लिया है चारों ओर अहोभाग्य का नाद गूंज उठा। पुखराज दीक्षा की भावना मन में वर्षों से सजोये है उसे अंतराय कर्म पर रोष है।

उसकी इस घोषणा को सुना तो मुझे आज प्रातः काल ही घटी एक सहज घटना का रहस्य समझ में आ गया।

आज सुबह ही तो पुखराज उपाश्रय आया था। चेहरा बड़ा उदास, आंखें लाल...जैसे घंटों रोता रहा हो।

मैंने उससे पूछा—'कुल्लु' (घर में इसे सब कुल्लु कहते हैं) तुम इतने उदास क्यों हो ? क्या तुम्हें यह गम सता रहा है कि तुम्हारी दीदी आज संन्यस्त हो जायेगी।

पुखराज ने कहा था–नहीं महाराज साहब ! दीदी के लिये दुःख होना स्वाभाविक है, पर आज मैं बहुत उदास हूँ। अब मैं अपने मन की पीड़ा किसे सुनाऊँ।

आगे वह वजह बताने ही वाला था कि कारणवश संवाद वहीं स्थगित हो गया था।

अब मुझे समझ आ गया था कि किस कारण उसका हृदय रो रहा था—वह सोच रहा था—क्या वह मंगल प्रभात आज की तारीख का नहीं हो सकता था।

मैं भी गुरुदेव के चरणों में समर्पित होकर संयम की ओर अपना कदम बढ़ा देता। पर परिस्थितियों के कारण मेरा यह सपना अभी पूरा नहीं हो सका।

वह कह रहा था अपने मन से कि अब तो गुरुदेव का ही सहारा है वही मेरी बाधाओं को काटेंगे और मेरे सपने को यथार्थ स्वरूप प्रदान करेंगे।

पूज्य गणिवर्य श्री चावलों को चांदी के थाल में विशिष्ट मुद्राओं द्वारा अभिमंत्रित कर रहे थे। उनके आदेश से कुमारी शोभा का भाई अशोक डागा दो शब्द कह रहा था अपनी बहिन की विदाई में।

सारी जनता एक उत्सव देख चुकी थी....दूसरे महोत्सव को देखने की अधीरता थी।, कब शोभा धवल वस्त्रों में सज्जित होकर आए और हम उस सच्चे राही आत्मा को वंदन कर कृतार्थ बनें, देखकर तृप्त बनें।

पूज्य गणिवर्य श्री ने निर्देश भेज दिया था कि अब शीघ्रता करो। उनकी दृष्टि घड़ी पर लगी हुई थी, वे एक पन्ने पर नजर डालकर गंभीरता से उसे पढ़ / देख रहे थे। मैंने देखा—उसमें दीक्षा कुंडली नवमांश कुंडली निकाली हुई थी–मुहूर्त का निश्चय उन्होंने कर ही लिया था। समय प्रगट नहीं किया गया था।

और दूर से झालर वजने की आवाज सुनाई दी। सारे लोगों के कान उसी दिशा में घूम गये। यह आवाज मन में कल्पना जगा रही थी। मैं यहाँ मंच पर वैठी थी पर मेरा मन तो वहीं रमा हुआ था।

पूज्य गणिवर्य श्री का एक ही निर्देश ऐसा था कि एक भी व्यक्ति अपने आसन से उठा नहीं—कोई कोलाहल नहीं।

मेरे मन में कल्पनाओं की तरंगें उछल रहीं थीं, शोभा कैसी लगेगी? उसके तन पर धवल वस्त्रों की धवलिमा कितनी शोभ रही होगी?

झालर की आवाज बड़ी मधुर लग रही थी। लोग उचक उचक कर देखने लगे थे...सांसें तेज हो गई थी.... धड़कनों ने गति पकड़ ली थी....आँखों में एकाग्रता का प्रवेश हो गया था।

और शोभा ने साध्वी वेश में धीर-गंभीर चाल से नीची नजर किये पांडाल में प्रवेश किया। सारा पांडाल नूतन साध्वी की जयकार से गूंज उठा। जयकार में शब्दों के कम्पन के साथ उत्साह का तेज भी समाया हुआ था। श्री पन्नालाल जी खजांची, सूरजमल जी पुगलिया व्यवस्था संभाल रहे थे।

मैंने धीरे-धीरे मंच की ओर आती-वढ़ती शोभा को देखा और देखते ही रह गई। अव यह मेरी गुरु वहिन वन चुकी थी... मैं इसके चेहरे की दिव्य कान्ति को देख रही थी, जो मुंडन संस्कार के वाद शतगुणित हो गई थी.... मैं इसकी आँखों में अनूठी चमक महसूस कर रही थी जो सादगी पाकर गम्भीर वन गई थी, मैं इसकी नपी तुली चाल परख रही थी जो परमातम पथ को पाकर पूर्ण प्रेममयी वन गई थी...। वह नीची नजर किये आ रही थी, उसके होठों पर जमी गम्भीर सहज मुस्कान उसकी खुशियों का ढिंढोरा पीट रही थी।

मैं आगे वढ़कर उसका हाथ थामकर गुरुवर्या श्री के पास ले आई, चरणों में वन्दन कर मंच पर आसन लगाकर क्रिया विधि की तैयारी करने लगी। साध्वी श्री शुभ्रांजना श्री जी म. क्रिया विधि करने में उसे सहयोग प्रदान कर रहे थे।

वाह्य परिवर्तन हो चुका था.... आभ्यन्तर के लिये प्रत्याख्यान करना था....सम्पूर्ण सावद्य योग के त्याग रूप 'करेमिभन्ते' का पाठ उच्चरना था।

पूज्य गणिवर्य श्री ने क्रिया प्रारम्भ की। क्रिया कराने में पूज्य मुनि मुक्तिप्रभ सागर जी म. सा उनके सहयोगी वने थे। केश लुंचन की विधि के वाद जव शोभा को करेमिभंते का पाठ उच्चराया गया, उसका मन नाच उठा।

आज उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति हो चुकी थी। उसके चेहरे की आभा हृदय में आलोक विखेरने लगी। कुछ ही समय की क्रिया शेष वची थी। नामकरण संस्कार शेष था। गुरुदेव श्री द्वारा अभिमंत्रित चावल वितरित किये जा चुके थे। निर्देश दिया जा चुका था कि इन चावलों का प्रक्षेपण नूतन साध्वी जी पर तव करना है जव वे प्रदक्षिणा देंगी।

पूज्य गणिवर्य श्री ने चावल प्रक्षेपण विधि का हेतु समझाकर इस शंका का समाधान कर दिया कि व्यर्थ में चावल उछालने से क्या लाभ है?

पूज्य गुरुदेव ने कहा—ये विशिष्ट मुद्राओं व मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित चावल हैं, आज चतुर्विध श्री संघ की साक्षी से यह वालिका साध्वी जीवन में प्रवेश कर रही है। श्री संघ अभिमंत्रित चावलों से वधायेगा, अभिनन्दन करेगा तथा आशीर्वाद देगा कि तुम्हें भी इन चावलों जैसा वनना है। चावल जैसे दुवारा नहीं उगता उसी प्रकार तुम भी जन्म-मरण की चक्रधारा से मुक्त हो जाओ। श्री संघ यह कामना करेगा कि 'तेरापंथ वने उजमाल... संयम पथ पा वनो निहाल....।'

और नामकरण की वेला आ गई। पूज्य गणिवर्य श्री खड़े थे। सारे लोग उत्कंठित थे यह सुनने कि इसका नाम क्या रखा जायेगा। चारों ओर शान्ति ही शान्ति थी।

पूज्य श्री ने 'कोटिक गण' आदि शब्दों का सिंहनाद किया। सकल श्री संघ की साक्षी में इसे विदुपी आर्या-रत्न पूजनीया गुरुवर्या श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. की शिष्या के

रूप में साध्वी शीलांजना नाम दिया गया। पूज्य गणिवर्य श्री ने इस नाम की वासक्षेप डाली और सकल श्री संघ ने साध्वी शीलांजना श्री जी की जय बोलकर अपने अहोभाव की मुहर लगा दी। मुनि मंडल, पूज्य गुरुवर्या श्री ने सकल साध्वी मंडल ने वासक्षेप डाली। सकल श्री संघ ने चावलों से वधाया, तीन बार नामकरण किया गया !

दीक्षा विधान पूरा हो चुका था। वन्दन विधान बाकी था। उपधानवाहियों ने और साध्वी शीलांजना जी ने गुरुदेव श्री को द्वादशावर्त वन्दन किया ! बाद में सकल संघ ने जब नूतन साध्वी शीलांजना श्री जी को वन्दन किया तो साध्वी शीलांजना जी शरमा गई। जबकि लोग आतुर थे....पहला धर्मलाभ सुनने।

क्रिया विधि विधान पूरा हो चुका था। उपधान आराधकों का परिवार जनों द्वारा अभिनंदन का कार्यक्रम पांडाल के बाहर रखा था। घड़ी पौने एक बजा रही थी। सिर्फ ढाई घंटे में सारा कार्यक्रम संपन्न हो चुका था। गुरुदेव श्री द्वारा सर्वमंगल किया जा चुका था। उपधानपति परिवार द्वारा पूज्य गुरुदेव श्री को कामली ओढाई जा चुकी थी। पूज्य गणिवर्य श्री पाट पर से खड़े हो गये थे। वापस शहर, महावीर भवन आने की तैयारी में। पूजनीया गुरुवर्या श्री आदि साध्वी मंडल पूज्य श्री के पास पहुंचा। प्रमुख कार्यकर्ता श्री पन्नालालजी खजांची पास ही खड़े थे।

पूज्य गणिवर्य श्री के चेहरे पर परम संतोष का रस छलकता आनंद नृत्य कर रहा था। उन्होंने गुरुवर्या श्री को कहा—आपकी प्रेरणा ने आज परम सफलता को प्राप्त कर लिया। मैं आपकी प्रेरणा का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ।

पूजनीया गुरुवर्या श्री के हर्ष का तो कोई पार नहीं था। पूज्य गणिवर्य श्री ने तो हर्ष पर गम्भीरता का लबादा ओढ़कर उसे भीतर रख लिया था पर पूजनीया गुरुवर्या श्री तो हर्ष रोक नहीं पा रही थी। उनके शब्दों द्वारा, चेहरे के भावों द्वारा, उनकी चाल से, आनंद ही आनंद बरस रहा था। उन्होंने कहा—यह सब आपके ही पुरुषार्थ का परिणाम है। खजांची जी ने वार्तालाप में हस्तक्षेप किया—यह सत्य तथ्य है... आज परिश्रम सफल बना। मैं उनके चेहरे पर छाये तेज को देख रही थी, वे इतने हर्षित थे कि अपनी बात भी नहीं कह पा रहे थे। हृदय में हर्ष की उछलती उर्मियां अभिव्यक्ति में बाधा बन गई थी। पूज्य गणिवर्य श्री ने कहा—यह आप जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के परिश्रम का परिणाम है। रात दिन एक कर जो कार्य किया, मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। पूजनीया गुरुवर्या श्री भी उनके कार्य की प्रशंसा कर रही थी। और पन्नालालजी जैसे आज इन शब्दों को पाकर गौरवान्वित, रोमांचित हो उठे थे। उन्होंने रूमाल निकालकर आंखों से बाहर आने को बेचैन हो उठे हर्ष के आंसू पोंछ लिये। चेहरा जैसे स्वाभाविक स्वाभिमान से तन गया था। उन्होंने अपनी मूंछों को व्यवस्थित किया और मुस्कुरा उठे।

सारे धर्मों का उद्देश्य आत्मा की शुद्धता उपलब्ध करने का है। केवल नाम और बाह्य क्रियाकाण्डों का भेद है, पर मूल में तो वही तत्त्व है।

विश्व धर्म को लेकर अशांति इसी कारण से है कि हमारे हृदय में असहिष्णुता का साम्राज्य स्थापित हो गया है।

—गणिमणिप्रभसागर

गुरु समर्पण



पुखराज डागा (कूल्लू)

जिनवाणी का सिंहनाद कर
तुमने हमें जगाया ।
सत्य-धर्म की राह दिखाकर,
ज्ञान का दीप जलाया ।
कान्तिसूरि के शिष्य गणिवर
मणिप्रभ नाम कहाया ।
तेरी आभा ने जिन शासन में
स्वर्णिम सूर्य उगाया ।।१।।
तेजोमय मुखमुद्रा तेरी,
ओजभरी प्रिय वाणी ।
कलकल गंगाजल-सी वहती,
करती धर्म की लाणी ।
एक वार दर्शन पाते वे,
हो जाते नौनिहाल ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान निधि से
वनते मालामाल ।।२।।
सत्य प्रतिष्ठित जीवन तेरा
अटल आस्था स्वर में ।
चिन्तन में श्रद्धान भरा,
वैराग्य गूंजता रग में ।
हाथों में वरदान,चरण में
लक्ष्मी करती वास ।
वाल-शिष्य पुखराज लगाये
वैठा तेरी आस ।।३।।

शुभाशंसनम्

धन्यो मणिप्रभो विद्वान् क्रियाकाण्डे धुरन्धरः ।
कान्तिसागर सूरीणां वितनोति यशोऽमलम् ।।

भवन्तु सुखिनः सर्वे कर्तारोऽप्यनुमोदकाः ।
दातारो वसुधाराणां सेवा धर्म परायणाः ।।

जैन धर्मरता मान्या शान्ता पीयूष वर्षिणी ।
सती हेमप्रभा विज्ञा, वितनोतु सतां शिवम् ।।

उपधानाभिधं चेदं तपश्चातीव दुर्लभम् ।
कुर्वान्ति कारयन्ते ये ते सर्वे शिव गामिनः ।।

जिनालये सुसम्पन्ने कलशा रोपणं वरम् ।
उपधानतपः प्रान्ते दीक्षा दानं महाफलम् ।।

दक्षिणातु पुरा लब्धा आशीर्वादो वितीयते ।
इहोपेत्य विधातव्यः स्मारकोऽनुभवाश्रियाः ।।

—आचार्य रामकिशोर पाण्डेय

नित उठ वन्दन करता हूँ

□

हेमन्त कुमार पुगलिया, वीकानेर

प्रखर प्रवक्ता परम प्रतापी परम प्रभावी उपकारी।
प्रवचन सुनने दौड़े आते बड़ी संख्या में नरनारी ।।
अपनी आस्था अरु श्रद्धा का भाव सुमन मैं धरता हूँ।
गणिवर मणिप्रभसागर गुरु को नित उठ वंदन करता हूँ ।।१।।

श्री जिन कान्तिसागर गुरु के शिष्य बने छोटी वय में।
योग्य गुरु के योग्य शिष्य शिक्षा वीणा बजती लय में ।।
ज्ञान किरण तुमसे पाकर मैं अपने मन को भरता हूँ।
गणिवर मणिप्रभसागर गुरु को नित उठ वंदन करता हूँ ।।२।।

धर्म प्रभावक वोध प्रदायक तप जप आराधक ध्यानी।
कुशल साधना कुशल गुरु की करते रहते इकतानी ।।
उनकी वाणी योग सिद्धि में चमत्कार अनुभवता हूँ।
गणिवर मणिप्रभसागर गुरु को नित उठ वंदन करता हूँ ।।३।।

ऐसे ज्ञानी गुरुवर को पा मेरे मन का ये चिन्तन।
अर्पण कर दूं श्री चरणों में मैं अपना सारा जीवन ।।
युग-युग अमर रहे गणि मणिवर यही कामना करता हूँ।
गणिवर मणिप्रभसागर गुरु को नित उठ वंदन करता हूँ ।।४।।

वीकानेर नगर में जिनशासन का मंगल घंट बजा।
जिनके चौमासे में धर्म की लहराई अति भव्य ध्वजा ।।
मधुरी वाणी ओज तेज युत सुनकर आनंद भरता हूँ।
हेमप्रभाजी गुरुवर्या को नित उठ वंदन करता हूँ ।।५।।

जिनके कारण वोध मिला मुझ जैसे नास्तिक व्यक्ति को।
गुण जीवनभर गाऊँ मैं निशदिन नमता उस शक्ति को ।।
दिव्य भव्य तेरे उपदेशों को मैं नित अनुसरता हूँ।
हेमप्रभाजी गुरुवर्या को नित उठ वंदन करता हूँ ।।६।।

प्रणाम थांने नित नित म्हारा

□

सुश्री बरकर खजांची

मणिप्रभजी मणि ज्यूं चमके ए,
गौरव गुण मैं गावां जी।
हिवड़े मांही सदा विराजे।
हिलमिल सीस झुकावां जी ॥१॥

मोकलसर में जन्म्या गुरुवर।
रोहिणी मां रा बाल जी॥
पारसमल जी रा नंद नगीना।
लूंकड़ कुल रा लाल जी ॥२॥

कान्ति सूरि रा सीस वण्या थे।
गुरु चरणां में बैठ भण्या॥
भण्या नहीं थे खरा गुण्या।
थांरा वखाण में घणा सुण्या ॥३॥

बोली थांरी हीरा तोली।
जाणे उण में मिश्री घोली॥
हिवड़े री आंख्यां थे खोली।
सुण श्रोता री नसड़ी डोली ॥४॥

पगल्यां म्हे नित पूजां थांरा।
दाय न आवे दूजा सारा॥
थे गुरुवर सगला सूं न्यारा।
प्रणाम थांने नित नित म्हारा ॥५॥

उपधान पति श्री नेमचन्दजी खजांची

□

सूरजमल पुगलिया

मरुभूमि धर्मधरा वीकानेर के सपूत श्री नेमचन्द जी खजांची भारतवर्ष से वहुत दूर आज विश्व के सर्वोन्नत देशों की गणना में आने वाले देश जापान में निवास करते हैं। अपने पिता श्री भंवर लाल जी खजांची एवं मातु श्री सज्जन देवी से मिले धार्मिक संस्कारों की वदौलत एवं जापानियों की मातृभूमि के प्रति असीम श्रद्धा के परिवेश में रहने के कारण आपके जीवन में इन दोनों गुणों का सुंदर समावेश देखा जा सकता है। वचपन से मिले धार्मिक संस्कारों के कारण 'वहुजन हिताय—वहुजन सुखाय' की विभिन्न योजनाओं में आपने समय-समय पर गहरी रुचि ली है एवं इस क्षेत्र में अपनी मातृभूमि वीकानेर को सदा प्राथमिकता दी है।

वर्तमान में हुए उपधान तप के स्थल, एवं आज वीकानेर जैन समाज की विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र श्री महावीर जैन भवन का पुनः निर्माण आज से लगभग ढ़ाई वर्ष पूर्व 19 मई 1986 को आप ही के अर्थ सहयोग से संभव हुआ, एवं इसके निर्माण ने यह सिद्ध कर दिया कि आप धन कमाने और उसे सद्कार्यों में खर्च करने, इन दोनों कलाओं में पारंगत हैं, तथा आपके दिल में जिन शासन के विभिन्न सिद्धान्तों के प्रति गहरी आस्था है।

धन का वाहुल्य अहंकार को प्रदीप्त करता है, लेकिन यह कथन आपके जीवन की सरलता, सहजता, और सहृदयता को देखते हुए मिथ्या प्रतीत होता है। जैसे जल का आधिक्य सरिताओं के नियमित प्रवाह को तो भिन्न-भिन्न करने में सक्षम हो सकता है, पर समुद्र की धीर गंभीर मर्यादा को भंग नहीं कर सकता। दान देते समय आप अपनी धन गंगा में तन और मन की निष्ठा को सामिल करके उसे त्रिवेणी का रूप प्रदान कर देते हैं। आपके व्यक्तित्व का परिचय देने में शब्दों का सामर्थ्य किञ्चित निर्वल प्रतीत होता है, फिर भी हम यहां आपका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं।

श्री नेमचन्दजी खजाञ्ची ने वीकानेर नगर में दिनांक 19 दिसम्वर 1935 ईस्वी को कुशल जौहरी श्री भंवरलाल जी खजाञ्ची के घर श्रीमती सज्जन देवी की कुक्षि से पुत्र रत्न के रूप में जन्म ग्रहण किया था। अल्पायु से ही वे रत्नों और रत्नाभूषणों के अपने पैतृक व्यवसाय की ओर आकर्षित हुए और क्रमशः निष्ठावान होते चले गये। पन्द्रह वर्ष तक वे वीकानेर नगर में ही अपने निजी व्यवसाय में सहयोग करते रहे, इसके पश्चात् सन् 1951 में उन्होंने व्यवसाय के आकार और सुविधा के अनुरूप वम्वई नगर को अपना व्यवसाय केन्द्र चुन लिया और सपरिवार वहीं निवास प्रारम्भ कर दिया।

इस वीच परम्परानुसार 16 वर्ष की आयु में ही आपका विवाह एक प्रतिष्ठित जौहरी घराने में श्री लालचन्द जी कोठारी की सुपुत्री आशादेवी के साथ संपन्न हो गया। सन् 1962 में आपने स्वतंत्र रूप से अपना व्यापार दिल्ली महानगरी में प्रारंभ किया और यहां से विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करके आप 1967 में यहां से जापान के लिए प्रस्थान कर गये। अपनी प्रतिमा, कुशलता,

मधुर व्यवहार, ईमानदारी, और परिश्रम से आप निरंतर सफलता की सीढ़ियां चढ़ते गए। वर्तमान में आपकी फर्म जापान के मोती व्यवसायियों में एक प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है, और आपका विश्व के अनेक देशों के साथ व्यापारिक लेनदेन होता है। आपकी फर्म मैसर्स जवाहिरान पर्ल एक्सपोर्ट कं. लि. का मुख्य कार्यालय जापान के कोबे नगर में स्थित है। आपके दो पुत्रों में से अग्रज श्री सुरेन्द्र कुमार जी व्यापार में आपके सहयोगी हैं और अनुज श्री अमित विक्रम खजांची अभी अध्ययन रत है। आपकी पुत्री श्रीमती तारा बोथरा जो श्री राजेन्द्र कुमार जी बोथरा से विवाहित हैं वही जापान में निवास करती हैं एवं श्री राजेन्द्र जी भी शिक्षा से चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट हैं वही मोती के व्यवसाय में लगे हुए हैं।

आपके सभी परिवार जनों के मन में जैन धर्म के विभिन्न सिद्धान्तों के प्रति गहरी आस्था है, और आप दुखी एवं पीडित मानव की सेवा के लिए सदा तत्पर रहते हैं। अभी लगभग पांच वर्ष पूर्व आपने बीकानेर नगर के पास ही के कस्बे लूणकरणसर में गरीब असहाय ग्रामीण जनता की चिकित्सार्थ एक कैंप लगवाया था, जिसमें सभी प्रकार के रोगों से पीड़ित हजारों ग्रामीण जनों को चिकित्सा सेवायें उपलब्ध कराई गई। उसके पश्चात आपने रोटेरी क्लब बीकानेर के सहयोग मे कोलायत तहसील में आंखों के ऑपरेशन के दो कैंप लगवाये, जिसमें सैकड़ों की संख्या में बूढ़े-बीमार लोगों की आखों का इलाज किया गया, और उसके फलस्वरूप वे आज आसानी से अपना दैनिक जीवन यापन कर सकते हैं।

विकलाग बच्चों की सहायता के लिए बनाये जा रहे रोटेरी भवन को आपने एक लाख रुपये की धनराशि प्रदान करके अपनी उदारता का परिचय दिया है। पिछले चार वर्षों मे राजस्थान में भयंकर अकाल पड़ा और इस अकाल में हजारों निरीह प्राणी काल कलवित हो गए, ऐसे समय मैं आपने पशुधन को बचाने के लिए चलायी जाने वाली विभिन्न योजनाओं में मुक्तहस्त दान देकर, अपने हृदय की करुणा का जीवंत परिचय दिया है।

शिक्षा के विकास के प्रति आपकी गहरी रुचि है और इसी के फलस्वरूप आपने बीकानेर नगर की सर्वोच्च शिक्षण संस्था–जो प्राथमिक कक्षा से स्नातकोत्तर महाविद्यालय तक की शिक्षण संस्थाएँ चलाती है, पिछले वर्ष एक लाख रुपये की सहायता प्रदान की है।

भारत और भारतीय संस्कारों के प्रति आपकी गहरी आस्था है एवं अपनी मातृभूमि बीकानेर से आपका गहरा लगाव है, और इसी कारण आपका निरंतर बीकानेर आना जाना बना रहता है। आज बीकानेर नगर के अनेकों व्यवसायियों का अपने-अपने क्षेत्र में अच्छा प्रमुत्व है लेकिन दुर्भाग्य से वे लोग अपनी मातृभूमि को लगभग भूल से चुके है, और स्थानीय समाज की आवश्यकताओं एवं समस्यायों में उनकी कोई रुचि नही है लेकिन ऐसे समय में आप बीकानेर वासियों के लिए एक ज्योतिपुंज के रूप में प्रकट हुए हैं, एवं यहां की विभिन्न समस्याओं के प्रति गहरी रुचि लेकर आप उन्हें दूर करने में अपना हर संभव प्रयास कर रहे हैं, एवं अपनी तरफ से तन मन धन से पूरा सहयोग कर रहे हैं। स्थानीय जैन समाज को आपसे बहुत आशाएँ हैं।

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती आशा देवी एक अत्यन्त धर्म निष्ठ महिला हैं, एवं विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों में आप सदा अपने पति को प्रेरणा देती रहती हैं, एवं हर कार्य में उनकी अनुगामिनी बनी रहकर एक आदर्श भारतीय नारी के रूप में अपने आपको एक अनुकरण के रूप में प्रस्तुत किया है।

परम पिता से हमारी यही प्रार्थना है कि वह निरंतर इस युगल पर एव सभी परिवार जनों पर अपनी असीम कृपा बनाये रखे ताकि यह परिवार निरंतर जिन शासन की शोभा में चार चांद लगाता रहे।

चातुर्मास समिति के प्रमुख सहयोगियों का परिचय

श्रीमान् शिवचन्द जी झाबक

(उम्र लगभग 88 वर्ष)



श्रीमान् शिवचन्दजी झाबक

यदि दिल में समाज के प्रति लगाव हो तो उम्र उसमें किसी भी प्रकार से बाधक नहीं बन सकती, यह तथ्य श्री मान् शिवचन्द जी झाबक के जीवन से सत्य प्रकट होती है। लगभग 88 वर्षीय श्रीमान् झाबक जी में आज भी विभिन्न सामाजिक कार्यों के प्रति वही सजगता एवं चिन्ता है, जो युवावस्था में थी, आलस्य का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं है आपके पिता श्री मंगलचन्द जी झाबक भी खरतरगच्छ के प्रमुख श्रावकों में से थे। आपकी मद्रास में लगभग 150 वर्ष पुरानी पेढ़ी है। इसके अलावा पटना में भी आपका अच्छा कारोबार था। अपने जीवन काल में आपने बिहार, मद्रास व बीकानेर की विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं को अपने सक्रिय सहयोग से लाभान्वित किया है, एवं अनेकों संस्थाओं के पदाधिकारी रहे हैं। इस चातुर्मास में भी आपने चातुर्मास कमेटी के संरक्षक के रूप में समिति को अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। वर्तमान में आप खरतरगच्छ जैन समिति के भी अध्यक्ष हैं। हम आपके स्वस्थ दीर्घ जीवन की मंगल कामना करते हैं।

श्री माणकचन्द जी बेगाणी

(उम्र लगभग 75 वर्ष)



श्री माणकचन्दजी बेगाणी

मूल रूप से बीकानेर निवासी श्री बेगाणी जी व्यावसायिक दृष्टि से कलकत्ता में निवास करते हैं लेकिन विभिन्न पारिवारिक एवं सामाजिक उत्सवों पर आपका बीकानेर में आवागमन रहता है। आपका जीवन बचपन से ही धार्मिक संस्कारों से रंगा हुआ है और इस उम्र में भी आपको प्रतिदिन जिनेश्वर देव की पूजा भक्ति के बिना चैन नहीं होता।

प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. चातुर्मास आयोजन समिति के अध्यक्ष के रूप में आपने इस वर्ष अपने सभी व्यावसायिक कार्यों को परे रखकर पूरा चातुर्मास बीकानेर में ही बिताया एवं इस अवधि में हुए विभिन्न कार्यक्रमों में आपने खुले दिल से अर्थ सहयोग प्रदान किया।

थोड़े शब्दों में अधिक महत्व की बात कहना एवं अपने विचारों को बिना किसी पक्षपात के अभिव्यक्त करना आपके व्यक्तित्व का विशेष गुण है।

श्री जतनमल जी लूणिया

(उम्र लगभग 58 वर्ष)

बीकानेर में जन्मे श्री लूणिया जी स्थायी रूप से

कलकत्ता में निवास करते हैं एवं वहां आपका कपड़ा मिलों की दलाली एवं कपड़े का थोक व्यवसाय है। धार्मिक एवं सामाजिक भावना के संस्कार आपको पिता श्री हीरालाल जी लूणिया एवं माता श्रीमती मगन देवी से विरासत में प्राप्त हुए हैं। स्वभाव से हसमुख सरल, सरस एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी श्री लूणिया जी कलकत्ता खरतरगच्छ संघ के एक सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं। आपका शास्त्रीय संगीत के प्रति अच्छा रुझान है, एवं स्वयं भी शास्त्रीय संगीत के अच्छे गायक भी हैं। श्री जैन श्वे. मित्र मण्डल कलकत्ता के मंत्री है। प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. चातुर्मास आयोजन समिति के आप उपाध्यक्ष रहे हैं।



श्री जतनमल जी लूणिया

इस चातुर्मास में आपने व्यावसायिक कार्यों को परे रखकर चातुर्मास का अधिकांश समय बीकानेर में ही बिताया और इस अवधि में हुए विभिन्न कार्यक्रमों में आप सदैव विवेकपूर्ण मार्ग-दर्शन देते रहे एवं आपने मुक्तहस्त आर्थिक सह-योग भी प्रदान किया है। इसके अलावा आपने व्यक्तिगत रूप से कई धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है एवं अनेकों पुस्तकों के प्रकाशन में अच्छा आर्थिक सहयोग दिया है।

श्री हनुमान दास जी सीपाणी

धीर गंभीर मुद्रा के धनी श्री सीपाणी जी का जन्म श्रीमान् सेठ रिधकरण जी सीपाणी की धर्मपत्नी की कुक्षी से आसोज वदी 2 संवत् 1989 को हुआ। आपके परिवार में पुश्तैनी हाथी दांत का व्यापार होता था, लेकिन आपने अपने परिश्रम से ऊन का व्यापार शुरू किया और आज आपकी फर्म पन्नालाल हीराचन्द बीकानेर के ऊन व्यवसाय की एक प्रतिष्ठित फर्म मानी जाती है। व्यवसाय के



श्री हनुमानदासजी सीपाणी

अलावा आप बीकानेर जैन समाज की विभिन्न गतिविधियों में निरंतर रुचि लेते रहे हैं। वर्तमान में आप श्री आत्मानंद जैन सभा बीकानेर के संरक्षक, एवं श्री गंगा जुबिली पिंजरापोल के न्यासी हैं। प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. के इस बीकानेर चातुर्मास में बनाई गई चातुर्मास कमेटी के सदस्य के रूप में इस चातुर्मास में हुए विभिन्न कार्यों में आपने अंतरमन से पूरा सहयोग प्रदान किया है।

श्री झंवरीचन्द जी खजांची



श्री झंवरीचन्दजी खजांची

बीकानेर के प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमान् सेठ प्रेमचन्द जी खजांची के पौत्र एवं श्रीमान् माणक चन्द जी खजांची के सुपुत्र श्री झंवरी चन्द जी का जन्म दि. 2 फरवरी 1932 को हुआ। बचपन से मिले सुसंस्कारों के कारण आपकी विभिन्न धार्मिक कार्यों मे सदा रुचि रही है। आपका व्यक्तित्व गौर वर्ण, स्पष्ट वक्ता का है। इस चातुर्मास में नगर के बाहर से दर्शनार्थ आने वाली यात्री बसों की भोजन व्यवस्था करके एवं चातुर्मास में हुए श्रृंखला तेलों के तपस्यार्थियों तथा पंचरंगी तप के तपस्यार्थियों का बहुमान करके आपने अपनी अनन्य स्वधर्मी सेवा भावना का परिचय दिया है।

चातुर्मास कमेटी के प्रमुख कार्यकर्ताओं का परिचय

श्री लालचन्द जी सुराणा

(जन्म संवत् 1974 मिती मिगसर सुदी 12)



श्री लालचन्दजी सुराणा

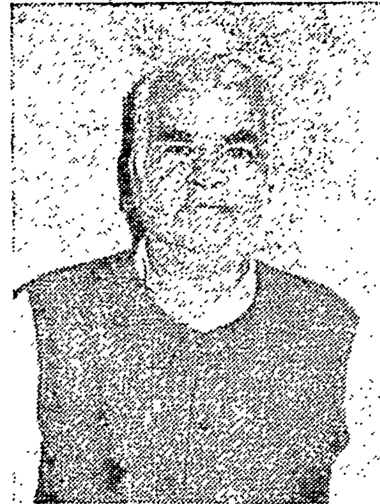
उम्र 72 वर्ष किन्तु कार्य करने का उत्साह और शक्ति 27 वर्ष के नवयुवक सी। पिछले पचास वर्षों से आप विना किसी पद प्रतिष्ठा की आकाँक्षा के वीकानेर जैन समाज की विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं को तन-मन से अपना सहयोग देते आ रहे हैं। व्यावसायिक रूप से आपका वीकानेर, गंगानगर एवं जयपुर में कपड़ का व्यवसाय है। आपने इस वर्ष पू. हेम प्रभा श्री जी चातुर्मास आयोजन समिति के कोषाध्यक्ष के रूप में समिति की विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय सहयोग दिया है। इसके अलावा आप कपड़ा व्यवसायी संघ वीकानेर के कोषाध्यक्ष तथा श्री महावीर जैन मण्डल वीकानेर के आधार स्तम्भ हैं। वीकानेर में होने वाले विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में आपने सदा सक्रिय सहयोग दिया है।

वीकानेर में जैन समाज के जरूरतमंद भाई वहिनों के सहयोगार्थ चलाये जाने वाले स्वधर्मी सहायता फंड के आप आधार स्तम्भ हैं एवं सूचना मिलते ही तुरंत जरूरतमंद व्यक्ति की सहायतार्थ आप पहुंच जाते हैं।

स्वभाव से शान्त, सरल एवं सहनशील व्यक्तित्व के धनी श्री सुराणा जी यशोलिप्सा से दूर निष्काम भाव से सदा रचनात्मक कार्यों में जुटे रहते हैं। आलस्य का आपके जीवन में तनिक भी स्थान नहीं है।

श्री चान्दरतन जी पारख

(जन्म संवत् 1990 कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा)



श्री चान्दरतनजी पारख

पिता श्री किशन चन्द जी पारख से विरासत में प्राप्त सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों के संस्कार के फलस्वरूप श्री पारख जी भी सहज भाव से विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में पूरी निष्ठा से जुट जाते हैं। सरल, शान्त एवं सौम्य प्रकृति के धनी पारख जी व्यावसायिक रूप से विद्युत उपकरणों का व्यवसाय करते हैं।

प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. के वीकानेर चातुर्मास में आपने विभिन्न अवसरों पर की जाने वाली भोजन व्यवस्था में अपना सर्वाधिक समय देकर उसके सफल संचालन में सक्रिय सहयोग दिया है। वर्तमान में चल रहे उपधान तप की भोजन व्यवस्था में भी आप अपने व्यावसायिक कार्यों को ताक पर रखकर दिन भर जुटे रहते हैं। इसके अलावा पिछले तीन वर्षों में लगे दो शिक्षण शिविरों में तथा कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर समाज के सामूहिक प्रसाद के अवसरों पर होने वाली भोजन व्यवस्था के भी आप प्रमुख सहयोगी रहे हैं। विभिन्न अवसरों पर मंदिरों में होने वाली पूजाओं में भी आप विना नागा उपस्थित होते हैं।

55 वर्ष की उम्र में भी आप अत्यन्त उत्साही एव निष्ठावान हैं। जिस कार्य को हाथ में लेते हैं जव तक वह पूरा न हो, पूरी लगन के साथ उसमें जुटे रहते हैं।

श्री बाबूलाल जी मुसरफ

(जन्म संवत् 1988 मिती चैत वदी 11)



श्री बाबूलालजी मुसरफ

मूल रूप में खरतरगच्छीय श्रावक श्री मुसरफ जी की सेवाएँ सभी के लिए सहज भाव से उपलब्ध रहती हैं। कपड़े के थोक व्यवसायी श्री मुसरफ जी एक स्वनिर्मित व्यक्ति हैं। पिछले कई वर्षों में बीकानेर में होने वाले विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में आपने सदा सहयोग दिया है। इस वर्ष के चातुर्मास में हुए विभिन्न कार्यक्रमों में आपने तन मन धन से सक्रिय सहयोग दिया है।

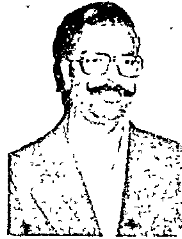
इस अवधि में अपने व्यावसायिक कार्यों की परवाह न करते हुए आपने चातुर्मास में आने वाले यात्रियों की आवास व्यवस्था में, शिविर की व्यवस्था में एवं वर्तमान में चलने वाले उपधान तप की विभिन्न व्यवस्थाओं में सक्रिय सहयोग देकर स्वधर्मी वात्सल्य का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

57 वर्ष की उम्र में भी आपमें युवकों सी स्फूर्ति, तत्परता एवं उत्साह है। आलस्य का आपके जीवन में कोई स्थान नही है। सदा हसमुख रहना आपके व्यक्तित्व का गुण है।

श्री पन्नालाल जी खजांची

(जन्म संवत् 2004 काती वदी 12)

श्री हेमप्रभा श्री जी म. सा. चातुर्मास आयोजन समिति के मंत्री श्रीखजांची जी चातुर्मास एवं उपधान तप के दौरान हुए समस्त कार्यक्रमों एवं आयोजनों के सूत्रधार के रूप में उभर कर सामने आये है। निजी कार्यों एवं



श्री पन्नालालजी खजांची

व्यवसाय को ताक पर रखकर पिछले लगभग 7 माह से निरंतर विभिन्न व्यवस्थाओं के सफल संपादन में जुटे रहने की शक्ति, क्षमता एवं अदम्य उत्साह संजोये रखना इस जुझारू व्यक्ति के ही वश की बात थी। पर पीड़ा में सम्बल के रूप में जाकर खड़े हो जाने का गुण पिता श्री लूणकरण जी से आपको विरासत में मिला। पेचीदा एवं उलझन भरे कार्यों में हाथ डालकर विरोधों एवं अवरोधों का डटकर मुकाबला करते हुए साहसपूर्वक उसे सफलता के सोपान तक पहुंचा देना इनके दृढ़ विश्वास का प्रतीक है। आप वर्तमान में श्री खरतरगच्छ जैन समिति के मंत्री, श्री नमीनाथ जैन मन्दिर प्रन्यास एवं सर्राफा एसोसियेसन के कोषाध्यक्ष, श्री चिन्तामणि जैन मन्दिर प्रन्यास एवं श्री जैन श्वे. ओसवाल खरतरगच्छ श्री संघ के प्रन्यासी हैं। श्री महावीर जैन भवन के निर्माण में आने वाली उलझनों को कुशलतापूर्वक सुलझाते हुए आपने इसके निर्माण में सर्वाधिक समय दान किया है। बीकानेर के विभिन्न जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार में आपका सक्रिय सहयोग रहा है।

व्यावसायिक रूप से आप सर्राफे का कार्य करते है। बीकानेर जिला जनता पार्टी के भी आप पूर्व में कोषाध्यक्ष रहे हैं।

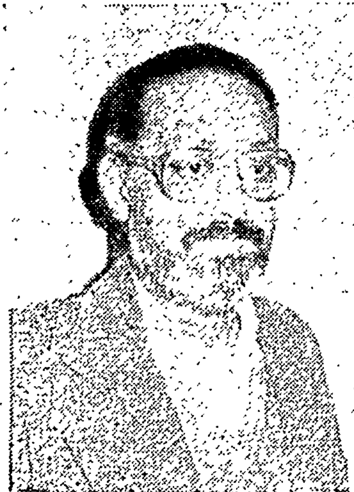
श्री धनपत सिंह जी खजांची

(जन्म ईस्वी 19 अप्रेल 1947)

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी श्री धनपत सिंह जी खजांची को सामाजिक कार्यों के प्रति लगन अपने पितामह श्री प्रेमचन्द जी खजांची एवं पिता श्री माणक चन्द जी खजांची से विरासत में मिली है। आपकी मातु श्री अंतर देवी

एक धर्म निष्ठ महिला हैं एवं बीकानेर खरतरगच्छ संघ की एक प्रमुख श्राविका हैं। आप पद प्रतिष्ठा की आकांक्षा से दूर रहकर निःस्वार्थ भाव से सेवा करने में विश्वास रखते हैं। इस चातुर्मास में हुए विभिन्न आयोजनों एवं कार्यक्रमों में आपने तन मन धन से पूरा सहयोग दिया है। अभी बीकानेर में चल रहे उपधान तप में भी आप अपने व्यावसायिक कार्यों को ताक पर रख कर दिन रात जुटे हुए हैं। उपधान तप की श्रेष्ठ भोजन व्यवस्था आपकी सूझ एवं मार्गदर्शन का परिणाम है।

व्यावसायिक रूप से आप विद्युत उपकरणों का व्यवसाय करते हैं एवं विद्युत व्यवसायी संघ के आप अध्यक्ष हैं। इसके अलावा आपने बीकानेर जैन समाज के युवकों को संगठित करने की दिशा में काफी प्रयास किया है एवं वर्तमान में जैन युवक मंडल के आप संरक्षक हैं। सार्दुल क्लब बीकानेर की कार्यकारिणी के आप सदस्य हैं।



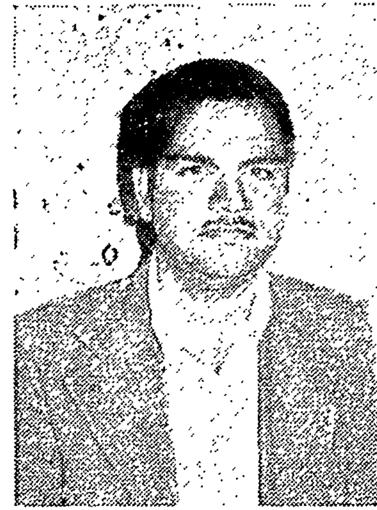
श्री धनपतसिंह जी खजांची

सरल स्वभाव के स्पष्ट वक्ता श्री खजांची जी मिलनसार एवं सहयोगी प्रकृति के हैं।

श्री सूरजमल जी पुगलिया

(जन्म ईस्वी 9 मई 1949)

आप चालीस वर्ष के तेज तर्रार युवक हैं किन्तु विभिन्न विषयों में एक प्रौढ़ का सा अनुभव रखते हैं। पिता श्री जीवणमल जी एवं माता श्रीमती नाथी देवी से श्रम, सेवा एवं धार्मिक भावना विरासत में मिली है। अपने विद्यार्थी जीवन में एक मेधावी छात्र रहे हैं व महाविद्यालय के एक वर्ष के लिए सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी घोषित किये गए। व्यावसायिक दृष्टि से वर्तमान में यूको बैंक में सहायक प्रबन्धक के पद पर नियुक्त हैं। बचपन से ही इनकी सामाजिक कार्यों में रुचि रही है। प. पू. हेमप्रभा श्री जी म. सा. चातुर्मास आयोजन समिति के सह मंत्री के रूप में आपने इस चातुर्मास में हुए विभिन्न आयोजनों एवं कार्यक्रमों में तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग दिया है। वर्तमान में आप श्री चिन्तामणि जैन मन्दिर प्रन्यास व श्री खरतरगच्छ जैन समिति के कोषाध्यक्ष, श्री जैन पाठशाला सभा बीकानेर के सह मंत्री, श्रीमती छोटा देवी नाहटा परमार्थ ट्रस्ट के मंत्री व श्री जैन भवन पालीताणा के प्रन्यासी हैं। रोटेरी क्लब बीकानेर के भी आप सदस्य हैं। श्री महावीर जैन भवन के निर्माण में एवं बीकानेर नगर तथा आसपास के गांवों में स्थित प्राचीन जिन मंदिरों के जीर्णोद्धार में आपने सक्रिय सहयोग दिया है।



श्री सूरजमलजी पुगलिया

वर्तमान में चल रहे उपधान तप की विभिन्न गतिविधियों में आप सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं व खजांची उपधान तप समिति के सदस्य हैं। इस प्रकार विभिन्न संस्थाओं से जुड़े श्री पुगलिया जी योग्यता श्रम सेवा एवं उत्साह के पुंज हैं। विभिन्न उलझन भरे कार्यों को एक साथ सुलझाने व निपटान करने की आपमें विशेष योग्यता है। इस वर्ष दिल्ली में श्री श्रमण साहित्य संस्थान द्वारा भारतवर्ष के विशिष्ट जैन सामाजिक कार्यकर्ताओं के सम्मानार्थ किए गए आयोजन में आपको केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी द्वारा सम्मानित किया गया।

—धनराज नाहटा

उपधानवाही – पुरुष वर्ग

क्र.सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्र	पिता का नाम	स्थान	उपधान
1.	श्री नरेश कुमार गोलछा	पुत्र	श्री चंदराज जी गोलछा	बीकानेर	प्रथम
2.	श्री पानमल जी नाहटा	पुत्र	श्री चंपालाल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
3.	श्री छगनमल जी मरोठी	पुत्र	श्री भीखम चन्द जी मरोठी	बीकानेर	प्रथम
4.	श्री सुशील कुमार नाहटा	पुत्र	श्री गोरूलाल जी नाहटा	बीकानेर	प्रथम
5.	श्री पवन कुमार जी पारख	पुत्र	श्री जेठमल जी पारख	बीकानेर	प्रथम
6.	श्री भंवर लाल जी सीपाणी	पुत्र	श्री देवचन्द जी सीपाणी	बीकानेर	प्रथम
7.	श्री पदम चन्द जी खजांची	पुत्र	श्री भंवरी चन्द जी खजांची	नागौर	प्रथम
8.	श्री मूल चन्द जी खजांची	पुत्र	श्री उगम चन्द जी खजांची	नागौर	प्रथम
9.	श्री भंवरलाल जी डागा	पुत्र	श्री विजेमल जी डागा	नागौर	प्रथम
10.	श्री अनोप चन्द जी कोटड़िया	पुत्र	श्री भभूतमल जी कोटड़िया	राजनंद गांव	प्रथम
11.	श्री महावीर संचेती	पुत्र	श्री लालचन्द जी संचेती	फलौदी	प्रथम
12.	श्री पन्नालाल जी चोपड़ा	पुत्र	श्री केशरी चन्द जी चोपड़ा	ब्यावर	प्रथम
13.	श्री मदन लाल जी कोठारी	पुत्र	श्री घासीलाल जी कोठारी	ब्यावर	प्रथम
14.	श्री चतुरभुज जी बोथरा	पुत्र	श्री खुशाल चन्द जी बोथरा	धूलिया	प्रथम
15.	श्री भंवर लाल जी लोढ़ा	पुत्र	श्री मुन्नीलाल जी लोढ़ा	पाली	प्रथम
16.	श्री आणंद राज जी भंसाली	पुत्र	श्री हणवंत राज जी भंसाली	जोधपुर	प्रथम
17.	श्री प्रेम कुमार जी राखेचा	पुत्र	श्री सादुल मल जी राखेचा	गंगाशहर	प्रथम
18.	श्री भंवर लाल जी सेठिया	पुत्र	श्री नेमचन्द जी सेठिया	गंगाशहर	द्वितीय
19.	श्री जतनमल जी नाहटा	पुत्र	श्री मेघराज जी नाहटा	बीकानेर	द्वितीय
20.	श्री छोटूलाल जी बैद	पुत्र	श्री उदयचन्द जी बैद	बीकानेर	द्वितीय
21.	श्री भंवर लाल जी सुराणा	पुत्र	श्री वागमल जी सुराणा	बीकानेर	द्वितीय
22.	श्री मोहन लाल जी पारख	पुत्र	श्री इन्द्रचन्द जी पारख	नारायणपुरा	द्वितीय
23.	श्री बसंती लाल जी लूंकड़	पुत्र	श्री भंवर लाल जी लूंकड़	उदयपुर	तृतीय
24.	श्री मोतीलाल जी मुसरफ	पुत्र	श्री चंपालाल जी मुसरफ	बीकानेर	तृतीय

महिला वर्ग–प्रथम उपधान

क्र.सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/धर्मपत्नी	नाम पिता/पति	स्थान	उपधान
1.	श्रीमती कंचन देवी खजांची	धर्मपत्नी	श्री पन्नालाल जी खजांची	वीकानेर	प्रथम
2.	श्रीमती अंतर देवी खजांची	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी खजांची	वीकानेर	प्रथम
3.	कु. कुसुम खजांची	पुत्री	श्री चान्द मल जी खजांची	वीकानेर	प्रथम
4.	कु. वस्कर खजांची	पुत्री	श्री मेहर चन्द जी खजांची	वीकानेर	प्रथम
5.	श्रीमती पुष्पा गोलछा	धर्मपत्नी	श्री कमल चन्द जी गोलछा	वीकानेर	प्रथम
6.	कु. सुषमा गुलगुलिया	पुत्री	श्री सोहन लाल जी गुलगुलिया	वीकानेर	प्रथम
7.	श्रीमती जवर देवी गुलगुलिया	धर्मपत्नी	श्री सोहन लाल जी गुलगुलिया	वीकानेर	प्रथम
8.	श्रीमती ममोल वाई गुलगुलिया	धर्मपत्नी	श्री तिलोक चन्द जी गुलगुलिया	वीकानेर	प्रथम
9.	श्रीमती भीखी वाई गुलगुलिया	पुत्री	श्री वृद्धि चन्द जी गुलगुलिया	वीकानेर	प्रथम
10.	श्रीमती आशा वाई गुलगुलिया	धर्मपत्नी	श्री वंशीलाल जी गुलगुलिया	वीकानेर	प्रथम
11.	श्रीमती जया गोलछा	धर्मपत्नी	श्री मानमल जी गोलछा	वीकानेर	प्रथम
12.	कु. ममता सीपाणी	पुत्री	श्री जयचन्द लाल जी सीपाणी	वीकानेर	प्रथम
13.	कु. उर्मिला चोरडिया	पुत्री	श्री मूलचन्द जी चोरडिया	वीकानेर	प्रथम
14.	श्रीमती गवरा देवी नाहटा	धर्मपत्नी	श्री उत्तम चन्द जी नाहटा	वीकानेर	प्रथम
15.	श्रीमती जय सुन्दरी वाई नाहाटा	धर्मपत्नी	श्री सज्जन लाल जी नाहटा	वीकानेर	प्रथम
16.	श्रीमती मूली वाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री रावतमल जी नाहटा	वीकानेर	प्रथम
17.	कु. प्रमिला नाहटा	पुत्री	श्री जिनेन्द्र कुमार जी नाहटा	वीकानेर	प्रथम
18.	श्रीमती अमराव वाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री शिखर चन्द जी नाहटा	वीकानेर	प्रथम
19.	श्रीमती गुलाव वाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री प्रतापमल जी नाहटा	वीकानेर	प्रथम
20.	कु. मंजू नाहटा	पुत्री	श्री पानमल जी नाहटा	वीकानेर	प्रथम
21.	श्रीमती तारा वाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री पानमल जी नाहटा	वीकानेर	प्रथम
22.	श्रीमती विमला वाई मरोठी	धर्मपत्नी	श्री छगनमल जी मरोठी	वीकानेर	प्रथम
23.	श्रीमती मंजूदेवी नाहटा	धर्मपत्नी	श्री सुशील कुमार नाहटा	वीकानेर	प्रथम
24.	श्रीमती चैन वाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री कन्हैयालाल जी नाहटा	वीकानेर	प्रथम
25.	श्रीमती मनोरी वाई भुगड़ी	धर्मपत्नी	श्री आसकरण जी भुगड़ी	वीकानेर	प्रथम
26.	श्रीमती सुन्दर वाई भुगड़ी	धर्मपत्नी	श्री मंगल चन्द जी भुगड़ी	वीकानेर	प्रथम
27.	कु. मंजू भुगड़ी	पुत्री	श्री ज्ञान चन्द जी भुगड़ी	वीकानेर	प्रथम
28.	श्रीमती स्वरूप देवी माल्लू	धर्मपत्नी	श्री नथमल जी माल्लू	वीकानेर	प्रथम
29.	श्रीमती कमला वाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री केशरीचन्द जी कोठारी	वीकानेर	प्रथम
30.	कु. धनेश कोठारी	पुत्री	श्री प्रसन्नचन्द जी कोठारी	वीकानेर	प्रथम
31.	श्रीमती कमला वाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री प्रसन्नचन्द जी कोठारी	वीकानेर	प्रथम

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
32.	श्रीमती गीता बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री ज्ञानमल जी बोथरा	बीकानेर	प्रथम
33.	श्रीमती जेठी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री बंशीलाल जी बोथरा	बीकानेर	प्रथम
34.	कु. प्रभा बोथरा	पुत्री	श्री भंवर लाल जी बोथरा	बीकानेर	प्रथम
35.	श्रीमती सुन्दर बाई पुगलिया	धर्मपत्नी	श्री तिलोकचन्द जी पुगलिया	बीकानेर	प्रथम
36.	श्रीमती कंचन बाई पुगलिया	धर्मपत्नी	श्री जयचन्द लाल जी पुगलिया	बीकानेर	प्रथम
37.	श्रीमती कमला देवी दूगड़	धर्मपत्नी	श्री भंवरलाल जी दूगड़	बीकानेर	प्रथम
38.	श्रीमती सरला देवी पुगलिया	धर्मपत्नी	श्री सूरजमल जी पुगलिया	बीकानेर	प्रथम
39.	श्रीमती सम्पत बाई बडेर	धर्मपत्नी	श्री हालचन्द जी बडेर	बीकानेर	प्रथम
40.	श्रीमती रतन बाई पारख	धर्मपत्नी	श्री संपतलाल जी पारख	बीकानेर	प्रथम
41.	श्रीमती मगन बाई डागा	धर्मपत्नी	श्री प्रतापमल जी डागा	बीकानेर	प्रथम
42.	श्रीमती बाधू बाई सेठिया	धर्मपत्नी	श्री आसकरण जी सेठिया	बीकानेर	प्रथम
43.	श्रीमती सिरिया बाई पारख	धर्मपत्नी	श्री जेठमल जी पारख	बीकानेर	प्रथम
44.	श्रीमती सुशीला देवी सेठिया	धर्मपत्नी	श्री मेघराज जी सेठिया	बीकानेर	प्रथम
45.	श्रीमती रतन देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री कान्तिचन्द जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
46.	श्रीमती कमला देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री गुलाबचन्द जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
47.	श्रीमती भंवर देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री मोहनलाल जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
48.	श्रीमती चंचल देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री ज्ञानचन्द जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
49.	श्रीमती संतोष देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री मानमल जी कोचर	बीकानेर	प्रथम
50.	श्रीमती किरण देवी पारख	धर्मपत्नी	श्री पवनकुमार जी पारख	बीकानेर	प्रथम
51.	श्रीमती भंवरी बाई लूणिया	धर्मपत्नी	श्री मेघराज जी लूणिया	बीकानेर	प्रथम
52.	श्रीमती सरोज देवी मुसरफ	धर्मपत्नी	श्री संतोकचन्द जी मुसरफ	बीकानेर	प्रथम
53.	श्रीमती सिरे कंवर मुसरफ	धर्मपत्नी	श्री बाबूलाल जी मुसरफ	बीकानेर	प्रथम
54.	श्रीमती कमला बाई बेगाणी	धर्मपत्नी	श्री कल्याणमल जी बेगाणी	बीकानेर	प्रथम
55.	श्रीमती उमराव देवी कोठारी	धर्मपत्नी	श्री राजमल जी कोठारी	बीकानेर	प्रथम
56.	श्रीमती अमराव देवी ढढ्ढा	धर्मपत्नी	श्री बुलाकी चन्द जी ढढ्ढा	बीकानेर	प्रथम
57.	श्रीमती कमला देवी बोथरा	धर्मपत्नी	श्री कुन्दन मल जी बोथरा	बीकानेर	प्रथम
58.	श्रीमती पुष्पा देवी सीपाणी	धर्मपत्नी	श्री कैलाश चन्द जी सीपाणी	बीकानेर	प्रथम
59.	कु. सुमन गोलछा	पुत्री	श्री हीरालाल जी गोलछा	बीकानेर	प्रथम
60.	श्रीमती सुगन बाई	धर्मपत्नी	श्री तोलाराम जी	बीकानेर	प्रथम
61.	कु. प्रमिला डागा	पुत्री	श्री शान्तिलाल जी डागा	बीकानेर	प्रथम
62.	श्रीमती बरजी बाई लूणिया	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी लूणिया	बीकानेर	प्रथम
63.	कु. बसंता छल्लाणी	पुत्री	श्री तिलोक चन्द जी छल्लाणी	गंगाशहर	प्रथम
64.	श्रीमती पोपा देवी बैद	धर्मपत्नी	श्री मगनमल जी बैद	बीकानेर	प्रथम

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/धर्मपत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
65.	श्रीमती फूल वाई वांठिया	धर्मपत्नी	श्री रामकरण जी वांठिया	भीनासर	प्रथम
66.	श्रीमती ज्ञान देवी खजांची	धर्मपत्नी	श्री पदम चन्द जी खजांची	नागौर	प्रथम
67.	श्रीमती सरला देवी जैन	धर्मपत्नी	श्री महेन्द्र जी जैन	नागौर	प्रथम
68.	श्रीमती कमला देवी डागा	धर्मपत्नी	श्री गौतम चन्द जी डागा	नागौर	प्रथम
69.	श्रीमती चंचल देवी डागा	धर्मपत्नी	श्री भंवर लाल जी डागा	नागौर	प्रथम
70.	श्रीमती पारस वाई डागा	धर्मपत्नी	श्री विजैमल जी डागा	नागौर	प्रथम
71.	कु. सुनीता डागा	पुत्री	श्री सरदार मल जी डागा	नागौर	प्रथम
72.	कु. कमला डागा	पुत्री	श्री प्रसन्न चन्द जी डागा	नागौर	प्रथम
73.	श्रीमती किरण वाई डागा	धर्मपत्नी	श्री सुखमल जी डागा	नागौर	प्रथम
74.	श्रीमती कंचनदेवी कोठारी	धर्मपत्नी	श्री मांगीलाल जी कोठारी	नागौर	प्रथम
75.	श्रीमती माडी देवी वोथरा	धर्मपत्नी	श्री चांदमल जी वोथरा	नागौर	प्रथम
76.	श्रीमती अकल कंवर मेहता	धर्मपत्नी	श्री जवाहर मल जी मेहता	जोधपुर	प्रथम
77.	श्रीमती शान्ता देवी भंसाली	धर्मपत्नी	श्री आनन्द राज सा भंसाली	जोधपुर	प्रथम
78.	श्रीमती प्रसन्न कंवर सिंघवी	धर्मपत्नी	श्री रमेश सिंह जी सिंघवी	जोधपुर	प्रथम
79.	श्रीमती विदाम कंवर सर्राफ	धर्मपत्नी	श्री पूनमचन्द जी सर्राफ	जोधपुर	प्रथम
80.	श्रीमती तारा वाई भंडारी	धर्मपत्नी	श्री संपत राज जी भंडारी	जोधपुर	प्रथम
81.	श्रीमती विमला वाई झाड़झूड़	धर्मपत्नी	श्री रतन चन्द जी झाड़झूड़	जयपुर	प्रथम
82.	श्रीमती प्रभा वाई पारख	धर्मपत्नी	श्री हीरालाल जी पारख	जयपुर	प्रथम
83.	श्रीमती विमला वाई मेहम्मवाल	धर्मपत्नी	श्री चंपालाल जी मेहम्मवाल	जयपुर	प्रथम
84.	श्रीमती चमेली वाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री भंवर लाल जी कोठारी	जयपुर	प्रथम
85.	श्रीमती कंचन वाई वरडिया	धर्मपत्नी	श्री पन्नालाल जी बरडिया	कलकत्ता	प्रथम
86.	श्रीमती धापी वाई पारख	धर्मपत्नी	श्री रामकुमार सिंह जी पारख	कलकत्ता	प्रथम
87.	श्रीमती सायर वाई वुरड	धर्मपत्नी	श्री मूलचन्द जी वुरड	इन्दौर	प्रथम
88.	श्रीमती कमला वाई वाफना	धर्मपत्नी	श्री हस्तीमल जी वाफना	उज्जैन	प्रथम
89.	श्रीमती कनक वाई रंगावत	धर्मपत्नी	श्री प्रकाश चन्द जी रंगावत	कोटा	प्रथम
90.	श्रीमती शान्ति वाई दुवेड़िया	धर्मपत्नी	श्री दीपचन्द जी दुवेड़िया	चिदम्बरम्	प्रथम
91.	श्रीमती अन्नू वाई गोलछा	धर्मपत्नी	श्री गुलाव चन्द जी गोलछा	फलौदी	प्रथम
92.	श्रीमती जेठी वाई गोलछा	धर्मपत्नी	श्री मिलाप चन्द जी गोलछा	फलौदी	प्रथम
93.	श्रीमती विमला वाई गोलछा	धर्मपत्नी	श्री हस्तीमल जी गोलछा	फलौदी	प्रथम
94.	श्रीमती सुन्दर वाई चोपड़ा	धर्मपत्नी	श्री पन्नालाल जी चोपड़ा	ब्यावर	प्रथम
95.	श्रीमती कंचन देवी कोठारी	धर्मपत्नी	श्री दीपचन्द जी कोठारी	ब्यावर	प्रथम
96.	श्रीमती शान्ति देवी वोथरा	धर्मपत्नी	श्री मांगीलाल जी वोथरा	वाड़मेर	प्रथम
97.	श्रीमती ढेली वाई भंसाली	धर्मपत्नी	श्री केशरीमल जी भंसाली	वाड़मेर	प्रथम

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/धर्मपत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
98.	श्रीमती सुकी बाई संकलेचा	धर्मपत्नी	श्री दौलतराम जी संकलेचा	बाड़मेर	प्रथम
99.	श्रीमती कमला बाई कोटड़िया	धर्मपत्नी	श्री अनोप चन्द जी कोटड़िया	राजनंद गांव	प्रथम
100.	श्रीमती किरण कुमारी लूणावत	धर्मपत्नी	श्री पी. सी. लूणावत	वाराणसी	प्रथम

महिला वर्ग–द्वितीय उपधान

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
1.	श्रीमती विमला देवी दूगड़	धर्मपत्नी	श्री पुखराज जी दूगड़	बीकानेर	द्वितीय
2.	कु. संजू नाहटा	पुत्री	श्री चन्द्रप्रकाश जी नाहटा	बीकानेर	द्वितीय
3.	कु. कुसुम गोलछा	पुत्री	श्री चंपालाल जी गोलछा	बीकानेर	द्वितीय
4.	श्रीमती जेठी देवी भंसाली	धर्मपत्नी	श्री रावतमल जी भंसाली	बीकानेर	द्वितीय
5.	श्रीमती जतन बाई सेठिया	धर्मपत्नी	श्री सरदारमल जी सेठिया	बीकानेर	द्वितीय
6.	श्रीमती भंवरी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री मोहन लाल जी बोथरा	बीकानेर	द्वितीय
7.	श्रीमती माणक बाई सेठिया	धर्मपत्नी	श्री शान्ति लाल जी सेठिया	बीकानेर	द्वितीय
8.	श्रीमती धन्नी बाई सिरोहिया	धर्मपत्नी	श्री झंवर लाल जी सिरोहिया	बीकानेर	द्वितीय
9.	श्रीमती शीला देवी सिरोहिया	धर्मपत्नी	श्री विजय सिंह जी सिरोहिया	बीकानेर	द्वितीय
10.	श्रीमती धूड़ी बाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री अबीर चन्द जी कोचर	बीकानेर	द्वितीय
11.	श्रीमती छोटा देवी कोचर	धर्मपत्नी	श्री गुलाब चन्द जी कोचर	बीकानेर	द्वितीय
12.	श्रीमती मैना देवी पारख	धर्मपत्नी	श्री जुगराज जी पारख	बीकानेर	द्वितीय
13.	कु. रीटा मुसरफ	पुत्री	श्री मोतीलाल जी मुसरफ	बीकानेर	द्वितीय
14.	कु. मंजू गोलछा	पुत्री	श्री आसकरण जी गोलछा	बीकानेर	द्वितीय
15.	श्रीमती इन्दर बाई सावणसुखा	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी सावणसुखा	बीकानेर	द्वितीय
16.	श्रीमती राजा देवी वैद	धर्मपत्नी	श्री आसकरण जी वैद	बीकानेर	द्वितीय
17.	कु. सुमन सावणसुखा	पुत्री	श्री भंवर लाल जी सावणसुखा	बीकानेर	द्वितीय
18.	श्रीमती भंवरी बाई वैद	धर्मपत्नी	श्री मोहन लाल जी वैद	बीकानेर	द्वितीय
19.	श्रीमती शान्ति देवी वैद	धर्मपत्नी	श्री मूलचन्द जी बैद	बीकानेर	द्वितीय
20.	श्रीमती मूली बाई बांठिया	धर्मपत्नी	श्री भैरूदान जी बांठिया	बीकानेर	द्वितीय
21.	श्रीमती झंवरी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री वंशीलाल जी बोथरा	बीकानेर	द्वितीय
22.	श्रीमती चौथा देवी गोलछा	धर्मपत्नी	श्री केशरीचन्द जी गोलछा	बीकानेर	द्वितीय
23.	श्रीमती कमला देवी बक्सी	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी बक्सी	बीकानेर	द्वितीय
24.	श्रीमती चान्द कंवर खजाची	धर्मपत्नी	श्री मूलचन्द जी खजांची	नागौर	द्वितीय
25.	श्रीमती उमराव कंवर ललवाणी	धर्मपत्नी	श्री घासीराम जी ललवाणी	नागौर	द्वितीय
26.	श्रीमती माणक बाई नाहटा	धर्मपत्नी	श्री इन्द्रचन्द जी नाहटा	मद्रास	द्वितीय

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
27.	श्रीमती शान्ति देवी पारख	धर्मपत्नी	श्री जसवन्त राज जी पारख	जोधपुर	द्वितीय
28.	श्रीमती पुष्प कंवर भंसाली	धर्मपत्नी	श्री बलवंत राज जी भंसाली	जोधपुर	द्वितीय
29.	श्रीमती उम्मेद कंवर डोसी	धर्मपत्नी	श्री लालचन्द जी डोसी	जोधपुर	द्वितीय
30.	श्रीमती पूनम कंवर पारख	धर्मपत्नी	श्री सोमचन्द जी पारख	जोधपुर	द्वितीय
31.	श्रीमती अमृत कंवर भंसाली	धर्मपत्नी	श्री कल्याणचन्द जी भंसाली	जोधपुर	द्वितीय
32.	श्रीमती भंवर वाई गोलच्छा	धर्मपत्नी	श्री माणकचन्द जी गोलच्छा	जयपुर	द्वितीय
33.	श्रीमती लक्ष्मी देवी पारख	धर्मपत्नी	श्री शिवलाल जी पारख	जयपुर	द्वितीय
34.	श्रीमती रतनी देवी सेठिया	धर्मपत्नी	श्री केशरीचन्द जी सेठिया	गंगाशहर (वीकानेर)	द्वितीय
35.	श्रीमती कस्तूरी वाई सेठिया	धर्मपत्नी	श्री झंवरलाल जी सेठिया	वीकानेर	द्वितीय
36	श्रीमती अणंदी'वाई वच्छावत	धर्मपत्नी	श्री गुलावचन्द जी वच्छावत	फलौदी	द्वितीय
37.	श्रीमती सोहन देवी खटोल	धर्मपत्नी	श्री मिश्रीलाल जी खटोल	व्यावर	द्वितीय
38.	श्रीमती धर्मी देवी मालू	धर्मपत्नी	श्री माणकमल सा मालू	वाड़मेर	द्वितीय
39.	श्रीमती ढ़ेली वाई मालू	धर्मपत्नी	श्री कन्हैयालाल जी मालू	वाड़मेर	द्वितीय
40.	श्रीमती अनोपी वाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री राणूलाल जी कोचर	अकल कूंआ	द्वितीय
41.	श्रीमती हीरा देवी गोलछा	धर्मपत्नी	श्री जतनमल जी गोलछा	कलकत्ता	द्वितीय
42.	श्रीमती पारस देवी कास्टिया	धर्मपत्नी	श्री फूलचन्द जी कास्टिया	कलकत्ता	द्वितीय
43.	कु. खुशवू मालू	पुत्री	श्री इन्दरचन्द जी मालू	श्रीडूंगरगढ़	द्वितीय

महिला वर्ग–तृतीय उपधान

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
1.	कु. कुसम लता गोलछा	पुत्री	श्री मूलचन्द जी गोलछा	वीकानेर	तृतीय
2.	श्रीमती आशादेवी सावणसुखा	धर्मपत्नी	श्री मानमल जी सावणसुखा	वीकानेर	तृतीय
3.	श्रीमती लक्ष्मी वाई वोथरा	धर्मपत्नी	श्री चान्दमल जी वोथरा	वीकानेर	तृतीय
4.	श्रीमती संपत वाई वोथरा	धर्मपत्नी	श्री संपतलाल जी वोथरा	वीकानेर	तृतीय
5.	श्रीमती भंवरी वाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री माणक चन्द जी कोचर	वीकानेर	तृतीय
6.	श्रीमती सूरज वाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री रोशनलाल जी कोचर	वीकानेर	तृतीय
7.	श्रीमती ममोल वाई पारख	धर्मपत्नी	श्री वंशीलाल जी पारख	वीकानेर	तृतीय
8.	श्रीमती मोहनी वाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री राजमल जी कोठारी	वीकानेर	तृतीय
9.	श्रीमती पानवाई लूणिया	धर्मपत्नी	श्री लच्छीराम जी लूणिया	वीकानेर	तृतीय
10.	कु. सुनीता ढढ़ा	पुत्री	श्री कपूर चन्द जी ढढ़ा	वीकानेर	तृतीय
11.	श्रीमती सूरज कंवर वोथरा	धर्मपत्नी	श्री टोडरमल जी वोथरा	नागौर	तृतीय

क्र. सं.	उपधानवाही का नाम	पुत्री/पत्नी	पिता/पति का नाम	स्थान	उपधान
12.	श्रीमती धापी बाई सुराणा	धर्मपत्नी	श्री धीसूमल जी सुराणा	नागौर	तृतीय
13.	श्रीमती रतनी बाई खजांची	धर्मपत्नी	श्री कल्याणमल जी खजांची	नागौर	तृतीय
14.	श्रीमती भंवरी बाई कोठारी	धर्मपत्नी	श्री मांगीलाल जी कोठरी	नागौर	तृतीय
15.	श्रीमती गज्जी देवी मालू	धर्मपत्नी	श्री सतावनदास जी मालू	बाड़मेर	तृतीय
16.	श्रीमती गौरी देवी सेठिया	धर्मपत्नी	श्री रावतमल जी सेठिया	बाड़मेर	तृतीय
17.	श्रीमती पन्नी देवी छाजेड	धर्मपत्नी	श्री टीकाजी छाजेड़	बाड़मेर	तृतीय
18.	श्रीमती गज्जीदेवी छाजेड़	धर्मपत्नी	श्री चिमनी राम जी छाजेड़	बाड़मेर	तृतीय
19.	श्रीमती मथरी देवी पडइया	धर्मपत्नी	श्री माणकमल जी पडइया	बाड़मेर	तृतीय
20.	श्रीमती धर्मी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री मेवाराम जी बोथरा	बाड़मेर	तृतीय
21.	श्रीमती एजीदेवी सुकलेचा	धर्मपत्नी	श्री राणामल जी सुकलेचा	बाड़मेर	तृतीय
22.	श्रीमती मथरा बाई गोलछा	धर्मपत्नी	श्री असराज जी गोलछा	फलोदी	तृतीय
23.	श्रीमती जाडाबाई बच्छावत	धर्मपत्नी	श्री मांगीलाल जी बच्छावत	फलोदी	तृतीय
24.	श्रीमती टीपू बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री शंकरलाल जी बोथरा	पाली	तृतीय
25.	श्रीमती जवर कंवर भंसाली	धर्मपत्नी	श्री शुभैराज जी भंसाली	जोधपुर	तृतीय
26.	श्रीमती सोहन कंवर भंसाली	धर्मपत्नी	श्री अचलराज जी भंसाली	जोधपुर	तृतीय
27.	श्रीमती सोहन कंवर मेहता	धर्मपत्नी	श्री निहाल चन्द जी मेहता	जोधपुर	तृतीय
28.	श्रीमती प्रेमी बाई बोथरा	धर्मपत्नी	श्री सुगनमल जी बोथरा	जोधपुर	तृतीय
29.	श्रीमती राजकुमारी भंसाली	धर्मपत्नी	श्री सोहनराज जी भंसाली	जोधपुर	तृतीय
30.	श्रीमती अकल कंवर पटवा	धर्मपत्नी	श्री सायरमल जी पटवा	जोधपुर	तृतीय
31.	श्रीमती तेजकंवर ललवाणी	धर्मपत्नी	श्री घेवर चन्द जी ललवाणी	जोधपुर	तृतीय
32.	श्रीमती सज्जन बाई खजांची	धर्मपत्नी	श्री भीमराज जी खजांची	जयपुर	तृतीय
33.	श्रीमती भीमाबाई बांठिया	धर्मपत्नी	श्री मोहनलाल जी बांठिया	जयपुर	तृतीय
34.	श्रीमती इचरज बाई कोचर	धर्मपत्नी	श्री रतन चन्द जी कोचर	जयपुर	तृतीय
35.	श्रीमती इन्दर बाई मेहता	धर्मपत्नी	श्री उमरावसिंह जी मेहता	कोटा	तृतीय
36.	श्रीमती कमला बाई गग	धर्मपत्नी	श्री लूणकरण जी गंग	बीकानेर	तृतीय
37.	कु. सरिता सेठिया	पुत्री	श्री भंवरलाल जी सेठिया	गंगाशहर	तृतीय



प्रातः स्मरणीय गणनायक श्री क्षमाकल्याणजी म.



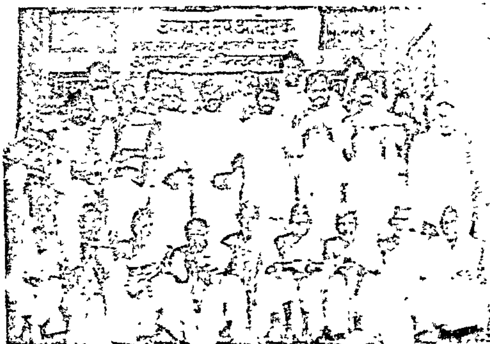
पूज्य गणिवर्य श्री क्रिया विधि करवाते हुए



पूज्य आचार्य श्री माणिक्यसागर जी म. एवं मुनि मंडल



प्रवचन फरमा रही पू. विदुषी आर्या रत्न श्री हेमप्रभा श्री जी म



उपधान वाही पुरुष वर्ग



साध्वी मंडल



पूज्य गणिवर्य श्री प्रवचन फरमाते एक विशिष्ट मुद्रा में जिसमें वे ओघा दिखाकर संयम का उपदेश दे रहे हैं।



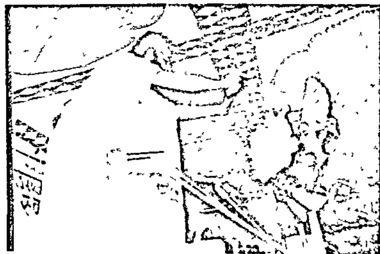
पूज्य गणिवर्य श्री साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी से गंभीर वि करते हुए.



पूज्य गणिवर्य श्री से सलाह मशविरा करते हुए उपधानपति श्री नेमचंदजी खजांची.



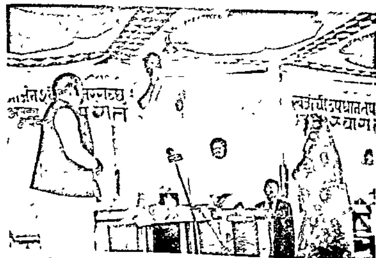
पूज्य गणिवर्य श्री से प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री पन्नालाल जी मार्गदर्शन प्राप्त करते ।



वैरागन शोभा को ओघा प्रदान करते हुए गणिवर्य श्री



कु. शोभा को दीक्षा मंत्र प्रदान कर नामकरण करते हुए गणिवर्य श्री



पूज्य गणिवर्य श्री श्री नेमचंद जी खजांची को "उपधानपति" पद प्रदान करते हुए।



मोक्ष माला परिधान करने के बाद उपदेश श्रवण कर रहा पुरूषवर्ग

उपधानवाही महिलाओं के सामूहिक चित्र







उपधानवाही महिलाओं के सामूहिक चित्र







विशिष्ट उपधानवाही



श्री छगनलाल मारोठी S/O श्री विक्रमचंद जी, बीकानेर
श्रीमती विमलादेवी मारोठी W/O श्री छगनलाल जी



श्री मूलचंद खजांची S/O श्री उगमचंद जी, नागौर
श्रीमती चांददेवी खजांची W/O श्री मूलचंद जी

विशिष्ट उपधानवाही

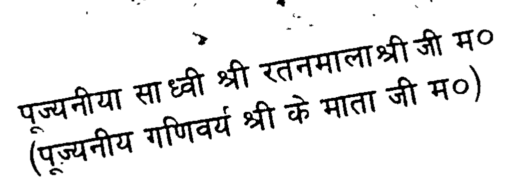

नरेश गोलछा
S/o श्रीचन्दराज जी


जयादेवी गोलछा, बीकानेर
W/o मानमल जी

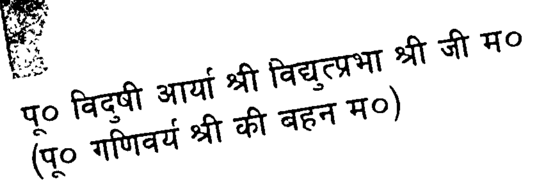

श्रीमदनलाल कोठारी
S/o श्री घासीलाल कोठारी, ब्यावर


सुषमा
D/o सोहनलाल गुलगुलियां

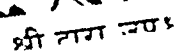

कु सुनिता ढ़ढ़ा
D/o श्री कपूर चंद जी ढ़ढ़ा



पूज्यनीया साध्वी श्री रतनमालाश्री जी म०
(पूज्यनीय गणिवर्य श्री के माता जी म०)



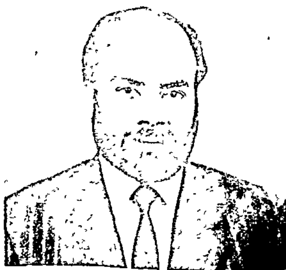
पू० विदुषी आर्या श्री विद्युत्प्रभा श्री जी म०
(पू० गणिवर्य श्री की बहन म०)




श्री नेमचंद जी खजांची


सौ. आशा देवी खजांची

उपधानपति परिवार


श्री सुरेन्द्र कुमार खजांची (पुत्र)

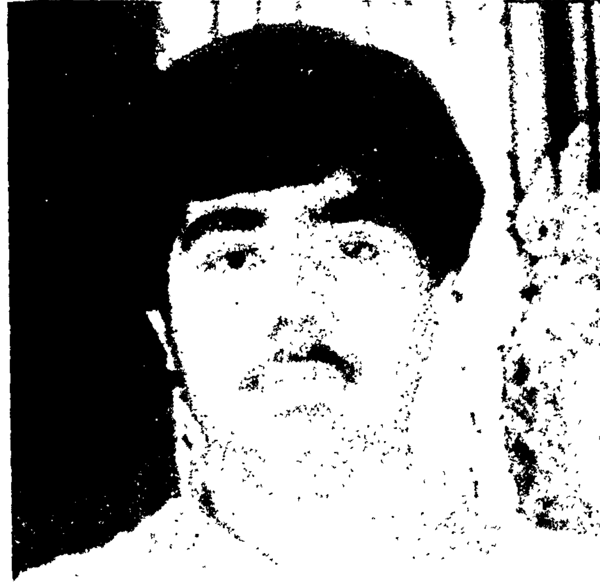

सौ. शशीकला खजांची (पुत्रवधू)



श्री राजेन्द्र कुमार जी बोथरा (दामाद)



सौ. तारादेवी बोथरा (पुत्री)



श्री अमित कुमार खजांची (पुत्र)





तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द

मणि गुरुवर तुम हो आला।
वाणी अमृत का प्याला।
जिन शासन का रखवाला।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द।
जन जन के हो आनन्द कन्द॥

तेजोमय दीप्ति पूर्ण भाला।
सम्मोहक प्रेरक चुस्त चाल।
काले घुँघराले घने बाल।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द।
जन जन के हो आनन्द कन्द॥

प्रवचन मानो रसपूर्ण थाल।
कईयों का जीवन दिया ढाल।
मिट गया सभी का दुख जाल।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द।
जन जन के हो आनन्द कन्द॥

सादा जीवन है बेमिशाल।
तुम महाप्रज्ञ ज्योतिर्विशाल।
दर्शन पाकर होते निहाल।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द॥
जन जन के हो आनन्द कन्द

कान्ति गुरुवर के दिव्य प्राण।
रखना शासन की आन बान।
करते निशदिन तव कीर्तिगान।
तुम चिरंजीव तुम चिरंनन्द॥
जन जन के हो आनन्द कन्द॥

विशिष्ट उपधानवाही



सुश्री बसकर खजांची
सुपुत्री श्री मेहरचन्द जी खजांची



कंचन देवी खजांची
w/o पन्नालाल जी



श्रीमती अन्तर देवी खजांची
w/o माणक चंद जी



श्रीमती इन्द्रबाई सावणसुखा
w/o माणकचंद जी सावणसुखा



श्रीमती सरला देवी पूगलिया
w/o सूरजमल जी, बीकानेर

विशिष्ट उपधानवाही



श्रीमती कमला बाई बाफना
W/O श्री हस्तीमल, उज्जैन



श्रीमती मैना देवी पारख
W/O श्री जुगराज जी पारख



श्रीमती कंचनदेवी बरडिया
W/O श्री पन्नालाल जी, कलकत्ता



श्रीमती धापीदेवी पारख
W/O रामकुमार सिंह जी, कलकत्ता



श्रीमती किरण कुमारी लुणावत
W/O पी.सी. लुणावत, बनारस

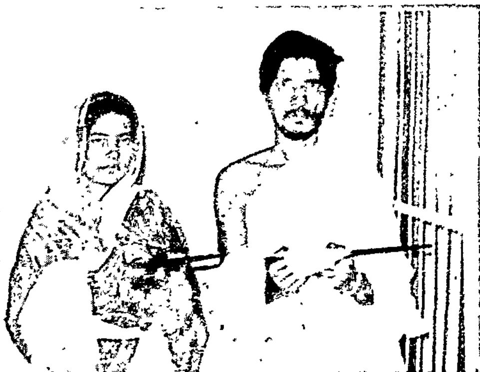
उपधानवाही महिलाओं के सामूहिक चित्र







विशिष्ट उपधानवाही



श्री सुशील कुमार नाहटा s/o श्री गोरूलाल जी
श्रीमति मंजूदेवी नाहटा w/o सुशील कुमार जी



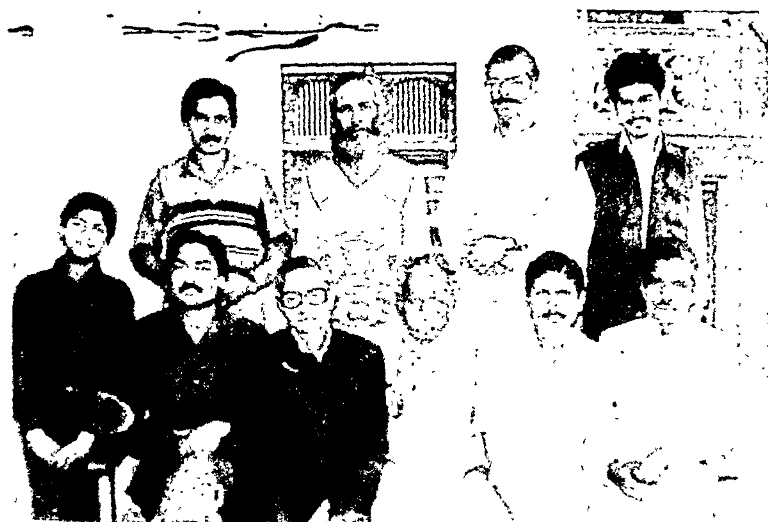
श्री पवनकुमार पारख s/o श्री जेठमल जी, बीकानेर
श्रीमती किरणदेवी पारख w/o श्री पवनकुमार जी



मोक्ष माला व दीक्षा के अवसर पर उपस्थित विशाल जनसमूह।



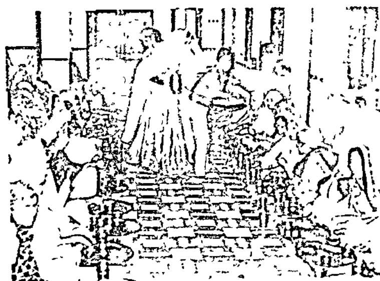
मोक्ष माला व दीक्षा के अवसर पर उपस्थित विशाल न.



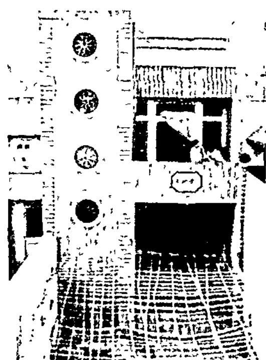
प्रमुख कार्यकर्त्ता
खड़े बांये से दांये – पन्ना लाल नाहटा, वंशीलाल बोथरा, पन्नालाल खजांची, हेमन्त कुमार पुगलिया।
बैठे बांये से दांये—सुनील पारख, अजीत खजांची, केसरी चंद सेठिया,



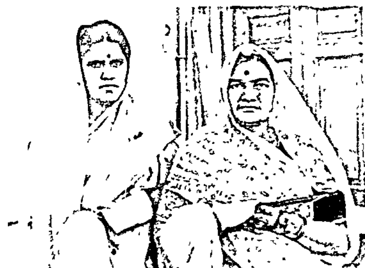
एकाशना करते हुए उपधान तपस्वीगण



एकासणा करती तपस्विनी महिलाये



उपधानपति श्री नेमचंद जी द्वारा निर्मित श्री महावीर जैन भवन
(जहाँ उपधान का क्रिया विधि विधान संपन्न हुआ)



श्रीमति सिरेकवर धर्मपत्नी श्री बाबुलाल जी मुसरफ एवं श्रीमति
सरोज धर्मपत्नी श्री सन्तोष चन्द जी मुसरफ, बीकानेर।



खड़े वांये से दांये—श्री पन्नालाल खजांची (मंत्री), श्री वाबूलाल मुसरफ, श्री धनपतसिंग खजांची, श्री चांदरतन पारख, श्री धनराज नाहटा, श्री झंवरलाल सीपाणी, श्री सूरजमल पुगलिया (सहमंत्री)

वैठे वांये से दांये—श्री अणंदमल वेगाणी, श्री माणकचन्द वेगाणी (अध्यक्ष), श्री शिवचन्द झावक (संरक्षक), श्री लालचन्द सुराणा (कोषाध्यक्ष)

कामिनी और कंचन को त्यागे बिना आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती ।

— रामकृष्ण परमहंस

श्री आदिनाथाय नमः



बीकानेर के जिन मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए
पंचवर्षीय योजना के सदस्य बनकर
पुण्य लाभ के भागीदार बनें।

निवेदक

श्री जिन मंदिर जीर्णोद्धार समिति
डागा सेठिया मौहल्ला, बीकानेर

"भोग समर्थ होते हुए भी जो भोगों का परित्याग करता है, वह कर्मों की महान् निर्जरा करता है, उसे मुक्ति रूप महाफल प्राप्त होता है।"

भ. महावीर



चांदमल बरडिया

वीकानेर

"जो पुरुष प्राप्त हुए कान्त और प्रिय भोगों को स्वेच्छा से त्याग देता है,
वह निश्चय ही त्यागी कहलाता है।"

श्रमण महावीर



"समे दज्जे, सव्वपाण भूयेषु, से हु समणे"
समस्त प्राणियों के प्रति जो समभाव रखता है
वही सच्चा साधक है।



धनराज ढढ्ढा

तिलोकचन्द ढढ्ढा

कपूरचन्द ढढ्ढा

बीकानेर

उपधान तप के आराधकों को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं

चमचमाती सफेदी के लिये



डिटर्जेन्ट केक

A Nahata PRODUCT

नाहटा कास्मेटिक्स एण्ड केमिकल्स प्रा. लि.

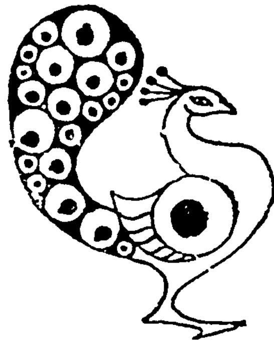
कलकत्ता-700 007

इनाम उसे मिलता है, जिसका काम होता है,
पत्र उसे मिलता है, जिसका नाम होता है,
स्वयंवर आमन्त्रित होने से क्या हुआ
सीता उसे मिलती है जिसमें राम होता है।



किसी को धिक्कारना नहीं सत्कारना सीखो,
किसी को फटकारना नहीं, पुचकारना सीखो ।

किसी को जीतने की इच्छा रखते हो तो,
उससे जीतना नहीं हारना सीखो ।।



खजाना

२. ३. खजांची मार्केट, महात्मा गांधी मार्ग

बीकानेर-३३४००१

उपधान तप के आराधकों को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं :



हीरालाल जतनमल लूणिया
सपरिवार

Presented to Sunita
by Mukti Prabh Sagar.